

निराला के कथा साहित्य में
लघुमानव के चरित्र का अनुशीलन
"पौराणिक आख्यानों के संदर्भ में"

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर



विद्यावारिधि (पीएच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

सन्- 2002

डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (भाषा विज्ञान)

पी.एच.डी., साहित्य-आचार्य, डी.लिट. (मानद)

उपप्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान,

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,

जबलपुर (म.प्र.)

अनुसंधित्सु

श्रीमती मीरा अग्निहोत्री



यह पुस्तक देय नहीं है।

सन्दर्भ पुस्तक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मूल्यांकन हेतु अंगीकृत

Chaturved.

22.10.02

सङ्काय प्रमुख: / विभागाध्यक्षा

महर्षि वेद विज्ञान सङ्काय:

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय:

जबलपुरम् - म.प्र.

निराला के कथा साहित्य में लघुमानव के चरित्र का अनुशीलन "पौराणिक आख्यानों के संदर्भ में"

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर



विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबंध

सन्- 2002



डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (भाषा विज्ञान)
पी.एच.डी., साहित्याचार्य, डी.लिट् (मानव)
उपप्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
हिन्दी एवं भाषा विज्ञान,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

अनुसंधित्सु

श्रीमती मीरा अग्निहोत्री



निराला के कथा साहित्य में
लघुमानव के चरित्र का अनुशीलन
"पौराणिक आख्यानों के संदर्भ में"

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर



विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

सन्- 2002



डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (भाषा विज्ञान)
पी.एच.डी., साहित्याचार्य, डी.लिट् (मानद)

उपप्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान,

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,

जबलपुर (म.प्र.)

अनुसंधित्सु

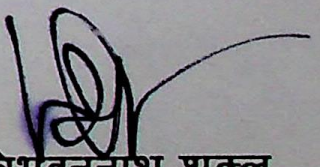
श्रीमती मीरा अग्निहोत्री

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्रीमती मीरा अग्निहोत्री महर्षि महेश योगी वैदिक, विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर म.प्र. के हिन्दी साहित्य विभाग की अनुसंधित्सु हैं । इन्होंने विद्यावारिधि हेतु निराला के कथा - साहित्य में लघुमानव के चरित्र का अनुशीलन "पौराणिक आख्यानों के संदर्भ में" नामक विषय में शोध कार्य मेरे मार्ग दर्शन में पूर्ण किया है । यह इनकी मौलिक कृति है । अस्तु, प्रस्तुत प्रबंध परीक्षणार्थ प्रस्तुत किए जाने योग्य है।

दिनांक 28/10/02

स्थान - जबलपुर


डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (भाषा विज्ञान)
पी.एच.डी., साहित्याचार्य, डी.लिट् (मानद)
उपप्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
हिन्दी एवं भाषा विज्ञान,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

रूप-गणप

इसमें हीना विविधताएँ हैं किन्तु की है अतः इसकी गणना
 गणनीय नहीं है किन्तु के प्र. म. प्रमाणों पर ही गणना की जायेगी
 में गणनीय - एक के अन्तर्गत ही विविधताएँ हैं । मैं गणनीयता कि
 "मैं गणना के अन्तर्गत गणनीय" गणनीयता एक ही के अन्तर्गत
 कही जायेगी किन्तु यह । मैं इसकी गणना में गणना के अन्तर्गत
 मैं गणना के अन्तर्गत गणनीयता गणनीयता । मैं गणनीय

गणनीय गणनीयता । मैं

(गणनीय गणनीयता) प्र. म. प्रमाणों पर ही
 गणनीयता के अन्तर्गत गणनीयता
 गणनीयता के अन्तर्गत गणनीयता
 गणनीयता के अन्तर्गत गणनीयता
 गणनीयता के अन्तर्गत गणनीयता
 (प्र. म.) प्रमाणों पर ही

२०/०१/८२ काफ़ी
 प्रमाणों - गणनीय

घोषणा-पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि -

निराला के कथा - साहित्य में लघुमानव के चरित्र का अनुशीलन " पौराणिक आख्यानों के संदर्भ में " शीर्षकगत शोध प्रबन्ध किसी अन्य विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि हेतु मेरे द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

अनुसंधित्सु

श्रीमती मीरा अग्निहोत्री

श्रीमती मीरा अग्निहोत्री

एम.ए. (हिन्दी)

प्राक्कथन

प्रस्तुत प्रबन्ध कुल सात अध्यायों में विभक्त है । प्रबन्ध का बीज भाव लघुमानव है । इसका मूल अधिष्ठान निराला का कथा - साहित्य है । इस प्रकार यह प्रबन्ध कर्ता, कर्म और क्रिया की त्रिपुटि है, जिसका केन्द्रीय प्रस्थान लघुमानव है । इसमें कर्ता के स्थान पर निराला को, कर्म के स्थान पर कृति को और क्रिया के स्थान पर लघुमानव को देखा जा सकता है । इसी को प्रसाद जी ने इच्छा, ज्ञान और क्रिया कहा है । जब ये एक ऋजु रेखा में आती है तभी अभीष्ट की संसिद्धि हो पाती है । प्रस्तुत कार्य इन्हीं संकल्पनाओं से गर्भित है । मेरी अपनी गतिमति में प्रथम अध्याय भूमिका के रूप में व्याख्यायित है । द्वितीय अध्याय में निराला के कथा - साहित्य का विषयानुसार वर्गीकरण किया गया है कहानी के अंतर्गत और उपन्यास के अन्तर्गत - सामाजिक एवं पौराणिक ।

तृतीय अध्याय लघु मानव की अवधारणा और निराला की लघुमानव परक सोच पर आधारित है । चतुर्थ अध्याय - कहानियों में चित्रित लघु मानव और उसके स्वरूप पर केन्द्रित है ।

पाँचवां अध्याय में निराला के पौराणिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव का स्वरूप व्याख्यायित है ।

छठवें अध्याय में निराला के सामाजिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव का स्वरूप व्याख्यायित है ।

सातवां अध्याय उपसंहार के रूप में चित्रित है ।

इस पूरे प्रबन्ध को आकार प्रकार देने में जिन गुरुजनों एवं परिजनों का सहयोग मिला है, उन सबके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझती हूँ ।

मैं नतमस्तक हूँ पूजनीय महर्षि महेश योगी जी के प्रति जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व में वैदिक शिक्षा पद्धति को पुनश्चेतना प्रदान की । उनका यह अथाह ज्ञान सागर जो मैं प्राप्त कर सकी, मेरी निधि है, मैं उनकी कृतकृत्य हूँ ।

मैं आभारी हूँ परम श्रद्धेय डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल जी की जिनके सहयोग के बिना यह शोध प्रबंध पूर्ण नहीं हो पाता । आपने अपनी व्यस्ततम जीवन-वर्गा से मुझे समय प्रदान कर मेरे इस शोध प्रबंध को सम्पन्न कराया ।

मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति महोदय माननीय प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र जी को, जो मेरे इस शोध कार्य के लिए मेरे प्रेरणास्रोत बने ।

मैं हृदय से आभारी हूँ महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय के कुल सचिव परम सम्माननीय श्री ताराचन्द्र पाठक जी की, जिन्होंने मन्दगति से चल रहे मेरे शोध कार्य को नई स्फूर्ति एवं गति प्रदान की, जिससे शीघ्रतातिशीघ्र यह शोध कार्य पूरा हो सका ।

मैं कृतज्ञ हूँ महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय वेद विज्ञान संकायाध्यक्ष आदरणीया डॉ. चन्द्रा चतुर्वेदी जी की जिन्होंने पग-पग पर मुझे सहयोग प्रदान किया ।

अन्त में आभार व्यक्त करती हूँ महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय के उन सभी अधिकारियों का जिनका मुझे परोक्ष-अपरोक्ष रूप में सहयोग मिलता रहा ।

किं तद्विषयं वेदानीं किं किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं किं लक्षणं लक्षणं किं
किं किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं । लक्षणं किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
। लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
। किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
किं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं
। लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं लक्षणं

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ. संख्या
1.	अध्याय – प्रथम भूमिका	1-4
2.	अध्याय- द्वितीय निराला के कथा साहित्य का विषयानुसार वर्गीकरण	
	1. कहानी	
	2. उपन्यास	
	1. सामाजिक	
	2. पौराणिक	5-180
	2.1 कहानी संग्रह	9-66
	2.1.1 लिली	
	पद्मा और लिली	9-12
	ज्योतिर्मयी	12-15
	कमला	15-18
	श्यामा	18-21
	अर्थ	21-23
	प्रेमिका – परिचय	23-26
	परिवर्तन	26-28
	हिरनी	28-30

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ. संख्या
1.	अध्याय – प्रथम भूमिका	1-4
2.	अध्याय- द्वितीय निराला के कथा साहित्य का विषयानुसार वर्गीकरण	
	1. कहानी	
	2. उपन्यास	
	1. सामाजिक	
	2. पौराणिक	5-180
	2.1 कहानी संग्रह	9-66
	2.1.1 लिली	
	पद्मा और लिली	9-12
	ज्योतिर्मयी	12-15
	कमला	15-18
	श्यामा	18-21
	अर्थ	21-23
	प्रेमिका - परिचय	23-26
	परिवर्तन	26-28
	हिरनी	28-30

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः

सं.सं.	संज्ञा	पृ.
१-१	अक्षर - अक्षर	१
१-२	संज्ञा	२
१-३	संज्ञा - संज्ञा	३
संज्ञा-संग्रहः के अक्षर-संज्ञा-संग्रहः के अक्षर-संज्ञा-संग्रहः		
१-४	संज्ञा	४
१-५	संज्ञा	५
१-६	संज्ञा	६
१-७	संज्ञा	७
१-८	संज्ञा	८
१-९	संज्ञा	९
१-१०	संज्ञा	१०
१-११	संज्ञा	११
१-१२	संज्ञा	१२
१-१३	संज्ञा	१३
१-१४	संज्ञा	१४
१-१५	संज्ञा	१५
१-१६	संज्ञा	१६
१-१७	संज्ञा	१७
१-१८	संज्ञा	१८
१-१९	संज्ञा	१९
१-२०	संज्ञा	२०

क्र.	विवरण	पृ. संख्या
	2.1.2 सखी	
	चतुरी - चमार	31-36
	सखी	36-40
	न्याय	40-43
	राजा साहब को ठेंगा दिखाया	43-46
	देवी	46-52
	स्वामी सारदानन्दजी महाराज	
	और मैं	53-57
	सफलता	57-63
	भक्त और भगवान	63-66
	2.1.3 सुकुल की बीवी	
	क्या देखा	67-73
	सुकुल की बीवी	73-80
	श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी	80-84
	कला की रूपरेखा	84-88
	2.2 उपन्यास	
	2.2.1 अप्सरा	89-96
	2.2.2 अलका	97-101
	2.2.3 निरुपमा	102-106
	2.2.4 चोटी की पकड़	106-110
	2.2.5 काले कारनामों	110-113

क्र.	विवरण	पृ. संख्या
	2.2.6 चमेली	114-116
	2.2.7 कुल्ली भाट	117-122
	2.2.8 बिल्लेसुर बकरिहा	122-127
	2.2.8 पौराणिक उपन्यास	
	2.3.1 भक्त ध्रुव	128-136
	2.3.2 भक्त प्रह्लाद	136-145
	2.3.3 भीष्म	145-151
	2.3.4 महाभारत	151-180
3.	अध्याय-तृतीय लघुमानव की अवधारणा और निराला की, लघुमानव परक सोच	181-197
4.	अध्याय-चतुर्थ कहानियों में चित्रित लघुमानव और उसका स्वरूप	198-218
5.	अध्याय-पंचम निराला के पौराणिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव का स्वरूप	219-232
6.	अध्याय-षष्ठम निराला के सामाजिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव का स्वरूप	233-263
7.	अध्याय-सप्तम उपसंहार - संदर्भग्रन्थ सूची	264-270

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
1	संस्कृत-संस्कृत	1-1
2	संस्कृत-संस्कृत	2-2
3	संस्कृत-संस्कृत	3-3
4	संस्कृत-संस्कृत	4-4
5	संस्कृत-संस्कृत	5-5
6	संस्कृत-संस्कृत	6-6
7	संस्कृत-संस्कृत	7-7
8	संस्कृत-संस्कृत	8-8
9	संस्कृत-संस्कृत	9-9
10	संस्कृत-संस्कृत	10-10
11	संस्कृत-संस्कृत	11-11
12	संस्कृत-संस्कृत	12-12
13	संस्कृत-संस्कृत	13-13
14	संस्कृत-संस्कृत	14-14
15	संस्कृत-संस्कृत	15-15
16	संस्कृत-संस्कृत	16-16
17	संस्कृत-संस्कृत	17-17
18	संस्कृत-संस्कृत	18-18
19	संस्कृत-संस्कृत	19-19
20	संस्कृत-संस्कृत	20-20
21	संस्कृत-संस्कृत	21-21
22	संस्कृत-संस्कृत	22-22
23	संस्कृत-संस्कृत	23-23
24	संस्कृत-संस्कृत	24-24
25	संस्कृत-संस्कृत	25-25
26	संस्कृत-संस्कृत	26-26
27	संस्कृत-संस्कृत	27-27
28	संस्कृत-संस्कृत	28-28
29	संस्कृत-संस्कृत	29-29
30	संस्कृत-संस्कृत	30-30
31	संस्कृत-संस्कृत	31-31
32	संस्कृत-संस्कृत	32-32
33	संस्कृत-संस्कृत	33-33
34	संस्कृत-संस्कृत	34-34
35	संस्कृत-संस्कृत	35-35
36	संस्कृत-संस्कृत	36-36
37	संस्कृत-संस्कृत	37-37
38	संस्कृत-संस्कृत	38-38
39	संस्कृत-संस्कृत	39-39
40	संस्कृत-संस्कृत	40-40
41	संस्कृत-संस्कृत	41-41
42	संस्कृत-संस्कृत	42-42
43	संस्कृत-संस्कृत	43-43
44	संस्कृत-संस्कृत	44-44
45	संस्कृत-संस्कृत	45-45
46	संस्कृत-संस्कृत	46-46
47	संस्कृत-संस्कृत	47-47
48	संस्कृत-संस्कृत	48-48
49	संस्कृत-संस्कृत	49-49
50	संस्कृत-संस्कृत	50-50
51	संस्कृत-संस्कृत	51-51
52	संस्कृत-संस्कृत	52-52
53	संस्कृत-संस्कृत	53-53
54	संस्कृत-संस्कृत	54-54
55	संस्कृत-संस्कृत	55-55
56	संस्कृत-संस्कृत	56-56
57	संस्कृत-संस्कृत	57-57
58	संस्कृत-संस्कृत	58-58
59	संस्कृत-संस्कृत	59-59
60	संस्कृत-संस्कृत	60-60
61	संस्कृत-संस्कृत	61-61
62	संस्कृत-संस्कृत	62-62
63	संस्कृत-संस्कृत	63-63
64	संस्कृत-संस्कृत	64-64
65	संस्कृत-संस्कृत	65-65
66	संस्कृत-संस्कृत	66-66
67	संस्कृत-संस्कृत	67-67
68	संस्कृत-संस्कृत	68-68
69	संस्कृत-संस्कृत	69-69
70	संस्कृत-संस्कृत	70-70
71	संस्कृत-संस्कृत	71-71
72	संस्कृत-संस्कृत	72-72
73	संस्कृत-संस्कृत	73-73
74	संस्कृत-संस्कृत	74-74
75	संस्कृत-संस्कृत	75-75
76	संस्कृत-संस्कृत	76-76
77	संस्कृत-संस्कृत	77-77
78	संस्कृत-संस्कृत	78-78
79	संस्कृत-संस्कृत	79-79
80	संस्कृत-संस्कृत	80-80
81	संस्कृत-संस्कृत	81-81
82	संस्कृत-संस्कृत	82-82
83	संस्कृत-संस्कृत	83-83
84	संस्कृत-संस्कृत	84-84
85	संस्कृत-संस्कृत	85-85
86	संस्कृत-संस्कृत	86-86
87	संस्कृत-संस्कृत	87-87
88	संस्कृत-संस्कृत	88-88
89	संस्कृत-संस्कृत	89-89
90	संस्कृत-संस्कृत	90-90
91	संस्कृत-संस्कृत	91-91
92	संस्कृत-संस्कृत	92-92
93	संस्कृत-संस्कृत	93-93
94	संस्कृत-संस्कृत	94-94
95	संस्कृत-संस्कृत	95-95
96	संस्कृत-संस्कृत	96-96
97	संस्कृत-संस्कृत	97-97
98	संस्कृत-संस्कृत	98-98
99	संस्कृत-संस्कृत	99-99
100	संस्कृत-संस्कृत	100-100

अध्याय-प्रथम भूमिका

संस्कृत-शब्द-कोश
संस्कृत-शब्द-कोश

अध्याय-प्रथम

भूमिका

प्रस्तुत कार्य कुल सात अध्यायों में प्ररोचित है । अध्याय प्रथम भूमिका एवं विषय प्रतिपादक के प्रारूप से संबंधित है । पूरा कार्य निराला के कथा-साहित्य पर आधारित है । इस कार्य का मुख्य विवेच्य बिन्दु है- निराला के कथा-साहित्य में चित्रित लघुमानव की प्रतिष्ठापरक खोज । रचनाकार एक निश्चित अवधारणा के आधार पर अपने पूरे कथा-साहित्य का सृजन करता है-वह अवधारणा यह है कि समाज में उपेक्षापूर्ण जीवन जी रहे लोगों को कैसे प्रतिष्ठित किया जाए । तत्कालीन समाज का पूरी तरह से अध्ययन करने के बाद निराला इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि वर्ग, जाति आदि का बन्धन पूरी तरह से मनुष्यकृत और वायवी है । इसीलिए वे कान्यकुब्ज होते हुए भी कान्यकुब्जों पर ही प्रहार करते हैं-“कान्यकुब्ज कुल कुलंगार.....”

इस रूप में वे समाज की वास्तविकता से भलीभाँति परिचित हो चुके थे । अपने समूचे साहित्य में उन्होंने दहेज, विवाह, ऊँच-नीच का भेद-भाव आदि पर कुठाराघात करते हुए लघुमानव की प्रतिष्ठा की । उनके चाहे सामाजिक उपन्यास हों, चाहे पौराणिक और इसी प्रकार की स्थिति कहानियों में भी है कि वे चाहे जिस कोटि की हों, सभी में लघुमानव को प्रस्थापित किया है । इसी भाव-भूमि पर प्रस्तुत अध्ययन को पूरा करने का यत्न किया गया है ।

अध्याय द्वितीय में निराला के कथा-साहित्य को विषयानुसार वर्गीकृत किया गया है । उनकी पूरी कहानियों को लिया गया है । प्रत्येक कहानी में चित्रित लघुमानव को विवेचित करने का यत्न किया गया है ।

अध्याय तृतीय में लघुमानव की अवधारणा और निराला की लघुमानव परक सोच को स्पष्ट किया गया है ।

मानव के पूर्व लगा हुआ लघु विशेषण जो लघुमानव का अर्थ देता है—उस कोशीय अर्थ से साहित्य में प्रयुक्त लघुमानव की संकल्पना एकदम भिन्न है लघु विशेषण उसी लघुता का अर्थ देता है किन्तु साहित्य में लघुमानव की अवधारणा कुछ और ही है। साहित्य में लघु मानव से तात्पर्य ऐसे छोटे-छोटे चरित्रों से है जो समय-समय पर अपने कतिपय छोटे-छोटे कार्यों द्वारा समाज में नई चेतना जाग्रत कर देते हैं। उनके पास अपना छोटा सा परिवेश होता है, छोटा सा उनका इतिहास होता है और भूगोल भी। उनकी ऐतिहासिक अस्मिता और सांस्कृतिक पहिचान भी छोटी होती है फिर भी उनकी चेतना जब जाग्रत होती है तो वे कुछ ऐसा कार्य कर जाते हैं जो स्मारक बन जाता है। इस संदर्भ की विशेष चर्चा अध्याय चतुर्थ में की गई है।

अध्याय चतुर्थ में कहानियों में प्राप्त होने वाले लघुमानव के स्वरूप पर विश्लेषण किया गया है। निराला की तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुई हैं — 1. लिली, 2. चतुरी चमार, 3. सुकुल की बीवी/ इन कहानियों में आगत लघुमानव का स्वरूप बहुआयामी है। वह इस अर्थ में कि उपन्यास की तुलना में कहानियों में आगत पात्रों का तेवर अधिक उग्र दिखाई पड़ता है। उपन्यास में जहां पात्र बिखरे हुए सन्दर्भों में आते हैं वहां कहानियों में, पात्र का कथाफलक सीमित होने के कारण अधिक सघन है। लघु मानव की अवधारणा को लेकर वे एक विराट यात्रा पर निकलते हैं और उस यात्रा में उनके मुख्यतः दो पड़ाव हैं—एक है उपन्यास साहित्य दूसरा है कहानियाँ। इसकी विस्तार से चर्चा अध्याय पंचम में की गई है।

अध्याय पंचम में निराला के पौराणिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। पुराणों के संदर्भ में कहा जाता है कि 'पुराणमित्तेव न साधुसर्व' अर्थात् पुराणों में जो कुछ भी प्राप्त होता है वह सब अच्छा ही है, ऐसा नहीं है। इससे यह ध्वनित होता है कि पुराण में जो समाज सापेक्ष है, जो जीवन को उर्जस्वित बनाने वाला तथ्य है उसको निराला ने सामने रख कर कथा-संसार की रचना

की । निराला ने यह सिद्ध कर दिखाया कि वास्तव में बड़ा वह नहीं है जो अधिक धनवान है अपितु बड़ा वह है जिसका हृदय विशाल है ।

अध्याय षष्ठम में सामाजिक उपन्यासों के अन्तर्गत लघुमानव को चित्रित किया गया है इसमें अप्सरा, अलका, निरुपमा, चोटी की पकड़, काले कारनामों, और अधूरा उपन्यास चमेली, बिल्लेसुर बकरिहा, कुल्ली भाट को आधार बनाया गया है ।

अध्याय सप्तम में उपसहार के अंतर्गत पूरे प्रबंध और कथ्य एवं सत्य को रेखांकित किया गया है ।

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की इस अवधारणाओं पर यह प्रबंध अपना आकार ग्रहण कर सका है यद्यपि यह विषय मूलतः हिन्दी साहित्य से ही संबंध रखता है किन्तु फिर भी मुख्य विषय पौराणिक संदर्भों से भी जुड़ा हुआ है जिसकी चर्चा प्रबंध में यथास्थान की गई है । इस पूरे विश्लेषण में वैदिक विश्वविद्यालय के निम्नलिखित ज्ञान बिन्दुओं को विश्लेषित किया गया है ।

1. पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति करना ।
2. पूर्ण ज्ञान का आधार वेदों को स्वीकार करना ।
3. प्रत्येक व्यक्ति को वेद की अभिव्यक्ति मानना ।
4. पूर्ण ज्ञान के लिए अपने को जानना ।
5. पूर्ण ज्ञान में बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं ।
6. शरीर में वेद समाहित हैं ।
7. वेद को अपनी आत्मा में अनुभव करके आदर्श जीवन निर्माण ।
8. वेद विज्ञानवान पूर्ण जीवन ।
9. वैदिक एवं लौकिक पूर्णता प्रदायक शिक्षा आदि ।

उपर्युक्त सभी बिन्दु वैदिक शिक्षा एवं मानव कल्याण से जुड़े हुए बिन्दु हैं

जैसा कि वैदिक विश्वविद्यालय में यह स्वीकार किया गया है कि "क्षिप्रं भवति धर्मात्मा" (भगवद्गीता 9/31) इसी प्रकार के अनेक सत्क्रांतिकारी प्रकाश लेकर महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय का शिक्षा के क्षेत्र में जो पदार्पण हुआ है और उसकी जो मूल धारणा है उसी को केन्द्र में रख कर इस प्रबंध को लघु मानव के रूप में आकार देने का यत्न किया है ।

अध्याय-द्वितीय

विद्यालय का काम - साहित्य का विधानानुसार स्वीकरण

कक्षाओं के अन्तर्गत

सामान्य के अन्तर्गत 1. सामान्य

2. वैयक्तिक

निराला का कथा – साहित्य

2.1 कथालेख संग्रह

2.1.1 लिखी

2.1.2 पद्य

2.1.3 सुकृत की सीरी

2.2 उपन्यास

2.2.1 उपन्यास

2.2.2 उपन्यास

2.2.3 उपन्यास

अध्याय-द्वितीय

निराला का कथा – साहित्य का विषयानुसार वर्गीकरण
कहानी के अन्तर्गत

उपन्यास के अंतर्गत 1. सामाजिक

2. पौराणिक

2.2.3 उपन्यास

2.2.4 उपन्यास

2.2.5 उपन्यास

2.3 निराला के पौराणिक उपन्यास

2.3.1 उपन्यास

2.3.2 उपन्यास

2.3.3 उपन्यास

2.3.4 उपन्यास

भारतीय-साहित्य

संस्कृत साहित्यकी एक कक्षा - एक एक छात्र

संस्कृत के शिक्षक

कक्षागत . 1 संस्कृत के छात्र

कक्षागत . 2

निराला का कथा – साहित्य

2.1 कहानी संग्रह

- 2.1.1 लिली
- 2.1.2 सखी
- 2.1.3 सुकुल की बीवी

2.2 उपन्यास

- 2.2.1 अप्सरा
- 2.2.2 अलका
- 2.2.3 प्रभावती
- 2.2.4 निरुपमा
- 2.2.5 चोटी की पकड़
- 2.2.6 काले कारनामों
- 2.2.7 चमेली
- 2.2.8 इन्दुलेखा
- 2.2.9 कुल्लीभाट
- 2.2.10 बिल्लेसुर बकरिहा

2.3 निराला के पौराणिक उपन्यास

- 2.3.1 भक्त ध्रुव
- 2.3.2 भक्त प्रह्लाद
- 2.3.3 भीष्म
- 2.3.4 महाभारत

निर्देशिका - भाग एक

अध्याय १

१.१	अध्याय १
१.२	अध्याय २
१.३	अध्याय ३

अध्याय २

२.१	अध्याय ४
२.२	अध्याय ५
२.३	अध्याय ६
२.४	अध्याय ७
२.५	अध्याय ८
२.६	अध्याय ९
२.७	अध्याय १०
२.८	अध्याय ११
२.९	अध्याय १२
२.१०	अध्याय १३

अध्याय ३

३.१	अध्याय १४
३.२	अध्याय १५
३.३	अध्याय १६
३.४	अध्याय १७

अध्याय-द्वितीय

2.1 कहानी संग्रह:-

हिन्दी गद्य-साहित्य की अन्य विधाओं की तरह हिन्दी कहानी का विकास आधुनिक काल में माना गया है । कहानी के उद्भव का श्रेय तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं को है । 'सरस्वती' में सन् 1900 में प्रकाशित किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इन्दुमती' को प्रथम मौलिक कहानी कहा जाता है । एक दशक के अन्तराल में बंग महिला की कहानी 'दुलाईबाली', सरस्वती में, 1907 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय', सरस्वती में, 1903 माधवराव सप्रे की 'टोकरी भर मिट्टी' आदि कहानियाँ प्रकाशित हुईं । कहानी कला और साहित्यिक दृष्टि से ये कहानियाँ मौलिक हैं । चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की कहानियाँ परिमाण में भले ही तीन रही हों किन्तु शैलीगत वैशिष्ट्य के कारण ख्यात हुईं । प्रसाद और प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को अभिनय दृष्टि और दिशा ही नहीं, समृद्धि भी प्रदान की । वस्तुतः हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि की निश्चित प्रतिष्ठा इन्हीं के द्वारा हुई ।

निस्संदेह प्रसाद और प्रेमचन्द हिन्दी कहानी के इतिहास निर्माता हैं । इन्होंने युगीन लेखकों के सम्मुख कथ्य और शैली के आदर्श प्रस्तुत कर सार्थक कहानी लेखन के लिए प्रेरित किया । प्रेम, श्रृंगार, करुणा, त्याग, भावुकता और मानवीय संवेदना से ओतप्रोत कहानियाँ प्रकाशित होने से कहानी के विकास की धारा वेगवती हुई ।

प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र गवई-गाँव के किसान मजदूर हैं । जमींदारों, अंग्रेजों और सेठ साहूकारों से त्रस्त दीन-हीन किसानों की मूक वेदना कराहें और आहें उनकी कहानियों में मुखरित हुई हैं । शोषित और उपेक्षित नारी की दयनीय दशा का चित्रण भी उनकी कहानियों में हुआ है । उनके प्रभाव-वृत्त के कहानीकारों में वृन्दावनलाल वर्मा, भगवती प्रसाद बाजपेयी, विश्वम्भरनाथ कौशिक, आदि प्रमुख हैं ।

कहानी के क्षेत्र में निराला का पदार्पण 'मतवाला' में सन् 1922 में प्रकाशित 'क्या देखा' कहानी के साथ होता है ।

'निराला' की सम्पूर्ण कहानियाँ सामाजिक हैं । प्रसंगवश उनमें राजनीति, धर्म, दर्शन आदि की भी चर्चा मिलती है । यदि स्थूल दृष्टि से देखें तो उनकी अधिकांश कहानियों में विधवा, अछूतों, वेश्याओं के उद्धार और तरुणवर्ग के असंयमित एवं अनियन्त्रित मनोवृत्तियों का अंकन है । इस प्रकार तद्युगीन समाज की लगभग सभी महत्वपूर्ण समस्याओं को निराला ने अपनी कहानियों का वर्ण्य-विषय बनाया है ।

निराला की प्रत्येक कहानी विचारोत्तेजक है । समाज और धर्म की रूढ़ियों, शोषण और स्वतंत्र विकास को अवरुद्ध करने वाली परम्पराओं का निराला ने स्पष्ट विरोध किया है । इन सब की निराला को गहन अनुभूति थी इसलिए उनका चित्रण बड़ा मर्मस्पर्शी और प्रभावशाली बन गया है ।

निराला ने अपनी कहानियों में नितान्त मौलिकता प्रदर्शित की है । निराला के अधिकांश पात्र बुद्धिजीवी, किसानवर्ग, निम्नवर्ग, नारी समाज एवं मध्यवर्ग आदि के अवश्य हैं, उनमें वर्गगत वैशिष्ट्य अवश्य है किन्तु उनकी वैयक्तिकता उसके द्वारा नष्ट नहीं हुई । वस्तुतः निराला के पात्रों में व्यक्तिगत विशेषताओं और वर्गगत गुणों का सामंजस्य है ।

निराला की कहानियाँ युग सत्य की परिचायक हैं । उनकी प्रत्येक कहानी तत्कालीन वातावरण का यथार्थ चित्र और तत्कालीन समस्याएँ लेकर चली हैं । किसी में समाज के प्रचलित रूढ़िग्रस्त मान्यताओं पर प्रहार है, किसी में वैयक्तिक भावनाओं का आलोड़न-विलोड़न है, किसी में वर्ग विशेष के प्रति संवेदना है । वस्तुतः निराला की कहानियाँ उनके विचार और भावनाओं का परिणाम हैं ।

निराला की समस्त कहानियों का मूल स्वर क्रान्ति और विद्रोह का वाहक है इसीलिए उनकी कहानियों का व्यंग्य कहीं-कहीं बड़ा तीखा हो गया है । रूढ़िग्रस्त पुरानी

मान्यताएं निराला को अमान्य हैं । उनका कथन है कि रूढ़ियाँ और पुराने विचार आज के युग की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते इसलिए इसमें परिवर्तन आवश्यक है । हमें समाज की सड़ी गली मान्यताओं की अवमानना करनी होगी । उसकी श्रृंखलाओं को तोड़ना होगा, कुरीतियों को समूल उखाड़ फेंकना होगा, तभी समाज का सम्यक् विकास संभव है ।

निराला की प्रत्येक कहानी हमें आत्मशक्ति और अदम्य उत्साह प्रदान करती है । निराला के कृतित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने उपेक्षितों में उच्च मानवीय गुणों की विभूतियाँ देखी हैं ।

निराला की कहानियों में विकास की प्रक्रिया परिपुष्ट हो उनकी कहानियों का विकास वहीं स्थगित हो जाता है जहाँ उनकी चरम सीमा आ जाती है । निराला की कहानियों की चरम सीमा वहीं आती है जब कहानी में व्याप्त कौतूहल और जिज्ञासा की तुष्टि और परिसमाप्ति हो जाती है और फिर वहीं कहानी का अंत हो जाता है ।

निराला के कहानी साहित्य के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने भाव तथा विषय को अधिक महत्व दिया है शिल्प को कम । उन्होंने जो कुछ कहानी रचना की है वह अत्यन्त सरल एवं सीधे-साधे ढंग से की है और उसके द्वारा उनकी कहानियों में जो कुछ शिल्पगत सौंदर्य आ गया है वह अनायास का आया हुआ है । उन्होंने अनुभूति की अभिव्यक्ति पर अधिक से अधिक ध्यान दिया और उसमें वे अद्भुत रूप से सफल हुए हैं ।

निराला की कहानियों की भाषा सरल, सुबोध, सर्वग्राह्य और स्वाभाविक है । उनकी भाषा शैली उनके पात्रों के भाव और अनुभूतियों का अनुगमन करती है । निराला की भाषा बड़ी सजीव और चित्रात्मक है ।

निराला की कहानियों के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए डा. भागीरथ मिश्र ने लिखा है कि 'वर्तमान जीवन की युगीन समस्याएँ इनमें इस प्रकार

प्रतिबिम्बित हुई हैं कि कहानी की कथ्य कला की सर्वाधिक श्रीवृद्धि करता है । लेखक का प्रारम्भिक प्रयास इस स्तर पर आकर परिमार्जित हो गया है । युग की चिन्ता की छाप इन कहानियों पर स्पष्ट है... प्रत्येक कहानी प्रायः किसी विषय या समस्या का अर्थ वहन करती हुई आई है । लेखक ने जन-जीवन से संबंधित अनेक समस्याएँ उठायी हैं, जैसे-स्वच्छन्द अनियन्त्रित प्रेम, शोषित तथा विपन्न वर्ग का असंतोष, युग जीवन की विद्रोह भावना, हासोन्मुख, समाज का नग्न रूप और मनोरंजन पूर्ण कथा कौतुक के साथ उन्मुक्त चिन्तन एवं गतिशील विचार तरंग । ये मनोभाव पूर्ण उद्रेक के साथ यहां चित्रित हुए हैं ।¹

निराला की कुल कहानियों की संख्या 21 हैं ।

1. लिली (1930)

लिली में 8 (आठ) कहानियाँ संग्रहीत हैं

2. 'चतुरी-चमार' (1934)

'चतुरी चमार' कहानी संग्रह में 8 (आठ) कहानियाँ संग्रहीत हैं ।

3. 'सुकुल की बीवी कहानी संग्रह में 4 (चार) कहानियाँ संग्रहीत हैं । इनके अतिरिक्त निराला की एक कहानी 'नई कहानियाँ' पत्रिका के दीपावली विशेषांक (1961) में 'दो दाने' नाम से प्रकाशित हुई थी ।

इन कहानियों में निराला ने लघु मानव के स्वरूप को विविध रूपों में व्यक्त किया है । इसका विवेचन आगे के स्वतंत्र अध्यायों में किया जाएगा ।

1. निराला का गद्य - डॉ. भागीरथ मिश्र, पृष्ठ-41

लिली :-

कहानीकार 'निराला' की 'लिली' कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ संग्रहीत हैं वे इस प्रकार हैं :-

1. पद्मा और लिली
2. ज्योतिर्मयी
3. कमला
4. श्यामा
5. अर्थ
6. प्रेमिका परिचय
7. परिवर्तन
8. हिरनी

'लिली', निराला जी का प्रथम कहानी संग्रह है । यह कथा संग्रह सन् 1933 में प्रकाशित हुआ था । 'लिली' कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ प्रेम और विवाह से संबंधित कहानियाँ हैं और अधिकांश कान्यकुब्ज समाज की वैवाहिक सीमाओं पर कुठाराघात करती हैं ।

निराला जी ने 'लिली' संग्रह के प्रति अपने आत्मविश्वास को प्रकट करते हुए कहा है- " यह कथानक-साहित्य में मेरा पहला प्रयास है । गुझरो पहले वाले हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी लेखक इस कला को किस दूर उत्कर्ष तक पहुँचा चुके हैं, मैं पूरे मनोयोग से समझने का प्रयत्न करके भी नहीं समझ सका । समझता तो शायद उनसे पर्याप्त शक्ति प्राप्त कर लेता और पतन के भय से इतना न घबराता । अतः अब मेरा विश्वास केवल 'लिली' पर है जो यथा स्वभाव अधखिली रहकर अधिक सुगन्ध देती है "।

— विपरीत
— विपरीत

— विपरीत

विपरीत	१
विपरीत	२
विपरीत	३
विपरीत	४
विपरीत	५
विपरीत	६
विपरीत	७
विपरीत	८

— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत

— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत
— विपरीत

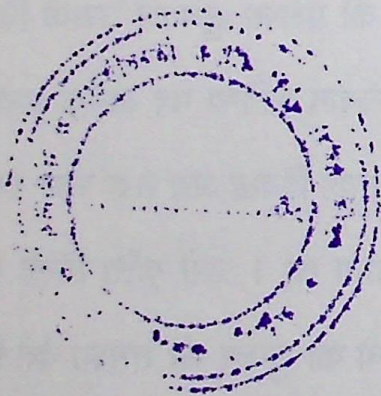
पद्मा और लिली :-

‘पद्मा और लिली’ कहानी में निराला ने पद्मा और राजेन्द्र के माध्यम से प्रेम समर्पित जीवन का दर्शन कराया है । कहानीकार ने अन्तर्जातीय विवाह बन्धन की समस्या को दर्शाया है । सामाजिक अतिचार, जातिवाद पर सूक्ष्म व्यंग्य है ।

भारतवर्ष के शहरी जीवन में पलने वाले अभिजात्य वर्ग के दो पात्रों पद्मा और राजेन्द्र की प्रणय कथा में लेखक ने इस कहानी की रचना की है और इसके माध्यम से जातिवादी और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों पर प्रहार किया है ।

कथाकार ने कहानी का आरंभ सौन्दर्यबोध का समाज मनोवैज्ञानिक रूप से वर्णन करते हुए आरंभ में ही लिखा है – ‘पद्मा की चन्द्रमुख पर षोडश की शुभ चन्द्रिका अम्लान खिल रही है, एकांत कुंज की कली सी प्रणय के वासंती मलय स्पर्श से हिल उठी, विकास के लिए व्याकुल हो रही है । पद्मा की प्रशंसा सुनकर उसके पिता ऑनरेरी मजिस्ट्रेट पंडित रामेश्वर जी शुक्ल उससे उज्ज्वल भविष्य पर अनेक प्रकार की कल्पनाएँ किया करते हैं । योग्य वर के अभाव से उसका विवाह अब तक रोक रखा है । मैट्रिक परीक्षा में पद्मा का सूबे में पहला स्थान आया था । उसे वृत्ति मिली थी योग्य वर न मिलने के कारण विवाह रुका हुआ है । पत्नी को शुक्ल जी समझा देते हैं । ‘‘साल भर से कन्या को देखकर माता भविष्य – शंका से काँप उठती है ।’’

स्वतंत्र प्रगतिशील विचारों युक्त पद्मा काशी विश्वविद्यालय की छात्रा है । वहीं जज के लड़के राजेन्द्र जो कि पद्मा से पढ़ाई और उम्र में तीन वर्ष आगे हैं, से पद्मा प्रेमासक्त हैं । राजेन्द्र पद्मा से मिलने घर आता है । पद्मा की माता तो पहले ही पद्मा की स्वच्छन्दता से चिन्तित हैं । रूढ़िवादी विचारों से ग्रसित पद्मा के माता-पिता को राजेन्द्र से मिलना जुलना पसन्द नहीं है । पद्मा के पिता एक नौकर को



छिपकर उन दोनों की एकान्त वार्ता सुनने के लिए लगा देते हैं । उसके पिता उसके चरित्र के विषय में सशंकित हैं । किन्तु पद्मा निर्भीक भाव से उनका खण्डन करती हैं । वह विवाह बन्धन का तिरस्कार कर उँची शिक्षा प्राप्त करने का संकल्प लेती है । इसी बीच पद्मा के पिता का देहान्त हो जाता है । मृत्यु के पूर्व स्वलिखित पत्र में वे पद्मा को अन्तर्जातीय विवाह न करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध करा जाते हैं ।

पत्र का विवरण :- 'मैंने तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूरी की हैं, पर अभी तक मेरी एक भी इच्छा तुमने पूरी नहीं की । शायद मेरा शरीर न रहे, तुम मेरी सिर्फ एक बात मानकर चलो—राजेन्द्र या किसी अपर जाति से विवाह न करना । बस । ''

इस घटना से पद्मा में बदलाव आ जाता है । लेखक के शब्दों में — 'इसके बाद से पद्मा के जीवन में आश्चर्यचकित परिवर्तन हो गया । जीवन की धारा ही पलट गई । जिस जाति के विचार ने उसके पिता को इतना दुर्बल कर दिया था, उसी जाति की बालिकाओं को अपने ढंग पर शिक्षित कर अपने आदर्श पर जाति के पिता की दुर्बलता से प्रतिशोध लेने का उसने निश्चय कर लिया

राजेन्द्र विलायत से बैरिस्टर होकर लौटता है किन्तु वह बैरिस्टरी न करके देश-सेवा का संकल्प लेता है । राजेन्द्र से मिलने पर पद्मा राजेन्द्र से विवाह के विषय में पूछती है राजेन्द्र उत्तर में हाँ कह देता है । पद्मा इस उत्तर से खिन्न होकर पुनः पूछती है 'किसके साथ ' राजेन्द्र उत्तर में कहता है 'लिली के साथ' इस पर पद्मा की आँखें भर आई । राजेन्द्र ने हँसकर कहा—यही तुम अंग्रेजी की एम.ए. हो ? लिली के मानी''?

अन्ततः नायक नायिका अविवाहित रह जाते हैं ।

'पद्मा और लिली' के नायक—नायिका अपने प्रणय का उद्घाटन समाज

1. लिली — पद्मा और लिली निराला, पृष्ठ-21

2. लिली — पद्मा और लिली निराला, पृष्ठ-21

के सम्मुख, बिना किसी हिचक और हीनता की भावना से करते हैं। नायिका पद्मा तो अपने माँ बाप के सम्मुख प्रेम और प्यार की व्याख्या तक करती है। माता-पिता की धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों के फलस्वरूप नायक-नायिका वैवाहिक सुख शांति को तिलांजलि दे देते हैं किन्तु प्रेम की बलि नहीं देते। आजीवन अविवाहित रहकर वे अपने पवित्र प्रेम की रक्षा करते हैं। पद्मा समाज से अपने पिता वाली दुर्बलता निकालने के लिए बालिकाओं को अपने ढंग से स्वतंत्र आत्मप्रकाशन और आत्मविश्वास की शिक्षा देती है। यही उसका अपने पिता से, या प्रकारान्तर से समाज से प्रतिशोध लेने का एकमात्र मार्ग है। अतः निराला जी ने अपने पात्रों में उन्मुक्त प्रेम को निभा सकने का अर्थ बल दिया है।

ज्योतिर्मयी :-

‘ज्योतिर्मयी’ कहानी विधवा विवाह की समस्या पर आधारित है। तत्कालीन समाज में विधवाओं की दयनीय दशा थी। बिरले युवक ही उनके उद्धार का साहस सहेज पाते थे। कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न और एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त विजयकुमार अपने बड़े भाई की ससुराल जाता है। वहाँ सत्रह वर्षीया रूप की चन्द्रिका युवती उसके भाई की विधवा साली ‘ज्योतिर्मयी’ उसके प्रति अनुरक्त होती है। बातचीत के दौरान विजय उसे पतिव्रत धर्म का पाठ पढ़ाता है। इस पर ज्योति प्रतिवाद करती हुई कहती है – “चूँकि आप ही लोगों ने, आप ही के बनाए हुए शास्त्रों ने जो हमारे प्रतिकूल हैं, हमें जबरन गुलाम बना रखा है।”¹ विजय पुनः समझाने लगता है— “पतिव्रता पत्नी तमाम जीवन तपस्या करने के पश्चात् परलोक में अपने पति से मिलती हैं।”² ज्योति विरोध करती हुई कहती है कि यदि पहले ब्याही स्त्री इसी तरह स्वर्ग में अपने पूज्यपाद पति-देवता की प्रतीक्षा करती हो और पतिदेव क्रमशः दूसरी, तीसरी, चौथी पत्नियों को

1. लिली – ज्योतिर्मयी निराला, पृष्ठ-23

2. लिली – ज्योतिर्मयी निराला, पृष्ठ-23



मार मारकर प्रतीक्षार्थ स्वर्ग भेजते रहें, तो स्वयं मरकर किस पत्नी के पास पहुँचेंगे ।
विजय निरुत्तर रह जाता है ।

ज्योति अपने वैधव्य की व्यथा व्यक्त करती हुई कहती है—“बारह साल में विवाह कर दिया गया । ससुराल गई नहीं, पति को देखा नहीं और विधवा हो गई । विजय की सहानुभूति पाने के उद्देश्य से जब वह विजय से कहती है कि यदि उससे कोई विधवा विवाह के लिए कहे तो वह क्या करेगा? विजय भीरुता दर्शाता हुआ कहता है कि यह तो पिता के हाथ की बात है । यह कहने पर कि यदि आप स्वयं मालिक होते तो ? विजय सकुचाता हुआ कहता है—“मुझे विधवा विवाह करते हुए लाज लगती है।”¹ विजय के दूसरे दिन घर लौटने पर ज्योति उसे पत्र देते हुए जल्द दर्शन के लिए प्रार्थना करती है । विजय पत्र पढ़कर द्रवित होता है । वह अपने मित्र वीरेन्द्र से पत्र की चर्चा करता है । वीरेन्द्र विजय को विवाह के लिए प्रोत्साहित करता है, वह समझाता है—“नष्ट होते हुए एक समाज-क्लिष्ट जीवन का उद्धार तुम नहीं कर सकते विजय तुम्हारी शिक्षा क्या तुम्हें पुरानी राह का सीधा-साधा एक लद्दू बैल करने के लिए हुई है ?”² बार-बार वीरेन्द्र प्रेरित करता है —

“तुम उस पावन मूर्ति अबला का जिसने तुम्हें बढ़कर प्यार किया, मित्र समझकर गुप्त हृदय की व्यथा प्रकट कर दी, उस देवी का समाज के पंक से उद्धार नहीं कर सकते ।”³ विजय असमर्थता प्रकट करते हुए कहता है कि पिता से उसका कुछ बस नहीं, उसके प्रतिकूल वह आचरण न कर सकेगा । वह स्वीकार करता है कि उसका हृदय अवश्य ही ज्योति ने छीन लिया है, पर शरीर पिता का है । इस प्रकार विधवा विवाह का साहस नहीं जुटा पाता ।

-
1. लिली – ज्योतिर्मयी निराला, पृष्ठ-25
 2. लिली – ज्योतिर्मयी निराला, पृष्ठ-27
 3. लिली – ज्योतिर्मयी निराला, पृष्ठ-28

वीरेन्द्र इस पुनीत कार्य को संपादित करने का मन ही मन संकल्प लेता है। विजय के पिता दहेज लोलुप हैं। विजय के विवाह के लिए तीन हजार तक के प्रस्ताव आए थे। पिता की लालसा अधिक की थी। वीरेन्द्र इटावा जाकर अपने मैनेजर सत्यनारायण शर्मा को ज्योति के कल्पित पिता के रूप में दस हजार रुपया दहेज देकर ज्योति का विजय से विवाह करा देता है। विवाह मुरादाबाद में सम्पन्न होता है। ट्रेन में विजय नववधू का मुख देखने को उतावला हो उठता है। अवगुंठन उठाने पर ज्योति को पाकर आश्चर्यचकित रह जाता है। विजय को देखकर और उसकी कायरता का स्मरण करते हुए ज्योति को ग्लानि हुई। उसका मन विजय को धिक्कार उठा। उसे लगा कि इससे तो उसका वैधव्य शतगुण, सहस्रगुण अच्छा था। वह वहाँ कितनी मधुर-मधुर कल्पनाओं में पल रही थी। आत्मा से वीरेन्द्र को सराह रही थी। एक है सिंह पुरुष वीरेन्द्र और दूसरी ओर है शृगालवत आचरण करने वाला विजय। विजय के यह पूछने पर कि तुम वहाँ कैसे गई ज्योति तपाक से उत्तर देती है वीरेन्द्र से पूँछना और वीरेन्द्र फिर विजय से नहीं मिला। 'ज्योतिर्मयी' कहानी की नायिका ज्योतिर्मयी का चरित्र सामाजिक उत्पीड़न की शिकार बाल विधवा का करुण चित्र उपस्थित करता है उसके विचारों में विद्रोह की जो अग्नि प्रज्ज्वलित दिखाई देती है वह प्रकारान्तर से विधवा नारी के प्रति रूढ़िवादी समाज के रवैये से खिन्न निराला के मन का ही विद्रोह है निराला जी ने कनौजिया ब्राह्मणों द्वारा वर पक्का करते समय की सौदेबाजी का आकर्षक विवरण दिया है जो कहानी को जीवंत बना देता है।

वैधव्य समाज के द्वारा नारी पर आरोपित किया गया वह रिश्ता है जिसे वह तमाम उम्र ढोती है। जीवित व्यक्ति का रिश्ता (मृतात्मा) मृत से जीवित की तरह बना दिया जाता है। इस तरह के संबंध बोध को पुरुष ने कभी स्वीकार नहीं किया। परन्तु परम्पराओं ने स्त्री के माथे पर यह रिश्ता भाग्य के आलेख के नाम कर दिया। इस संसार से जो चला जाता है वह फिर दीवाल पर लटकी तस्वीर की भाँति सीमित स्मृतियों में रह जाता है। उसका कोई वजूद नहीं होता। पर विधवा के जीवन में पल पल उसके

पति के पूर्व अस्तित्व की दुहाई देकर शेष जीवन को मृतात्मा के साथ स्मृति संबंधों के सहारे जीने पर विवश किया जाता है । आखिर इस विसंगति को तोड़ा तो जाना ही चाहिए और जिसे लेखक ने कहानी के माध्यम से उकेरा है ।

इसी तरह दहेज-स्त्रीत्व की स्थापना में एक विषय रूढ़ि के रूप में समाज की खोखली मान्यताओं की दुहाई देती प्रथा है । विवाह एक प्राकृतिक माँग है- पर दहेज विवाह को बोझिल और कष्ट कारक बनाने की प्रथा है । इससे जन्म लेते हैं अनमेल विवाह, अभिशप्त परिवार, लम्बे समय तक लड़कियों का अविवाहित रहना और समाज में लोकग्रस्त मानसिकता का प्रचलन । लेखक दहेज-प्रथा के स्वरूप में कान्यकुब्ज समाज की मानसिकता को दर्शाता है । लेखक ने पुरुष और स्त्री के वजूद में स्त्री का महत्व समाज में हीनता से ग्रसित पाया है । अतः स्त्री पात्रों के माध्यम से पुरुष के उस सामर्थ्यशाली रूपों को झकझोरा है । जिसे पुरुष ऊँचा बनने का दावा करता है । श्रेष्ठता का समाज में झंडा फहराना चाहता है परन्तु स्त्री अपनी लघु से लघुतम स्थिति में रहकर भी अपनी अस्मिता से पुरुष से श्रेष्ठतर होने की छाप दे जाती है प्रत्येक स्त्री पात्र अपनी सीमित परिस्थितियों में, उपेक्षित दशाओं में, अपने लघुपरिवेश में, अपने उत्कृष्ट गुणों को, विचारों को, विवेक को प्रयोग करके अनायास ही ऊँचाई को पा लेते हैं-जिसे पुरुष चाहकर भी पा नहीं सकता ।

कमला:-

‘कमला’ एक सामाजिक समस्या प्रधान कहानी है । ‘कमला’ कहानी में नायिका कमला का चरित्र एक आदर्श पवित्रता संयम एवं सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति तथा प्राचीन परम्पराओं और मान्यताओं को स्वीकार करने वाली एक ऐसी आदर्श भारतीय नारी का चरित्र है जो सामाजिक उत्पीड़न का शिकार होने के बावजूद टूटती या बिखरती नहीं है बल्कि अपने दृढ़ चरित्रबल एवं उदारता से पथ भ्रष्ट पति का भी उद्धार करती है ।

कमला को अपने वंश के ईष्यालु दुष्टों के कुचक्रों के कारण अपार कष्ट सहने पड़ते हैं। अन्ततः उसके पति को अपनी मूर्खता और अत्याचार के लिए कमला से क्षमा माँगनी पड़ती है। नियति चक्र बड़ा प्रबल होता है। कमला माँ के साथ रामपुर में रहती थी। उसके पिता पंडित रामेश्वर त्रिपाठी अहमदाबाद में कपड़े की दुकान करते थे। पिता के देहान्त के बाद वह उसकी माँ के साथ अहमदाबाद रह आया करती थी। पिता के देहान्त के बाद उसकी माँ ने कमला का विवाह शिक्षित युवक रमाशंकर बाजपेयी से कर दिया।

विवाह में कहीं कुछ सहायता न करना पड़े इसलिए कमला के भैयाचार पहले से ही बहाना खोजकर रुष्ट हो गये थे। उधर चूँकि कमला के पिता ने अपना विवाह भाई बंधुओं के परामर्श बिन दहेज रहित किया था। इससे भी तने बैठे थे। निर्धन और अनाथ पुत्री और पौत्री कहीं कुछ याचना न कर बैठें इसलिए कमला के ननिहाल वाले भी संबंध तोड़ बैठे थे।

कमला के विवाह में भैयाचार सम्मिलित नहीं हुए थे बल्कि कमला और माँ पर लांछन लगाने के उपाय सोच रखे थे। कमला विवाह के बाद प्रधानुसार विवा नहीं हुई थी। कमला के लिए "अभी पति केवल ध्यान का विषय है, ज्ञान का नहीं। अभी सिर्फ सुनती, सोचती और मन ही मन प्यार करती है।"¹ कमला के पति रमाशंकर विदा कराने ससुराल पहुँचते हैं। वहाँ उनका स्वागत सत्कार होता है। कमला की सखियाँ हास-परिहास करती हैं। माँ कमला को पति सेवा की शिक्षा देती पति कमला से प्रेमाभिभूत होकर कहते हैं— "तुम्हारे बिना मेरे जीवन का अर्थ ही क्या?"² भैयाचार अवसर की ताक में ही थे। वे कमला की ससुराल जा पहुँचते हैं और वहाँ कमला के ससुराल के लोगों को कमला के विरुद्ध निराधार लांछन लगाते हुए भड़का देते हैं। घर

1. लिली - कमला निराला, पृष्ठ-38

2. लिली - कमला निराला, पृष्ठ-43

वाले बगैर पुष्टि के ही रमाशंकर को बिना बिदा कराए लौटने का संदेश भेजते हैं । वह लौट आता है । कुछ ही दिनों में कमला और उसकी माँ को भैयाचारों की करतूतों का पता चल जाता है । निराधार आरोपों को सुनकर निर्दोष और निरपराध माता और पुत्री पर बजाघात सा होता है ।

अवकाश में कमला का भाई राजकिशोर गाँव में आता है । उसे ज्ञात होता है कि रमाशंकर ने दूसरा विवाह कर लिया है । माँ से यह दारुण-व्यथा सुनी नहीं गयी और उनका प्राणान्त हो जाता है ।

घटनाएँ ज्ञात होने पर कमला की मौसी उसे और भाई राजकिशोर को कानपुर ले जाती हैं । क्रोध और विषाद धीरे-धीरे शान्त होता गया और कमला आत्मलीन होती गयी—“अब उसे कोई इच्छा नहीं, उसके प्राणों में कोई रंग नहीं है केवल तपस्या, जिस पर एक हिन्दू महिला विश्वास की डोर पकड़े हुए अपना कुल जीवन निष्ठावर कर देती है ।”¹

कानपुर में मौसी के यहाँ वह सिलाई-कढ़ाई का काम करने लगी । कुछ पैसे आने लगे । हताश कमला अपने भाई और पति की कल्याण-कामना किया करती । निकट ही आर्य समाज का मंदिर था । आर्यसमाजी महिला वेदवती को कमला के परित्याग की बात ज्ञात होने पर वह उसे पति से प्रतिशोध लेने को प्रेरित करती है । साथ ही इस प्रकरण को ‘महिला’ पत्रिका में प्रकाशित करने को कहती है । इसे कमला स्वीकार नहीं करती है । रमाशंकर कानपुर में नौकरी करने लगे थे । वे अब अपनी नवविवाहिता पत्नी, पिता और बहिन के साथ यहीं रहने लगे थे । इसी समय कानपुर में हिन्दू, मुस्लिम झगड़ा हो जाता है । दोनों ओर से लूटपाट और आगजनी हुई । एक मुसलमान के घर दो हिन्दू युवतियाँ बरामद होती हैं । राजकिशोर हिन्दू दल में था । वह दोनों को अपने घर में शरण देता है । रमाशंकर और उस दंगे में घायल हुए लोग,

1. लिली – कमला निराला, पृष्ठ-48

अस्पताल में भर्ती करा दिए जाते हैं । कमला दोनों को भोजन कराती है । उधर राजकिशोर उनके पिता और पति की अस्पताल में देख-रेख करता रहता है । स्वस्थ होने पर रामचन्द्र (रामशंकर के पिता) राजकिशोर से पुत्री और पुत्रवधु के मुसलमान के घर से बरामद होने की बात किसी से न कहने का आग्रह करता है ।

उनके गाँव पहुँचने के पहले ही यह घटना गाँव वालों को ज्ञात हो जाती है । उन भैयाचारों ने जिन्होंने कमला के विरुद्ध रामचन्द्र को भड़काया था, अब रामचन्द्र को गाँव छोड़ने के लिए धमकाने लगे । वे धमकी देने लगे कि उन्हें अपनी संतानों के कामकाज करने हैं । फलतः वे गाँव छोड़कर पुनः कानपुर आ गए । उनके सामने जवान पुत्री के विवाह की समस्या थी । राजकिशोर में उन्हें आशा की किरणें दिखीं । उसने प्रार्थना की । राजकिशोर ने अभिभावक अपनी बहिन से बात करने को कहा ।

दूसरे दिन रामचन्द्र और रामशंकर पुत्री के विवाह का प्रस्ताव लेकर कमला के पास पहुँचते हैं । कमला सामने खड़ी हो गई । कमला तो सब कुछ जानती ही थी ।

रामशंकर ने कमला को देखते ही पहचान लिया और अपने पिता को बताया कि यह उसकी पूर्व पत्नी है । कमला ने उदारता का परिचय देते हुए यह कहकर स्वीकृति प्रदान की कि “आपकी इच्छा होगी तो ऐसी स्थिति में विवाह करने को तैयार हूँ क्योंकि आपको उठा लेना मेरा धर्म है ।”

श्यामा :-

निराला की कहानियों में ‘श्यामा’ एक मार्मिक कहानी है । कथानायक प्रगतिशीलता का परिचय देते हुए नीच जाति की युवती से विवाह कर लेता है, अपने अध्यवसाय से जमींदार को पराजित भी करता है ।

शिक्षक रामेश्वर प्रसाद अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् सरकारी भक्तों के यहाँ रामायण पढ़ाने लगते हैं । भक्तों को अपने पापों-रिश्तखोरी आदि से मुक्ति का यही उपाय सूझा । इन्हीं दिनों पंडित जी ने आठ सौ रुपये में मोल लेकर अठारहवर्षीय युवती से विवाह कर लिया । पंडित जी के एक पुत्र हैं – बंकिमचन्द्र और एक पुत्री सरला । नवें वर्ष में सरला का विवाह कर दिया । बंकिम पढ़ने में मंद था उसने वाममार्ग ग्रहण किया । बुरी आदतों के कारण पंडित जी ने उसे गाँव भेज दिया ।

गाँव में भाई बन्धु बंकिम को भोजन करा देते थे । माँ का निधन हो गया था । वह अपने आम के बाग में बैठकर प्रायः भावी जीवन के बारे में कल्पनाएँ किया करता । प्रकृति से उसे प्रेम हो गया था । बगीचे से आम बीनकर घर और गाँव के लोगों के चले जाने के बाद एक युवती वहाँ पहुँचती है । वह बंकिम से गिरे आम बीन लेने को कहती है । बंकिम उसे आम बीन लेने देता है । पूँछने पर वह अपने बाप का नाम सुधुआ लोध और अपना श्यामा बताती है । दूसरे दिन बाग की ओर जाते हुए बंकिम से अपने द्वार पर बैठे सुधुआ से भेंट हो जाती है । वह आमों की प्रशंसा करता है और अपनी दीन-हीन दशा जमींदार की ज्यादाती की बात कहता है – ‘महाराज, आठ रुपये बीघे के हिसाब से जमींदार दयाराम महाराज ने तीन बीघे खेत दिए थे । मैंने कई साल तक खेतों को खूब बनाया, खाद छोड़ी जब खेत कुछ देने लगे, तब पर साल इन्होंने बेदखल कर दिया ।’

खेत छूट गए । एक बैल था वह भी मर गया । सुधुआ की पत्नी का निधन हो गया । छप्पर तक छा न सका । दमा का रोग लग गया । विपत्ति पर विपत्ति । श्यामा दूसरों का अनाज पीसकर रोटियों की जुगाड़ करती । जमींदार का साढ़े सात उस पर अभी भी शेष है । बंकिम सुधुआ की करुण कहानी सुनता रहा । सहानुभूति में पुनः आम ले जाने के लिए श्यामा को भेज देने को कहता हुआ चला गया ।



देर तक श्यामा के न आने पर बंकिम धोती के छोर में आम भरकर सुधुआ के घर जा पहुँचता है । वहाँ बंकिम देखता है कि जमींदार के दो सिपाही सुधुआ के कान पकड़े हुए डेरे की ओर लिए जा रहे हैं । वहाँ पता चला कि सुधुआ पर साढ़े सात रुपये बाकी हैं । नगद रुपये पास न होने पर वह अपनी अंगूठी गिरवी रखकर सुधुआ को मुक्त कराता है । जमींदार के सिपाहियों की मार से वह अधमरा हो गया है । बंकिम और श्यामा मूर्च्छित सुधुआ की तीमारदारी में जुट गए ।

इसी अवसर पर पं. रामप्रसाद गाँव पहुँचते हैं । जमींदार उन्हें बंकिम के विरुद्ध भड़काने के उद्देश्य से श्यामा के घर ले जाता है । उत्तेजित पिता बंकिम को धिक्कारते हुए कि अब घर में उसके लिए स्थान नहीं, चले जाते हैं । सुधुआ स्वर्ग सिधार जाता है । श्यामा अपनी जाति वालों को पिता के निधन का समाचार दे आती है, किन्तु जमींदार दयाराम के आतंक से कोई नहीं आता ।

दोनों ने देर रात तक बिरादरी वालों की प्रतीक्षा की । अंत में निराश हो गये लाश वहीं गाड़ने का निश्चय किया । दोनों ने मिलकर गड़ढ़ा खोदा—“ पैरों की तरफ श्यामा ने पकड़ा, सिर की तरफ बंकिम ने । मौन कपोलों से बह-बह कर श्यामा के आँसू पिता के चरणों को धो रहे थे । दोनों ने लाश को नया कफन पहना, ढककर गड़ढ़े में रख दिया ।”¹

भली प्रकार मिट्टी डाल दी । बंकिम कानपुर जाने को तैयार होता है । श्यामा अब नितांत अकेली रह गई है । संसार में उसका अपना कोई नहीं । बाल विवाह हुआ । ससुराल में सभी समाप्त । शोकाकुल श्यामा फूट-फूटकर रोने लगती है । वह हाथ पकड़ कर बंकिम से साथ ले चलने को गिड़गिड़ाती है । ‘मुझे भी साथ ले चलो बाबू, तुम्हारे बर्तन मलकर दो रोटी खा लूंगी, यहाँ मैं नहीं रहना चाहती ।’²

1. लिली – श्यामा निराला, पृष्ठ-80

2. लिली – श्यामा निराला, पृष्ठ-81

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥
॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥

॥ ११ ॥
॥ १२ ॥
॥ १३ ॥
॥ १४ ॥
॥ १५ ॥
॥ १६ ॥
॥ १७ ॥
॥ १८ ॥
॥ १९ ॥
॥ २० ॥
॥ २१ ॥
॥ २२ ॥
॥ २३ ॥
॥ २४ ॥
॥ २५ ॥
॥ २६ ॥
॥ २७ ॥
॥ २८ ॥
॥ २९ ॥
॥ ३० ॥
॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥
॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥
॥ ३६ ॥
॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥
॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥
॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥

॥ १०१ ॥
॥ १०२ ॥
॥ १०३ ॥
॥ १०४ ॥
॥ १०५ ॥
॥ १०६ ॥
॥ १०७ ॥
॥ १०८ ॥
॥ १०९ ॥
॥ ११० ॥
॥ १११ ॥
॥ ११२ ॥
॥ ११३ ॥
॥ ११४ ॥
॥ ११५ ॥
॥ ११६ ॥
॥ ११७ ॥
॥ ११८ ॥
॥ ११९ ॥
॥ १२० ॥
॥ १२१ ॥
॥ १२२ ॥
॥ १२३ ॥
॥ १२४ ॥
॥ १२५ ॥
॥ १२६ ॥
॥ १२७ ॥
॥ १२८ ॥
॥ १२९ ॥
॥ १३० ॥
॥ १३१ ॥
॥ १३२ ॥
॥ १३३ ॥
॥ १३४ ॥
॥ १३५ ॥
॥ १३६ ॥
॥ १३७ ॥
॥ १३८ ॥
॥ १३९ ॥
॥ १४० ॥
॥ १४१ ॥
॥ १४२ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४४ ॥
॥ १४५ ॥
॥ १४६ ॥
॥ १४७ ॥
॥ १४८ ॥
॥ १४९ ॥
॥ १५० ॥
॥ १५१ ॥
॥ १५२ ॥
॥ १५३ ॥
॥ १५४ ॥
॥ १५५ ॥
॥ १५६ ॥
॥ १५७ ॥
॥ १५८ ॥
॥ १५९ ॥
॥ १६० ॥
॥ १६१ ॥
॥ १६२ ॥
॥ १६३ ॥
॥ १६४ ॥
॥ १६५ ॥
॥ १६६ ॥
॥ १६७ ॥
॥ १६८ ॥
॥ १६९ ॥
॥ १७० ॥
॥ १७१ ॥
॥ १७२ ॥
॥ १७३ ॥
॥ १७४ ॥
॥ १७५ ॥
॥ १७६ ॥
॥ १७७ ॥
॥ १७८ ॥
॥ १७९ ॥
॥ १८० ॥
॥ १८१ ॥
॥ १८२ ॥
॥ १८३ ॥
॥ १८४ ॥
॥ १८५ ॥
॥ १८६ ॥
॥ १८७ ॥
॥ १८८ ॥
॥ १८९ ॥
॥ १९० ॥
॥ १९१ ॥
॥ १९२ ॥
॥ १९३ ॥
॥ १९४ ॥
॥ १९५ ॥
॥ १९६ ॥
॥ १९७ ॥
॥ १९८ ॥
॥ १९९ ॥
॥ २०० ॥

बंकिम और श्यामा सदा के लिए गाँव छोड़ देते हैं । कानपुर आकर बंकिम आर्य समाज में मंत्री सत्यप्रकाश से मिलता है । वे नगर के प्रमुख समाज सेवी हैं । आर्य समाज में ही दोनों का विवाह करा देते हैं । आवास और भोजन की व्यवस्था हो जाती है । बंकिम का विद्यालय में प्रवेश करा दिया गया । वह तत्परता से पढ़ने लगा । श्यामा की शिक्षा की भी व्यवस्था हो गई ।

रामप्रसाद का देहांत होने पर जमींदार दयाराम ने उनके बाग और मकान पर कब्जा कर लिया । पुत्री सरला ने गाँव आकर पिता की संपत्ति पौत्र को देने की जमींदार से प्रार्थना की । दयाराम ने कुछ भी देने से मना कर दिया वह डिप्टी साहब से मिलने उनके आवास पर जाती है । उधर दयाराम रिश्वत के रूप में सौ रुपये की डाली लगवाकर डिप्टी साहब के बंगले पर पहुँचता है । डिप्टी साहब का नाम वेदस्वरूप है — पूर्व बंकिमचंद्र । देखते ही दयाराम को पहिचान जाते हैं । श्रीमती श्यामा कुमारी डाली समेत कान पकड़कर दयाराम जमींदार को बंगले से निकाल देने की आज्ञा देती है ।

अर्थ :-

श्रद्धा-भक्ति के अतिरेक में आर्त व्यक्ति का विवेक कभी-कभी भटक जाता है । “अर्थ” कहानी एक धर्मपरायण, संस्कारवान, बेरोजगार एवं भावुक युवक की जीवन गाथा है । जो भगवान राम को जीवन की सभी अपदाओं का निवारक मान लेता है । अपने अर्थ संकट के लिए अनेक प्रकार से प्रार्थना और अनुष्ठान करता है । लोगों के उपहास का पात्र बनता और अन्त में परिश्रम करता हुआ सफल होता है ।

राजकुमार कुलीन विप्रावंश का बालक है । घर में पूजा अर्चना देखकर भगवान पर उसे पूरा विश्वास हो गया । तुलसीकृत रामायण और सूरसागर का नियमित पाठ करता था । प्रवेशिका परीक्षा के बाद पिता ने विवाह कर दिया । पिता ने कालेज जाने का बहुत आग्रह किया । राजकुमार ने कहा कि ‘अंग्रेजी शिक्षा से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है’ और कालेज नहीं गया । माता का देहांत हो गया पिता की पेंशन से निर्वाह होता था ।

कुछ दिनों बाद उसका भी निधन हो गया । सजातियों ने कर्मकांड के नाम पर हजारों रुपया व्यय करा दिया और पीछे-पीछे उसकी खिल्ली उड़ा दी । अब उसकी पत्नी विभा के पास पैसा नहीं रह गया था ।

राजकुमार की पूजा और बढ़ चली । गाँव वाले उपहास करते - 'कैसा बेवकूफ है । पढ़ा लिखा है , कहीं नौकरी या रोजगार नहीं करता, रामायण लिये चार-चार घंटे मंदिर में बड़बड़ाया करता है । ' उसने पढ़ रखा था कि भरत जी का नाम जपने से अर्थ प्राप्ति होती है । जप किया, कुछ न मिला । पत्नी ने हँसी उड़ाई । उसे स्मरण हो आया की भगवान चित्रकूट में हैं, तुलसी को दर्शन हुए थे । भक्तों पर कृपा करते हैं । चित्रकूट के पते से रामजी को मनोकामना पूरी करने को प्रार्थना पत्र लिखा । पत्र वापस लौट आया । राजकुमार अर्धविक्षिप्त सा हो गया । पत्नी घर की विपन्नता देख मायके चली गई ।

अर्थ की खोज में राजकुमार घर से निकल पड़ा । कानपुर, लखनऊ और प्रयाग कई जगह गया, पर किसी ने न पूछा । सभी जगह उसे अपमानित होना पड़ा । उसने आशा नहीं छोड़ी । चित्रकूट जा पहुँचा । भक्तिभाव के आवेग में जो कुछ सामान और रुपया पैसा था उसे गंगा में फेंक दिया । राजकुमार कामदगिरि की परिक्रमा करने लगा । लोगों ने बताया कि पर्वत पर प्रभु का निवास है वे भक्तों की इच्छाएँ पूरी करते हैं । घोर अंधकार छाया था । वह पर्वत पर चढ़ने लगा । उसने वस्त्र उतार दिए - 'लो अब कुछ भी मेरे पास अपना कहने को नहीं है पानी बरसने पर वह रुक गया । रात्रि समाप्त होने को थी । उसे भय हुआ कि प्रातः लोग निर्वस्त्र देखकर पीटेंगे । उसने एक साधू से गमछा माँगा । उसके चोर-चोर कहकर चिल्लाने पर वह एक गाँव पहुँचा । विवश हो भिक्षाटन के लिए द्वार खटखटाने लगा । यहीं उसके एक पुराने मित्र ने उसे पहचान लिया । उसे वस्त्र दिए और भोजन कराया । राजकुमार ने अपने मित्र को अर्थ

प्राप्ति के लिए किए गए भक्तिभाव पूर्ण प्रयास बता दिए । मित्र ने उसे सान्त्वना दी और परिश्रम करने की राय दी । उस रात स्वप्न में राजकुमार ने देखा कि उसका वही मित्र सूर्य की तरह प्रकाशवान, श्यामलाभ, धनुर्धर साक्षात् रामचन्द्र है, हँसता हुआ कह रहा है, तुमने अर्थ के लिए बड़ा परिश्रम किया, मैंने तुम्हे दिया ।”¹

चित्रकूट से राजकुमार प्रयाग आये । यहाँ नौकरी तलाशना शुरू किया । ‘नवयुग’ प्रेस के मालिक ने कृपा पूर्वक उसे पत्र लिखने के काम पर रख लिया । यहाँ रहकर उसने एक उपन्यास लिखा । हाथों-हाथ बिका । अगले वर्ष तीन उपन्यास लिखे । उनकी बिक्री से हजारों रुपये मिले । ऋण चुका दिया और विद्या के साथ सुखपूर्वक जीवन यापन करने लगा । उसे अर्थ भले ही अपने पुरुषार्थ से उपलब्ध हुआ हो, किन्तु राजकुमार की धारणा यही है कि जो कुछ मिला भगवान की कृपा से मिला । उसके अनुसार तो —ईश्वर ही अर्थ है, वह जिस भक्त पर कृपा करते हैं । उसमें सूक्ष्म अर्थ बनकर रहते हैं , जिससे वह स्थूल अर्थ पैदा करता है ”²

इस कहानी में लेखक पुरुषार्थ पर बल देता है । यद्यपि राजकुमार की अन्ततोगत्वा ईश्वर में ही आस्था बनी रही किन्तु उसे अर्थ प्राप्ति कर्म करने पर ही हुई ।

प्रेमिका-परिचय:-

‘प्रेमिका-परिचय’ निराला जी की हास्य व्यंग्य प्रधान कहानी है । सम्पन्न परिवारों के युवकों में प्रेम-लोलुपता प्रायः रहती है । कहानी में इस प्रवृत्ति का मनोरंजक चित्रण हुआ है ।

प्रेमकुमार कैनिंग कालेज लखनऊ में बी. ए. का छात्र है । हॉस्टल में रहता है । शायरी का शौक है । लड़कियों के पीछे दीवाना रहता है और उन्हीं की रसभरी बातों में विशेष रुचि है । सहपाठियों के लिए मनोरंजन के विषय है । एक कक्षा में पाँच साल

1. लिली - अर्थ निराला, पृष्ठ-106

2. लिली - अर्थ निराला, पृष्ठ-107

तक फेल होने पर भी हिम्मत नहीं हारे । पुस्तकों से कोई प्रयोजन नहीं । धनीमानी घर के हैं तहजीब सीखने को लखनऊ भेजे गए । अक्सर चौक से चक्कर लगाते रहते ।¹ हॉस्टल में प्रेम-चर्चाओं में डूबे रहते । आज अमुक छात्रा ने बुलाया, शाम इस होटल में खाया, कल उस छात्रा से मिलना है, मिस फलॉ सुन्दर है । आदि विषयों की सरस बातें साथियों को सुनाया करते । अधिकांश समय साजश्रृंगार में बीत जाता । रंग रूप सुन्दर नहीं है किन्तु प्रसाधनों से सजाए रहते— 'बाल और चेहरे के रंग में बहुत थोड़ा सा फर्क है । तेल, साबुन, पाउडर और सेफ्टीरेजर की दैनिक रगड़ से मुँह का तो मैल छूट गया है, पर चमड़े का स्याह रंग वार्निशशुदा बूट की तरह और चमकीला हो गया है । काले रंग पर पाउडर की सफेदी देखने वालों की आँखों में गजब ढाती है''¹

हॉस्टल में पड़ोस के कमरे में शंकर रहता है । वह सीधा-साधा मेधावी छात्र है— 'सुयोग्य पुत्र पिता की ही तरह धर्म की रक्षा में जितना पटु, खर्च में उतना ही कटु है । पीछे पूँछ सी मोटी चोटी।''² प्रेम कुमार से प्रेम पगी बातें सुन-सुनकर शंकर ने भी किसी छात्रा को संबोधित करने का प्रयास किया किन्तु प्रथम झिड़की में सदैव के लिए संभल गए । प्रेम कुमार प्रायः मृदु मधुर प्रेम-प्रसंग छेड़कर अपने रंग में रंगने की कोशिश करता किन्तु संस्कारी और धर्मभीरु शंकर बदल न सका — 'तुम जरा यह ब्राह्मणों की पोंगापंथी छोड़ो, तो कुछ दिनों में तुम्हें आदमियों से मिलने लायक बना दूँ ।''³

प्रेम कुमार की सद्यः विवाहिता साली जो उसी कालेज में शोध छात्रा थी, ने प्रेम-ज्वर पीड़ित प्रेम कुमार को सबक सिखाने की योजना बनाई । पहले प्रेम पत्र में उसने श्रीमान जी के रूप की प्रशंसा करते हुए उन पर मोहित होने की बात कही और बनारसी बाग में मिलने को कहा लिखा । प्रेमकुमार ने शंकर को पत्र सुनाया,

-
1. लिली — प्रेमिका परिचय निराला, पृष्ठ-114
 2. लिली — प्रेमिका परिचय निराला, पृष्ठ-110
 3. लिली — प्रेमिका परिचय निराला, पृष्ठ-115

प्रेमकुमार बहुत प्रसन्न हुए । शंकर ने आशंका भी प्रकट की कि कहीं कोई शांति तुम्हारी मूर्खताभरी उछलकूद देखकर सबक तो नहीं सिखाना चाहती । पर प्रेम प्रेमांध सहपाठी का कोई परामर्श सुनने को तैयार न थे । शंकर पर अपनी सर्वज्ञता थोपने लगे – “जाना मेरा फर्ज है । प्यार वाले कलेजे मोम से भी मुलायम होते हैं, जरा सी आँच नहीं सह सकते, पिघलकर खत्म हो जाते हैं । तुम्हें इसका कुछ पता है ही नहीं ”¹ शंकर चुप साध गया ।

सजसंवरकर प्रेमकुमार बनारसी बाग पहुँचते हैं । शेर, भालू, भेड़िए आदि पशुपक्षियों के पिंजड़ों के चक्कर मारते रहे । जो भी अच्छे वस्त्रों में लिपटी युवती दिखती उसकी ओर लपकते और ‘अहमक, अंधा कहीं का’ की उपाधि पाते । जब बनारसी बाग निर्जन हो गया तो हताश होकर लौट आये । दूसरे दिन शंकर ने चुटकी ली तो भारतीयों को समय का पाबंद न होने की आलोचना करने लगे । इसी समय डाकिया फिर प्रेम पत्र दे जाता है । पत्र में शांति ने अपनी विवशता बताई कि माँ के साथ होने के कारण वह न मिला सकी । आश्वस्त किया कि प्रेम के सिवा वह किसी को भी देखना भी नहीं चाहती । क्षमा माँगते हुए उसने दूसरे दिन एलफिस्टन सिनेमा में मिलने का अनुरोध किया । शाम होते ही प्रेमकुमार एलफिस्टन पैलेस जा पहुँचते हैं । शांति देवी की प्रतीक्षा करने लगते हैं । प्रत्येक स्त्री को घूरकर देखते हैं, कहीं यही शांति न हो । सभी स्त्रियाँ सुन्दर लगतीं । बरामदे में परिक्रमा कर थक गए । टिकट लेकर टॉकीज में जा बैठे । वहाँ भी उचक-उचककर शांति को खोजते रहे । शो समाप्त होने पर फिर से एक-एक युवती को देख लिया पर शांति न मिली । शंकर ने चिढ़ाया तो प्रेम ने तर्क दिया कि शांति दूसरे शो में गई थी, मैं पहले में चला गया था, मिलना न हो सका ।

तीसरे पत्र में शांति ने क्षमा माँगते हुए गोमती के किनारे छोटेलाल के पुल पर रहने को कहा । प्रेमकुमार निर्दिष्ट स्थान पर पूरा श्रृंगार करके जा पहुँचते हैं । प्रातः छः से रात दस बजे तक घाट पर शांति की खोज में टहलते रहे पर वह न मिली । हाँ, एक व्यक्ति ने छिछोरापन देखकर डाँट अवश्य दिया—“ आप बड़ी देर से यहाँ टहल रहे हैं और मैं देखता हूँ जो भी औरत आती है, आप बुरी तरह घूरते हैं क्या आपको अपनी माँ— बहनों की बिल्कुल याद नहीं आती ।”

उदास, निराश प्रेमकुमार हॉस्टल लौट आए । भोजन भी नहीं किया । दूसरे दिन एक शिक्षाप्रद और मूर्खता पर कशाघात करता हुआ पत्र मिला— ‘मूर्खाधिराज, तुम्हें गोमती में भी चुल्लू भर पानी नहीं मिला । — तुम्हारी शांति ।’

पता था — 5, हिवेट रोड । प्रेमकुमार शांति को खोजने निकले तो पाया यह शांति कोई और नहीं प्रेमकुमार की ही नवविवाहिता साली है उसी का यह राशि नाम है, वही प्रेम के दीवाने प्रेमकुमार को नचाती रही ।

परिवर्तन:—

‘परिवर्तन’ कहानी में भाग्य चक्र के प्रवर्तन और राजा के मिथ्या अहंकार के विगलन की घटना मूल विषय है । राजा महेश्वर सिंह कलकत्ते की एक वेश्या के वश में होकर अपने अधीनस्थ जमादार शत्रुघ्न सिंह को साधारण सी बात पर राज्य से निष्कासित कर देते हैं और अन्ततः उसी के आगे महेश्वरसिंह को नतमस्तक होना पड़ता है ।

परिमल कुमारी उर्फ परी राजा महेश्वरसिंह की दक्षिता कामलता देवी की पुत्री हैं । वह अत्यन्त चपल और हठीली है । जमादार शत्रुघ्नसिंह के पुत्र सूरज से वह घुल-मिल गई । परी को आज्ञा देने की आदत है और सूरज का स्वाभाव है उसकी बात मानना । परी के कहने पर वह कभी फूल ला देता तो कभी कुछ । धीरे-धीरे सूरज बड़ा हो गया है अब उसे परी की आज्ञा का पालन करने में संकोच होता है ।

अवस्था के साथ सूरज स्वाभिमानी भी हो गया है । महल में सूरज को छोड़कर सभी परी की आज्ञा पालन करते हैं । एक दिन गेंद उठा लाने के लिए वह नौकर से सूरज को बुलवाती है, सूरज मना कर देता है । वह अपने पिता से कहता है— “ बाबू मुझे इस तरह गेंद उठाकर देते हुए लाज आती है ।” शत्रुघ्नसिंह भी पुत्र के संकोच और स्वाभिमान की रक्षा के लिए सूरज का पक्ष लेते हुए नौकर से कह देते हैं कि वह क्षत्रियोचित कार्य करने को है, उनका बेटा नहीं— “हम नौकर हैं हमारा लड़का नौकर नहीं, और हम भी गेंद उठाने की नौकरी नहीं करते, तलवार बाँधने की करते हैं ।”

कामलता देवी राजा को सूरज के पिता के विरुद्ध भड़का देती है और उसे महल से निकाल देने का दुराग्रह करती है । इसके पहले कि नौकर शत्रुघ्न को निकाले, स्थिति की गंभीरता भाँपते हुए वह पहले ही सपरिवार महल से प्रस्थान कर जाते हैं ।

कुछ समय बाद राजा महेश्वरसिंह समाज सुधार के कार्यों में लग जाते हैं । सामाजिक बुराइयों पर उनके ओजस्वी भाषण सुनकर लोग तालियाँ बजाते हैं । परी अब सत्रह वर्ष की हो गई है । राजा साहब की कोठी पर कुँवर लोग परी का रूप निहारने और राजा साहब की प्रशंसा करने आया करते । अब राजा को परी के विवाह की चिन्ता हुई । अनेक राजकुमारों से उन्होंने परी के विवाह का प्रस्ताव किया । सबने पिता के जीवित रहने तक विवाह करने में असमर्थता प्रकट की । दो वर्ष से राजा महेश्वरसिंह भी उन राजकुमारों में से किसी के पिता के मरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

उधर राजा साहब का परिचय चन्दनपुर के महाराजा प्रताप नारायण सिंह से होता है । यहाँ से उनके मन में कुछ आशा का संचार हुआ । कामलता देवी को भी यही संबंध अच्छा लगा । राजा साहब को विश्वास इसलिए है कि महाराजचन्दपुर को बंगाली सभ्यता बहुत पसन्द है ।

महाराजचन्दपुर ने सादे ढंग से कार्यक्रम होने देने का आग्रह किया जिसे

राजा साहब ने स्वीकार कर लिया । उन्होंने विवाह कार्य के लिए राजा महेश्वरसिंह को परी, कामलता देवी सहित गिने चुने इष्ट मित्रों सहित अपने महल पर ही आमंत्रित किया ।

विवाह के अवसर पर पंडितों को 'दासी ग्रहणम्- दासी ग्रहणम्' कहते हुए सुनकर राजा महेश्वरसिंह चौंके, किन्तु संस्कृत का ज्ञान न होने के कारण शान्त रहे। किन्तु प्रधान पंडित द्वारा 'कन्या दासी समर्पणम्' कहना राजा महेश्वरसिंह को अप्रिय लगा। राजा के विरोध करने पर प्रधान पंडित ने स्पष्ट किया कि महाराज के पिता जी ने बताया है कि आपने यह कन्या महाराज की सेवा के लिए दी है। इतने में महाराज के पिता भी आ गए ।

शत्रुघ्नसिंह को देखते ही राजा महेश्वरसिंह विस्मय विमुग्ध रह गए । शत्रुघ्नसिंह ने कहा - 'जैसी आपकी लड़की है हमने वैसा ही विवाह कराया है । अतीत के दुर्व्यवहार का स्मरण कराते हुए उन्होंने कहा कि हम शत्रुओं से पीड़ित हो अपने राज्य से पलायन कर तुम्हारी शरण में पुत्री को लेकर गए थे । समय बदला । पुत्र को राजगद्दी मिली । अब तुम और तुम्हारी रक्षिता सात दिन तक जूते उठाए तब हम तुम्हारी पुत्री को पुत्री मानकर क्षमा करेंगे । क्षत्रिय होकर भी तुम क्षत्रिय को अपमानित होता देखते रहे ।'¹

हिरनी :-

'हिरनी' एक अनाथ किन्तु कर्तव्य परायण दासी की चमत्कारपूर्ण कहानी है। निर्दोष और सरल हृदय सेविका को अकारण दण्डित करने की चेष्टा में रानी की नाक से खून बहने लगता है । इसे रामजी की कृपा संयोग कुछ भी कहा जा सकता है ।

कृष्णा नदी की बाढ़ तो उतर गई किन्तु उसके बाद भीषण अकाल फैला ।

1 . लिली - परिवर्तन निराला, पृष्ठ-134

अकाल पीड़ितों की सहायता हेतु चिदंबर के नेतृत्व में मद्रास में पतितपावन संघ भी आया था । सैकड़ों लोग काल कवलित हो रहे थे । दो शवों के बीच रो रही एक बालिका को ढाँढस बंधाता हुआ चिदंबर अपने डेरे पर ले आया ।

कुछ दिनों बाद संग्रह के लिए चिदंबर को मद्रास जाना पड़ा । उस अनाथ बालिका को भरण पोषण के लिए अनाथ आश्रम में भरती कराने के उद्देश्य से वह मद्रास ले गये । वहीं ज्ञात हुआ कि जिन राजा रामनाथ सिंह के चिदंबर के पिता दीवान रह चुके हैं, वे रामेश्वर जी के दर्शनार्थ आए हुए हैं । वह उनसे मिलने गया । बाढ़, अकाल की चर्चा में बालिका का प्रसंग भी आया । राजा साहब उसे अपने साथ सिंहपुर ले आए ।

वह अनाथ बालिका रानी साहिबा की सेवा टहल अन्य दासियों साथ रहकर करने लगी । वह दूसरी दासियों से काम करने में तेज और सरल थी । रानी साहिबा ने उसका नाम हिरनी रखा था और यह नाम सहज ही उच्चरित हुआ था ।

‘‘दृष्टि के सूक्ष्मतम तार इस पृथ्वी के परिचय से नहीं, जैसे शून्य आकाश से बाँधे हुए हों, जैसे उसे पृथ्वी पर उतार कर विधाता ने एक भूल की हो । उसके इस भाव के दर्शन से ‘हिरनी’ नाम कवि के शब्द की तरह, रानी के कण्ठ से आप निकल आया था ।’’¹

हिरनी कुलांचे भरती हुई बड़ी होने लगी । उसने यौवन में प्रवेश किया । — ‘‘वही हिरनी अब जीवन के रुपोज्ज्वल बसंत में कली की तरह मधु—सुरभि से भरकर चतुर्दिक सूचना सी दे रही है कि प्रकृति की दृष्टि में अमीर और गरीब वाला क्षुद्र भेद—भाव नहीं, वह सभी की आँखों को एक दिन यौवन की ज्योत्सना से स्निग्ध कर देती है...’’² हिरनी के अंग—अंग से यौवन की मादकता छलक रही थी ।

इसी समय इंग्लैण्ड से शिक्षा प्राप्त राजकुमार वापस आए । वे हिरनी को

1. लिली — कहानी संग्रह — हिरनी निराला, पृष्ठ—140

2. लिली — कहानी संग्रह — हिरनी निराला, पृष्ठ—140

कई बार बुला चुके थे । रानी चौकन्नी हुई । उन्होंने शीघ्र ही एक कहार नवयुवक रामगुलाम से हिरनी का विवाह कर दिया । सालभर में वह एक पुत्री की माँ हो गई । वह अनाथ बाला अब गृहणी होकर बहुत सुखी और प्रसन्न थी ।

समय परिवर्तनशील है । जिन दासियों का हिरनी के समक्ष रानी की दृष्टि में कोई स्थान न था । स्वयं को बहुत हीन, छोटा समझती थी, अब वे उससे प्रतिशोध लेने के बहाने खोजने लगीं । वे दासियाँ हिरनी के विरुद्ध रानी के कान भरने लगीं । चुगली का प्रभाव हुआ । धीरे-धीरे रानी साहिबा का स्नेह हिरनी पर से घटने लगा ।

पुत्री की बीमारी के कारण हिरनी दो दिन की छुट्टी ले गई थी । एक दासी ने झूठ ही रानी से कह दिया कि हिरनी की पुत्री बीमार नहीं है । उसने बहाना बनाया है । रानी को विश्वास हो गया । रानी साहिबा ने हिरनी को पकड़ लाने की आज्ञा दे दी । नौकर से हिरनी बहुत गिड़गिड़ाई कि पुत्री को दवा दे देने दो फिर ले चलना । निर्दय नौकर हिरनी को घसीटता हुआ पकड़ लाया । निरपराध और दुखी हिरनी थरथर काँपने लगी । रानी ने जिस दासी से हिरनी को अपने पास पकड़ लाने को कहा उसका हाथ फिसल गया, धड़ाम से गिरी, हाथ मोच खाकर उतर गया ।

रानी साहिबा के रौद्ररूप को देखकर हिरनी ने रोते हुए प्रार्थना की और अपने को निर्दोष बताया " क्रोध में रानी ने हिरनी को मारने को जैसे ही घूँसा ताना, भयाक्रान्त हिरनी के मुँह से 'हे राम जी' शब्द निकला । सहसा रानी साहिबा की नाक से खून की धारा बह चली । और वह मूर्च्छित हो गयी " ¹ हिरनी के केश और मुख उस रक्त से रंग गया । चिकित्सकों ने बताया कि क्रोध में रक्तस्त्राव हो गया है । इसके उपरान्त तनिक भी क्रोध करने पर रानी को यह व्याधि हो जाती है ।

1 . कहानी की घटना वास्तविक है और निराला ने उसे बलभद्र दीक्षित से सुना था निराला की साहित्य साधना भाग-2, डॉ. राम विलास शर्मा पृष्ठ-457



सखी (चतुरी- चमार) :-

‘सखी’ कहानी संग्रह ‘चतुरी – चमार’ के नाम से सन् 1945 में किताब महल इलाहाबाद से प्रकाशित हुई । इस कहानी संग्रह में आठ कहानी संग्रहीत हैं । वे क्रमशः इस प्रकार हैं ।

1. चतुरी चमार
2. सखी
3. न्याय
4. राजा साहब को ठेंगा दिखाया
5. देवी
6. स्वामी सारदानन्द जी महाराज और मैं
7. सफलता
8. भक्त और भगवान

1. **चतुरी – चमार** :- कहानीकार निराला की कहानी ‘चतुरी – चमार’ कथा – साहित्य की एक अमूल्य निधि है । इस कृति में अछूतोद्धार की समस्या को उपस्थित करने में कथाकार को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है ।

निराला के दलित पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता है – शोषण के प्रति असंतोष और उत्पीड़कों के प्रति विद्रोह । ‘चतुरी चमार’ में यह विद्रोह और भी उभरकर आया है । चतुरी उपेक्षित और निम्नवर्गीय होते हुए भी चेतना प्रबुद्ध है । लेखक चाहता है कि उसके लिए ‘गौरवे बहुवचनम्’ लिखे । चतुरी आत्मगौरव और आत्म जागृति से परिपूर्ण है । उसमें साधारण बुद्धि से ऊपर की बुद्धि है । चमारों का प्रतीक होने पर भी वह अपनी निजी विशेषताओं को रखता है । वह कबीर, तुलसी, सूर, पलटूदास आदि भक्त कवियों के पदों का ज्ञाता और गायक है । उसका अहं व्यर्थ की डींग वाला नहीं है । प्रत्युत उसमें सच्चाई है ।

चतुरी चमार में चतुरी का ओजस्वी व्यक्तित्व प्रतिष्ठित किया गया है । इस कृति में अछूतोद्धार की समस्या को उपस्थित करने में कथाकार को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है । चतुरी एक भक्त है । कबीरपंथी की तरह वह ध्यान आदि लगाने में कुशल है ।

पेशे की दृष्टि से वह अच्छा जूता बना लेता है । इसी चतुरी के पुत्र अर्जुनवा को निराला ने स्वयं पढ़ाना शुरू किया । फलतः निराला के गाँव के गुरुमुख ब्राह्मण' ने निराला के साथ पानी पीना बन्द कर दिया । निराला को यह कहना पड़ा कि ब्राह्मण संस्कार से ही चमारों को दबाने की क्रिया में लिप्त रहते हैं । अपने पुत्र रामकृष्ण को उन्होंने देखा, वे अर्जुनवा पर अपनी बुद्धिमत्ता का रोब जमा रहे थे और उसे परेशान कर रहे थे । इस संदर्भ में निराला ने ब्राह्मण और शूद्र की स्थिति की पीड़ा का अनुभव किया । चतुरी चमार में जीवन की विविधता अत्यन्त अधिक है । निराला के प्रति चतुरी की आस्था एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में उपस्थित है । कहानीकार निराला के सहानुभूति पूर्ण व्यवहार के मनोवैज्ञानिक प्रतिफल के रूप में गाँव के निम्नवर्ग के लोगों का निराला के प्रति लगाव एक मनोवैज्ञानिक सत्य है । यह कहानी कहानीकार निराला के व्यक्तिगत जीवन की महानता का सही चित्रांकन करती है । कहानीकार निराला ने चतुरी के गाँव, जिला डाकरवाना एवं मकान का सचित्र वर्णन किया है । चतुरी के पैतृक मकान में पिछवाड़े जहाँ से होकर कई और मकानों के नीचे और ऊपर वाले नालों का शुद्ध-अशुद्ध जल बहता है । इस वर्णन में गाँव के सामाजिक संबंधों का पूरा इतिहास छिपा हुआ है । उम्र में चतुरी निराला का भतीजा लगता है । चतुरी अपने पेशे में अत्यन्त हुनरमन्द है । उसके बनाए हुए जूते दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं । " किसान अरहर की ठूठियों पर ढोर भगाते हुए दौड़ते हैं - कटीली झाड़ियों को दबाकर चले जाते हैं, छोकड़े, बैल, बबूल, करील ओर बेर के काँटों से भरे रूधवाए बागों से सरपट भागते हैं, लोग जेंगरे पर भड़नी करे हैं, दारिका नाई न्योता बाँटता हुआ दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा चलता है, चतुरी के जूते अपरिवर्तनवाद के चुस्त रूपक जैसे टस से मस

नहीं होते ।¹ चतुरी चतुर्वेदी आदिकों से संत- साहित्य का अधिक मर्मज्ञ हैं । शिक्षित नहीं हैं । कहानीकार निराला ने एक दिन अपने ही दरवाजे चतुरी आदि के लिए चरस मँगवाकर बैठक लगवाई । कई घरों के बच्चों समेत लोध आदिकों के सहयोग से मजीरेदार उफलियाँ लेकर रात आठ बजे डट गए तथा कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, पलटूदास आदि ज्ञात-अज्ञात अनेकानेक सन्तों के भजन आरंभ हुए । निराला जी को ज्ञात था कि चतुरी कबीर पदावली का विशेषज्ञ है । चतुरी ने निर्गुण पदों के भाव समझने के लिए कहा कि - “ काका ये निर्गुण पद बड़े-बड़े विद्वान नहीं समझते । ”² निराला से भी किसी पद का अर्थ पूछा- निराला सोचते हैं कि उन्हीं विद्वानों में चतुरी ने मुझे भी शामिल कर लिया है । निराला चतुरी से कहते हैं - “आज गा लो कल आकर मतलब समझ लेना । ”³

कहानीकार अपने विधुर जीवन की याद दिलाते हैं कि काकी तो हैं नहीं अब खाना उन्हें ही बनाना पड़ता है । काकी का प्रसंग आने पर चतुरी काकी की प्रशंसा करने लगता है- “ रामायण भी पढ़ती थीं, बड़ा अच्छा गीत भी गाती थीं । ”⁴ दूसरे दिन फिर चतुरी लेखक के यहाँ पहुँचते हैं । निराला को पदों के अर्थ बताता है । निराला को खलता है, कोई उन्हें पदों का दार्शनिक अर्थ समझाए । चतुरी के भाष्य को कल्याण के निरामिष लेखों के समतुल्य मानकर मन समझा लेते हैं और चुप रहते हैं किन्तु निराला यह भी मानते हैं - “ वे लोग ऊँचे दर्जे के उन गीतों का मतलब समझते थे । ” निराला ने कहा- “चतुरी तुम पढ़े-लिखे होते तो पाँच सौ की जगह पाते । ”⁵ खुश होकर चतुरी अपने पुत्र अर्जुनवा (सत्रह साल का लड़का) के लिए निराला से पूछता है कि यदि

-
1. सखी - चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-4
 2. सखी - चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-4
 3. सखी - चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-5
 4. सखी - चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-3
 5. सखी - चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-4

आप कहें तो अर्जुनवा को भेज दिया करें, पढ़ जाएगा । वह चाहता है कि उसका बेटा इस पेशे से निकले उसे इसी तरह की शिक्षा मिले । ” तो कहो भगवान की इच्छा हो जाए तो कुछ हो जाए ”¹ इस तरह संसार में उन्नति करने के लिए आवश्यक नई विद्या से चतुरी अपनी परम्परागत विद्या का संयोग करना चाहता है । निराला हामी भर देते हैं । चतुरी के बेटे को पढ़ाते समय जो घर के भीतर और बाहर किस तरह की अड़चनें पैदा होती हैं, निराला इसका रोचक वर्णन करते हैं – बेटे ने दादा, मामा, काका पढ़ना लिखना सीखा । निराला ने गाँव में शिक्षा – प्रचार की आवश्यकताओं पर जो लिखा था—उस पर आचरण किया । दक्षिणा के नाम पर निराला तय करते हैं – बाजार से गोश्त लाना और महीने में दो दिन चक्की से आटा पिसवाना । किसी प्रसंग में निराला चतुरी से पूछते हैं कि तुम्हारे जूते की बड़ी तारीफ है, चतुरी कहता है— ” हाँ काका, दो साल चलता है ” उसमें एक दर्द भी दबा था दुखी होकर कहा ” काका जिमींदार के सिपाही को एक जोड़ा हर साल देना पड़ता है । एक जोड़ा भगवता देता है, एक जोड़ा पंचमा । जब मेरा ही जोड़ा मजे से दो साल चलता है तब ज्यादा लेकर कोई चमड़े की बरबादी क्यों करे ? ”² कह कर डबडबाई आँखों से देखता हुआ जुड़े हाथों से सेवई सी बँटने लगा ।

गुरुमुख बाह्यणों ने निराला के घड़े का पानी पीना छोड़ दिया । इसका कारण यह भी था कि निराला शूद्रों से माँस मँगवाते थे, घर में पकाते थे, खुद खाते थे, उन्हें भी खिलाते थे । इस सामाजिक क्रांति के साथ राजनीतिक आन्दोलन भी चल रहा था । निराला जी आम खिलाने के विचार से अपने चिरंजीव को ससुराल से लिवा लाए । तब उसकी उम्र नौ, दस की होगी । सोम या चहरूम में पढ़ता था । उनके चिरंजीव से अर्जुनवा से गहरी दोस्ती हो जाती है । यद्यपि उम्र में अर्जुन बड़ा था फिर भी पद और पढ़ाई में निराला जी के चिरंजीव बड़े थे । एक दिन निराला जब बाहर से आए तो

1. सखी – चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-4

2. सखी – चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-12

दरवाजे पर ही रुक गए । सूर्य डूब रहा था । अन्दर से चिरंजीव की आवाज आ रही थी ' बोल रे बोल वही-गुण बोल' । अर्जुन ने कहा 'गुडा' बच्चे के अट्टहास से घर गूँज उठा । ' निराला का पुत्र समय-असमय जब निराला घर पर नहीं रहते थे अर्जुन की कमजोरियों के रास्ते उसकी जीभ को दौड़ाकर अपना मनोरंजन करते थे ।

कुछ दिनों के लिए निराला कलकत्ता, बनारास, प्रयाग एवं लखनऊ स्वीकृत किताबें छपवाने के लिए घूमने निकलते हैं । इन्हीं दिनों देश में जोरों का आन्दोलन चला । सालभर बाद जब जमींदारों ने दावा करना और रियाया को बिना किसी रियायत के अत्याचार करना शुरू किया । निराला को लोगों ने गाँव में बुला लिया । गाँव जाकर निराला ने गाँववालों की सहायता की ।

कुछ किसानों पर एक साल के खरी-भूसे को तीन साल की बाकी बताकर, जमींदार साहब ने मुकदमा दायर कर दिए थे । एक दिन दरोगा जी दरखास्तों के कारण तहकीकात करने जाते हैं । थानेदार का सामना करने में गाँववाले घबड़ाते थे । निराला जी को आगे किया थानेदार ने पूँछा-आप काँग्रेस में हैं ? निराला ने उत्तर दिया - मैं तो विश्वसभा का सदस्य हूँ । इस गाँव के लोग तो काँग्रेस का मतलब भी नहीं जानते ।¹ थानेदार साहब चले गये जमींदार से नाराज होकर । इससे बचाव तो हुआ पर मुकदमा चलते रहे । गाँववालों ने चंदा एकत्र कर सम्मिलित धन से मुकदमों में धन खर्च किया ।

जब चतुरी की बारी आई तब सारा धन खर्च हो चुका था । गाँववालों ने दुबारा चंदा एकत्र नहीं किया । चतुरी चिन्तित होकर निराला जी के पास जाता है । निराला जी ने आश्वासन दिया मदद के लिए । निराला जी ने गाँव में कुछ पक्के गवाह ठीक कर दिए थे । चतुरी को जब यह पता चलता है कि जमींदार को जूते देने की बात अब्दुल अर्ज में दर्ज नहीं है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, दूसरी पेशी के बाद पैदल

1. सखी - चतुरी चमार निराला, पृष्ठ-13



ही लौटकर हँसता हुआ चतुरी बोला— ‘काका, जूता और पुखाली बात अब्दुल अर्ज में दर्ज नहीं है’¹ जमींदार के सिपाही को साल में एक जोड़ा जूता देना वाजिब—उल अर्ज में दर्ज नहीं है । इस रहस्य का पता लगाना चतुरी की विजय है । निराला चतुरी को न आदर्श योद्धा और न क्रांतिकारी के रूप में चित्रित करते हैं, न भीतर से त्रस्त, टूटा हुआ, आत्मग्लानि से पीड़ित ही । चतुरी में साधारण श्रमिक जनता का साहस है जिसे निराला एक वाक्य में यो अंकित करते हैं—‘सत्तू बाँधकर, रेल छोड़कर, पैदल दस कोस उन्नाव चलकर, दूसरी पेशी के बाद पैदल ही लौटकर हँसता हुआ चतुरी बोला—‘काका, जूता और पुरवाली बात अब्दुल अर्ज में दर्ज नहीं है ।’²

सखी :-

‘सखी’ कहानी का कथानक लखनऊ के परिवेश में विकसित हुआ है । वहाँ के विद्यालयगत स्थिति का सफल चित्रण कहानीकार ने किया है । बालिकाओं के पारस्परिक परिहास, बालिकाओं के साथ छेड़छाड़ करने की प्रक्रिया और एक सखी का सखी-भाव इस कहानी के द्वारा प्रकट हुआ है ।

‘सखी’ कहानी अन्य पुरुषात्मक शैली में लिखी गई है । इस कहानी का उद्देश्य सखी के लिए सखी का त्याग प्रतिपादित करता है । ‘सखी’ में एक सखी अपनी सखी के स्नेह और मित्रता के प्रतिदान में उसका विवाह कराती है ।

आरम्भ में निवेदन शीर्षक से निराला ने इस कहानी संग्रह में यह विचार व्यक्त किया है—‘सखी मेरी छोटी कहानियों का दूसरा संग्रह है । ग्रह दोष से बरी कोई जीवन नहीं, यह विचार कहानियों के लिए मुझे शंकित करता है, पर जीवन का जैसा साहस भी इनमें है—मुझे विश्वास है । जिन साहित्यिकों तथा पाठकों ने प्रथम प्रयास पर मुझे प्रोत्साहित किया था, उनका मैं कृतज्ञ हूँ । जिन्हें अच्छा नहीं लगा, मैं दुखी हूँ कि

1. सखी — चतुरी चमार निराला, पृष्ठ—19

2. सखी — चतुरी चमार निराला, पृष्ठ—14

उनका मनोरंजन मुझसे न हुआ, उनसे मेरी प्रार्थना है कुछ देर के लिए अपने श्रेष्ठत्व को भूलकर वे कहानियों से सहयोग करें इन्हें सहायता देते विमुख न पाएंगे । रही भाष्य, भाव, कला और चित्रण की बात, इनके संबंध में विशेष लिखना व्यर्थ है, समझदार को इस पुस्तक में इशारे से ज्यादा गुंजाइश है ।

“ कुछ कथाएँ ऐसी हैं, जो मेरे जीवन की घटनाओं में से हैं । यदि इन्हें कथा, साहित्य में स्थान देते हुए साहित्य अनुदान न होंगे, तो मैं यह श्रम सार्थक समझूंगा । त्रुटियों के लिये सांजलि क्षमाप्रार्थी हूँ जबकि बनी भी बिगड़ जाती है ।”¹

‘सखी’ शीर्षक कहानी के आरम्भ में लखनऊ स्थित मॉडल हाईसेज की छात्राओं का परिचय उपस्थित किया गया है ।

आइसाबेला थाबर्न कालेज की छात्राएँ निर्मला, माधवी, कमला, ललिता, शुभा और श्यामा आदि थिएटर जाने की योजना बनाती हैं । एक सखी ज्योतिर्मयी की प्रतीक्षा करती हैं सब सखियाँ । सब मिलकर आपस में ज्योतिर्मयी के विषय में चर्चा करती हैं । ज्योतिर्मयी का अब पढ़ाई में मन नहीं लगता है उसके लिए किसी आई.सी. एस. के शिक्षार्थी का विवाह प्रस्ताव आया है । सभी छात्राएँ ज्योतिर्मयी के घर पहुँचती हैं । जोत बी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा है । जोत के पिता श्यामलाल नामक युवक से उसकी शादी के लिए मिल चुके थे । श्यामलाल उस समय विलायत में पढ़ रहे थे । वहाँ जोत का चित्र भेजा गया था । जब श्यामलाल आई.सी.एस. होकर विलायत से लौटे तो उन्होंने जोत के पास विवाह का प्रस्ताव करते हुए पत्र लिखा कि “आप अगर मंजूर करें, आपको अपना सर्वस्व— तीन हजार मासिक प्रेम की पर्मानेंट शिक्षा के लिए देकर मिसट्रेस बनाने की प्रार्थना करता हूँ ”² पत्र पढ़कर जोत आल्हादित हो जाती है । सभी सखियाँ जब

1. सखी – सखी निराला, पृष्ठ-15

2. सखी – सखी निराला, पृष्ठ-20

जोत के घर पहुँचती हैं। मेज पर खुला हुआ श्यामलाल का लिफाफा ललिता देख लेती है। पत्र को जोर-जोर से पढ़ती है — पत्र अंग्रेजी में लिखा रहता है, वायरन, शैली आदि अंग्रेजी लेखकों के उदाहरण लिखे रहते हैं। सब लीला को साथ ले जाने के विचार से उसके घर की ओर चल पड़ती हैं। रास्ते में लीला के कृपण स्वभाव के बारे में बातें होती रहीं। जोत सबको वास्तविकता से अवगत कराती है। उसकी आर्थिक स्थिति के बारे में बताती है — ‘हमारे कालेज में एक ही कैरेक्टर है। कहो तो, उसके यहाँ पैदा करने वाला कौन है? ट्यूशन से अपना खर्च चलाती है, छोटे भाइयों को भी पढ़ाती है, साथ घर का खर्च भी है, बूढ़ी माँ को कोई तकलीफ न हो, इसके लिए बेचारी कितना खटती है मेहनत की मारी सूखकर काँटा हो रही है चेहरे में आँखें ही आँखें तो हैं’ सब सखियों ने लीला के घर पहुँचाकर हँसी मजाक आरम्भ किया। लीला ने बताया कि वह कॉलेज के अलावा पाँच घंटे पढ़ाती है, तब कहीं घर का खर्च निकलता है। उसके पास समय और पैसे दोनों का अभाव है। जोत के आग्रह पर लीला को जाना पड़ता है। जोत लीला को बहुत प्यार करती है। लीला जानती है, जोत की खुली जवान में हृदय की कीमती बहुत सी चीजें रहती हैं इसलिए उसका प्रस्ताव मंजूरकर, कपड़े बदलकर साथ चल दी। बातचीत में निर्मला ने जोत के पास आए श्यामलाल के पत्र की बात भी बताई।

लीला रोज कालेज में पढ़ने के पश्चात ताल्लुकेदार की पत्नी को पढ़ाने भैंसाकुंड जाती है पैदल ही जाना पड़ता है। स्वभाव से शर्मीली होने के कारण साइकिल नहीं सीखती है। कई दिनों से रोज उसके पीछे दो बदमाश मुसलमान लगे रहते हैं। लीला उनसे बहुत अधिक डरी सहमी है। लीला को अपनी असहाय स्थिति पर अत्यन्त क्षोभ होता है। एक दिन उन्हीं बदमाशों ने पीछा करते समय कुछ अधिक ही अभद्रता का परिचय दिया। लीला बहुत भयभीत हो गई। उसी समय मार्ग में हैटकोट पहने आते

हुए एक साहब दिख जाते हैं। उन्हें देखकर सभी लोग भाग खड़े होते हैं। लीला उनसे अपनी आप बीती सुनाती है। साहब बोलते हैं कि सामने ही उनका बंगला है। मोटर से पहुँचने की बात कहते हैं। लीला उनके पीछे चल देती है। वहाँ साहब लीला से परिचय पूछते हैं, जब परिचय में उन्हें ज्ञात होता है कि लीला आइसाबेला थाबर्न कॉलेज की छात्रा है तब वे लीला से ज्योतिर्मयी के बारे में पूछते हैं, पहले लीला चौंकती है फिर साहब का परिचय पूँछती है। श्यामलाल नाम बताते हैं अपना वे। तब लीला ने खुल कर बात की। लीला ने बताया कि उसका (श्यामलाल) का जिक्र उसने जोत की सखियों से सुना है। श्यामलाल ने बताया कि उन्होंने जोत को एक पत्र लिखा था अभी तक उसका ज़वाब नहीं मिला है। लीला वादा करती है कि वह जोत से पत्र लिखने को कहेगी। श्यामलाल लीला को मोटर से छोड़ जाते हैं। तीसरे दिन जोत का पत्र श्यामलाल को मिलता है इसमें लिखा था—‘मैंने आपको जवाब इसलिए नहीं दिया कि जवाब देना सभ्यता के खिलाफ है। आज लीला दीदी से आपसे मिलने की सांगोपांग बातें मालूम हुईं। जिस मजनू की जो लैला होती है, वह इसी तरह उसे आप मिलती है। अपनी लैला की आप हमेशा रक्षा करें, आपसे सविनय प्रार्थना है तब मेरा आपका रिश्ता और मधुर हो जाएगा क्योंकि बहिन जिसे ब्याहती है, वह अगर पत्नी की बहिन की बहिन को साली कह सकते हैं तो पत्नी की बहिन भी उसे वही पुरुष संबोधन कर सकती है, आशा है, मेरा आपका यह संबंध स्थायी होगा। आपकी जोत।’’

यह कहानी अन्य पुरुषात्मक शैली में लिखी गई है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह सम्भव नहीं दिखता कि ज्योतिर्मयी की तरह कोई अन्य बालिका बिना किसी विशेष कारण पतिरूप में प्रस्तावित व्यक्ति से अपनी सखी का विवाह प्रस्तावित करा दे।

न्याय :-

इस कहानी की घटना लखनऊ में घटित हुई है । मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से यह कहानी एक सफल कहानी है । अपराध में फँसने की आशंका से प्रायः सभी सुरक्षा हेतु कतराते हैं । यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है ।

निराला की इस कहानी में अन्याय के प्रति क्षोभ और न्याय के प्रति सहानुभूति का भाव जाग्रत हुआ है बाबू महेश्वरी प्रसाद वकील के यहाँ से प्राप्त उत्तर इस मनोवैज्ञानिकता की पुष्टि करता है । रहस्यमय स्थिति के प्रकट होने पर पुलिस अधिकारी भी भयभीत हो जाते हैं। भय की यह स्थिति भी एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है । अतएव कहानी में मनोवैज्ञानिकता का निर्वाह हुआ है ।

कहानी में राजीव नामक पुरुष का चरित्र मौलिकता समन्वित है । आज के युग में कोई भी व्यक्ति स्वयं को बचाना चाहता है किन्तु राजीव एक ऐसा पात्र है जो घुरा के आघात से घायल व्यक्ति की कराह से पीड़ित हो उठता है और उसकी रक्षा के लिए उसे स्वयं उठा लेता है , उसकी प्राथमिक चिकित्सा करता है और उसकी मृत्यु पर सच्चे व्यक्ति की तरह थाने में उसकी सूचना देता है किन्तु बिडंबना यह है कि उसे ही अपराधी मान लिया जाता है ।

कहानी का आरंभ कथाकार की संस्कृत गर्भित आलंकारिक, भावात्मक भाषा से हुआ है । "अभी ऊषा की रेशमी लाल साड़ी प्रत्यक्ष हो रही है । भास्कर मुख ऊपर प्रान्त की ओर है, केवल केशों की सघन ब्योम नीलिमा इधर से स्पष्ट मुख का मृदु स्पर्श प्रकाश, लघुतम तूलि जैसे, पर दिवंगत शोभा से उतरकर तन्द्रा से अलस जीवों को जगा रहा है । खिली अमलतास की हेमंगी शखाएँ तरुणी बालिकाओं सी स्वागत के लिए सज कर खड़ी हैं । पवन पुनः ऊषा का दर्शन शुभ मधुर संदेश दे रहा है । निविड नीडाश्रय से विहग प्रभाती गा रहे हैं ।"¹

1. सखी - न्याय निराला, पृष्ठ-15

ऐसे समय में दो शिक्षित युवक भ्रमण करके कुछ सशंकित लौटते हुए दीख पड़ते हैं ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे कुछ रहस्य छिपा रहे हों उसी रास्ते के दूसरी ओर से लखनऊ के एक वकील लाला महेश्वरी प्रसाद नित्य प्रातः भ्रमण के लिये जाते हैं उन्होंने उन युवकों से उनकी घबड़ाहट का कारण पूछा किन्तु उन्होंने सही उत्तर नहीं दिया । जब वकील साहब गोमती के किनारे पहुँचे तो उन्हें एक बड़ी करुण आवाज सुनाई दी “भैया! मुझे निकाल लो तीन आदमी सुन-सुनकर चले गये, दया करो, मैं अपने आप नहीं निकल सकता, जख्मी हूँ, रात को मारकर डाल दिया है । बदमाशों ने ।”¹

वकील साहब के कलेजे में हूक सी लगी । वे उल्टे पैर पास के अपने बंगले की ओर तीव्रगति से चल दिए । वहीं पास के एक बंगले से राजीव नामक युवक वकील साहब की गतिविधि देखकर हँसने लगा । वकील साहब ने उसे बुलाया गोमती की ओर इशारा करके कहा— “वहाँ जाओ, देखो कहकर बंगले की ओर बढ़े ।”² युवक वहाँ जाकर देखता है कि घायल युवक के सीने में दोनों तरफ से छुरा भौंका गया था, गोमती के प्रवाह से शरीर का तमाम खून बह गया था उस समय वह सचेत था । उसे देखकर राजीव दुखी हो जाता है । अत्यन्त बहादुरी से उस घायल को उठाकर अपने नजदीकी डेरे में ले जाकर अपने बिस्तर पर लिटा देता है । तत्पश्चात् कागज निकालकर उसके बयान लिखता है । घायल को बेहोशी आने लगती है, उसकी कुछ ही पंक्तियाँ राजीव लिख पाया । हत्या करने वाले का नाम बताने की कोशिश में वह केवल ‘म’ ही कह पाता है । इतना कहने के पश्चात् वह मूर्च्छित हो जाता है । राजीव थोड़ी देर के लिए असमंजस में पड़ने की स्थिति में आ जाता है कि घायल को पहले अस्पताल ले जाया जाये या पहले थाने । अन्त में वह अस्पताल ले जाने का निश्चय करता है । निकट

1. सखी – न्याय निराला, पृष्ठ-22

1. सखी – न्याय निराला, पृष्ठ-22

के ही एक रईस के पास जाकर सारा वृत्तान्त सुनाकर गाड़ी माँगी किन्तु वह बहाना बनाकर मना कर देते हैं । राजीव अपने बंगले लौटा, उसमें तीन, चार आदमी और रहते थे । घायल की अवस्था को देखकर यह कहते हुए चला गया कि 'आप फँसाना चाहते हैं, यह रास्ते भर का भी तो नहीं होगा । राजीव बहुत चिन्तित हो जाता है । 'युवक को काठ मार गया । कुछ देर खड़ा कवियों के स्वर्गतुल्य, अप्सराओं के नूपुरों से मुखर, इस मनोहारी संसार की भावना को अचपल दृष्टि से देखता रहा ।''

फिर घायल के पास जाता है । घायल का देहान्त हो चुका होता है । युवक सब तरफ से घायल का परीक्षण करता है । साँस, नाड़ी देखी लेकिन घायल में कुछ भी शेष न बचा था । निराश होकर राजीव घायल के शव को थाने ले जाता है । थानेदार की पूँछताछ शुरू होती है । युवक घायल द्वारा दिया गया ब्यान का ब्यौरा देता है थानेदार को राजीव पर संदेह होता है । पुनः बारीकी से पूँछताछ करता है । दरोगा—किसने मारा ? 'मह' । 'मह' ने मारा ? 'मह' क्या बला है ? दरोगा घटनास्थल पर जाकर तहकीकात करता है । वहाँ वह वकील माहेश्वरी प्रसाद को बुलवाता है । उनका नौकर बताता है कि कल अदालत से लौटकर शामवाली गाड़ी से साहब घर गए हैं । दरोगा की शंका और बढ़ जाती है । दरोगा के मन में आया कि स्वयं इतना तगड़ा है कि अकेला ही इसे मार सकता है । राजीव के संक्षिप्त उत्तरों से दरोगा का संदेह बढ़ता जाता है । उसने अपने सिपाहियों को राजीव को बाँधने का हुक्म दिया और वहीं से थाने पहुँचते हैं । दरोगा जी थाने पहुँचे ही थे कि एक इक्कीस—बाईस साल की सुन्दर लड़की ताँगे से उतरकर दरोगा जी के पास जाती है । थाने इंचार्ज दरोगा जी से मिलने को कहती है । दरोगा जी उसके आने का कारण पूँछते हैं । वह दरोगा जी को एकान्त में ले जाकर पूँछती है — आपने राजीव को गिरफ्तार किया है, पर वह बेकसूर है ? 'कोई सबूत तो नहीं । '

मैं गोमती किनारे से टहलती हुई आ रही थी, वकील माहेश्वरी प्रसाद राजीव

को उधर जाकर देखने के लिए कह रहे थे और खुद डरे हुए कमरे की तरफ जा रहे थे ।¹

लड़की खून के शक में महताब अली के नाम का जिक्र करती है । रात की घटना का उल्लेख करती है और राजीव की सिफारिश करती है कि " आप नहीं जानते, यह कितनी बड़ी इज्जत का आदमी है । "

दरोगा जी युवती की बातों को सुनकर विनम्र हो जाते हैं – कैदी को छोड़ देने को कहते हैं । ताँगे पर बैठकर युवती जिसका नाम प्रतिमा है, राजीव को बताती है कि यह सब बुद्धि चातुर्य का परिचय तो उसने राजीव को छुड़ाने में दिया है । यह सब उसकी चिट्ठी के मुताबिक ही हुआ है । अपनी रिपोर्ट में दरोगा ने लिखा – "जान पड़ता है, यह कोई क्रांतिकारी था, बम लिए जा रहा, एकाएक बम के धमाके से काम आ गया है ।" डॉ. की परीक्षा में जख्मों के भीतर से सीसे के कुछ नुकीले टुकड़े भी मिले हैं ।

राजा साहब को ठेंगा दिखाया :-

प्रस्तुत कहानी कथाकार की कल्पित कहानी नहीं है यह कहानी लेखक की आँखों के सामने घटित एक सत्य घटना है । 'राजा साहब को ठेंगा दिखाया' कहानी में समाज की विषमता के प्रति क्षोभ और दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति का अभाव जाग्रत हो उठता है ।

बंगाल के वातावरण में राजशाही परिवार और उसके उत्पीड़न का जो चित्र दिखाया गया है वह उस समय का चित्र है जब भारतवर्ष में राजा, ताल्लुकेदार और ज़ागीरदार अपना सिर ऊँचा किए हुए अपनी प्रजा का शोषण किया करते थे ।

सामंती वर्ग सबसे बड़ा शोषक है । उसके संस्कार में शोषण जड़ जमाए है क्योंकि युग-युग से वह ऐसा करता आया है । 'राजा साहब को ठेंगा दिखाया' ऐसे शोषकों का जीता जागता उदाहरण है । गरीबों का खून चूस-चूस कर यह वर्ग अपने ऐश्वर्य की

सामग्री एकत्र करता है एक ओर शोषक वर्ग का ऐश्वर्य और वैभव है ।

“स्वच्छ कीमती चौड़ी किनारवाली, बारीक ठोस-बुनी बंगला ढंग से कोंछीदार शांतिपुरी धोती, रेशमी शर्ट और सुनहरे स्लीपर पहने चश्मा चढ़ाए, राजा साहब नाव की सैर के लिए चले । रास्ते में तीन ड्योढ़ियाँ पड़ती हैं, हौदा कसे हाथियों के निकलते आधी और ऊँची, रास्ते के दोनों तरफ बड़े-बड़ तालाब, साफ सुथरे दूब जमाए पार्क, दोनों बगल में पाम-बटन की कतारें, दूर के देशी बगीचों से बेला, जूही और कमलों की खुशबू आती हुई । पहली ड्योढ़ी में बैठे हुए राजा साहब के मुसाहब और उनके आने पर कतार बाँधकर भक्तिपूर्वक प्रणाम करके उदण्ड प्रसन्नता से साथ हो गए । अर्दली, सिपाही, खानसामे प्रासाद से साथ आए थे ।”

दूसरी ओर दलित वर्ग है, जिसके पास खाने को कुछ नहीं है । वह राज्य की विशालाक्षी देवी का पूजक है । तीन रुपया महीना और रोज पूजा के लिए तीन पाव चावल और चार केले पाता है । घर में पाँच आदमी खाने वाले हैं । बड़े दुख के दिन होते हैं । कुछ और काम वह, उसकी बेटी और पत्नी तीनों अलग-अलग कर लेते हैं फिर भी पेटभर को न होता है ।

निराला जी ने सत्य घटना का जो कि निराला के हृदय को छू गई थी, का विवरण इस कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है । यह कहानी बंगाल और उड़ीसा को जोड़ने वाली नहर के किनारे बसी हुई पद्मदल राजधानी से संबंधित है पद्मदल के राजा का स्टीमर, बोट, किशती, डोंगी और राजधानी के निकट नहर के एकतरफ बँधी रहती है । पद्मदल से डेढ़ मील दूरी पर शक्तिपुर नामक एक बागी गाँव है । शक्तिपुर से तीन कोस दूर रंगनगर में राज्य की विशालाक्षी देवी हैं । एक अत्यन्त दीन-हीन ब्राह्मण विश्वम्भर इस मंदिर का पुजारी है । उसे पूजा करने के लिए तीन रुपया महीना, तीन पाव चावल और चार केले मिलते हैं । घर में पाँच सदस्य हैं । बीस महीने से उसे वेतन नहीं मिला

। बड़े ही गरीबी के दिन गुजर रहे हैं ।

विश्वम्भर तनखाह के लिए सालभर में दो दर्जन से ज्यादा दरखास्तें दे चुकता है, किन्तु सुनवाई नहीं होती है । जेठ का महीना था, सूर्यास्त का समय का प्राकृतिक सौन्दर्य अपनी अनुपम छटा बिखेर रहा था । अत्यन्त कीमती चौड़ी किनार वाली शांतिपुरी धोती, रेशमी शर्ट और सुनहरे स्लीपर पहने, चश्मा लगाए राजा साहब नाव की सैर को चलते हैं । राजा साहब खुली छत वाली किशती पर बैठते हैं । किशती के चलते ही किनारे-किनारे सिपाही दौड़ने लगते हैं । विश्वम्भर आज राजा की प्रतीक्षा में गाँव के पास नहर के बाँध पर खड़ा था । जब किशती सौ गज के फासले पर रह गई तब विश्वम्भर ने राजा साहब का ध्यान आकृष्ट करने के लिए एक विचित्र प्रकार की ध्वनि की फिर – ‘विश्वम्भर राजा साहब की ताक में खड़ा ही था, जब किशती आती हुई सौ गज के फासले पर रह गई तब उसने एक अद्भुत प्रकार की ध्वनि की, जिससे राजा साहब का ध्यान आकर्षित हो । राजा साहब को अपनी तरफ देखते हुए देखकर उसने हवा में उंगली से लिखकर राजा साहब की ओर कौंचा, फिर पेट खोलकर दोनों हाथों को मरोड़ा, फिर दाहिने हाथ से मुँह थपथपाया, फिर दोनों हाथों के ठेंगे हिलाकर राजा साहब को दिखाया ।’¹

राजा साहब ने विश्वम्भर के ये सभी अभिनय देखे, उसने डॉड धीमी करने को कहा । सिपाही दूर थे । विश्वम्भर किशती के पीछे-पीछे दोनों हाथों, पेट दिखाता, ठेंगे हिलाता दौड़ा, राजा साहब सिपाहियों को देखने के लिए पीछे मुड़ते हैं तो उन्हें पहले विश्वम्भर ठेंगे दिखाता हुआ दिखता है । किशती की धीमी गति को देखकर सिपाही राजा साहब के नजदीक आ गए । राजा साहब ने सिपाहियों को विश्वम्भर को पकड़लाने का संकेत किया । ‘सिपाहियों ने आते हुए विश्वम्भर की मुद्राएँ, देखीं थीं, जिसका अर्थ समझने में उन्हें देर नहीं हुई । उसे मारते हुए कहने लगे-क्यों रे....., हमारे महाराज

¹ सखी – राजा साहब को ठेंगा दिखाया निराला, पृष्ठ-3 ।

रियाया की जबान बन्द करते हैं ? पेट से मारते हैं? ठेंगा दिखाता है हमारे महाराज को कि कोई इतना भी नहीं समझता “?” यह कहकर उसे पीटकर उसकी दोनों अंगुलियाँ कुचलकर सिपाही चले गए । उसकी पत्नी, सत्रह साल की विधवा बेटी और दो, नौ और पाँच साल के छोटे बच्चे फटे कपड़े पहने रोते बाँध पर पहुँचे। गाँव के और लोग भी आए । विश्वम्भर को संभालकर ले आए । गर्म हल्दी चूना लगाया ।

गाँव के कुछ नेक लोग उत्तेजित हुए पर असहाय थे । राजा के प्रति विद्रोह की किसी में हिम्मत न थी । विश्वम्भर की सेवा करना ही उन्होंने अपना कर्तव्य समझा ।

विश्वम्भर ने अपनी आजीविका के लिए सब प्रकार से निराश होकर प्राणों की भाषा में अपने भाव प्रकट किए थे ।

हवा में लिखकर, कोंचकर बताया था, तुम्हें लिख चुका हूँ, पेट मलकर कहा—भूखों मर रहा हूँ, मुँह थपथपाकर और ठेंगा हिलाकर बताया कि खाने को कुछ नहीं है ।

जासूसों ने राजा साहब को जाकर बताया कि शक्तिपुर के बागी विश्वम्भर से मिले हुए हैं । उन्होंने ही राजा साहब का विश्वम्भर के माध्यम से अपमान करवाया है । चाटुकार जासूसों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कहा कि विश्वम्भर ने सरकार की नौकरी का भी ख्याल नहीं किया ।

कुछ दिन बाद विश्वम्भर को स्टेट से आज्ञा पत्र मिला “अब तुम्हारी नौकरी की सरकार को आवश्यकता नहीं ।”² इस कथा में करुणा का भाव दृढ़तापूर्वक नियन्त्रित रखा गया है, वैसा ही व्यंग्य है, गूढ़, अन्तर्निहित, मर्मभेदी ।

देवी:—

‘देवी’ कहानी का आरम्भ रचनाकार के आत्मकथन से होता है । लेखक स्वयं बारह

1. सखी — राजा साहब को ठेंगा दिखाया निराला, पृष्ठ—32

2. सखी — राजा साहब को ठेंगा दिखाया निराला, पृष्ठ—33

वर्ष से साहित्य साधना में संलग्न है, किन्तु आर्थिक स्थिति की दृष्टि से वह तनिक भी आगे नहीं बढ़ सका, वह जहाँ की तहाँ है । रचनाकार की दशा दयनीय है । आर्थिक संकटों से सदैव जूझता रहा — मुझे बराबर पेट के लाले रहे । लेखक का स्वचरित्र कथन—‘मैं उन्हें साहित्य से स्वर्ग ले चलने की बातें कहता था, तब वे अपने मरने की बातें सोचते थे, यह भ्रम था । इसीलिए मेरी कद्र नहीं हुई । मुझे बराबर पेट के लाले रहे । पर फाके मस्ती में भी परियों के ख्वाब देखता रहा — इस तरह से अपनी तरफ से मैं जितना लोगों को ऊपर उठाने की कोशिश करता गया, लोग उतना मुझे उतारने पर तुले रहे और चूंकि मैं साहित्य को नरक से स्वर्ग बना रहा था । इसलिए मेरी दुनिया भी मुझसे दूर होती गयी ।’ नक्की स्वरों में कहते हैं — हाँ, अच्छा आदमी है, जरा सनकी है, फिर गहरे पैठकर मित्रों के साथ हँसते हैं ।’¹

रचनाकार की दृष्टि यकायक एक स्त्री पर पड़ती है । विपन्नता की प्रतिमूर्ति । फटे कपड़े पहने हुए । उम्र लगभग पच्चीस वर्ष ।

इस कहानी में लेखक ने स्वयं एक पात्र के रूप में पगली का परिचय प्राप्त किया है, उसे निकट से देखा है, उसके साथ समाज के व्यवहार को समझा है और बच्चे के प्रति उसकी जीवन गाथा को उपस्थित किया है ।

प्रस्तुत कहानी में निराला ने ऐसी पगली कहलाने वाली नारी का सजीव चित्र उपस्थित किया है, जो होटल की जूठन पर जीवित रहती है । गर्मी की तेज लू और बरसात की तीव्र धार पगली और उसके बच्चे के ऊपर से पार हो जाती है तथा स्थानाभाव में हाड़ तक छिद्र जाने वाले जाड़े से काँपकर वह अत्यंत करुण स्वर से रोती है । ऐसे समय में उसके पास जमीन पर एक फटी-पुरानी ओस से भीगी कथरी बिछाने को है, ऊपर पतला कंबल । नारी शक्ति की यह विवश मूर्ति है । पगली के चरित्र में समाज के निम्नवर्ग की पीड़ा एवं विवशता साकार हो उठी है । फुटपाथ पर रहने वाली एक होटल

की जूठन पर पलने वाली गूँगी भिखारिन को देवी के आसन पर प्रतिष्ठित कर कहानीकार ने समाज के दलित वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति एवं संवेदना प्रकट की है । उसका रेखाचित्र जिस रूप में निराला ने प्रस्तुत किया है उससे वह सहज ही हमारी करुणा की पात्र बन गई । उसका चरित्र तथा कथित सभ्य एवं शिष्ट कहे जाने वाले संपूर्ण समाज पर एक व्यंग्य है ।

‘देवी’ कहानी संस्मरणात्मक ललित निबंध की शैली में आरंभ होती है । रचनाकार ऊहापोह की स्थिति में है कि ‘‘यह कौन है, हिन्दू या मुसलमान ? इसके एक बच्चा भी है । पर इन दोनों का भविष्य क्या होगा ? बच्चे की शिक्षा परवरिश क्या इसी तरह रास्ते पर होगी ? यह क्या सोचती होगी—ईश्वर, संसार, धर्म और मनुष्यता के संबंध में ? ’’¹

लेखक होटल के नौकर संगमलाल को बुलाते हैं जिसे निराला जी संगमलाल कहते हैं, से उस स्त्री के बारे में पूँछते हैं । संगमलाल ने बताया कि वह तो पागल है , गूँगी भी है, होटल के मेहमानों की थालियों से बची हुई रोटियाँ उसे दे दी जाती हैं ।

लेखक सोचते हैं—इस पगली के जीवन में कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता । ज्योतिष की सुख-दुख की श्रृंखला इसके जीवन में स्थिर हो गयी । रचनाकार लिखते हैं — ‘‘सहते-सहते अब दुख का अस्तित्व इसके पास न होगा । पेड़ की छाँह या किसी खाली बरामदे में दुपहर की लू में, ऐसे ही एक टक कभी-कभी आकाश को बैठी हुई देख लेती होगी । मुमकिन इसके बच्चे की हँसी उस समय इसे ठंडक पहुँचाती होगी । आजतक कितने वर्षा शीत-ग्रीष्म इसने झेले हैं, पता नहीं । लोग नेपोलियन की वीरता की प्रशंसा करते हैं पर यह कितनी बड़ी शक्ति है पर इसके परिवर्तन के क्या वही लोग कारण नहीं । ’’¹

लेखक के अनुसार पगली साँवले रंग की, बहुत ही साधारण रंग रूप की स्त्री थी पर लेखक को उसमें उस सौन्दर्य के दर्शन होते हैं जिससे उन्हें साहित्य में लिखने की प्रेरणा मिलती है — “केवल वह रूप नहीं भाव भी । इस मौन महिला, आकार इंगितों की बड़े-बड़े कवियों ने कल्पना न की होगी । भाव-भाषण मैंने पढ़ा था, दर्शन शास्त्रों में मानसिक सूक्ष्मता के विश्लेषण देखे थे, मंच पर रविन्द्रनाथ का किया अभिनय भी देखा था, खुद भी गद्य-पद्य में थोड़ा बहुत लिखा था, चिड़ियों तथा जानवरों की बोली बोल कर उन्हें बुलाने वालों की भी करामात देखी थी पर वह सब प्राकृत । यहाँ माँ-बेटे के मनोभाव कितनी सूक्ष्म व्यंजना से संचरित होते थे, क्या लिखूँ ।”²

लेखक के अनुसार उस पगली का ध्यान भी लेखन का ज्ञान हो गया । उस पगली में निराला जी महाशक्ति का प्रत्यक्ष रूप देखते हैं उससे बढ़कर संसार में कोई दूसरा ज्ञान दाता नहीं हो सकता । रचनाकार इस पगली के बच्चे में भारत का सच्चा रूप देखते हैं, उस बच्चे के भविष्य की चिन्ता करते हैं । क्या होगा इस बच्चे का ? लेखक के शब्दों में — “एक रोज मैंने देखा, नेता का जुलूस उसी रास्ते से जा रहा था । उसी बरामदे पर खड़ा स्वागत देख रहा था । पगली भी उठकर खड़ हो गई थी । बड़े आश्चर्य से लोगों को देख रही थी । रास्ते पर इतनी बड़ी भीड़ उसने नहीं देखी । मुंह फैलाकर, भौहें सिकोड़कर आँख की पूरी ताकत से देख रही थी — समझना चाहती थी, वह क्या था, क्या समझी, आप समझते हैं ? भीड़ में उसका बच्चा कुचल गया और रो उठा । पगली बच्चे की गर्द झाड़कर पुचकारने लगी और फिर कैसी ज्वालामयी दृष्टि से जनता को देखा । मैं यही समझता हूँ । नेता दस हजार की थैली लेकर गरीबों के उपकार के लिए चले गए—जरूरी—जरूरी कामों में खर्च करेंगे ।”¹

संगमलाल लेखक को बताता है कि पगली मुसलमान है । पहले हिन्दू थी

1. सखी — देवी निराला, पृष्ठ-37

2. सखी देवी निराला, पृष्ठ 30

बाद में मुसलमान हो गई । सभी आने-जाने वालों की पगली के प्रति उदासीनता को लेखक ने देखा था, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान ।

एक दिन शहर में पल्टन का प्रदर्शन हो रहा था । लेखक नंगे बदन होटल के बरामदे से सिपाहियों को देख रहे थे । वे निराला जी की तरफ देख-देखकर मुस्करा रहे थे । रचनाकार के लंबे लंबे बालों के कारण लोग उन्हें मिस फैशन कहा करते थे । सिपाहियों की लेफ्ट-राइट, लेफ्ट राइट चाल को देखकर पगली हँस रही थी । रचनाकार सोचते हैं कि उनका प्रतिशोध पगली ने ले लिया ।

काफी समय, महीने व्यतीत हो गए । लेखक को पगली अपना शरीर रक्षक समझने लगी थी । पगली को लड़के अक्सर परेशान किया करते थे । पगली अपने मूक अभिनय से सहायता के लिए कहती ।

लेखक को देखकर लड़के भाग जाते थे । इसी प्रकार पगली में और निराला जी में घनिष्ठता हो जाती है । वह लेखक को अपना शुभचिन्तक समझती थी । यथासंभव आर्थिक मदद भी करते थे । असह्य गर्मी, बरसात को सहन करती हुई पगली और उसका बच्चा जीवन व्यतीत कर रहे थे । बरसात में पानी से बचने के लिए कोई छत न थी । एक खाली मकान के बरामदे में शरण लेती थी ।

वहाँ तक जाते-जाते वह पानी से तर-बतर हो जाती थी । धीरे-धीरे पगली का स्वास्थ्य टूटने लगा था । पीने के पानी के लिए सड़क के उस पार जाना पड़ता था । काफी समय लग जाया करता था । “उसकी मुख मुद्रा ऐसी विरक्ति सूचित करती थी—वह इतनी खुली भाषा थी कि कोई भी उसे समझ लेता कि वह कहती है कि ‘यह सड़क क्या मोटर ताँगे-इक्के वालों के लिए ही है ? इन्हें देखकर मैं खडी होऊँ, मुझे देखकर ये क्यों न खड़े हों ? बड़ी देर बाद पगली को रास्ता पार करने का मौका मिलता । तब

॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥

॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥

॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥

॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥

॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥

॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥
॥ अथ विष्णुसंस्कृतं ॥

तक उसकी प्यास कितनी बढ़ती थी, सोचिए ।¹

एक दिन शाम को पानी बरस चुकने के पश्चात् लेखक अपने मित्रों के साथ ब्लेक कुइन खेल रहे थे । फुटपाथ पर ही मेज-कुर्सियाँ डाल दी गई थीं । पगली किसी काम से बाहर गई हुई थी । उसका बच्चा जो वहीं सोया हुआ था, दो फुट ऊँचा बरामदे से नीचे फुटपाथ पर गिर जाता है, वह जोर से चीख उठता है । सभी मिलकर तरह-तरह की आलोचना करने लगते हैं निराला जी दौड़कर बच्चे को उठा लेते हैं उनके एक मित्र कहने लगे कि 'अरे यह गंदा है ।'

रचनाकार उसे गोद में लेकर हिलाने लगते हैं । बच्चा चुप हो जाता है । इतना स्नेह शायद उसे कभी न मिला होगा उसकी माँ भी विक्षिप्तता के कारण उसे सुख के झूले में झुलाने में असमर्थ होगी । जोर का जाड़ा पड़ने लगा था । एक रोज रात को लेखक को पिल्ले की सी कूँ-कूँ की सी आवाज सुनाई पड़ती है । होटल का दरवाजा बन्द हो गया था किन्तु लेखक अपने कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर जाते हैं । एक मिला हुआ कंबल ओढ़कर पगली बच्चे को लेकर फुटपाथ पर पड़ी हुई थी । लेखक के अनुसार—“जब उसे दुनियाँ का, अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है, तब हाड़ तक छिद जाने वाले जाड़े से काँपकर वह ऐसे करुण स्वर से रोती है । जमीन पर एक फटी पुरानी ओस से भीगी कथरी बिछी, ऊपर पतला काला कंबल । ईश्वर ने मुझे केवल देखने के लिए पैदा किया है ।”²

होटल के मालिक से नाराज होकर कुछ विद्यार्थियों ने होटल खाली कर दी । लेखक भी अपना हिसाब करके किराए के दूसरे मकान में चले गए । उनके साथ उनके मित्र कुँवर साहब थे । कुँवर साहब अपनी रजाई पगली को देने के लिए कहकर छुट्टियों में घर चले गए । निराला जी वह पगली को

1. सखी - देवी निराला, पृष्ठ-41

2. सखी - देवी निराला, पृष्ठ-43

जाकर उड़ा आए थे । उसके दो तीन दिन बाद ही उनके श्रीयुत नैथाणी ने 'निराला जी को बताया— 'पगली अस्पताल भेज दी गई । डाक्टर का कहना है, उसे डबल निमोनिया हो गया है । बचेगी नहीं । उसका बच्चा भी दयानन्द अनाथालय भेज दिया गया है । पगली बच्चे को छोड़ती न थी । पगली को ले जाने वाले इक्के की बगल से निकलती हुई मोटर के धक्के से एक स्वयंसेवक के पैर में सख्त चोट आ गई है, इसी ने सबसे पहले गन्दगी से न डरकर पगली को उठाया था ।''¹

'देवी' की पगली साधारण पगलियों की भाँति नहीं है । वह पागल है, गूँगी है, यही उसकी जातिगत विशेषता है, किन्तु वाणी विहीन होकर भी वह अपना विद्रोह अभिव्यक्त करती है ।

समाज दलितों पर निर्दयी प्रहार करता है किन्तु निराला ने इन्हें महिमामन्वित कर अपनी कहानियों में बड़ा ऊँचा स्थान दिया है । इन गरीबों में ऐसे दिव्य गुण विद्यमान हैं, जो अत्यन्त दुर्लभ हैं ।

इसीलिए समाज विहित पगली को निराला ने 'देवी' की संज्ञा दी । इस पगली को देखकर लेखक अपने पर प्रकारान्तर से साहित्यकारों पर व्यंग्य करता हुआ सोचता है । "मेरी बड़प्पनवाली भावना को इस स्त्री के भाव ने पूरा-पूरा परास्त कर दिया । मैं बड़ा हो भी जाऊँ, मगर इस स्त्री के लिए कोई उम्मीद नहीं हो सकती । ज्योतिष का सुख-दुख चक्र इसके जीवन में अचल हो गया है । सहते-सहते अब दुख का अस्तित्व इसके पास न होगा सब इसे पगली कहते हैं, पर इसके इस परिवर्तन के क्या वही लोग कारण नहीं ?''²

1. सखी - देवी निराला, पृष्ठ-45

2. सखी - देवी निराला, पृष्ठ-36

स्वामी सारदानन्द जी महाराज और मैं:-

‘स्वामी सारदानन्द जी महाराज और मैं’ कहानी में निराला ने अपना जीवनवृत्त प्रस्तुत किया है । अतएव इस कहानी को कहानी न कहकर आत्मचरित कहना अधिक उपयुक्त होगा । आत्मकथा पर आधारित इस कहानी में निराला की संपादकों और लेखकों द्वारा की गई उपेक्षा का वर्णन है ।

प्रस्तुत कहानी में आत्मचरित के अतिरिक्त निराला पर स्वामी सारदानन्द जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है । निराला को स्वामी सारदानन्द के संसर्ग में एक दार्शनिक की अनुभूति हुई । स्वयं के खण्ड जीवनवृत्त का विवरण इस कहानी के माध्यम से निराला ने प्रस्तुत किया है । निराला ने साहित्य साधना के क्षेत्र में जो संघर्ष सहा, जो उपेक्षा संपादकों और लेखकों की ओर से सही, उसका प्रस्तुतीकरण है ।

स्वाभिमानी निराला ने सन् 1921 में महिषा दल राज्य की नौकरी एक छोटे से विवाद पर छोड़ दी थी और देहात में अपने घर जाकर रहने लगे थे । सन् 1919 में निराला का हिन्दी और बंगला पर लिखा गया लेख आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सुधारकर ‘सरस्वती’ में प्रकाशित करवाया था । निराला आचार्य द्विवेदी से बहुत प्रभावित थे । वे उनसे मिलने प्रायः कानपुर जाया करते थे ।

निराला जी की आर्थिक स्थिति ठीक न थी । वह बात द्विवेदी जी भी जानते थे । द्विवेदी जी ने दो पत्र लिखे निराला जी को । उसमें उनकी योग्यता का विवरण भी देने को लिखा था किन्तु निराला के पास शैक्षणिक योग्यता के नाम पर कुछ न था । दो कविताएँ अवश्य छप चुकी थीं । इन्ही दिनों स्वामी माधवानन्द जी, प्रेसीडेंट, अद्वैत आश्रम (रामकृष्ण मिशन) मायावती, अल्मोड़ा हिन्दी में एक पत्र निकालने हेतु संपादक की तलाश में द्विवेदी जी के पास पहुँचे । स्वामी जी ने पता नोटकर प्रमाण-पत्र भेजने की बात कही ।

निराला विवेकानन्दजी और रामकृष्ण परमहंस का साहित्याध्ययन कर चुके थे । श्री परमहंस देव के श्रेष्ठ शिष्य स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज को महिषादल में अपना तुलसीकृत रामायण का सरवर पाठ सुना चुके थे । निराला ने स्वामी माधवानन्द जी को प्रमाण पत्र के रूप में इसी योग्यता को लिख भेजा । उनके उत्तर में लिखा था कि अभी तो उन्हें एक संपादक प्राप्त हो चुका है । आगे देखा जाएगा । इसी समय महिषादल राज्य से शीघ्र बुलाने की सूचना तार द्वारा निराला जी को मिलती है । निराला जी महिषादल पहुँचते हैं । वहाँ 'समन्वय' में निराला जी ने 'युगावतार श्री रामकृष्ण' लेख लिखा । आचार्य द्विवेदी ने उस लेख की मौलिकता को लेकर काफी प्रशंसा की और भी साहित्यिक गुरुजनों द्वारा प्रोत्साहन मिला । समन्वय के मैनेजर स्वामी आत्मबोधानन्द जी को ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो हिन्दी और बंगला दोनों ही भाषाओं का ज्ञाता हो । उन्होंने निराला जी को बुलाया । इस तरह निराला जी समन्वय में जाकर स्वामी जी महाराजों के साथ 'उद्बोधन' कार्यालय बाग बाजार में रहने लगे । यहीं पर उन्हें सर्वप्रथम सन् 1922 में स्वामी सारदानन्द जी महाराज के दर्शन प्राप्त हुए ।

स्वामी जी अतिशय स्थूलकाय थे । बहुत दिनों तक निराला उनकी ओर देखने का साहस नहीं कर सके । आँखें झुकाकर ही प्रणाम कर लिया करते थे । वहाँ धर्मग्रन्थों के पाठ और दार्शनिक विषयों पर चर्चा हुआ करती थी । निराला जी के मन में अनेकानेक प्रश्न मंथन करते रहते थे किन्तु समाधान हेतु उन्होंने कभी स्वामी जी से प्रश्न करने की हिम्मत न जुटा पाई । निराला 'स्वामी जी मेरा 'यावत्किंचिन्नभाषते' नीति पर प्रसन्न होकर मुस्कराते थे । एक रोज धैर्य जाता रहा । मैंने पूछा—'यह संसार मुझमें है या मैं संसार में हूँ ? ' उन्होंने बड़े स्नेह से कहा 'इस तरह नहीं' ।

निराला जी बचपन से ही संतों की सूक्तियों के भक्त बन ईश्वरानुरक्त हो चले थे । सो जाने पर उन्हें देवताओं के स्वप्न दिखाई दिया करते थे । इस स्वप्न के कारण यह बात बराबर इनके मस्तिष्क का मंथन करती रही कि जो देव जाग्रत अवस्था

में कभी नहीं बोलते थे वे सो जाने पर दम न भरते थे । इस प्रकार उनकी दार्शनिक वृत्ति और प्रबल हो उठी । इस स्वप्न के प्रसंग को निराला जी ने स्वामी जी से भी कहा कि सो जाने पर मेरे साथ देवता बातचीत करते हैं । वह सस्नेह बोले—‘बाबूराम महाराज से भी बात करते थे ।’

(स्वामी प्रेमानन्दजी का पहला नाम श्री बाबूराम था)

इस घटना के पश्चात् निराला जी ने अपने बंगाली मित्र से बिस्तरे पर सोते हुए यह सपना देखा था—‘स्वामी सारदानन्द जी महाध्यान में मग्न हैं, ईश्वरीय विभूति से युक्त ऐसी मूर्ति मैंने आज तक नहीं देखी—कमलासन बैठे हुए, उर्ध्वबाहुं, मुद्रित नेत्र, मुख मंडल पर महानंद की दिव्य ज्योति, जो कुछ है सब ऊपर उठा जा रहा है । इसी समय उनके सेवक एक सन्यासी महाराज उन्हें खिलाने के लिए रसगुल्ले ले गए, उसी ध्यानावस्थित अवस्था में स्वामी जी ने मेरी ओर इशारा किया । सेवक महाराज ने लौटकर मुझे रसगुल्लों का कटोरा दे दिया । मैं गया और एक रसगुल्ला खिलाकर लौट आया । कटोरा सेवक सन्यासी महाराज को दे दिया ।’¹

उसी समय निराला जी की आँख खुल गई । निराला जी को अवर्णनीय अनुभूति हुई । निराला जी को अत्यन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई । निराला के शब्दों में ‘जीवन मुक्त महापुरुष क्या है, मैं सब और अच्छी तरह समझने लगा । मैं प्रहार करता हुआ अब थक जाता था, तब मेरे मनस्तत्व के सत्यस्वरूप स्वामी सारदानन्द जी मुझे रंगीन छाया की तरह ढंककर हँसते हुए तर कर देते थे । इन महादार्शनिक, महाकवि, स्वयंभू, मनस्वी, चिरब्रह्मचारी सन्यासी, महापण्डित, सर्वस्वत्यागी, साक्षात् महावीर के समक्ष देवत्व, इद्रत्व और मुक्ति भी तुच्छ है । मैंने भी देश तथा प्रदेशों के बड़े-बड़े कवियों, दार्शनिकों, पंडितों तथा पुरुषों के साथ एक सर्वश्रेष्ठ उपाधि से भूषित किए हुए अनेकानेक

1. सखी – स्वामी सारदानन्द जी और मैं निराला, पृष्ठ-50

लोगों को देखा है पर वाह रे संसार, सत्य की कितनी खरी जाँच तूने की..... यहाँ मेरा इस समय का जीवन है ।¹ जिन स्वामी जी को निराला ने अपने हाथ से रसगुल्ला खिलाया था उन्होंने निराला जी से पूछा—‘तुम मंत्र नहीं लोगे ? ’ जाओ” निराला सदैव आडम्बर विरोधी थे । गुरु दीक्षा लेने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी । मंत्र लेने की चेष्टा से स्वामी जी के कमरे में जाते हैं । उन्होंने पूछा, ‘क्या है ? ’ मैंने कहा, ‘मंत्र लेने आया हूँ ।’ स्वामी जी प्रसन्न, गम्भीरता से बोले—अच्छा, फिर कभी आना ।”

एक दिन बहुत ही प्रफुल्ल मन से प्रसाद लेकर स्वामी जी के कक्ष से गुजरे । स्वामी जी ने कहा कि प्रसाद खाकर आओ । उन्होंने निराला से स्नेहपूर्वक पूछा—उस रोज तुम क्या कहने वाले थे ? मैंने कहा, “मुझे तंत्र मंत्र पर विश्वास नहीं ।” उन्होंने पूछा, तुम गुरुमुख हो ? मैंने कहा, “हाँ, पर तब मैं नौ साल का था । ” उन्होंने कहा “हम लोग तो श्रीराम कृष्ण को ही ईश मानते हैं ।” मैंने कहा—‘ऐसा तो मैं भी मानता हूँ।’²

“उत्तर की मैंने कभी देर नहीं की , वह ठीक हो या गलत ।

पहले क्या कह गया हूँ फिर क्या कह रहा हूँ, इसकी तरफ ध्यान देने वाला सच्चा वक्ता, लेखक, कवि या दार्शनिक नहीं—वह कला की मुक्ति में गण्य नहीं, कलाकारों के ऐसे कथन का मैं सजीव उदाहरण था । वह भावस्थ गुरुत्व से मेरे सामने आए । मुझे ऐसा जान पड़ा, एक ठंडी छाँह मे मैं डूबता जा रहा हूँ फिर मेरे गले में अपनी उँगली से एक बीज मंत्र लिखने लगे । मैंने मन को गले के पास ले जाकर क्या लिख रहे हैं, पढ़ने की चेष्टा की, पर कुछ मेरी समझ में न आया ।³

उस गले वाले यंत्र की क्या प्रतिक्रिया होती है ‘ निराला’ जी प्रतीक्षा

-
1. सखी — स्वामी सारदानन्द जी और मैं निराला, पृष्ठ-51
 2. सखी — स्वामी सारदानन्द जी और मैं निराला, पृष्ठ-53
 3. सखी — स्वामी सारदानन्द जी और मैं निराला, पृष्ठ-53

करने लगे । उनका अनुभव इस प्रकार है - 'मुझे कुछ ही दिनों में जान पड़ने लगा, मेरा निचला हिस्सा ऊपर और ऊपर वाला नीचे हो गया है, रामकृष्ण मिशन के साधु मुझे खींच रहे हैं । अजीब घबराहट हुई ।''¹

इस समय निराला जी 'समन्वय' को छोड़कर बालकृष्ण प्रेस में कार्यरत थे । वहाँ के सम्पादक महादेव बाबू से उन्होंने कहा- ये साधु लोग मुझे जादूगर जान पड़ते हैं ।

महादेव बाबू ने कहा - 'यह आपका भ्रम है ।'

अन्त में निराला जी का वक्तव्य इस प्रकार है- 'फिर इतने चमत्कार दस वर्षों में देखे कि अब बड़े-बड़े कवियों तथा दार्शनिकों की चमत्कारोक्तियाँ पढ़कर हँसी आती है । '' वह मंत्र भी तीन साल हुए आग सा चमकता हुआ कुछ दिनों तक सामने आया ।''²

सफलता :-

'सफलता' कहानी में एक कथा प्रकाशक के लेखक द्वारा शोषण का वर्णन है । इस कहानी के माध्यम से निराला ने प्रकाशन जगत में स्वयं की उपेक्षा की अनुभूति का वर्णन नरेन्द्र नामक पात्र के द्वारा किया है । नरेन्द्र एक शोषित साहित्यकार के रूप में उपस्थित हुआ है ।

विधवा आभा को गाँव में रहते हुए अत्यधिक अपमान सहना पड़ता है । नरेन्द्र एक सच्चे मित्र के रूप में प्रस्तुत हुआ है । आभा को नरेन्द्र से सीख मिलती है कि कैसे वह समाज में रहकर उसकी रूढ़िग्रस्त मान्यताओं का विरोध करे । निराला जी सफलता कहानी में इन पात्रों द्वारा समाज के ठेकेदारों पर एक तीखा व्यंग्य करते हैं ।

1. सखी - स्वामी सारदानन्द जी और मैं निराला, पृष्ठ-53

2. सखी - स्वामी सारदानन्द जी और मैं निराला, पृष्ठ-54

आभा जो कि विवाह के सालभर बाद ही विधवा हो जाती है । वह नित्य गाँव के किनारे शिवालय में अपने पति की स्मृति में श्रद्धा सुमन अर्पित करने जाती है ।

कहानी का आरंभ अत्यन्त सजीव और सौन्दर्यमयी है । निराला का छायावादी कवि हृदय मुखरित हुआ है सफलता का आरंभ उद्धृत करने योग्य है— 'जो हवा दिए के जलते रहने की वजह है, वह दिए को बुझा भी देती है। आभा के सस्नेह अकलुष प्राणों के पावन प्रदीप को पति की जिस निश्चल समीर ने साल-भर तक जला रखा था, वह साल भर से उसे बुझाकर, उसकी पृथ्वी से दूर, अन्तरिक्ष की ओर तिरोहित हो गई । साल ही भर में सुहाग का काजल उस दीपक प्रकाश के ऊपर, रत्नार आँखों में, प्रिय दर्शन के अंजन रूप नहीं रह गया । आभा आज की शरत् की तरह अपनी सारी रंगीनियों को धोकर शुभ हो रही है—श्वेत शेफाली— सी रंगे प्रभात के रश्मि पात-मात्र से वृत्तच्युत—जैसे देवार्चन के लिए चुनी हो ।माला होकर हृदय पर या रंग बनकर आँखों पर चढ़ने के लिए नहीं ।''¹ उसी मार्ग पर से जाते हुए गाँव के यशस्वी साहित्यकार नरेन्द्र ने दीपक जलाकर देवता को प्रणाम करते समय कई बार आभा में दिव्य मुख और करुण आँखों की झलक पाई । नरेन्द्र को आभा का कारुण्य द्रवीभूत कर चुका था । उसके मन में आभा के लिए अत्यधिक सहानुभूति थी । समाज की कुप्रथाओं पर रोष था । नरेन्द्र के इस प्रतिकार स्वरूप भाव से आभा अवगत हो चुकी थी । आभा नरेन्द्र की ओर आकृष्ट होती है उसकी विद्वत्ता के कारण वह नरेन्द्र से इस संसार से मुक्ति का मार्ग पूछना चाहती है । उसे आशा है कि इस प्रश्न का समाधान नरेन्द्र अवश्य करेगा । नरेन्द्र भी तो उसी की तरह विधुर है । उसने भी तो कभी कल्पना की होगी कि उसके न रहने पर उसकी स्त्री का क्या होगा किन्तु नरेन्द्र से कुछ पूछने का उसमें साहस नहीं हो पा रहा था । कई दिन गुजर गए । नरेन्द्र से साक्षात्कार होता है फिर भी संकोच और शर्म के कारण आभा नरेन्द्र से कुछ भी कहने में असमर्थ थी ।

1. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-55

निराला जी के शब्दों में – 'नरेन्द्र बीसवीं सदी का मनुष्य है । वह न कर सके, ऐसा कोई काम नहीं, ऐसा कुछ किया भी, ऐसा नहीं । वह मन से धर्म और अधर्म को पाकर दूर निकल गया है पर मन में धर्म से श्रद्धा और अधर्म से घृणा करता है । वह भौंरों की तरह खुली कली पर नहीं बैठा पर भौंरे की तरह कलियों का जश गा चुका है, उनके चारों ओर बहुत मंडराया । उसकी कल्पना में आभा उतने रंग भर चुकी है जितने किरण भरती है—फूलों में, पहाड़ पर, बादलों में, दिशाकाश में तरह-तरह के सुधार विचार में । पर आभा को वरण करने की कोई शहजारी भी उसमें पैदा हुई, ऐसा लक्षण नहीं देख पड़ा । सोचा जरूर, पर उठे सर का झुक जाना देखा और डरा ।'¹ एक दिन एकांत पाकर बहुत ही साहस जुटाकर आभा ने नरेन्द्र से कहा—'मुझे संसार में बड़ा दुख है 'नरेन्द्र ने संक्षिप्त उत्तर दिया 'दुख को देवता समझो' आभा ने कहा—अर्थात् राक्षस को देवता मानूँ ? केवल दुख नहीं सहा जाता । रोज का अपमान भार हो जाता है । 'नरेन्द्र ने उत्तर दिया 'धैर्य रखो'² आभा का नरेन्द्र की ओर आकर्षित होने का कारण विषय वासना न था ।

नरेन्द्र के भावों द्वारा वह नरेन्द्र की ओर खिंची । समाज में स्त्रियों की अवहेलना, अवज्ञा, जीती हुई एक प्रतिमा को भूत-प्रेत से भी भयंकर इतर पशु से भी तुच्छ समझने वाली धारणा और व्यवहार ने उसे धकेला था । नरेन्द्र की विद्वत्ता की वजह से वह नरेन्द्र से कुछ अपमानित जीवन के लिए निर्देश की आकांक्षा रखती थी । वह यह भी सोचती थी कि 'यदि विद्वान की बतलाई राह में उसे वैसा ही लांछन और अपमान देख पड़ता है जैसा वह घर में देख रही थी तो घर और बाहर दोनों के रास्तों को पार कर जाने का गौरव प्राप्त करती ।'³ नरेन्द्र की 'धैर्य रखो' यह उक्ति उसके लिए बहुत बड़ा अवलम्बन हुई ।

-
1. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-56
 2. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-57
 3. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-55

आभा नरेन्द्र के संरक्षण के लिए पूरी तरह तैयार थी। नरेन्द्र को लेखन से जो पारितोषिक मिलता था वह मात्र एक नरेन्द्र के जीवन यापन के लिए भी पूरा न पड़ता था। उसके लेखन का मुख्य विषय इस प्रकार था— “आदर्शवाद को साहित्य में दर्शाकर तब वह दम लेता था—उसके लेख और पुस्तकें प्रमाण हैं। बीसवीं सदी की समस्त विचारधाराएँ उसकी धरा से बह चुकी थीं, पर जो कुछ उसने धारण किया था वह था मनुष्य धर्म, जिसे अंग्रेजी में ‘रिलीजियन आफ मेन’ नये स्वर पात से, जोर देकर कहते हैं। इसमें भूत, वर्तमान और भविष्य के सब धर्म वह धर देता था।”¹

अतः नरेन्द्र घर से बड़े-बड़े शहरों से होता हुआ कलकत्ता जाता है। प्रकाशकों और मित्रों से साहित्य का बाजार भाव ज्ञात करता रहा। ‘आरती’ के प्रकाशक ने मौलिक पुस्तक के लिए आठ रुपये फार्म से अधिक देने का नियम नहीं बताया। वह भी पुस्तक प्रकाशित होने के तीन माह पश्चात्। ‘आरती’ के प्रकाशक ने नरेन्द्र के साथ जो सौदा तय किया वह इस प्रकार है। संपादक ने कहा, हम कोई लेख बिना पुरस्कार का नहीं छापते, अवश्य नये लेखकों को 2/- रुपये ही प्रति लेख देने का नियम है, पर आपको हम 1 1/2-/- पृष्ठ ही देंगे। फिर बड़ी सहृदयता से बोले, इससे अधिक ‘आरती’ दे नहीं सकती”² नरेन्द्र ने कहा—“आप लोग पुस्तकें बेचने के विचार से पचास और साठ प्रतिशत कमीशन बेचने वाले को देते हैं—यह आपकी साहित्य सेवा नहीं, अर्थ सेवा हुई। यदि लेखकों को अधिक देने लगे, तो किताबे अच्छी-अच्छी लिखी जाएँ और साहित्य का उद्धार भी हो।” किन्तु साहित्य उद्धारक प्रकाशक स्वयं को मानते थे। इस प्रकार प्रकाशकों के बीच जूझता हुआ नरेन्द्र कलकत्ता पहुँचता है। वहीं बीसवीं सदी पुस्तक एजेंसी में 6/- रुपये फार्म का बंगला में रद्दी उपन्यासों के अनुवाद का काम मिला। नरेन्द्र का एक मित्र स्नेह शरण यद्यपि एक सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखक है किन्तु आर्थिक स्थिति

1. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-60

2. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-61

से सबसे अधिक दरिद्र और उपेक्षित है । स्नेह शरण के अपमानित जीवन को देखकर नरेन्द्र का मन वितृष्णा से भर जाता है । अतः नरेन्द्र ने अनुवाद करना बंद कर दिया । उसे आभा का स्मरण हो आता है । विचारमग्न नरेन्द्र भावनाओं में न बह कर कुछ यथार्थ की बात सोचता है । मन में एक संकल्प ले कर नरेन्द्र गाँव लौटा गाँव जाकर उसने अपनी सारी जमीन जायदाद बेच डाली । गाँव वालों ने खूब प्रचार किया आभा ने भी नरेन्द्र के बारे में उल्टा-सीधा सुना । सांयकाल नरेन्द्र मंदिर गया, आभा उसी तरह मिली । नरेन्द्र ने आभा को अपना संकल्प सुनाया एक घनिष्ट मित्र के रूप में न कि एक विद्वान के रूप में । आभा ने सुन कर अनुभव किया—‘यह स्वर वहीं पहुँचा है जहाँ कभी आँखों की सहानुभूति—स्नेह पहुँचा था । इसमें उपदेश की गुरुता नहीं, मनुष्य के प्रति मनुष्य का समभाव है ।’¹ आभा नरेन्द्र से नये रास्ते के बारे में पूछती है । नरेन्द्र बताता है कि तुम्हारे और मेरे जीवन से बंधकर बिलकुल एक नया रास्ता, जिससे आगे, और लोग आयेंगे, मनुष्यों के लिए मनुष्य होने को ।’² आभा द्वारा नरेन्द्र को सहमति मिली । वह एक आज्ञाकारिणी होकर नरेन्द्र का अनुकरण करने को तैयार थी । ‘नरेन्द्र आभा को वही अधिकार दिलाना चाहता है जो उससे छीन लिया गया है । जिस दुनियाँ ने तुम्हें छोटी, अधम, भाग्य से रहित कहा क्या उसे तुम नहीं समझाना चाहती कि तुम बहुत बड़ी भाग्य से भरी हुई हो ।’³ नरेन्द्र आभा को एक आभामय संसार में चलने के लिए कहता है । आभा सकृचाती है । गाँव वालों का भय अब भी है नरेन्द्र दिलासा दिलाता है—‘मुझे कुछ नहीं कह सकते सब अपनी-अपनी किस्मत को रोएंगे, जिसे किसी तरह से फूटा नहीं समझ पाए-थाने जाएंगे, दरोगा के आगे-पीछे दुम हिलाएंगे-कुत्तों की तरह भौंकेंगे, पर कुछ नहीं कर सकते । सामने आकर काटना देशी कुत्ते नहीं जानते ।’⁴ मैं मुँह पर विलायती ठोकरें

-
1. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-60
 2. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-61
 3. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-61
 4. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-62

लगाना सीख चुका हूँ, तुम्हे भी सिखाना चाहता हूँ । "आभा मूक बनी इस दृढ़ पुरुष का अनुसरण करती हुई चल दी । कुछ दिन और गाँव में ही रहकर गाँववालों का तिरस्कार और अपमान सहते हुए नरेन्द्र आभा को लेकर दिल्ली पहुँचता है । आभा के साथ उतरवाई गई अपनी फोटो को विवाह के ब्यौरे के साथ उसने मासिक और साहित्यिकों के सम्पादकों के पास भेजा । सम्पादकों ने स्त्री जाति के उद्धारक के रूप में इस सुन्दर चित्र को अपनी ओजस्वी टिप्पणियों के साथ प्रकाशित किया । छोटे-छोटे पत्रों ने ब्लाक मंगवाकर और ऊँची आवाज लगाई ।

नरेन्द्र ने घर पर ही आभा को नृत्य संगीत की शिक्षा का बन्दोबस्त किया । पढ़ने का कार्य नरेन्द्र ने स्वयं किया । कुछ ही समय पश्चात् आभा ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से नृत्य, संगीत और हिन्दी, उर्दू भाषा में पारंगत हासिल कर ली ।

नरेन्द्र अब आश्वस्त हो गया था कि आभा को अब स्टेज पर उतारा जा सकता था । इसी उद्देश्य से बड़े-बड़े दैनिक साप्ताहिक पत्रों में विज्ञापन के लिए अग्रिम भेजकर आभा का अच्छा विज्ञापन कराया आभा स्टेज पर उतरी । दर्शकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की । स्त्रियों की पत्रिका 'पतिव्रता' ने लिखा—'हमारी देवियों को इससे बढ़कर दूसरा आदर्श नहीं मिल सकता कि पति और पत्नी सम्मिलित रूप से कला की सेवा में लगे ।'"

दिल्ली में इनका अर्द्धनारीश्वर नाटक बड़ी सफलता के साथ अभिनीत हुआ । तीन वर्ष में ही नरेन्द्र और आभा की ख्याति पूरे देश में फैल गयी अब उनके पास प्रसिद्धि और समृद्धि दोनों ही थे । अपने सुभद्रार्जुन नाटक को प्रत्येक शहर में दिखाने के लिए विज्ञापन किया । सभी बड़े-बड़े शहरों कानपुर, लखनऊ, प्रयाग, काशी आदि शहरों से क्रमशः कलकत्ते तक का निश्चय हुआ । काशी वालों ने स्टेज किराए पर न देकर कमीशन पर दिया । सभी शहरों में नाटक खेला गया । सुभद्रा की भूमिका में आभा की

अत्यंत प्रशंसा हुई । अन्त में नरेन्द्र और आभा काशी पहुँचे । यहाँ 'आरती' के प्रकाशन ने 'पत्रिका' नाम से एक रंगशाला बनवाई थी । 'पत्रिका' के मालिक स्वयं नरेन्द्र से मिले । नरेन्द्र ने कहा—“आपसे भाड़े का स्टेज नहीं मिला, अतः लाचार होकर मुझे दूसरा प्रबंध करना पड़ेगा । ‘नम्र भाव से मुस्कराते हुए ‘पत्रिका’ के मालिक ने कहा ‘पत्रिका’ आप ही का है । आप कुछ भी न दें ।”

मालिक ने कहा—“पचास नहीं तो चालीस सैकड़ा ही दीजिए ।” नरेन्द्र ने भौंहे सिकोड़ ली । कहा ‘हमारे चालीस सैकड़े के मानी हैं, भाड़े के अलावा आपको सात—आठ सौ रुपए रोज मिलेंगे । अगर वही है तो पन्द्रह सैकड़ा ले लीजिए ।”¹

वह वही पत्रिका के मालिक थे जो पहले 'आरती' के प्रकाशक थे और जो नरेन्द्र को उसकी आरंभिक साहित्यिक रचना के लिए पन्द्रह सैकड़ा भी देने को तैयार न थे ।

एक दिन आभा एकान्त में बैठकर नरेन्द्र से कहती है— ‘नरेन्द्र, तुम बुरा न मानोगे, मैं देखती हूँ दुख बहुत थे जरूर, पर मंदिर का वह द्वीप जलाने वाला जीवन मुझे बड़ा सुखमय लग रहा है ।”² ‘सफलता’ शीर्षक कहानी में नरेन्द्र की जीवन कथा के माध्यम से निराला ने अपने ही साहित्य संघर्ष की कहानी कही है । अन्तर यही है कि नरेन्द्र तो अपनी सफलता का रहस्य पा गया था, पर निराला न पा सके । तत्कालीन साहित्य प्रवृत्ति पर गहरा व्यंग्य निराला ने इस कहानी में किया है ।

भक्त और भगवानः—

भक्त और भगवान' शीर्षक कहानी में निराला की स्वयं की जीवनी एक भक्त के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है । लेखक ने एक भक्त की मानसिक स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । भक्त नाम पात्र के रूप में 'निराला' का ही व्यक्तित्व उभरकर

1. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-65

2. सखी — सफलता निराला, पृष्ठ-65

सामने आया है। भक्त प्रत्यक्ष को देखकर भक्ति के आवेश में उसकी भक्ति परक व्याख्या करता है भक्ति का संसार काल्पनिक है, मनोहर है किन्तु असत्य है।

इस कहानी में अध्यात्म, राष्ट्रधर्म और विद्रोह एक साथ बद्ध हैं। निरंजन (भक्त) राजा के यहाँ नौकरी करने वाले एक साधारण पिता की संतान था। पिता के जीते भक्त पर किसी भी प्रकार का पारिवारिक बोझ न था। प्राकृतिक सौन्दर्य प्रेमी भक्त को भागवान पर अतीव श्रद्धा थी। गाँव में ही पीपल के पेड़ के नीचे एक पक्के चबूतरे पर महावीर जी की सुन्दर मूर्ति स्थापित थी।

भक्त बड़ी लगन के साथ, बड़ी श्रद्धा से उस हनुमान की मूर्ति को सजाता है। सिंदूर रंजित मूर्ति को देखकर जब वह घर लौटा तो देखा उसकी पत्नी सिंदूर सज्जित खड़ी हुई है।

भक्त राजा के सरोवर को कमलों से भरा हुआ देखता है। इन कमलों को महावीर जी पर चढ़ाने की उसकी उत्कृष्ट इच्छा हुई। भक्त सरोवर में कूद पड़ा कमलनाल के काँटों से उसका शरीर छिद गया किन्तु भक्त ने कमलों से महावीर को सुसज्जित किया। प्रसन्नचित हो घर लौटा। भोजन के बाद सो गया। स्वप्न में देखा कि महावीर जी की वही मूर्ति मुस्कराती हुई सामने खड़ी है। महावीर जी की वह मूर्ति धीरे-धीरे गायब हो गई। भक्त ने देखा मूर्ति के स्थान पर उसकी पत्नी सामने है। उसकी माँग सिंदूर से आरक्त है। पत्नी कहती है—महावीर को मैं मस्तक पर धारण करती हूँ। भक्त ने अर्थ पूँछा। पत्नी ने कहा—‘अर्थ सब मैं हूँ। मुझे समझो।’ इतने में भक्त की आँखें खुल गई—देखा पत्नी घोर निद्रा में सो रही है।

एक दिन भक्त के मन में पुनः महावीर जी की पूजा अर्चन की इच्छा जाग्रत हुई। उसने गुलाब के बगीचे में जाकर लाल-लाल गुलाब ले जाकर महावीर को लाल गुलाबों से सजाया।

भयंकर महामारी के प्रकोप में पत्नी का स्वर्गवास हुआ भक्त ने प्रहार सह लिया । भक्त राजा के यहाँ नौकर हो गया किन्तु उसे नौकरी अच्छी न लगती थी । छाया लोक से उतर कर उसने जो संसार देखा, उससे विरक्ति हुई । पुनः स्वप्न देखा कि महावीर जी की वीर मूर्ति है । भारत के रूप में महावीर जी को देखा—‘मन इतने दूर आकाश पर था कि नीचे समस्त भारत देख, पर यह भारत न था, साक्षात् महावीर थे, पंजाब की ओर मुँह, दाहिने हाथ में गदा, मौन शब्द शास्त्र, बंगाल की तरफ से गए बाँए पर हिमालय पर्वतों की श्रेणी, बगल के नीचे व्यंगोपसार, एक घुटना वीरवेश सूचक—टूटकर गुजरात की ओर बढा हुआ एक पैर प्रलम्ब—अंगूठा कुमारी अन्तरीय, नीचे राक्षस स्वरूप लङ्काकमल—समुद्रा पर खिला हुआ ।”¹

ध्वनि सुनाई दी ‘वत्स यह वीर रूप समझो’ एकाएक प्रेमानन्द जी की मूर्ति का दर्शन हुआ । ध्वनि हुई — ‘वत्स’ यह सूक्ष्म भारत है । इससे नीचे नहीं उतर सकते । इनका प्रसार समझ के पार है ।”² वही पुनः स्वप्न देखा महावीर जी की वही मूर्ति हाथ जोड़े खड़ी दिखी । मुख से उच्चरित हुआ — ‘मैं इसी तत्व को हाथ जोड़े हुए हूँ, यही मेरे राम हैं, तुम इसी तरह रहो । किसी कार्य को छोटा न समझो, न किसी की निन्दा करो ।”³

अन्त में भक्त की पत्नी की मूर्ति स्वप्न में दिखाई देती है । ध्वनि हुई — ‘वत्स यह मेरी माता देवी अंजना है, इनके मत्सक पर देखो ।”⁴

मस्तक पर वीर पूजा का वही सिंदूर शोभित था, मुस्कराकर देवी सरस्वती (भक्त की पत्नी) ने कहा — “अच्छे हो” आँख खुल गई कहीं कुछ न था ।”⁵

डॉ. रामविलास शर्मा की भक्त और भगवान’ कहानी पर टिप्पणी — ‘भक्त

-
1. सखी — भक्त और भगवान निराला, पृष्ठ-74
 2. सखी — भक्त और भगवान निराला, पृष्ठ-74
 3. सखी — भक्त और भगवान निराला, पृष्ठ-74
 4. सखी — भक्त और भगवान निराला, पृष्ठ-75
 5. सखी — भक्त और भगवान निराला, पृष्ठ-75

और भगवान' निराला की और हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में है । इसमें मन की उन दशाओं का चित्रण है जो 'अर्थ' कहानी और तुलसीदास में चित्रित की गई है । सारी कहानी में एक ही वातावरण छाया हुआ है । जिसे काल्पनिक इच्छापूर्ति का स्वप्न बिगाड़ता नहीं । इस वातावरण में निराला का छायालोक में भिन्न वास्तविक स्थूल संसार का बोध कहीं लुप्त नहीं होता ।¹

'भक्त और भगवान' कहानी में अत्यन्त सूक्ष्म व्यंग्य है किन्तु कटुता नहीं है । व्यंग्य करुणा मिश्रित है । एक स्वप्नाविष्ट मन का पूजाभाव, संसार का बोध, दीनजनों की स्थिति के प्रति चिंता, प्रच्छन्न अन्तर्द्वन्द्व की ओर संकेत यह सब काफी तटस्थ रूप में चित्रित किया गया है ।

1. निराला की साहित्य साधना - डॉ. राम विलास शर्मा, पृष्ठ-500

2.1.3 सुकुल की बीबी :-

‘सुकुल की बीबी’ निराला जी का तीसरा कहानी संग्रह है । इसमें कुल चार कहानियाँ हैं ।

सुकुल की बीबी—

श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी

कला की रूपरेखा

क्या देखा

क्या देखा :-

सन् 1922 में निराला ने अपनी पहली कहानी ‘क्या-देखा’ की रचना की । निराला ने इस कहानी को लिखकर समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं पर पहला प्रहार किया ।

‘हीरा’ नामक वेश्या के चरित्र की उज्ज्वलता को उजागर कर उन्होंने समाज बहिष्कृता वेश्याओं के प्रति सहानुभूति का भाव जाग्रत किया । प्रेम के क्षेत्र में उत्सर्ग की भावना और चरित्र की महत्ता का स्वाभाविक चित्रण इस कहानी में मिलता है । सन् 1941 में प्रकाशित ‘सुकुल की बीबी’ कहानी संग्रह के निवेदन में निराला ने लिखा है —

‘क्या देखा’ मेरी पहली कहानी है । इस कहानी की कथावस्तु जितनी कुतूहल से पूर्ण है, चरित्र चित्रण की आदर्श भूमि भी वैसी ही अनुपम । त्याग और भोग का संकल्पात्मक अन्तर्द्वन्द्व तथा कथोपकथन की नाटकीयता, चारुता साद्यन्त मुग्ध करती रहती है । उत्तम पुरुष की शैली से कहानी का आरंभ होता है, रूपात्मक शैली के साथ पत्रात्मक शैली की समिवृत्ति से परिसमाप्ति होती है ।”

— किं कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

१. ई लक्ष्य ६.१.२

— किं कि लक्ष्य

किं कि लक्ष्य

किं कि लक्ष्य

किं कि लक्ष्य

— किं कि लक्ष्य

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

१. लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

— ६

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

आ लक्ष्य ६.१.२ : ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

१. ई लक्ष्य ६.१.२ का कि लक्ष्य ६.१.२

‘निराला’ जी की कहानियाँ सामान्यतः चरित प्रधान हैं । घटना या कार्य का चमत्कार और संघर्ष उनका प्रधान उद्देश्य नहीं है । मुख्य उद्देश्य है – चरित्रोद्घाटन तथा चरित्रांकन । ‘क्या – देखा’ शीर्षक पहली ही कहानी में हीरा नाम की वेश्या का चरित्रांकन बड़े ही सफल रूप में किया गया है । प्रेम की वेदी पर उत्सर्ग हो जाने की महती भावना इस कहानी का प्रतिपाद्य है ।

प्यारेलाल कवि सुन्दरलाल के कहने पर हीरा के कोठे पर जाते हैं । हीरा संगीत, नृत्य की शिक्षा प्राप्त कर उसके कलात्मक प्रदर्शन के द्वारा मिलने वाले पुरस्कार से अपनी बहन शान्ता को उच्च शिक्षा दिलाने वाली एक आदर्श वेश्या है । हीरा प्यारेलाल पर आसक्त हो जाती है । प्यारेलाल सोचते हैं – ‘मैंने जिस शान पर स्त्री का मुँह देखने से इन्कार कर दिया है, उसे अन्त तक जरूर निभाऊँगा । बुरा हो इस साहित्य सौन्दर्य का, जिसके फेर में पड़कर कवि सुन्दर लाल जी के साथ मुझे वेश्यालय जाना पड़ा और सौन्दर्योपासना की प्रथम पूजा मैंने एक वेश्या के चरणों पर अर्पित की ।’¹

हीरा सुन्दर लाल जी को पत्र लिखती है उसमें प्यारेलाल जी को लिवा लाने का आग्रह है । प्यारेलाल पत्र पढ़कर काफी विचार मंथन करते हैं कि हीरा के यहाँ जायं अथवा नहीं ।

प्यारेलाल का हठीमन बार-बार कह उठता था । ‘‘असम्भव क्यों है ? सौन्दर्योपासना और ब्रह्मचर्य पालन दोनों एक साथ क्यों नहीं निभा सकते ? विरोधाभास कहता था – ‘तो फिर चलो सुनो मोजरा, डरते क्यों हो ? अनबूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग ।’² प्यारेलाल असमंजस की स्थिति में थे । एक तरफ महिलाओं की मर्यादा रखने की आदत और दूसरी ओर साहित्य, संगीत, कला-कौशल, मनोभावों की विशदता, सौन्दर्य का सारा परिवार लालच में फँसाकर लगाम ढीली कर देता था । सुन्दरलाल

1. सुकुल की बीवी – क्या देखा निराला पृष्ठ-60

2. सुकुल की बीवी – क्या देखा निराला पृष्ठ-61

द्वारा समझाने पर भी प्यारेलाल में हीरा की वेश्यावृत्ति के प्रति अनुराग की अपेक्षा वैराग्य की ही प्रबलता रहती है। प्यारेलाल हीरा के यहाँ जाना उचित नहीं समझते। सुन्दरलाल अकेले हीरा के यहाँ पहुँचते हैं। हीरा तीन मिनट तक चुपचाप खड़ी रही। पूछा—
“आपके मित्र नहीं आए ?”

वे बोले ‘कहते थे हम बदनामी से डरते हैं। उसने बदनामी को ध्यान से सुना फिर अनमनी हो गई, थोड़ी देर के लिए।

सुन्दरलाल हीरा से गाने के लिए पूछते हैं — कब होगा ? हीरा मना कर देती है — ‘शायद आज न होगा। मेरी तबियत अच्छी नहीं। आपके मित्र ऐसे हैं मैं जानती तो हरगिज उन्हें न बुलाती। उस दिन कहीं से भटक कर आ गए थे जान पड़ता है, कहाँ रहते हैं ?’¹

सुन्दरलाल चले आते हैं। हीरा प्यारेलाल का पता लिख लेती हैं। कुछ दिनों के पश्चात् प्यारेलाल अस्वस्थ हो जाते हैं। अपने मित्र सुन्दरलाल को सूचना भेजते हैं किन्तु सिक्ख वेश में हीरा की बहन शान्ता अमरसिंह के नाम से रोज शाम को पहुँचकर प्यारेलाल की सेवा सुश्रुषा करती है। प्यारेलाल स्वस्थ हो जाते हैं। प्यारेलाल अमरसिंह के स्वरूप के बारे में सोचते हैं — ‘सिख तो हैं लेकिन उतना लम्बा कद नहीं, इनके कद की लम्बाई बालों ने ले ली, बालों पर डटे रेशमी साफे के नीचे चाँद का टुकड़ा गोरा-गोरा मुखड़ा दबता नजर आता है।’²

प्यारेलाल जी कृतज्ञता प्रकट करते हैं — ‘अच्छा हूँ, आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूँ ? ऐसा शब्द नहीं मिला जिससे कृतज्ञता प्रकट करूँ। आपने मुझे सदा के लिए मोल ले लिया।’³ अमरसिंह का प्रतिदिन आना-जाना होता रहा, साहित्यिक

-
1. सुकुल की बीवी — क्या देखा निराला पृष्ठ-64
 2. सुकुल की बीवी — क्या देखा निराला पृष्ठ-66
 3. सुकुल की बीवी — क्या देखा निराला पृष्ठ-67

चर्चाएँ होती रहती थीं । अमरसिंह का भोला-भाला चेहरा दिल की तस्वीर से मिलता – जुलता है । प्यारेलाल की दृष्टि से अमरसिंह का चित्र ‘‘पहले वे अमरसिंह की सेवा को जिस पवित्रता से देखते थे, अब चेहरे को उसी पवित्रता के विचार से देखते हैं, उन्हें बड़ी तृप्ति मिलती है । एक प्रकार की शक्ति भी ऊपर को उठती हुई उन्हें ऊँचा उठा देती है । उन्हें यह मालूम नहीं हुआ कि इस तरह पवित्रता – दर्शन से कामना के चेहरे पर पड़ा नकाब उठता गया । वह माना भयंकर न होकर भी भयंकर थी । उससे खतरे में पड़ने की संभावना थी । वज्र जान-बूझकर आसक्ति से मित्रता थी पर प्यारेलाल यह नहीं समझ सके । वे रूप की लालसा, सौन्दर्य के मोह को साहित्य समझे जिससे एक दुर्बल हृदय बाहर खिंचा चल आ रहा था । आँखों की राह से निकलकर एक अतृप्त अभिलाषा बाहर की वस्तु पर सिर पटक रही थी । जब दृष्टि सुन्दर से लिपटती है, तब कुत्सित से हट जाती है, उसे अवज्ञा का धक्का मारती हुई । यही भ्रम है । प्यारेलाल यह नहीं समझे ।’’¹

एक शाम अमरसिंह नहीं पहुँचते हैं । प्यारेलाल प्रतीक्षा करते रहते हैं । हताश होकर भोजन पानकर लेट जाते हैं । देर तक नींद नहीं आती है । प्रातः अखबार वाला दैनिक स्वतंत्र दे गया । शुरू वाले पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था – ‘ईडन गार्डन में हत्याकाण्ड’ एक साथ दो खून ‘मिस्टर हॉग के कलेजे में छुरी भोंकी गई और हीरा के सिर में गोली लगी ।’ मिस्टर हाग बौन एण्ड कम्पनी के मैनेजर थे और हीरा 13, न्यू स्ट्रीट, कलकत्ता की प्रसिद्ध बाई ।’’²

समाचार पढ़कर प्यारेलाल आपादमस्तक सन्न रह जाते हैं । साहब के अत्याचार पर प्यारेलाल को विश्वास हो गया । उन्होंने निश्चय किया कि हीरा निर्दोष थी । इसी समय नौकर एक पत्र लाता है ।

1. सुकुल की बीवी – क्या देखा निराला पृष्ठ-72

2. सुकुल की बीवी – क्या देखा निराला पृष्ठ-73

लिखा था - 'पत्र पाते ही मिलो।' कैसा भी काम हो छोड़कर पत्र वाहक के साथ चले आओ। अधिक और क्या? तुम्हारा अमरसिंह।'¹

प्यारेलाल जिस सादे पहनावे में थे उसी से चल पड़े। पत्रवाहक को हीरा के मकान के अन्दर जाते देखकर प्यारेलाल बड़े आश्चर्यचकित हुए। जाकर देखा चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है। रोते हुए अमरसिंह का गला बैठ गया था। प्यारेलाल अमरसिंह से हीरा के खून के बारे में पूछते हैं और अमरसिंह का हीरा के यहाँ होने के कारण जानना चाहते हैं। अमरसिंह ठीक उत्तर नहीं देते हैं। प्यारेलाल पुनः आग्रह करते हैं - अमरसिंह फिर टाल जाते हैं। प्यारेलाल उत्तेजित हो जाते हैं - 'कैसी मित्रता है कि मैं तुमसे एक बात पूँछूँ और तुम टालते जाओ।' अमरसिंह - "अच्छे समय मित्रता की आड़ लेते हो। तुम्हारी मेरी मित्रता से हीरा से संबंध? तुम्हारी मित्रता मुझसे या हीरा से थी।"² इसी वाद-विवाद में प्यारेलाल को निरुत्तर होना पड़ता है। प्यारेलाल अपमानित महसूस करते हैं।

कहते हैं 'विश्वस्तं नाति विश्वसेत' बाद में अमरसिंह बताता है - हीरा से मेरी जान पहचान थी। हीरा के बारे में अमरसिंह बताता है - कानपुर के किसी मूलगंज मोहल्ले में रहती थी। उस समय पढ़ती थी। इसकी एक छोटी बहन थी शांता, पिता सम्पन्न थे। कलकत्ता में भी कारोबार था। कुछ दिनों के बाद पिता का देहान्त हो गया। माँ दोनों पुत्रियों को लेकर कलकत्ता आ जाती है। दोनों को नृत्य संगीत की शिक्षा दिलाई। दोनों पुत्रियाँ अत्यन्त रूपवती थीं। रूप और धन के लालच के लोभ से लोग इन्हें मिटाने की सोचने लगे। ये लोग भी इज्जतदार और संभ्रान्त समझे जाने वाले ही थे। माँ की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात् सम्पत्ति भी नष्ट हो गई। हीरा के लिए वही समाज के नकाबपोश षड़यन्त्र रचने लगे। काफी संघर्ष के

1. सुकुल की बीवी - क्या देखा निराला पृष्ठ-74

2. सुकुल की बीवी - क्या देखा निराला पृष्ठ-76

पश्चात् हीरा अपनी और अपनी बहिन की इज्जत को बचाते हुए संगीत के माध्यम से अपनी जीविका चलाने लगी । सच्चरित्रता का गवाह उनका बूढ़ा उस्ताद है । अमरसिंह बताते हैं कि शांता की पढ़ाई जारी रही । वह बेथून कालेज की छात्रा थी । अमरसिंह बताते हुए भावविह्वल हो जाते हैं, आँसू टपकने लगते हैं ।

प्यारेलाल इस बात से अनभिज्ञ हैं कि शांता के प्रसंग से अमरसिंह क्यों दुखी हो जाते हैं । पूछते हैं – ‘छात्रा थी तो क्या अब पढ़ना छोड़ दिया ? बहिन की इस घटना में उसे बड़ी चोट पहुँची होगी । क्या उसे मैं देख सकता हूँ ?’¹ अमरसिंह प्यारेलाल से कहते हैं कि कुछ देर बाद वे स्वयं ही वास्तविकता से अवगत हो जाएंगे । अपना लिखा हुआ पत्र प्यारेलाल को देते हैं । अपने घर जाकर पढ़ने के लिए कहते हैं ।

उत्सुकतावश प्यारेलाल अपने घर जाने के पहले ही पत्र खोलकर पढ़ लेते हैं । पत्र में लिखा है कि – ‘‘अमरसिंह जो पहले आपके पास जाता था वह शांता थी और आज जिस अमरसिंह को देखा वह हीरा है । शांता मर चुकी है ।’’²

निराला इस कहानी में नारी – शक्ति के गौरवमय आदर्श का ज्योतिर्मय साक्षात्कार है । प्रेम की वैध परिणति में ही त्याग और भोग के समन्वय की सजीवता का मर्म संकेत है ।

हीरा और शांता के उज्ज्वल चरित्र का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है । एक वेश्या में भी प्रेम की ज्योति विद्यमान रहती है ।

मिस्टर हाग जैसे अंग्रेजों के विकृत मस्तिष्क की शुद्धि, शांत जैसी भारतीय देवियाँ ही कर सकती हैं ।

हीरा जैसी निस्सहाय स्त्रियों के बारे में डॉ. राम विलास शर्मा के उद्गार –

-
1. सुकुल की बीवी – क्या देखा निराला पृष्ठ-78
 2. सुकुल की बीवी – क्या देखा निराला पृष्ठ-79

“आर्थिक निर्भरता के कारण ही स्त्रियाँ घरों में बन्द रहकर दब्बू और निस्सहाय बन गई थीं । वे गुण्डों से अपनी रक्षा न कर पाती थीं, एक बार भ्रष्ट की जाने पर वेश्यावृत्ति अपनाने को विवश होती थीं । इस बाहर के व्यभिचार के अलावा वे घर में अनेक प्रकार के व्यभिचार करने को विवश होती थीं । ये सब गोपनीय बातें जिनके बारे में कोई कुछ लिखना पसन्द नहीं करता ।”¹

सुकुल की बीवी:—

निराला जी ने सुकुल की बीवी शीर्षक कहानी के माध्यम से हिन्दू मुस्लिम-भेद-भाव को मिटाने का प्रयास किया है । मुस्लिम महिला पुखराज को उन्होंने स्वयं अपनी बहिन बनाकर उसका विवाह सुकुल के साथ सम्पन्न कराया । यह लेखक के प्रगतिशील विचार का द्योतक है । हिन्दू कुलीन वर्ग भेदी दृष्टिकोण के कारण समाज में जो अविचार उत्पन्न होता है उस पर निराला जी ने इस कहानी के माध्यम से कुठाराघात किया है ।

निराला जी को विशुद्ध यथार्थवादी कहानियों में संयोग और घटनाओं के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ी । अपने जीवन में आने वाले व्यक्तियों की कथा ही निराला ने इसलिए लिखी क्योंकि उनसे वे अमित प्रभावित हुए । ‘सुकुल की बीवी’ ऐसे ही व्यक्ति की कहानी प्रस्तुत करती है । ‘सुकुल की बीवी’ की कुँवर विवाहित और विजातीय पुरुष से प्रेम करती है और बाद में साहस के साथ उससे विवाह करती है ।

निराला जी ने अपने पात्रों में उन्मुक्त प्रेम को निभा सकने पर बल दिया है । निराला के नायकों की अपेक्षा नायिकाएँ स्वच्छन्द प्रणय का पोषण करने की अधिक क्षमता रखती हैं । इस क्षेत्र में सभी कहानियों के नायक प्रवेश करने से संकोच करते हैं वहीं इनकी नायिकाएँ आगे बढ़चढ़कर सम्मुख आती हैं । ‘सुकुल की बीवी’ कहानी में सुकुल की बीवी अर्थात् पुखराज का व्यक्तित्व पुष्प कुमारी के रूप में बड़ा ही आकर्षक और

प्रभावपूर्ण दिखाया गया है ।

‘सुकुल की बीवी’ को साहित्यकारों के द्वारा पहले संस्मरण माना गया है, उसके बाद कहानी । सहपाठी सुकुल के जीवन की तस्वीर संस्मरण और कहानी के बीच की अनिश्चित भूमि है । विवाह होने, प्रवेशिका परीक्षा में पदमाकर के छन्द लिखने की बातें आत्म संस्मरण हैं ।

कहानी के प्रारंभ में निराला आत्म परिचय देते हैं । साहित्य क्षेत्र में जब से उनका पदार्पण हुआ – निराला लिखते हैं – “तब से मैं लगातार साहित्य समुद्र मंथन कर रहा था । पर निकल रहा था केवल गरल पान करने वाले अकेले महादेव बाबू (मतवाला के संपादक) शीघ्र रत्न और रंभा के निकलने की आशा से अविराम मुझे मथते जाने की सलाह दे रहे थे । यद्यपि विष की ज्वाला महादेव बाबू की अपेक्षा मुझे ही अधिक जला रही थी फिर भी मुझे एक आश्वासन था की महादेव बाबू को मेरी शक्ति पर मुझसे भी अधिक विश्वास है । इसी पर वेदान्त विषयक नीरस एक साम्प्रदायिक पत्र का सम्पादन भार छोड़कर मनसा-वाचा-कर्मण सरस कविता कुमारी की उपासना में लगा । इस चिरन्तन चिन्तन का कुछ ही महीने में फल प्रत्यक्ष हुआ, साहित्य सम्राट गोस्वामी तुलसीदास जी की मदन-दहन समयावली दर्शन सत्य उक्ति हेच मालूम दी क्योंकि गोस्वामी जी ने उस समय दो ही दण्ड के लिए कहा है – “अबला बिलोकहिं पुरुषमय अरु पुरुष सब अबलामयम् । ‘पर मैं घोर सुषुप्ति के समय को छोड़कर बाकी स्वप्न और जाग्रत के समस्त दण्ड, ब्रह्माण्ड को अबलामय देखता था ।”

आत्म परिचय के पश्चात् निराला जी ने उस घटना का वर्णन किया है जब पुष्पकुमारी नामक महिला के आने का संदेश लेखक को दरबान देता है । इस संदर्भ में नारी सौन्दर्योपासक लेखक के मन में उस नायिका के प्रति जो कुतूहल भाव जागा उसका बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया है ।

“मैंने जैसे वीणा झंकार सुनी, सारी देह पुलकित हो गई, जैसे प्रसन्न होकर पीयूषवर्षी कंठ से साक्षात् कविता कुमारी ने पुकारा हो, बड़े अपनाव से मेरा नाम लेकर। एक साथ कालिदास शेक्सपियर, बंकिमचन्द और रवीन्द्रनाथ की नायिकाएँ दृष्टि के सामने उतर आईं। आप ही एक निश्चय बंध गया – यह वही हैं जिन्हें कल कार्निवलिस एस्क्वायर पर देखा था – टहल रही थीं मुझे देखकर पलकें झुका ली थीं। कैसी आँखें वे ! उनमें कितनी बातें..... मेरे छन्द की स्वच्छन्दता कुछ आई होगी इनकी समझ में, तभी बाकी समझने के लिए आई हैं।”¹

सुकुल बचपन में निराला के सहपाठी मित्र थे। उस समय वे पक्के ब्राह्मणवादी तथा लम्बी शिक्षा रखने वाले थे। इनका सोचना था कि सर कट जाए पर चोटी न कटे। इन्हीं पृथक् विचारों के कारण निराला तथा सुकुल की दो अलग-अलग टोली हो गई थीं। सुकुल की टोली में धर्मरक्षक हिन्दू लड़के थे तो निराला की टोली में मित्र को धर्म से बड़ा समझने वाले विभिन्न सम्प्रदाय के हिन्दू, मुसलमान, क्रिस्तान सभी थे। खेल भी अलग-अलग था। सुकुल अध्ययनशील थे। लड़के उनके विषय में कहते थे कि वह रात को खूंटी से बंधी एक रस्सी से अपनी चोटी बांध देते हैं, ऊँघते हैं तो झटका लगता है और नींद खुल जाती है, जगकर पढ़ने लगते हैं। अतः शिखा विस्तार के साथ-साथ सुकुल का शिक्षा विस्तार होता रहा।

लेखक का मन स्कूली शिक्षा के दौरान ही कविता लिखने में लगने लगा था। घरवालों के डर से स्कूल जाते थे। स्कूली शिक्षा के प्रति उदासीनता का परिणाम होता है कि परीक्षा के समय अत्यन्त चिन्तित हो जाते थे। काव्य मन होने के कारण गणित की नीरस कापी को पद्माकर के चुहचुहाते कवित्तों से भर आए थे। घरवालों को भी भ्रमित करते रहे – परीक्षाफल में सूबे में प्रथम स्थान आएगा। परीक्षाफल का समय ज्यों-ज्यों निकट आता गया घरवालों का सामना करने में भय लगने लगा। अतएव घर

1. सुकुल की बीवी – सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-8

वालों से बहाना बनाकर लेखक माता जी से झूठ बोलकर कि जगतपुर के जमींदारों ने बारात में चलने के लिए बुलाया है और ऐसा कहा है कि जैसे मेरे गए बगैर बारात की शोभा न बढ़ती हो । जमींदारों के प्रसंग से माता जी प्रसन्न होकर पिता से सिफारिश करती हैं । माता-पिता और पत्नी की अनुमति से खर्चा लेकर, नए कपड़े बनवाकर ससुराल जाते हैं । ससुराल वाले अचम्भित होते हैं उदास सूरत देखकर । वहाँ भी सास-ससुर से डेढ़ सौ रुपये लेकर कलकत्ता पहुँचते हैं ।

निराला जी लिखते हैं – यहाँ से मेरे नए जीवन की नींव पड़ी । अखबारों में देखा, सुकुल प्रथम श्रेणी में पास हुआ है, चार साल बाद वह बी.ए. हुआ, एम.ए. हुआ, मैं मालूम करता रहा, अच्छी जगह पाई, अब परीक्षा समाप्त कर परीक्षक हैं । मैं ज्यों का त्यों एक बार धोखा खाकर बराबर धोखा खाता रहा, एक परीक्षा की तैयारी न करके कभी पास न हो सका, कितनी परीक्षाएँ दी ।¹

तब से लेकर निराला जी की मुलाकात अब होती है सुकुल से 'निराला' जी के बचपन के मित्र सुकुल बहुत समय बाद आज निराला के पास कलकत्ता पहुँचे हैं । एक भद्र महिला का निराला जी से अपनी श्रीमती जी कहकर परिचय कराया । उन्होंने पूछने पर अपना पहले का नाम पुखराज तथा अब का नाम पुष्प कुमारी बताया ।

पुष्प कुमारी बातचीत के दौरान निराला की कविताओं की प्रशंसा करती हैं । बोली 'आप खूब लिखते हैं ।' 'प्यासा मृग मारीचिका के सरोवर का व्यंग्य नहीं समझता मुझे यह पहली तारीफ मिली थी । इच्छा हुई जाऊँ, महादेव बाबू को भी बुला लाऊँ, कहूँ कि अब अमृत निकलने लगा है, चुल्लू बाँधकर चलिए लेकिन अभी उतने अमृत से मुझे ही अघाव न हुआ था ।'²

'निराला' जी अपने लेखन की प्रशंसा सुनकर अत्यन्त आल्हादित होते हैं

-
1. सुकुल की बीवी – सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-15
 2. सुकुल की बीवी – सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-16

किन्तु पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं होते हैं ।

हास-परिहास की बातें होती हैं । निराला ने सुकुल की चोटी की सलामती के लिए निगाह ऊठाई कि देवी जी बोली, “अब तो चाँद हैं । सुकुल को सुकुल बनाते, सच कहती हूँ मुझे बड़ी मिहनत उठानी पड़ी ।”¹ निराला जी को दोनों अपने घर लिवा जाते हैं । दुमंजिला मकान है ।

पुष्प कुमारी निराला को ऊपर लिवा जाती हैं । सुकुल मुर्गी लाने बाजार चले जाते हैं । चाय, पान, सिगरेट सभी मेज पर लगा आतिथ्य सत्कार की औपचारिकता निभा वार्तालाप शुरू होता है । पुष्पकुमारी अपना सहधर्मी निराला को भी कहती हैं । इस बात से निराला के मन में उथल-पुथल मच जाती है । लेकिन सुकुल की बीवी हैं आप तो ! इस प्रश्न का उत्तर पुष्पकुमारी ‘बीवी’ शब्द की व्याख्या करते हुए देती हैं — “बीबी को ही लीजिए ‘बीवी’ तो मैं सुकुल की भी हो सकती हूँ, हूँ ही, आपकी भी हो सकती हूँ ।”²

लेखक की समझ में न आने पर विस्तारित ढंग से समझाती है वह बोली — “आप साहित्यिक हैं तो क्या फिर भी सुकुल के दोस्त है । ‘बीवी’ की बहुत व्यापकता है ।”³ जरूर मैंने कहा— उन्होंने कान दिया, कहती गई — छोटी बहन, भतीजी, लड़की, मयकूँ (छोटे भाई की स्त्री) सबके लिए बीवी शब्द आता है । आपकी हाँ किस अर्थ के लिए है ? मैंने डूबकर, कुछ कुल्ले पानी पीकर, जैसे थाह पाई, प्रसन्न होने की चेष्टा करते हुए — बहन के अर्थ में ।”⁴

बहन बनने के पश्चात् लेखक से पुष्पकुमारी अपनी अतीत की पूरी कहानी सुनाती है । पुष्पकुमारी निराला से कहती हैं — भाई जी, मेरी रक्षा कीजिए । सुकुल

-
1. सुकुल की बीवी — सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-18
 2. सुकुल की बीवी — सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-19
 3. सुकुल की बीवी — सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-20
 4. सुकुल की बीवी — सुकुल की बीवी निराला पृष्ठ-20

का घर छुटा हुआ है । जिस तरह हो मुझे अपने कुल से मिलाकर सुकुल से ब्याह साबित कीजिए ।¹

पुष्पकुमारी ने बताया कि वह लखनऊ के बाजपेयी खानदान की हैं । उनकी माँ हिन्दू थीं । बाजपेयी जी को एक शादी से संतोष नहीं हुआ इसलिए उन्होंने उनकी माँ के रहते हुए ही दूसरी शादी कर ली । उस समय तक वह पेट में आ चुकी थीं । उसकी माँ ने ससुर को कई चिट्ठियाँ लिखवाई परन्तु उन्होंने कोई खबर नहीं ली । जब माँ किसी प्रकार लखनऊ पहुँची तो ससुर ने उन्हें बदचलन कहा, सौत ने धरती उठा ली, पति ने बाँह पकड़कर निकाल दिया । उस भटकती हुई असहाय स्थिति में एक मुसलमान ने उनके कष्ट को समझा । उस मुसलमान के मानवतापूर्ण व्यवहार से माँ को उससे राहत मिली । माँ ने उस मुसलमान में एक मनुष्य देखा । उसकी बातों में विधर्मीपन न था । धर्म के ठेकेदारों ने पीछा किया किन्तु मुसलमान छिपते-छिपाते एक पुलिस इंस्पेक्टर के घर ले गया । इंस्पेक्टर साहब उस समय छुट्टी पर थे नौकरी पर चलते समय वह माँ को साथ लेते गए । अतएव इंस्पेक्टर की शरण में माँ रहीं । पुष्पकुमारी के कई भाई-बहन और हुए ।

एक दिन नए पिता ने माँ से इनकी शादी की बात आरम्भ की/नारी जाति के प्रति पुरुष के मन की विचारधारा को इतने दिनों में पुष्पकुमारी ने खूब समझ रखा था । अतः पुष्पकुमारी ने शादी के लिए मना कर दिया और माँ के समक्ष आगे, पढ़ने की इच्छा व्यक्त की । बी.ए. में अंतिम वर्ष में सुकुल से साक्षात्कार हुआ । सुकुल उस समय क्रिश्चियन कालेज में प्रोफेसर थे और उनके मकान के सामने रहते थे । दोनों में आकर्षण बढ़ा । चिट्ठियों के द्वारा दोनों के मन के भाव आपस में व्यक्त हुए । एक रात पुष्पकुमारी सदा के लिए सुकुल के घर आ जाती हैं । सुकुल ने मकान बदल दिया, वहीं दोनों रहने लगे । कुछ दिनों के बाद सुकुल के भाई मिसेज सुकुल को लेकर

1. सुकुल की बीबी - सुकुल की बीबी निराला पृष्ठ-20

वहीं पहुँचा गए । मिसेज सुकुल अस्वस्थ थीं । तीन, चार महीने बाद मिसेज सुकुल का देहान्त हो जाता है । पुष्पकुमारी निराला को खोजती हुई उनके पास पहुँची । पुष्प कुमारी को जातीय वर्ग से घृणा हो गई थी । निराला ने आश्वासन दिया और कलकत्ता में ही उनका विवाह करा दिया । निराला जी ने शुभ मुहूर्त में तमाम विभिन्न प्रान्तों के आमन्त्रित हिन्दी भाषी साहित्यिकों की उपस्थिति में सुकुल के साथ पुष्पकुमारी का विवाह सम्पन्न कराया ।

इस प्रकार एक कन्या मूलतः बाजपेयी घराने की होते हुए भी समय के आवर्त में मुस्लिम कन्या के रूप में स्वीकृत हुई और वही सुकुल की बीबी बनने के लिए पुष्पकुमारी बनी । इस महिला ने प्राचीन पंथी, चोटीधारी सुकुल को भी अपने रंग में रंग दिया ।

लेखक निराला जी ने अपने विद्यार्थी जीवन की व्यंग्य तथा हास्य पूर्ण स्मृति को कलात्मक ढंग से संजोया है । इसमें लेखक के छात्र जीवन के साथी सुकुल जीवन की धार्मिक कट्टरता का बड़ा हास्य मधुर परिचय प्राप्त होता है ।

इस कहानी में लेखक ने स्वयं को एक पात्र बनाकर प्रस्तुत किया है । अतः कहानी की शैली आत्मव्यञ्जक है । निराला जी ने हिन्दूकुलीन वर्ग के वर्गभेदी दृष्टिकोण के कारण समाज में जो अतिचार उत्पन्न होता है । उस पर कहानी के माध्यम से कुठाराघात किया है । बाजपेयी घराने की लड़की को इसी अतिचार के कारण मुसलमान बनना पड़ता है, यह समाज का कलंक है । अतिचार का विरोध, साम्प्रदायिकता का विरोध और मुक्त प्रेम की विवाह में परिणति का समर्थन इस कहानी का उद्देश्य है । इस प्रकार इस कहानी में एक ओर नारी जीवन की विवशता और उसके प्रति हमारी सामाजिक उपेक्षा और घृणा का कारुणिक चित्र है तो दूसरी ओर मुस्लिम जनता की हिन्दू नारी को सहज ही अपनाने वाली उदारता है ।

सुकुल की बीबी के कथानक में अधिक गतिशीलता है क्योंकि उसमें कथा

और चरित्र दोनों हैं । सुकुल की बीवी स्वयं एक चरित्र है और उसका जीवन एक कथा । अपनी आत्म कहानी भी वह बड़े नाटकीय ढंग से उतार-चढ़ाव के साथ सुनाती है ।

निराला की कहानियों के संवाद संक्षिप्त भावव्यञ्जक और पात्रानुरूप हैं । शिक्षित पात्रों से उन्होंने व्याकरण सम्मत और साहित्यिक भाषा में बातचीत करायी है तथा ग्रामीण पात्रों से साधारण और लोकभाषा मिश्रित भाषा में शहरी और सुशिक्षित पात्रों के कथोपकथन में वाक् पटुता और रोचकता भी है । 'सुकुल की बीवी' की कुँवर सुशिक्षित हैं । उनके कथोपकथन बड़े रहस्यमय तथा हास्यपूर्ण हैं ।

श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी :- कथाकार निराला जी ने श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी के माध्यम से धर्म की विकृतियों को प्रकाशित किया है तथा बेमेल विवाह, पातिव्रत्य धर्म के आधार पर व्याप्त आडम्बर, सामाजिक प्रगति के बीच व्याप्त भ्रष्टाचार आदि पर सुन्दर व्यंग्य किया गया है । पं. रामखेलावन एक परम्परावादी ब्राह्मण वर्ग के प्रतिनिधि हैं जो धर्मभीरु हैं तथा उस वर्ग के अनुरूप ही पारिवारिक मर्यादा बचाने के लिए अपनी गर्भवती कन्या का विवाह एक वृद्ध से कर देते हैं ।

धर्म की विकृति पर व्यंग्य करते हुए बेमेल विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए निराला ने श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी की रचना की ।

प्रस्तुत कहानी निराला जी की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक सूझ की परिचायक है । उत्कट प्रणय किस भाँति तीव्र घृणा और प्रतिहिंसा में परिणत हो जाता है, यह इस कहानी की मूल ध्वनि है ।

पं. रामखेलावन बनारस के एक गाँव में रहने वाले सरयूपारीण ब्राह्मण थे । साधारण जमींदार थे मध्यमा तक संस्कृत पढ़े थे । पं. रामखेलावन की एक कन्या थी । उसके स्वभाव में जमींदारी का दम्भ था । संस्कृत भी पढ़ी थी ।

मोहन उसी गाँव का लड़का इलाहाबाद में बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर रहा था

। पंत की कविताओं से बहुत प्रभावित था । वह पंतमय हो जाना चाहता था । अत्यन्त शिष्ट था । पंत की रचनाओं के सभी गुण उसके व्यक्तित्व में रच खप गए थे । गर्मी की छुट्टियों में गाँव आया हुआ था । सुपर्णा मोहन पर आसक्त हो जाती है सुपर्णा की माँ को सन्देह हो जाता है अतः सुपर्णा का मोहन के घर जाने पर प्रतिबन्ध लग जाता है । सुपर्णा मोहन से मिलने के लिए छिपकर बाग जाती है । सुपर्णा मोहन को बुलाती है । शादी का प्रस्ताव रखती है । मोहन जाति धर्म की बात याद दिलाता है — “लेकिन तुम पयासी हो । शादी तुम्हारे पिताजी को मंजूर न होगी ।”

सुपर्णा कहती है — तो तुम मुझे कहीं ले चलो । मैं तुमसे कहने आई हूँ । दूसरे से ब्याह करना मैं नहीं चाहती ।”

मोहन खिंचा । उसे वहाँ प्रेम न दिखा, वह जिसका भक्त था इसी बीच सुपर्णा द्वारा बहाने से अन्यत्र भेजा हुआ उसका तकवाहा पहुँचकर इस दृश्य को देख लेता है । धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण तकवाहे ने जैसा देखा था वही विवरण पं. रामखेलावन जी के समक्ष प्रस्तुत किया ।

पं. रामखेलावन जी ने धर्म की सूक्ष्मतम दृष्टि से यह मालूम कर लिया कि सुपर्णा को गर्भ है । पं. रामखेलावन जी ने निश्चय किया कि सुपर्णा का विवाह अतिशीघ्र कर देना है । ऐसा निश्चय कर पं. जी बनारस पहुँचे ।

पं. गजानन्द शास्त्री बनारस के वैद्य थे । वैद्यकी बड़े दाँव-पेंच के बाद साधारण चलती थी । वैद्यकी चलने हेतु बहुत से धार्मिक कृत्य किये करते थे । कुछ समय पूर्व ही पं. गजानन्द शास्त्री जी की तीसरी पत्नी का सही इलाज न हो पाने के कारण देहान्त हो जाता है । अपने मित्रों से पं. जी प्रायः पत्नी के अभाव में जो दिक्कतें हैं उनकी नर्चा किया करते थे ।



पं. रामखेलावन जी संयोगवश बनारस में जहाँ ठहरते हैं वे इन्हीं वैद्य जी के मित्र हैं — पं. रामखेलावन जी अपनी कन्या के विवाह के लिए आए हैं तो उन्होंने शास्त्री जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके जैसा कोई सुपात्र न मिलेगा । तीसरी पत्नी का देहान्त अवश्य अभी हुआ है लेकिन शास्त्री जी अभी जवान हैं । उम्र अधिक नहीं है । इन सारी विशेषताओं को सुनकर पं. रामखेलावन जी अत्यन्त प्रसन्न हुए । इस सबको उन्होंने अपने सत्कर्मों का फल समझा । पं. रामखेलावन जी ने बाबा विश्वनाथ का हृदय से स्मरण किया और कन्या के विवाह की कामना की । पं. गदाधर ने अवसर का फायदा उठाया । उन्होंने पं. गजानन्दशास्त्री से बात होने से पूर्व ही सौदेबाजी कर पं. रामखेलावन जी से ढाई हजार रुपए लेने की बात स्वीकार करा ली । पं. रामखेलावन जी ने जोर दिया कि विवाह इसी लगन में होना चाहिए । इस बात पर उनके मित्र को संदेह होता है । वह बात स्पष्ट करने के लिए पं. गदाधर असमर्थता व्यक्त करते हैं । पं. रामखेलावन जी ने चिन्ता जताई कि लड़की बड़ी हो गई है, पिता के घर ज्यादा दिन रहने से पाप चढ़ता है । पं. गदाधर ने शास्त्री जी की पत्नी की बरषी का बहाना बताया । मध्यस्थता करके कुछ और रुपए हथियाकर शादी तय करवा देते हैं ।

पं. रामखेलावन जी अपनी कन्या की शादी के लिए व्यग्र थे और उधर पं. गजानन्द शास्त्री भी अपनी शादी के लिए उतावले बैठे थे । इस प्रकार शुभ मुहूर्त में शास्त्री जी का विवाह सम्पन्न हो गया । सुपर्णा को एक दिन तारा के पन्ने पलटते समय मोहन की एक रचना छपी मिली । यह उसकी पहली प्रकाशित कविता थी । सुपर्णा भी हिन्दी में लिखने लगी थी । छायावाद प्रेमी मोहन से प्रतिशोध लेने के लिए वह छायावाद पर ही शोध करती थी । शास्त्री जी ने उसे बताया कि छायावाद वह है, जिसमें कला के साथ व्यभिचार किया जाता है, तरह-तरह से सुपर्णा जैसी बुद्धिमती के लिए छायावाद की इतनी व्याख्या पर्याप्त थी । एक दिन उसने पातिव्रत्य पर लेख

लिखा ।

इसी समय देश में सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ । पिकेटिंग के लिए देवियों की आवश्यकता थी । शास्त्रीजी ने पत्नी को अनुमति दे दी । उन्हीं दिनों महात्मा जी बनारस होते हुए कहीं जा रहे थे । शास्त्रिणी जी ने अपने जेवर बेंच दो सौ रुपए की शैली महात्मा जी को भेंट की । इस प्रकार तन, मन और धन से की हुई देश सेवा से साधारण लोगों के मन में शास्त्रिणी जी के प्रति बड़ी ऊँची धारणा बन गई । आन्दोलन के बाद प्रेक्टिस चमक गई । चिकित्सा के साथ लेख लिखना भी जारी रहा । एकबार लिखा — “देश को छायावाद से जितना नुकसान पहुँचा है, उतना गुलामी से नहीं ।”

अतएव शास्त्रिणी जी दिन पर दिन उन्नति करती गई । उसी समय नया चुनाव होने को था । शास्त्रिणी जी जौनपुर से खड़ी होकर एम.एल.ए. हो गई । ‘कौशल’ लखनऊ से प्रकाशित होता था । इसमें शास्त्री जी के लेख प्रकाशित होते थे । प्रधान संपादक ने कार्यालय पधारने का निमन्त्रण दिया । शास्त्रिणी जी ने गर्वित भाव से स्वीकारोक्ति दी । मोहन एम.ए. होकर यहीं सहकारी है । शास्त्रिणी जी वहीं पहुँचीं । मोहन ने उठकर नमस्कार किया । उपदेश के स्वर में बोली — “आप गलत रास्ते पर थे ।”²

निराला ने श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी कहानी में धर्म के नाम पर उपस्थित होने वाले सामाजिक अतिचार और तज्जनित व्याभिचार का अच्छा परिचय देते हुए यह स्पष्ट किया है कि समाज के साथ समय को पहिचानकर चलने वाला व्यक्ति अपनी भ्रष्टता के बावजूद भी समाज में उत्कर्ष प्राप्त करता चला जाता है ।

यदि आधुनिक मनोविज्ञान के प्रकाश में सुपर्णा के मनोविज्ञान का विश्लेषण

किंगा जाए तो सुपर्णा अपनी अन्तर्चेतना में मोहन से अटूट प्रार करती है, किन्तु चेतन में उनके मन में विरोधी भावों का प्रकाशन होता है । प्रत्यक्ष में उसका नारीत्व अपमान की ज्वाला से जलकर अपने प्रेमी को जलाकर क्षार-क्षार कर देना चाहता है । मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कहानी निराला सर्वश्रेष्ठ कहानी है ।

कला की रूपरेखा:-

‘कला की रूपरेखा’ में अपने जीवन की एक सत्य घटना के माध्यम से लेखक अपना रूप प्रस्तुत करता है । लेखक अपना दर्शन तथा हृदय तल की विचारधारा भी प्रकट करता है ।

‘कला की रूपरेखा’ मानवीय गुणों आदि विषयों को लेकर लिखी गई है । ‘कला की रूप रेखा’ निराला की सर्वोत्कृष्ट कहानी है । निराला के मित्र पाठक कला की रूप रेखा जानना चाहते हैं तो उत्तर देते हैं कि कला कुछ नहीं है क्योंकि “जो अनन्त है, वह गिना नहीं जा सकता । इसलिए ‘कुछ नहीं’ कहा । इसका बड़ा अच्छा उदाहरण है कला उसी तरह की सृष्टि है, जैसे आप सामने देखते हैं , बल्कि यही सृष्टि लिखने की कला की जमीन है । अनादिकाल से अब तक सृष्टि को गिनने की कोशिश जारी है । पर अभी तक यह गिनी नहीं जा सकी है, अधिकांश में बाकी है । यह एक-एक सृष्टि के गिनने की असमर्थता के कारण , सृष्टि का अस्तित्व ही उड़ा दिया गया है । इसलिए कला कुछ नहीं है । कला के दो चार, दो चार सौ, दो चार हजार, दो चार लाख, दो चार करोड़ रूप ही बतलाए जा सकते हैं । पर इससे कला पूरी-पूरी न बतलाई गई । पर एक बोध है, उसका स्पष्टीकरण किया जा सकता है, जैसे ब्रह्म के अलग-अलग रूपों की बात नहीं कही गई, केवल ‘सच्चिदानन्द’ कह दिया गया है । इसी को साहित्यिकों ने ‘सत्य’ ‘शिव’ और सुन्दर कहकर अपनाया है । बोध वह है जैसी कला हो, उसके विकास क्रम का वैसा ज्ञान । इसके लिए प्राचीन और नवीन परम्परा भी सहायक है और स्वजातीय और विजातीय ज्ञान के साथ

मौलिक अनुभूति और प्रतिभा भी¹ बाद में एक व्यक्ति को देख निराला को कला का जीवित रूप जैसे मिल जाता है ।

‘कला की रूपरेखा’ में लेखक को संयोगवश एक ऐसा व्यक्ति मिल जाता है जो कला संबंधी उसके विचारों का जीवित रूप है । कई घटनाओं द्वारा लेखक को उस व्यक्ति के चरित्र में मानवीय गुणों की विभूतियाँ बिखरीं मिल जाती हैं ।

आत्मकथात्मक कहानी है । इसके माध्यम से कथाकार निराला ने अपने जीवन के कलांश का परिचय कराया है । जो उनकी अकिंचनता, उदारता तथा विशाल हृदयता का परिचायक है । प्रस्तुत कहानी में ‘निराला’ जी ने जहाँ एक ओर कला के संबंध में अपना विचार प्रकट करते हुए एक मदरासी व्यक्ति में कला के जीवित रूप का दर्शन पाया है, वहीं दूसरी ओर हिन्दी की वर्तमान रूढ़िग्रस्तता में साहित्यिकों की नाई की अपनी-अपनी बारात में ठाकुर बनने की भी बताई है । कहानीकार के शब्दों में यह सत्य घटना है ।

‘कला की रूपरेखा’ के प्रारंभिक अंश में लेखक की आत्मकथा और आत्मजीवनगत प्रसंगों से सरसज्जता और रोचकता उत्पन्न हो गई है । इसमें हमें इस महान लेखक की रुचियों, आदतों और जीवन की गतिविधियों का परिज्ञान होता है ।

उस समय की बात है जब लेखक निराला प्रयाग में लूकरगंज मोहल्ले में अपने मित्र वाचस्पति पाठक के यहाँ ठहरे हुए थे । सन् 1936 की बात है । निराला को चाय पीने की लत थी । चाय के साथ अण्डे अवश्य लिया करते थे । उनके मित्र पाठक विशुद्ध शाकाहारी थे । अतएव पाठक की माँ के भय से लेखक सुबह उठकर स्टेशन जाकर एक मुसलमान की दुकान में चाय पीने और अण्डे खाने जाया करते थे ।

पाठक जी निराला जी से दस ग्यारह वर्ष छोटे थे । उनकी पहली बार

1. सुकुल की बीवी – कला की रूपरेखा निराला पृष्ठ-50



पाठक से भेंट काशी में हुई थी । एक दिन टहलते समय पाठक ने निराला जी से पूछा—कला क्या है ? पहले तो निराला जी ने उत्तर में कह दिया 'कुछ नहीं' फिर कला क्या है ? का विवेचन करते हुए कला के बारे में अपने विचार बताए । तत्पश्चात् हिन्दी के भिन्न-भिन्न अंगों पर बातचीत की । "हिन्दी—भाषियों का मस्तिष्क दुर्बल है, रुढ़िग्रस्त होने के कारण वहाँ नवीन विचारधारा जल्द नहीं प्रवेश पाती, यद्यपि भारतीय समस्त साहित्य का इतिहास समस्त प्रकार की मौलिकता लिए हुए है । हिन्दी का समाज संस्कार अनुरूप न होने के कारण उपन्यास उच्चता तक नहीं पहुँच रहे—बहुत जगह भविष्य की कल्पना कर लिखा जाता है । काव्य, कहानी, प्रबंध, नाटक इन सबका लेखक जो मनुष्य है, वह अनेक रूपों में अभी विकसित नहीं हुआ । बड़ी कमजोरियाँ हैं, फलतः साहित्य अभी साहित्य नहीं हो सका ।"

इसी सब चर्चा के चलते स्टेशन आ गया । वहाँ परिचित मुसलमान दुकानदार ने अण्डे फोड़कर चाय के साथ दिए । तभी एक दुबले-पतले लगभग पचास साल के मुसलमान सज्जन उन्हें गौर से देखते रहे फिर लेखक से पूछते हैं—
"जनाब पंजाबी है?" रचनाकार को उसके प्रश्न का उत्तर देने में रुचि न थी ।

अतः हाँ ना में उत्तर दिया । निराला संक्षेप में उत्तर देकर पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं किन्तु बाद में फँस जाते हैं । स्वयं को पंजाब निवासी रेशम का व्यापारी बताकर असमंजस में पड़ जाते हैं और कहते हैं कि स्विजरलैण्ड से मंगाता हूँ । जनाब का 'इस्मशीफ' ? एक बार लेखक इस 'इस्म शरीफ' का उत्तर देने में धोखा खा चुके थे । उन्होंने उसे दौलतखाने का पर्यायवाची समझा था । विशुद्ध संस्कृत में उत्तर दिया था । इस बार जल्दी-जल्दी कोई मुसलमानी नाम सोचने लगे । निराला जी ने शब्दों में "नाम बताने में जरा भी देर शंका पैदा करती है । मुझे नाम तो याद न आया, पर समझ ने साथ न छोड़ा । मुँह का अण्डा निगला जा चुका, पर मैं मुसलमान सज्जन की ओर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

मुँह किए विराट रूप से मुँह चलाए जा रहा था, सिर हिलाता हुआ उन्हें आश्वासन दे रहा था कि जरा देर ठहर जाइए । फिर नाम याद न आया । अन्त में बड़ी मुश्किल से एक शब्द याद आया पर वैसा नाम मैंने स्वयं कभी नहीं सुना । उधर मियाँ का धैर्य छूट रहा था – मेरी पागुर बन्द नहीं हो रही थी । मैंने कहा– जनाब, मुझे 'वकूफहुसैन' कहते हैं । मियाँ उसे और मुलायम करके बोले – उकूफ हुसैन ?¹ कुम्भ का समय था । स्टेशन पर एक और मदरासियों का झुण्ड बैठा था । उनमें से एक मदरासी भौरे के जैसा काले रंग का मोटा-तगड़ा प्रायः पूर्णरूपेण नगनावस्था में सिर्फ एक लँगोटी में दौड़ता हुआ लेखक के पास आता है और टूटी-फूटी हिन्दी में अत्यन्त द्रुतगति से आप बीती कहने लगा । निराला को बड़ी मुश्किल से कुछ-कुछ समझ में आया । वह मदरास का रहने वाला है । कुम्भ नहाने आया था । किसी ने उसका सारा समान चुरा लिया । दिन में तो किसी तरह धूप खाकर भीख माँगकर गुजारा कर लेता पर रात बहुत ठंड लगती है । उसकी ललचायी दृष्टि निराला जी के मोटे खद्दर के चद्दरों पर थी । उदार मनः निराला उसे चादर दे देते हैं । वह प्रसन्नता से अपने दिल में पहुँचकर ऊँगली दिखाकर लेखक की तारीफ करने लगा इस घटना को देखकर पाठक जी ने 'निराला' जी से कहा – अभी जाकर गुदड़ी बाजार में चार आने में बेच देगा । लेखक कहते हैं – “धोखा भी हो सकता है और उसकी बात सच हो सकती है वह मदरास में सोचकर तो चला नहीं होगा कि गुदड़ी बाजार में कपड़ा बेचेगा ।”²

दो माह पश्चात् निराला जी पाठक जी के साथ लखनऊ जाते हैं उन्हीं के मकान में ठहरते हैं । काँग्रेस भी चल रही थी । उसी समय वहाँ प्रदर्शनी भी लगी हुई थी । निराला जी की सारी धनराशि खर्च हो चुकी थी । निराला जी के यहाँ एक गारताड़ी सज्जन तहरे हुए थे । उन्होंने निराला जी को काँग्रेस देखने के लिये पन्नीरा

1. सुकुल की बीवी – कला की रूपरेखा निराला पृष्ठ-53

2. सुकुल की बीवी – कला की रूपरेखा निराला पृष्ठ-55

रुपये के टिकट का प्रबन्ध कर दिया था । निराला जी काँग्रेस जाते हैं । सभी बड़े-बड़े नेता-नेत्रियों को देखा । पं. दुलारेलाल भार्गव, ठाकुर श्री प्रसाद सिंह, श्रीमती कमला चट्टोपाध्याय जो श्रीमती सरोजनी नायडू से बातें कर रही थी आदि । जब निराला जी शाम को बाहर निकले तो एक स्वयं सेवक दौड़कर आया उसने अपना परिचय दिया कि मैं वही हूँ जिसे आपने चादरा दिया था । निराला जी को जैसे कला का रूप मिल गया हो । निराला जी ने मन ही मन सोचा कि पाठक मिलें तो उन्हें बतायें कि कैसे उसने गुदड़ी बाजार में चादर बेंचा । कुछ समय बाद जब काँग्रेस भी समाप्त हो गई थी । और निराला जी के यहाँ आगत सभी अतिथि भी जा चुके थे । एक शाम जब निराला केसरबाग में घूमते रहते हैं तभी वह व्यक्ति पास आकर कहने लगा – अब गरमी पड़ने लगी है, वह देश जाना चाहता है, किराया नहीं है, पैदल जायेगा । काँग्रेस से कोई मदद नहीं मिली । निराला जी पूछते हैं “क्या काँग्रेस के लोग आपकी इतनी सी मदद नहीं कर सकते ?”¹ उसने कहा – “नहीं, काँग्रेस का यह नियम नहीं है ।”² उसने कहा गरमी बहुत पड़ रही है, पैर जल जाते हैं, यदि एक जोड़ी चप्पल उसे ले दें । निराला जी के पास उस समय केवल छः पैसे थे । “मुझ पर जैसे बज्रपात हुआ । मैं लज्जा से वहीं गड़ गया । मेरे पास तब केवल छः पैसे थे । उसमें चप्पल नहीं लिये जा सकते । अपने चप्पल देखे, जीर्ण हो गये थे । लज्जित होकर कहा – आप मुझे क्षमा करें, इस समय मेरे पास पैसे नहीं हैं ।”³ वह बड़े भाई की तरह आशीर्वाद देता चला गया । निराला जी जब तक वह आँख से ओझल नहीं हो गया, खड़े-खड़े देखते रहे ।

-
1. सुकुल की बीवी – कला की रूपरेखा निराला पृष्ठ-57
 2. सुकुल की बीवी – कला की रूपरेखा निराला पृष्ठ-57
 3. सुकुल की बीवी – कला की रूपरेखा निराला पृष्ठ-50

2.2 उपन्यास

अप्सरा :-

निराला जी बंगला समाज, संस्कृति, भाषा और साहित्य से प्रभावित होकर कार्यरत् कथा-जगत में प्रवेश करते हैं । रूप के ऐश्वर्य का जादू बंगला कथा – साहित्य की विशेषता है अतः निराला रूप ऐश्वर्य का जादू लेकर हिन्दी कथा – साहित्य में अप्सरा के साथ प्रवेश करते हैं । अप्सरा की भूमिका में निराला लिखते हैं – “साहित्य तथा समाज के गले पर मुक्ताओं की माला की तरह इने-गिने उपन्यास ही हैं । मैं श्री प्रेमचन्द्र के उपन्यासों के उद्देश्य पर कह रहा हूँ । इनके अलावा और भी कई ऐसी रचनायें हैं, जो स्नेह तथा आदर-सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं । इन बड़ी-बड़ी तोंदवाले औपन्यासिक सेठों की महफिल में मेरी दंशिताधरा अप्सरा उतरते हुये बिल्कुल संकुचित नहीं हो रही – उसे विश्वास है, वह एक ही दृष्टि से इन्हें अपना अनन्य भक्त कर लेगी । किसी दूसरी रूपवाली अनिन्द से भी आँखे मिलाते हुये वह नहीं घबराती, क्योंकि वह स्पर्धा की एक ही सृष्टि अपनी ही विद्युत से चमकती हुई चिर-सौन्दर्य के आकाश तत्व में छिप गई है ।

मैंने किसी विचार से अप्सरा नहीं लिखी, किसी उद्देश्य की पुष्टि भी इसमें नहीं । अप्सरा स्वयं मुझे जिस – जिस ओर ले गई, दीपक पतंग की तरह मैं उसके साथ रहा । अपनी ही इच्छा से अपने मुक्त जीवन प्रसंग का प्रांगण छोड़ प्रेम की श्रीमती पर दृढ़ बाहों में सुरक्षित बँध रहना उसे पसन्द किया ।”

‘अप्सरा’ निराला जी का पहला उपन्यास सन् 1930 में प्रकाशित हुआ । ‘अप्सरा’ में लेखक ने नारी-सौन्दर्य को दर्शाया है । समाज दृष्टि में वेश्या निष्ठाविहीन, अविश्वसनीय और छलना मानी जाती है किन्तु निराला की सोच है कि वेश्या के हृदय में

भी स्त्रियोचित नैसर्गिक-विशुद्ध प्रणय निवेदन होता है । इस उपन्यास में वाराणसी की एक वेश्या सर्वेश्वरी के उत्कृष्ट विचारों का वर्णन किया गया है ।

इस उपन्यास में एक वेश्या का त्याग, वैभव और विलासी – जगत से हटकर सामाजिक प्रतिष्ठा की आकांक्षा रखने वाली कुलवधू बनने की लालसा, उसका सत् प्रयास, उत्साह और संघर्ष इस कथा प्रसंग में मौजूद है । 'अप्सरा' में यद्यपि रूप ऐश्वर्य और प्रणय भावना को दर्शाया गया किन्तु उसका मुख्य उद्देश्य था – मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति समर्पण । जमींदारों का वासनाजन्य रूप, कृषकों का उत्पीड़न, नारी की पराधीनता, अंग्रेजों की निरंकुशता, पुलिस की खसोट वृत्ति आदि अप्सरा में बीज रूप में उपस्थित हैं ।

निराला की मान्यता है इच्छापूर्ति के सुन्दर सपने स्त्री और धन सम्पत्ति को लेकर ही नहीं रचे जाते वे क्रान्तिकारी जीवन को लेकर भी रचे जाते हैं । निराला ने 'अप्सरा' उपन्यास में वेश्या की करुण स्थिति का विवेचन सामाजिक व्यवस्था एवं सुधार की दृष्टि से किया है । 'अप्सरा' उपन्यास में कुल पच्चीस दृश्य हैं । निराला ने 'अप्सरा' की नायिका कनक को अप्रतिम सौन्दर्य और असाधारण वैदुष्य को मिलाकर गढ़ा है । उस समय भारतीय समाज में स्त्री के लिये इतनी स्वतंत्रता संभव न होने के कारण ही शायद उन्होंने एक वेश्यापुत्री के रूप में उसकी परिकल्पना की हो । समृद्धि और ऐश्वर्य में पली कनक अंग्रेज अध्यापिका से घर पर ही पढ़ी है । अंग्रेजी भाषा के ज्ञान ने उसके व्यक्तित्व में असाधारण गरिमा और आत्मविश्वास भर दिया । राजकुमार और चन्दन वैसवाड़े गाँव के साथी – सहपाठी हैं । छात्र जीवन में दोनों एक दिन एक साथ व्रत लेते हैं कि मातृ भूमि की सेवा करेंगे । चन्दन हरदोई जिले में किसानों को संगठित करने में लग जाता है । राजकुमार वर्मा कलकत्ता चला जाता है । अहिंदा भाषी प्रदेश में हिन्दी का अध्यापन, प्रचार और प्रसार करने के लिये – "वह शौकिया बड़ी-बड़ी कंपनियों में उतरकर प्रधान पार्ट किया करता था । इसका कारण खुद मित्रों

से बयान किया करता था । कहा करता था, हिन्दी के स्टेज पर लोग ठीक-ठीक हिन्दी उच्चारण नहीं करते उर्दू में जीभ भी स्वतंत्र गति होती है । यह हिन्दी ही की शिक्षा के द्वारा दुरुस्त होगी ।¹

कभी-कभी हिन्दी में वह स्वयं भी नाटक लिखा करता । कनक गन्धर्व कुमारिका है, उसकी माता सर्वेश्वरी बनारस की रहने वाली हैं । उसकी नृत्य, संगीत की निपुणता समूचे भारत में प्रसिद्ध है । समृद्धिशाली सर्वेश्वरी के वैभव की एक मात्र उत्तराधिकारिणी एकमात्र कनक है । अपनी माता सर्वेश्वरी से ही उसे ज्ञात होता है कि वह जयनगर के महाराज रणजीत सिंह की बेटी है । माता सर्वेश्वरी ने पुत्री को समझाया – वेश्या जीवन के यथार्थ को परिभाषित किया । “किसी को प्यार मत करना । हमारे लिये प्यार करना आत्मा की कमजोरी है, यह हमारा धर्म नहीं । संसार के और लोग भीतर से प्यार करते, हम लोग बाहर से ।”²

माता ने आगे भी कहा – “हमारी जैसी स्थिति है, इस पर ठहरकर भी हम लोक में वैसी ही विभूति, वैसा ही ऐश्वर्य, साथ ही जिस आत्मा को और लोग अपने सर्वस्व का त्यागकर प्राप्त करते हैं, उसे भी हम लोग अपनी कला के उत्कर्ष के द्वारा, उसी में प्राप्त करती है, उसी में लीन होना हमारी मुक्ति है । जो आत्मा सभी सृष्टियों का सूक्ष्मतम तंतु की तरह उसके प्राणों के प्रियतम संगीत को झंकृत करती, जिसे लोग बाहर के कुल संबंधों को छोड़, ध्वनि के द्वारा तन्मय हो प्राप्त करते, उसे हम अपने वाद्य यंत्र के तारों से झंकृत कर, मूर्ति में जगा लेतीं, फिर अपने जलते हुये प्राणों का गरल.... उसी शिव को मिलकर पिला देती हैं । हमारी मुक्ति इस साधना द्वारा होती है, इसीलिये ऐश्वर्य पर हमारा अधिकार रहता है । हम बाहर से जितनी सुन्दर, भीतर उतनी कठोर इसीलिये हैं और लोग बाहर से कठोर पर

-
1. अप्सरा – निराला पृष्ठ-2
 2. अप्सरा – निराला पृष्ठ-13

भीतर से कोमल हुआ करते हैं, इसीलिये वे हमें पहचान नहीं पाते और अपने सर्वस्व तक का दान कर हमें पराजित करना है इमारत की तरह तुम्हें अटल रहना होगा, नहीं तो फिर अपनी स्थिति से ढ़ह जाओगी, बह जाओगी ।¹

एक दिन कलकत्ता के ईडन गॉर्डन में सायंकाल टहलने के उद्देश्य से आयी हुई कनक को एक गोरा पुलिस अफसर छेड़ना चाहता है उसी समय युवक राजकुमार वहाँ पहुँच जाता है और पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट हैमिल्टन की धृष्टता का दृढ़ता से सामना करता है । प्रतिद्वन्द्विता में जब हैमिल्टन बेहोश होकर गिर जाता है तब राजकुमार उसे छोड़ देता है । एक चिट्ठी लिखकर पुलिस अफसर की जेब में डालकर कनक को वहाँ से जाने के लिये कहकर चला जाता है ।

कोहिनूर थियेटर में राजकुमार द्वारा लिखे शकुन्तला नाटक के अभिनय का निश्चय हुआ । दुष्यन्त नाटक के अभिनय का निश्चय हुआ । दुष्यन्त का पार्ट राजकुमार वर्मा और शकुन्तला का पार्ट कनक करेंगी । कनक के व्यक्तित्व को निराला ने एक ऐसी गरिमा और तेज से रचा है जो अपने प्रभाव में अनुपम और मारक है । जब वह अभिनय के लिये मंच पर पहुँचने के पूर्व सभा भवन की ओर जाने के लिये गाड़ी से उतरती है । कनक के व्यक्तित्व का वर्णन लेखक के शब्दों में – “बिना किसी इंगित के ही जनता की क्षुब्ध तरंग शान्त हो गई । सब लोगों के अंग रूप भी तड़ित से प्रहत निश्चेष्ट रह गये । सबकी आँखों के संध्याकाश में जैसे इन्द्रधनुष अंकित हो गया हो । सबने देखा, मूर्तिमती प्रभात की किरण है ।² नाटक आरम्भ हुआ । कण्व के तपोवन में वल्कल के स्थान पर साधारण सा वस्त्र धारण किये हुये शकुन्तला को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये । गान्धर्व रीति से दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ । इसी समय राजकुमार वर्मा की गिरफ्तारी से क्षुब्ध होकर घर लौटती है ।

1. अप्सरा – निराला पृष्ठ-14

2. अप्सरा – निराला पृष्ठ-17

सर्वेश्वरी ने विजयपुर स्टेट के कुँवर साहब का गाना सुनने का संदेश कनक का सुनाया । कनक ने कहा — मैं ब्याही हूँ अब मैं महफिल में गाना नहीं गाऊँगी । यह विवाह आपने किया, ईश्वर की इच्छा से, कोहिनूर कम्पनी के स्टेज पर हुआ, दुष्यन्त का पाठ करने वाले राजकुमार के साथ शकुन्तला के रूप में सजी हुई तुम्हारी कनक का । ये चूड़ियाँ एक-एक दोनों हाथों में इस प्रमाण की रक्षा के लिये मैंने पहन ली हैं और देखो, कनक ने जरा सी सेंदुर की बिन्दी सिर पर लगा ली थी ।”

सर्वेश्वरी ने कुँवर साहब के आदमी से कहला दिया कि कनक की तबियत अच्छी नहीं है किसी दूसरे दिन गाना सुनने की कृपा करें । कनक ने एक चिट्ठी लिखकर दरोगा साहब के पास बुलावा भेजा । कनक का पत्र पाते ही दरोगा साहब सजकर टैक्सी से कनक के यहाँ पहुँच गए । कनक ने शराब से दरोगा का खूब आतिथ्य किया, नशे की हालत में कनक ने राजकुमार की गिफ्तारी का कारण पूछा । दरोगा की जेब की तलाशी ली और उसमें पड़ी चिट्ठी को निकाल लिया तथा कमरे में दरोगा को बन्द कर दिया । पत्र हेमिल्टन के मित्र चर्चिल का था जिसमें रिश्वत और अन्याय से संबंधित लिखा था । कनक अपनी सहायता के लिए अपनी शिक्षिका कैथरीन के पास पहुँचती है । कैथरीन कनक को आश्वस्त कर हेमिल्टन को लेकर कनक के घर पहुँचती है । कनक हेमिल्टन के समक्ष अत्यन्त सज-धजकर पेश हुई । हेमिल्टन कनक को न पहिचान सके ।

कनक ने हेमिल्टन से अपने परिधान बदलने को कहा । पेन्ट-सूट से धोती पहनवा दी कनक ने हेमिल्टन को । इसी समय कैथरीन के साथ मजिस्ट्रेट राबिंसन ने कई लोगों के साथ कनक के कमरे में प्रवेश किया । मजिस्ट्रेट ने धोती पहने हुए हेमिल्टन को नाचते हुए देखा । हेमिल्टन का चरित्र मजिस्ट्रेट के सामने था । कमरे को खोलकर कनक ने दरोगा के चरित्र को भी सामने रखा । कनक के ग्रन्थों

का संग्रह और उसकी योग्यता को देखकर वे कनक से प्रभावित हुए । पूछा— आप क्या चाहती हैं ? कनक ने कहा — “राजकुमार को बिना वजह तकलीफ दी जा रही है वह छोड़ दिए जाएं ।” मजिस्ट्रेट ने कहा — “हम कल ही छोड़ देगा ।”

दूसरे दिन राजकुमार को बरी कर दिया गया । कनक राजकुमार को अपनी मोटर में बिठाकर अपने घर ले गई । राजकुमार कनक की ओर आकर्षित होने लगा । एक तरफ राजकुमार अपनी की हुई प्रतिज्ञा के प्रति दृढ़ था — मैं प्रतिश्रुत हूँ, जीवन में भोग-विलास का स्पर्श भी नहीं करूँगा ।”

कनक की माँ सर्वेश्वरी ने कनक को भी गौरव स्मृति की प्रबुद्धता लिए समझा दिया कि कनक रणजीत सिंह की बेटी है । तुम्हारे पिता जामनगर के महाराज थे । आज स्पष्ट हो रहा है कि तुम्हारे पिता के कुल संस्कार तुममें प्रबल हैं । सर्वेश्वरी ने कनक को वासन्ती रंग की साड़ी पहनाकर सिर से पैर तक आभूषणों से सजा दिया । वह राजकुमार के नजदीक बैठकर गाने लगी । कनक राजकुमार के वस्त्र बदलवाकर उसके साथ टहलने जाती है ।

कनक राजकुमार से वार्तालाप के दौरान पूछती है — ‘तुम मुझे क्या समझते हो ?’ राजकुमार कहता है — “मेरी आँखों की ज्योति, कण्ठ की वाणी, शरीर की आत्मा कार्य की सिद्धि, कल्पना की तस्वीर.....रात की चाँदनी, दिन की छाँह ।”

इस प्रकार प्रेम और काव्य चर्चा के साथ दोनों लौटे । वहीं राजकुमार संवाद पत्र पढ़ने लगा । देखा — उसके मित्र चन्दन सिंह लखनऊ में षड्यन्त्र के मामले में गिरफ्तार हो गए । राजकुमार अपनी प्रतिज्ञा के प्रति पुनः चैतन्य हो गया । भवानीपुर स्थित अपने मित्र के घर पहुँचकर, चन्दन सिंह की आपत्तिजनक पुस्तक लेकर, उनकी भाभी तारा को उनके मायके पहुँचाने के लिए चल देता है । राजकुमार के द्वारा

अनादृत होने का अनुभव करने से कनक की विद्रोही भावना तीव्र हो गई । पहले विजयपुर के राजकुमार के तिलक में जाने से मना कर दिया था, अब तैयार हो गई ।

राजकुमार ने चन्दन सिंह की भाभी तारा से स्वयं और कनक के संबंध का सारा वृत्तान्त सुनाया । तारा ने कहा —‘तुम उस पर व्यर्थ कलंक की कल्पना करते हो, कुसूर तुम्हारा ही है ।

विजयपुर वहाँ से मीलभर दूर था । तारा के पिता उसी स्टेट में कर्मचारी हैं । विजयपुर के राजकुमार का राजतिलक है । कनक का नृत्य होगा । तारा ने राजकुमार से आग्रह किया कि मुझे एक दफा जरूर दिखा दो । राजकुमार विजयपुर जाता है ।

विजयपुर के कुँवर साहब के आदेश से कनक को उनके बंगले पर पहुँचाया गया । वहाँ कुँवर साहब के अशिष्ट व्यवहार से कनक बहाने से अपनी माँ के पास चली आती है ।

राजकुमार भटकता हुआ बाग के फाटक पर आता है । इसी समय कनक की उस पर निगाह पड़ती है । राजकुमार से भेंट होती है । राजकुमार ने कहा — “मेरी बहूजी ने तुम्हें बुलाया है । इस बीच लखनऊ काण्ड में गिरफ्तार चन्दन भी किसी पुष्ट प्रमाण के अभाव में छूटकर वहीं पहुँच जाता है ।

विजयपुर का कुँवर विलासी और अत्याचारी है । कनक पर उसकी दृष्टि काफी पहले से थी । सर्वेश्वरी कनक को लेकर स्वयमेव उसी स्टेट में पहुँची तो कनक को प्राप्त करने का उसने पूरा-पूरा प्रबन्ध किया । हेमिल्टन भी वहाँ मौजूद था जो कि कनक द्वारा अपमानित हो चुका था । इस प्रकार कनक शत्रुओं के मध्य फंस जाती है । इस संकट से उसका उद्धार करने के लिए चन्दन और उसकी भाभी तारा आगे बढ़ते हैं । क्रान्तिकारी चन्दन छद्मवेश में अन्तपुर में प्रविष्ट होकर कनक से मिलता

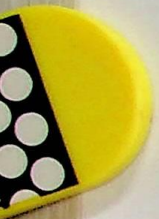
है और उसको बंगले के पिछले भाग से खाई और जंगल को पार करके भाभी की सुरक्षा में पहुँचाता है ।

तारा अपने वीर सैनिकों की रक्षा में और अपनी देख-रेख में कनक को गुप्त रूप में अपने घर में रखती है । उधर राजकुमार के मन में कनक के प्रति जो विरक्ति का भाव उत्पन्न हो गया था, साहचर्यवश धीरे-धीरे उसकी कठिनता भी दूर होने लगती है । अन्ततः तारा व चन्दन कनक को घूँघट में छिपाकर कलकत्ते लाने में सफल हो जाते हैं । कलकत्ता पहुँचकर तारा कनक को गृहस्थ धर्म में दीक्षित करती है । उसे नित्य शिवपूजन का व्रत लेने को कहती है तथा पुराने घर में मंदिर स्थापना और हवन करवाने को कहती है । कनक की सभी बातें शिरोधार्य करती है । सर्वेश्वरी भी अपना नृत्य-गान का पेशा छोड़कर काशीवास करने का निश्चय करती है ।

‘जिन्दगी में उपार्जन उसने बहुत किया था । अब उसकी चित्तवृत्ति बदल रही थी । कलकत्ता रहना सिर्फ उपार्जन के लिए था । वह भी हिन्दू विचारों के अनुसार जीवन के अंतिम दिवस काशी ही रहकर बाबा विश्वनाथ के चरणों में पार करना चाहती है।’¹

राजकुमार से सूचना पाकर चन्दन सिंह के बड़े भाई नन्दन सिंह की बहू को देखने व आशीर्वाद देने आते हैं । भेंट के बहुत से सामान के साथ एक अंगूठी जिसमें ‘सती’ शब्द पर हीरक चूर्ण जड़े थे, कनक को देकर अखण्ड सौभाग्यवती कहकर आशीर्वाद दिया । नन्दनसिंह के कहने पर कनक ने उन्हें श्री रामचन्द्र कृपालु भजमन, हरण भव-भय दारुणम् ?” भजन गाकर सुनाया । नन्दन ने राजकुमार को अप्सरा – विवाह के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया । विदा हो, प्रणामकर कनक चन्दन और राजकुमार के साथ घर लौटी । मस्त और हँसमुख स्वभाव का चन्दन पुलिस के समक्ष स्वयं को राजकुमार वर्मा बतलाकर मित्र की विपत्ति अपने सिर ओढ़कर एक वर्ष के लिए जेल चला जाता है ।

1. अप्सरा – निराला पृष्ठ-157



अलका :-

‘अलका’ निराला जी की दूसरी औपन्यासिक कृति है। ‘अप्सरा’ के दो वर्ष पश्चात् सन् 1933 में निराला जी ने अलका नामक उपन्यास की रचना की। इस उपन्यास के माध्यम से निराला ने जाज्वल्यमान सामाजिक समस्याओं के छिपे हुए कुरूप अंशों को उद्घाटित किया है। उच्चवर्गों के जातीय दम्भ, पारस्परिक भेद-अभेद, वैयक्तिक अहमन्यता आदि का उन्होंने सबल सतर्क खण्डन-मण्डन किया है।

‘अलका’ कल्पना और यथार्थ के सम्मिश्रण से निर्मित उपन्यास है। ‘अलका’ में निराला की दृष्टि अपने अवध क्षेत्र के किसानों की अभावग्रस्त, दयनीय, नाटकीय जिन्दगी की ओर है, ‘अलका’ में भावबोध से अवगुण्ठित प्रणय की हृदय स्पर्शी कथा है जो आदर्श प्रेम के संबंध में लेखक के वैयक्तिक मूल्यों का संधारण करती है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद देशी सामन्तवाद ने किसानों के जीवन को नर्क बना रखा है। इस उपन्यास में निराला का संकल्प जीवन के नवीन पथ का अनुसरण कराना है।

‘अलका’ की भूमिका निराला जी के शब्दों में – “जिन प्रिय पाठकों ने ‘अप्सरा’ को पढ़कर साहित्य के सिर बराबर वैसी ही बिजली गिराते रहने की मुझे अनुपम सलाह दी, या जिन्होंने अप्सरा को चुपचाप हृदय में रखकर मेरी तरफ से आँखें फेर लीं अथवा जिन्हें अप्सरा द्वारा पहले पहल इस साहित्य के मुख पर भेद, भेद प्रणय-हास मिला, मुझे विश्वास है वे अलका को पाकर विरही यक्ष की तरह प्रसन्न होंगे। और अण्डे तोड़कर निकलने से पहले, खड़खड़ाते हुए जिन्होंने मुझ पर आवाजें कसीं वे एक बार देखें उनके सम्राटों द्वारा अनाधिकृत साहित्य की स्वर्णभूमि में मैंने कितने हीरे मोती उन्हें दान में दिए।

मुझे आशा है हिन्दी के पाठक, साहित्यक और आलोचक ‘अलकों’ के अंधकार में न छिपाकर उसकी आँखों का प्रकाश देखेंगे कि हिन्दी के नवीन पथ से वह कितनी दूर तक परिचय कर सकी है।

घटनाओं में सत्य होने कारण स्थानों के नाम कहीं नहीं दिए गए । मुझे इससे उपन्यास तत्व की हानि नहीं दिखाई पड़ी ।¹

लखनऊ कानपुर के क्षेत्र में फैली महामारी की विभीषिका और जमींदारों की अमानवीयता का चित्रण हुआ । जमींदार दो प्रकार के हैं – एक खानदानी जमींदार, जिनके मन में प्रजा के लिए स्नेह और सहानुभूति है, दूसरे वे जो बागी सिपाहियों के साथ गद्दारी करके तालुकेदार हो गए थे । खानदानी जमींदार स्नेहशंकर रामराज्य की कल्पना को मूर्त करने का प्रयत्न करते हैं तो दूसरे वर्ग का धूर्त ताल्लुकेदार मुरलीधर खलनायक की भाँति गाँव की बहू-बेटी को ही ऐय्यासी का साधन बनाना चाहता है ।

उपन्यास की नायिका शोभा के माता-पिता, सास-ससुर की इफ्लुएन्जा की महामारी में मृत्यु हो जाती है । जिलेदार साहब महादेव प्रसाद उसकी सहायता करते हैं क्योंकि महादेव उस इलाके के जमींदार मुरलीधर की वासना में शोभा को झोंकना चाहती है । कहार की लड़की राधा के पति जो मुरलीधर का नौकर है, से उस षड्यन्त्र की जानकारी शोभा को ज्ञात होती है । अतः शोभा को गाँव छोड़कर भागना पड़ता है । बचकर वह स्नेहशंकर की स्नेह छाया में पलने लगती है । स्नेहशंकर जी को शोभा गायत्री स्वरूपा चिन्मयी मूर्ति जैसी जाज्वल्यमान दिखी – “मुख पर दिव्य सौन्दर्य की स्वर्गीय छटा, जैसे साक्षात् गायत्री युग-शाप को सहन कर विश्व ब्रह्म की गोद में मूर्च्छित पड़ी हुई हो ।”² शोभा कुछ स्वस्थ होती है । लेखक के काव्यमयी शब्दों में शोभा के स्वरूप का वर्णन – “अच्छी हो, स्नान समाप्तकर, बाल खोले, दिन में शिशिर की स्नात ज्योत्सना-रात की स्निग्ध, शुभ-वसना, सुकेशा शोभा उदार, अपलक दृष्टि से न जाने क्या मन ही मन देख रही थी, किसी दूर तक लक्ष्य की ओर क्षिप्त दृष्टि ऐसे समय एक बार फिर, इस गायत्री को विद्या ही सी चमकती, जलजड़ से उमड़कर आई चिन्मयी मूर्ति को स्नेहशंकर ने देखा – मुख की प्रभा तथा सघन केशों के अन्धकार में

1. अलका – निराला भूमिका भाग

2. अलका – निराला पृष्ठ-62



दिन और रात का दिव्यार्थ रूपक । यादकार सहास्य कहा, 'अलका' है यह ।¹ यहीं से शोभा अलका हो गई । शोभा का विवाह बचपन में ही हो गया था । किन्तु उसने अपने पति को देखा तक न था । उसकी माँ ने मृत्यु पूर्व उससे ससुराल के लिए पत्र लिखवाया था ।

स्नेह शंकर के मित्र पूरी शक्ति से उसके पति और ससुराल वालों का पता लगा रहे थे । ज्ञात होता है कि विजय जो शोभा का पति है अब वहाँ नहीं है । शोभा यह सब जानकर अत्यन्त दुखी होती है । स्नेह शंकर जी उसके मन बहलाव के लिए लखनऊ जाते हैं । उनकी शिक्षा दीक्षा से अलका सुशील तथा विदुषी हो जाती है ।

इधर शोभा का पति विजय शोभा की चिट्ठी पाकर बम्बई से घर आता है । विजय को शोभा के बारे में सही जानकारी नहीं मिलती है । वह कानपुर अपने मित्र अजित के यहाँ जाता है । विजय आदर्शवादी युवक है । अजित अपनी डिग्री की परवाह किए बगैर किसानों की दशा सुधारने के लिए विजय के साथ चल पड़ता है, साथ ही शोभा को ढूँढ निकालने का भी उद्देश्य है ।

निराला को गाँव की दशा का वास्तविक अनुभव है अतः जमींदारों और किसानों के पारस्परिक संबंधों का आँखों देखा वर्णन इस उपन्यास में मिलता है — जमींदार पशुवत् बुधुआ पर डंडे से प्रहार करने लगे — "क्षीण दुर्बल, मनुष्याकार, वह चर्मास्थिशेष प्रत्यक्ष दारिद्र्य कृपा-प्रार्थना की करुण दृष्टि, उन्मीलित कर रह गया । प्रहार से पीठ फट गई, मुख से फेन बहचला, वहीं पृथ्वी की गोद में वह बेहोश हो लुढ़क गया ।"²

विजय ऐसे ही दीन-हीन किसानों में हिम्मत जगाता है । बुधुआ में हिम्मत जाग्रत होती है । — "मन ही मन वह कितने बड़े प्रतिशोध के लिए तैयार । ऐसा मौका

1. अलका — निराला पृष्ठ-29

2. अलका — निराला पृष्ठ-62

उसो कभी नहीं गिला । आज जमींदार साहब रो आँखें गिलाते हुए वह बिलकूल नहीं डरता । वह निर्दोष है फिर भी उसके हृदय में कितने बार एकान्त में अपने दुर्बल तार झंकृत कर-कर शक्तिमानों से उसे निरस्त करने की सलाह दी है, यह सब स्मरण, सबदौर्बल्य एकत्र हो वाष्प के मेघों की तरह पूर्ण प्राबल्य से सूर्य को घेरकर उसे समझा देना चाहता है कि तपन के विरोध में सिक्त करने की वह कितनी शक्ति रखता है ।¹

विजय जमींदार ने षडयन्त्र के कारण जेल में डाल दिया जाता है किन्तु बचा रहता है । वह सन्यासी का रूप धर विजय की ससुराल वाले गाँव में धूनी रमाता है । गाँव के ही एक युवक ब्रज किशोर की विधवा बहिन वीणा पर मुरलीधर की कुदृष्टि के समाचार से अवगत होकर स्वामी जी (अजित) वीणा को कानपुर ले जाते हैं और वीणा से उन्होंने विवाह करने का संकल्प किया । यहाँ विधवा विवाह की समस्या को हल करने पर लेखक ने बल दिया । विधवा के कष्ट को लेखक ने समझा — 'वीणा सोचती है — "क्या विधवा जैसी दुखी विधाता की दूसरी भी सृष्टि होगी, जो सखियों में भी खुले प्राणों से बातचीत नहीं कर सकती, भोग सुख वाले संसार के बीच में रहकर भी भोग सुख से जिसे विरत रहना पड़ता है । आँख के रहते भी जिसे चिरकाल तक दृष्टिहीन होकर रहना पड़ता है ।'² तभी अजित को समाचार मिलता है कि गाँव में उसके पिता जी अस्वस्थ हैं । वह वहाँ जाता है किन्तु उसके पिताजी का देहान्त हो जाता है । अजित ब्रज किशोर से विवाह की अनुमति लेकर वीणा के साथ विवाह कर लेता है । पुनः शोभा की खोज के लिए विजय की ससुराल वाले गाँव चल देते हैं ।

उधर विजय एक वर्ष की सजा काटकर प्रभाकर नाम रखकर शोभा की खोज करता हुआ शहर के उस भाग में पहुँचता है जहाँ शोभा स्नेहशंकर और उनकी वधु सावित्री के साथ रहती है । वृद्ध स्नेहशंकर शोभा की शिक्षा और साथ ही मुरलीधर के अत्याचार से मुक्ति प्राप्त करने के लिए शहर आ जाते हैं ।

1. अलका — निराला पृष्ठ-103

2. अलका — निराला पृष्ठ-103

प्रभाकर (विजय) मजदूरों का संगठन करने लगा और शोभा उसके त्याग को देखकर आकर्षित होती है । अजित भी वीणा को लेकर मुरलीधर से प्रतिशोध की भावना से उसी मोहल्ले में घर लेते हैं । इस प्रकार सभी अपने-अपने लक्ष्य को लेकर एक ही जगह पहुँचते हैं ।

वहाँ के डिप्टी कमिशनर जो निःसंतान हैं, अलका को अपनी पुत्री बनाकर रखना चाहने की आकांक्षा स्नेहशंकर पर व्यक्त करते हैं । स्नेहशंकर जी की स्वीकृति से अलका का डिप्टी कमिशनर के यहाँ आना - जाना बढ़ता है । वहीं प्रभाकर से उसका साक्षात्कार होता है ।

अलका प्रभाकर के शिष्ट व्यवहार और वीरता से उसकी ओर आकृष्ट होती है और प्रभाकर के कहने पर उसी के साथ कुलियों की शिक्षा और संगठन में जुट जाती है । यहीं पर वीणा (शांति) से उसका परिचय होता है ।

अजित वीणा को मुरलीधर के पास भेजने का षडयंत्र रचता है । रॉयल होटल में उन्हें बुलाता है और उन्हें आतिथ्य से बेसुधकर उनकी पिस्तौल गायब कर देता है । अलका वीणा से अपनी सुरक्षा हेतु यह पिस्तौल माँग लेती है ।

मुरलीधर ने अपने जिलेदार महादेव की सहायता से अलका का उस समय अपहरण करने की योजना बना ली जब रात में वह लगभग नौ बजे कुलियों की बस्ती से पढ़ाकर तांगे पर लौटती है । अलका को इस घटना का पूर्वाभास था । वह हारी नहीं उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर मुरलीधर को गोलीमार दी । मुरलीधर की मृत्यु हो जाती है । यहीं घटनास्थल पर शोभा और विजय, अजित और वीणा सभी का मिलन हो जाता है ।

निरुपमा :-

‘निरुपमा’ निराली जी की चौथी औपन्यासिक कृति है । ‘निरुपमा’ उपन्यास ‘निराला’ जी के पूर्ववर्ती तीनों उपन्यासों की तरह घटना-प्रधान उपन्यास नहीं है । यह निराला का पहला उपन्यास है जिसमें वे पात्रों की निगूढ़ मनोदशाओं की सूक्ष्म तरंगों को पकड़ने की कोशिश करते हैं । ‘निरुपमा’ के गाँव रामपुर का वर्णन उसकी बहुविध सामाजिक जटिलताओं और निहित अन्तर्विरोधों के बीच पर्याप्त सूक्ष्मता के साथ किया गया है ।

‘निरुपमा’ उपन्यास में घटना अनुच्छेद की दृष्टि से कुल पच्चीस प्रभाग हैं । उपन्यास लेखक के उत्कर्षकाल का अवदान कहा जा सकता है । इस उपन्यास में निराला का अन्तर्भाव प्रकट होता है । प्रणय, विद्रोह, क्रांति, रूढ़ि, नारी की असहाय दीनावस्था, जमींदारी प्रथा, मानवीय भाव जैसी समस्याओं को उठाकर लेखक ने अपनी मान्यताओं को प्रतिष्ठित किया ।

निरुपमा के निवेदन में निराला जी ने लिखा है – ‘हिन्दी के उपन्यास साहित्य को ‘निरुपमा’ मेरी चौथी भेंट है । आलोचक साहित्यिक जिन महानुभावों ने उठने की कसम खाई है, भाषा और भावों के लच्छेदार वर्णन के संबंध में उनके लिए मैं स्वयं उतर आया हूँ । उन्हें समझूँगा । पर अगर सिंहलवासियों को प्रयाग सुलभ न हुआ तो मुझे आश्चर्य न होगा जिन्होंने ‘अप्सरा’ और ‘अलका’ आदि की तारीफ कर मुझे उपन्यास साहित्य का आधुनिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया है और मूल्य आँकते-आँकते अमूल्यता तक पहुँच गए हैं, उनकी मानसिक उच्चता के सामने कृतज्ञ मैं अत्यधिक संकुचित हूँ, पर निरुपमा के संकुचित होने का कोई कारण नहीं । मुझे विश्वास है, वह उन्हें निरुपम सौन्दर्य और संस्कृति देकर प्रसन्न कर सकेगी । ’’¹

1. निरुपमा – निराला पृष्ठ-103

‘निरुपमा’ में निराला ने निरुपमा और कृष्ण कुमार एम.ए., पी.एच.डी. (लन्दन) को परिणय-सूत्र में बाँधकर अन्तर्जातीय विवाह की योजना ही नहीं की अपितु ब्राह्म और हिन्दू, कान्यकुब्ज ब्राह्मण और बंगाली, जमींदार पुत्री और प्रजापुत्र जैसे कई द्वन्द एक साथ कथा में उभारे हैं ।

उपन्यास की यथार्थता लेखक की तन्मयकारी वृत्ति का द्योतक है । प्रस्तुत उपन्यास में जाति-वर्ण-भाषा-प्रांत सभी बंधनों को वह एक साथ तोड़ देता है ।

शिक्षित समाज के सम्मुख डॉ. कुमार ‘जूता-पालिश’ के रूप में आकर श्रम का नया उदाहरण सामने रखता है । हिन्दी कथा-साहित्य में निराला ने जमींदारी शासन के उत्पीड़न से किसानों को मुक्त करने की सार्थकता पर बल दिया है । इनका घटना परिप्रेक्ष्य सदा गाँव का होता है । निरुपमा का नायक कृष्णकुमार निराला का ही प्रतिरूप है । लन्दन से लौटकर कुमार लखनऊ विश्वविद्यालय में नौकरी करना चाहता है किन्तु बंगाली सज्जनों के पक्षपात के कारण वहाँ उसकी नियुक्ति न हो सकी । क्रिश्चियन कालेज में वर्णाश्रम धर्म का प्रश्न उठता है । सब जगह लोग वर्गों, दलों और बिरादियों में बंटे हुए हैं ।

निराला के शब्दों में – “विलायत से लौटकर, भारत के वृहतकार समाज पर जो कल्पनाएँ उसने की थी जाति निर्माण का जो नक्शा खींचा था – इस पददलित धारा पर उसकी सहानुभूति की धारा जिस वेग से बहती थी – जिस सहृदयता से वह शिक्षित मात्र को देखता था, वे सब जीविकार्जन के क्षेत्र पर उसके पर्दापण करते ही संकुचित होकर सूखकर अपने ही सूक्ष्म तत्व में विलीन हो गयी । पर उसने किसी भी समझ पर ना समझी नहीं की । चुपचाप एक ऐसा पेशा इच्छित्यार कर लिया, जहाँ किसी को धोखा खाने की बात न थी । बीच रास्ते पर उसका व्यवसाय लोग देख सकते थे ।”¹

1. निरुपमा – निराला पृष्ठ-87

कुमार कोहिनूर होटल में ठहरा हुआ था । वह होटल के बाहर लेटा हुआ मन बहलाव के लिए गाना गाता है । तभी सामने मकान में भी एक युवती हारमोनियम पर गाना आरम्भ करती है । कुमार भी उसका अनुकरण करता है । गाने वाली तरुणी रेलिंग पर झुककर अंधेरे में कुमार को लक्ष्य करती हुई कहती है — 'छूँचो—गोरू—गाधा' (छुछुन्दर की भांति औरतों के पीछे छुछुआने वाला, मूर्ख, गधा) तरुणी बंगाली है । नायक नायिका का प्रथम साम्मुख्य इसी आकस्मिक और रोचक स्थिति में होता है । नायिका का नाम है निरुपमा, जो एक ओर भारतीय नारी के आदर्शों से मण्डित है तो दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा, ज्ञान और विवेक से सम्पन्न है । वह अपने मामा के संरक्षण में रहती है । उसके माता पिता जमींदारी और इकलौती संतान को छोड़कर चल बसे थे । तभी से निरुपमा के संरक्षक उसके मामा योगेश बाबू के क्रियाकलापों से जमींदारी बढ़ने की बजाय शनैःशनै कम होती जा रही थी । निरुपमा मामा की इस स्वार्थ परता से अनभिज्ञ थी । कुमार की प्रतिद्वन्द्विता में स्थान पाने वाले यामिनीहरण पी.ए.डी. जो युनिवर्सिटी में लेक्चरर हैं, से निरुपमा के विवाह का उन्होंने निश्चय किया है । यामिनी बाबू प्रायः एकान्त पाकर निरुपमा से प्रेम प्रकट करते रहते हैं किन्तु निरुपमा उदासीन ही रहती है ।

लखनऊ के संभ्रान्त समाज में इस बात से खलबली मच जाती है कि लन्दन विश्वविद्यालय का डी. लिट् सड़क की पटरी पर बैठकर जूते पालिश किया करता है । कुमार के इस कृत्य पर लोगों में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाएँ हुई ।

निरुपमा के पिता की जमींदारी रामपुर में थी । कृष्ण कुमार का घर भी रामपुर में था । वहाँ उसकी माँ और छोटे भाई रहा करते थे । कुमार के विलायत में पढ़ने के सिलसिले में उसके दो मकान यामिनीबाबू के यहाँ रहे थे । निरुपमा को अपनी सम्पत्ति के बारे में अपने मामा द्वारा किए गए भोलभाव के विषय में जानकारी होती है । वह रामपुर जाने का निश्चय करती है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

रामपुर आकर निरुपमा गाँव के निरीह प्रजाजनों पर होने वाले अत्याचारों से परिचित होती है । यहाँ उसे कुमार की माँ के प्रति गाँव वालों के असहयोग की बात भी ज्ञात होती है । वह कुमार की माँ के आमन्त्रण पर उसके घर जाने की सुरेशबाबू (उसके मामा के लड़के) से अनुमति लेना चाहती है किन्तु सुरेश बाबू की असहमति से वह न जा सकी । निरुपमा देखती है कि गाँव के लोग छुआछूत के आडम्बर के वशीभूत हैं । परस्पर वैमनस्य रखते हैं तथा कृष्ण कुमार के परिवार के प्रति विद्वेश रखते हैं जाति की विकृति का लेखक द्वारा चित्रण – “ गुरुदीन तीन विस्वे वाले तिवारी हैं, सीतल पाँच विस्वेवाले पाठक, मन्नी दो विस्वे के सुकुल, ललई, गोद लिए हुए मिसिर पहले पाँच बिस्वे के पाँडे, अब तो कट गए हैं, गाँव वालों के हिसाब से ललई पाँच ही जोड़ते हैं । सब हल जोतते और श्रद्धापूर्वक धर्म की रक्षा करते हैं । बेनी बाजपेयी कानपुर के मिठाई वाले हैं पर धर्म की रक्षा करे हुए बीसों बिस्वे बचाए हुए हैं ”¹ ये कान्यकुब्ज बीसों बिस्वे वाले ब्राह्मण कुमार की माँ और छोटे भाई के प्रति कितने निर्दयी हो जाते हैं कि उनको अपने कुँए का पानी लेने से रोक दिया जाता है । इस प्रकार आचरण से खिन्न सावित्री देवी (कुमार की माँ) कुमार को पत्र लिखती है । कुमार जाकर अपनी माँ व छोटे भाई को शहर ले जाता है । लखनऊ में कुमार का परिचय कमल जो कि निरुपमा की सखी है, से हो जाता है । वह कमल को दो सौ रुपए प्रतिमास में ट्यूशन पढ़ाने लगता है । निरुपमा का मन भी गाँव से उकता जाता है । लखनऊ आकर कुमार के घर का पता लगया । नीलिमां जो कि उसकी छोटी बहिन लगती है, के साथ कुमार के घर पहुँचती है । निरुपमा ने कुमार माँ से जमींदारी के दौरान हुए अत्याचारों की क्षमा-याचना की । निरुपमा कुमार के खेत व बाग लौटाने की बात करती है जो कि उसकी जमींदार में थे । वह कानपुर में रहन रखे गए मकानों को भी कुमार के छोटे भाई के नाम खरीदने की इच्छा प्रकट करती है ।

1. निरुपमा – निराला पृष्ठ-45

निरुपमा को आभास होता है कि उसकी सखी कमल भी कुमार के प्रति आकर्षित है अतः वह कुमार की ओर उदासीन होकर यामिनीबाबू के साथ विवाह की स्वीकृति दे देती है । कमल को मिस दुबे नाम की लड़की का पत्र मिलता है । जिसमें विवरण है कि यामिनीबाबू ने उसे विवाह का झूठा आश्वासन दिया है । कमल ने निरुपमा से मिलकर यामिनीहरण को सबक सिखाने के उद्देश्य से बड़े ही नाटकीय ढंग से योजना बनाई । शादी की निर्धारित तिथि पर सभी वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं किन्तु अन्त में रहस्योद्घाटन होता है कि विवाह मण्डप में सभी अतिथियों के समक्ष यामिनीबाबू ने जिस अवगुण्ठिता वधु के साथ फेरे लिए हैं वह निरुपमा न होकर मिस दुबे हैं । निरुपमा और कुमार परिणय-सूत्र में बँध जाते हैं । इस प्रकार से कहानी की सम्पत्ति प्रत्याशित रूप में होती है ।

‘निरुपमा’ उपन्यास सामाजिक उत्कर्ष और प्रणय प्रसंग का अप्रतिम उपन्यास है । इसमें लेखक के कथात्मक उद्देश्य, भावबोध एवं मानसिकता व्यक्त हुई है ।

चोटी की पकड़ :-

‘चोटी की पकड़’ उपन्यास बंगला में स्वदेशी आन्दोलन के पहले दौर की कथा है । घटनाओं को केन्द्र बनाया है देशी रियासत को । उपन्यास स्वामी विवेकानन्द को समर्पित है । श्रीमत् स्वामी विवेकानन्द महाराज की पुण्य स्मृति में । ‘निराला ने निवेदन में इस उपन्यास को चार खण्डों में लिखने की योजना बनाई थी, जो अपूर्ण रह गयी – “चोटी की पकड़ आपके सामने है । स्वदेशी आन्दोलन की कथा है । लम्बी है, वैसी ही रोचक ।.....युग की चीज बनाई.....इसकी चार पुस्तकें निकालने का विचार है । मुमकिन दूसरी इससे कुछ बड़ी हों ।”’

तत्कालीन बंगाल की स्थित आन्दोलनात्मक थी पुनरुत्थान के महापुरुषों ने बंगाल में हलचल मचा दी थी ।

1. चोटी की पकड़ – निराला (भूमिका भाग)

युवा वर्ग क्रांति पथ पर अग्रसर था - " सारे भारत पर बंगालियों की अंग्रेजी का प्रभाव था । संसार प्रसिद्धि में बंगाली देश में आगे थे । राजाराममोहन राय की प्रतिभा का प्रकाश भर चुका था । प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर का जमाना बीत चुका था । आचार्य केशव चन्द्र सेन विश्वविश्रुत होकर दिवंगत हो चुके थे । स्वामी विवेकानंद की अति मानवीय शक्ति की धाक सारे संसार पर जम चुकी थी । माइकेल मधुसूदन दत्त के पद्य, बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास जागरण के लिए सूर्य की किरणों का काम दे रहे थे ।¹

इस समय लार्ड कर्जन ने बंग-भंग किया । विभाजन की तीव्र प्रतिक्रिया हुई । स्वदेशी आन्दोलन ने जोर पकड़ा । विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार होने लगा । राजे महाराजे भी अपने हितों पर कुठाराघात होता देख गुप्त रूप में आन्दोलनकारियों का साथ देने लगे थे । राजा राजेन्द्र प्रताप की भी समझ में आ गया कि देश का साथ देना चाहिए । राजा ने पुत्री के विवाह के उपलक्ष्य में दावत का आयोजन किया यद्यपि उनका मुख्य उद्देश्य आपस में राजाओं से अंग्रेजी विरोधी मंत्रणा करना था । दावत के उपरान्त एक सुपसिद्ध बैरिस्टर रह गए । उन्होंने राजा साहब से आन्दोलन के लिए सहयोग करने को कहा । इस हेतु कुछ क्रान्तिकारियों को अपने महल में सुरक्षित स्थान देने का प्रस्ताव किया । राजा साहब ने सहमति प्रदान की और प्रभाकर को अपने महल में बैठाया ।

अली राजा का कोचमैन था । उसकी सहाय्यभूति अंग्रेजों के साथ थी । उसका लड़का युसुफ दरोगा था । दोनों चाहते थे कि राजा और प्रभाकर का भेद देने से अंग्रेज उसकी तरफकी कर देंगे । युसुफ भेद पाने के उद्देश्य से राजा साहब की प्रिय वेश्या एजाज के यहाँ जाया करता है । उसने मजहब के आधार पर एजाज को प्रभावित भी करना चाहा किन्तु वह विफल रहता है । राज्य की दशा अत्यन्त असन्तोषजनक थी । अंग्रेजों और जमींदारों के अत्याचार से प्रजा त्रस्त थी "राज्य की क्रिया का ढंग सब

1. चोटी की पकड़ - निराला (भूमिका भाग)

स्थानों में एक सा है । सब जगह एक ही प्रकार के नाटकीय नाटक, षड़यन्त्र, अत्याचार किए जाते हैं । सब जगह रैयत की नाक में दम रहता है ।¹ राजमहल में मुन्ना बाँदी का दबदबा है । वह सभी कर्मचारियों को चालबाजी से अपने पक्ष में किए रहती है । प्रभाकर का व्यक्तित्व तेजस्वी था । वह अपने स्वदेशी प्रचार के कार्य में व्यस्त रहता है । यहाँ उसका परिचय एजाज से होता है । वह भी प्रभाकर से प्रभावित होती है । राजधानी के निकट के गाँवों में उसने स्वदेशी के प्रचार के लिए संगठन कायम किया । निराला ने प्रभाकर को स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को क्रियान्वित करने वाला युवक बताया है – “स्वामी विवेकानन्द की वाणी लोगों में वह जीवनी ले आयी, खासतौर से युवकों में, जिससे आदर्श में पीछे आदमी जगकर लगता है । प्रभाकर राजनीति में उसी का प्रतीक था ।”²

राजा साहब के वेश्याप्रेम से रानी दुखी हैं । मुन्ना बाँदी रानी का समर्थन करती है । वह राजकर्मियों को रानी के पक्ष में किए रहती हैं । राजा साहब के घर जमाई दामाद के साथ उसकी बुआ भी यहीं आकर रहन लगती हैं । सम्मान पाने पर वह रानी से रुष्ट हो जाती हैं । मुन्ना बाँधी उन्हें डाँट डपटकर शांत कर देती हैं । रुस्तम से बलात्कार का प्रयास करने पर प्रभाकर बुआ की रक्षा करता है और उन्हें स्वदेशी कार्यक्रमों में जुट जाने को राजी कर लेता है ।

मुन्ना बाँदी भी देशी आन्दोलन को एक पुनीत कार्य मानती है । वह उसकी प्रशंसा करती है और वह रानी को स्वदेशी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए सहमत कर लेती है । वह रानी की भेंट प्रभाकर से कराती है । स्वदेशी आन्दोलन का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए प्रभाकर कहता है – “आपके यहाँ हमारे केन्द्र हैं, देशी कारोबार बढ़ाने से आप उसकी चारुता बढ़ाने, प्रसार करने में सहायता करें । देश में विदेशी व्यापारियों

1. चोटी की पकड़ – निराला पृष्ठ-42

2. चोटी की पकड़ – निराला पृष्ठ-107

के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया ।

हम उन्हीं के दिये कपड़े से अपनी लाज ढकते हैं, उन्हीं के आइने में मुँह देखते हैं...।

ब्राह्मण की आग गयी, क्षत्रिय का वीर्य गया, वैश्य का व्यापार चौपट हुआ । यह सब हमको लेना है । इसी के रास्ते हम हैं । वह स्वदेशी वाला भाव हमको घर-घर फैलाना है । आपकी सहानुभूति हमारे लिए बहुत है । ”¹ रानी ने प्रभाकर के अनुसार स्वदेशी का कार्य करने का वचन दिया । रानी को लगा कि मुन्ना ने उस पर बड़ा उपकार किया है और देश सेवा का अवसर प्रदान कराया । इस आन्दोलन से जुड़ने पर वे अपने में एक गुणात्मक परिवर्तन का अनुभव करती हैं । इस प्रकार स्वदेशी आन्दोलन का कार्य करने के लिए रानी साहिबा, बुआ और मुन्ना बाँदी आदि अनेक प्रभावशाली महिलाएँ प्रतिज्ञाबद्ध होकर सक्रिय हो जाती हैं । निराला प्रभाकर की इसी पकड़ को चोटी की पकड़ मानते हैं । उनका मानना था कि स्वदेशी आन्दोलन को सफल बनाने में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं । ‘चोटी की पकड़’ उपन्यास यद्यपि ऐतिहासिक नहीं है लेकिन इतिहास के खण्डहर इसमें विद्यमान हैं । यह उपन्यास राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है ।

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार – “ यह उपन्यास कथा सूत्र में उलझा होने पर भी अप्सरा निरुपमा वगैरह से ज्यादा शक्तिशाली है । उपन्यास एक तरह की फैंटेन्सी है जिसमें त्रास की भावना विभिन्न रूपों में प्रकट होती है । पुस्तक की विशेषता रोचक कथा कहना था, स्पष्ट चरित्र चित्रण में नहीं है, उसकी सफलता मन पर ऐसे वातावरण की छाप डालने में है जिसमें हर तरह की दुरभि संधि, गुप्त षडयंत्र, मनुष्य को अपमानित करना, सताना संभव है । निराला ने बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन के पहले दौर पर कथा लिखने का प्रयास किया है, देशी रियासत को कथा क्षेत्र बनाया है ।

2. चोटी की पकड़ – निराला पृष्ठ-129

सामन्ती वैभव आकर्षित करता है, साथ ही वह अद्भूत त्रास की त्रास की सृष्टि भी करता है । ऐसी प्रच्छन्न पीड़ा निराला के दूसरे उपन्यास में नहीं हैं ।¹

काले कारनामों:-

‘निराला’ ने गाँव के जीवन को जिया और निकट से देखा था । काले-कारनामों, उपन्यास में जमींदारों और पुलिस की साँठ-गाँठ से ग्रामवासियों पर होने वाले अत्याचारों, मानमर्दन और शोषण का यथार्थ चित्रण हुआ है । किसी भी स्वाभिमानी का जमींदार की आधीनता स्वीकार किए बिना जीना दूभर था । गाँव में रहना है तो जमींदार को प्रणाम करो, सेवा करो, अन्यथा गाँव छोड़ दो । राजपुर गाँव के स्वावलम्बी और आत्मसम्मानि मनोहर और रामसिंह के उत्पीड़न की व्यथा – कथा और जमींदारों के काले कारनामों का चिट्ठा है यह उपन्यास ।

निराला साहित्य मर्मज्ञ समालोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने ‘काले कारनामों’ का मूल्यांकन इस तरह किया है – “काले कारनामों” में देहात की तस्वीर ज्यादा साफ सुथरी है । निराला गाँव की जमीन को बड़े ध्यान से देखते हैं । राजा की जगह जहाँ जमींदार है । उसके भेदिए, राज, लेने-देने की बातें ‘चोटी की पकड़’ जैसी हैं, पुलिस का आतंक वहाँ अधिक है । लोगों को फँसाना, सताना आए दिन का काम है ।²

मनोहर सीधे स्वाभाव का युवक है । यह आचार्य का छात्र है । उसे कुश्ती का शौक है । कुश्ती का अभ्यास करने के लिए वह सरायन के पहलवान रामसिंह के पास जाया करता है । रामसिंह स्वाभिमानी है । मनोहर ब्राह्मण है और रामसिंह क्षत्रिय । रामराखन गाँव के जमींदार हैं और मनोहर के वह फूफा हैं । रामराखन को मनोहर का रामसिंह का शिष्यत्व अप्रिय लगता है । चाटुकार रामसिंह के विरुद्ध जमींदार के कान भरते रहते हैं ।

1. निराला की साहित्य साधना – डॉ. राम विलास शर्मा पृष्ठ-465

2. निराला की साहित्य साधना – डॉ. राम विलास शर्मा पृष्ठ-460

जमींदार रामराखन मनोहर को रामसिंह से संबंध रखने को कहते हैं । मनोहर टाल जाता है । अपनी अवज्ञा होते देख वह मनोहर को गाँव छोड़कर बाप के पास बम्बई चले जाने की आज्ञा देता है । मनोहर सोचता है कि जमींदार की जात ब्रह्म राक्षस से बढ़कर है, जिससे पीछा कभी नहीं छूटता । व्यर्थ का झगड़ा मोल लेने की अपेक्षा वह गाँव छोड़कर बनारस चला जाता है । उधर रामसिंह से रामराखन खार खाए बैठा ही था । पड़ोसी दूसरा जमींदार यमुना प्रसाद भी चिढ़ा बैठा था । चूंकि रामसिंह का कपड़े का व्यापार अच्छा चल रहा था । इससे सबको ईर्ष्या थी । कल्पित आशंका से ग्रस्त प्रजा की उन्नति और सम्पन्नता से दुखी होने वाले छोटे जमींदार पहलवान रामसिंह और मनोहर को अलग करने के लिए काले कारनामों का जाल बिछा देते हैं । पडयन्त्र रचाया जाता है । माधव मिश्र मक्कारों में शिरोमणि हैं । झूठी गवाही देना, झूठे मुकदमें कायम करना उनका काम है । जमींदार प्रजा के उत्पीड़न के लिए इनकी मदद लेते रहते हैं । अपने घर में चोरी का झूठा नाटक रचकर माधव मिश्र उन जमींदारों की मदद करता है — कौन कितना कमाकर लाया, किसको आलू या गन्नों में आमदनी अच्छी हुई, किसे व्यापार में लाभ हुआ आदि की पूरी जानकारी रखते हैं । उनके घरों की जवान बेटी-बेटों, पतोहू और दामादों को फँसाकर, रिश्वत ले-देकर, मुकदमें लड़ाकर या झूठी गवाहियाँ देकर अपनी जेब भरते हैं । अपनी खेती से और गाँव में कपड़े बेचने के व्यवसाय से सम्पन्न रामसिंह सीधा-साधा पहलवान है । रामसिंह को चोरी के झूठे मामले में फँसाने की चाल-चलते हैं । यमुना प्रसाद उससे पाँच सौ रुपया पुलिस के नाम पर माँगते हैं । चूंकि रामसिंह निर्दोष है अतः वह रुपये देने से मना कर देता है । इधर माधव मिश्र का विचार बदल जाता है और थानेदार के सामने बयान बदलकर रामसिंह को बचा लेते हैं ।

जमींदार से आतंकित मनोहर काशी जाकर एक पाठशाला खोल लेता है और बच्चों को पढ़ाने लगता है । अपनी आचार्य की परीक्षा की तैयारी करता रहता है । उसका विद्यालय अच्छा चलने लगता है । विद्यालय की प्रशंसा सुनकर विधवा रानी रुपए देकर

सहायता करती है । व्यस्तता के कारण वह घरवालों को पत्र भी न डाल सका था । परीक्षा उत्तीर्ण कर वह आचार्य हो गया ।

माधवमिश्र के रामसिंह के बचाव में दिए गए बयान के बाद भी थानेदार ने रुपए ऐंठने के लिए रामसिंह को गिरफ्तार कर लिया । जमींदार की दलाली से जिस किसी तरह दो सौ रुपया देकर रामसिंह बच सका । वह बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोता है और जालसाजों के जाल में फँसकर रोता, छटपटाता है ।

कोई खोज खबर न मिलने से मनोहर के घरवाले बहुत चिन्तित थे । पिता समाचार जानने हेतु गाँव आ गए । जमींदार ने कहा कि अच्छा हुआ मनोहर चला गया, उसे घमण्ड आ गया था । गाँव रहता तो पुलिस पकड़ ले जाती । इसके विपरीत गाँव वालों ने मनोहर की प्रशंसा की । वे सब जमींदार के विरोध में थे । निन्दा करते थे । गाँव वालों ने कहा – “तुम्हारी मूर्छें रख लीं, तुम्हारा सर ऊँचा किया, वह हमारा भैया है, उसको कोई डर नहीं, हम जानते हैं कि लोगों ने उसे रहने न दिया लेकिन वह बज्र है, जो सर फोड़कर टूटे, वह हमारी पुकार है, हमारे आँख से टपकर भाप बनकर उड़ गया है, कभी खुशी की बारिश लाएगा ।”¹ जमींदार और उनके चाटुकारों को छोड़कर सभी ग्रामवासी मनोहर के प्रशंसक हैं । बच्चू कहार मनोहर के पिता को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । अपने तालाब से सिंघाड़े तोड़ लाया और देते हुए बोला – “आपके बेटे की तारीफ में हैं, जो हम लोगों को ऊँचा उठाता है, ब्राह्मणों की तरह हमारा सर नहीं फोड़ता ।”² मनोहर के पिता अपने पुत्र के संबंध में गाँव के लोगों का आदर भाव देखकर सन्तुष्ट हुए । उन्होंने समझ लिया कि जहाँ होगा, सुखी होगा । जमींदारों की करतूतों से क्षुब्ध हो, वह बम्बई लौट गए ।

मनोहर इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है । वह जात पाँत का भेदभाव नहीं

1. काले कारनामों – निराला पृष्ठ-32

2. काले कारनामों – निराला पृष्ठ-32

मानता है । वह स्वाभिमानी और परिश्रमी है । वह उपन्यास का अप्रतिम पात्र है, जिसे अपने काम से काम है । गाँव की परिस्थिति अनुकूल न देखकर वह काशी में निर्धनों और दलितों के बालकों के शिक्षा कार्य में लग जाता है ।

सद्गुणों के कारण गाँव में उसका सम्मान है । इस संदर्भ में डॉ. राम विलास शर्मा ने कहा – “जनता का ऐसा उत्कट प्यार निराला के किसी उपन्यास में किसी के प्रति उमड़ते नहीं दिखाया गया है ।”¹

“मनोहर काशी से लौटकर नहीं आया । गाँव की कोई समस्या हल नहीं हुई । जमींदारों दलालों और पुलिस का दमन चक्र चलता रहता है । उपन्यास अपूर्ण रह गया है । यही उसकी सफलता है । काल्पनिक समाधान प्रस्तुत करने के बदले वह दुःख और त्रास के वातावरण में आशा किरण की झलक भर दिखाकर समाप्त हो जाता है । यह निराला जी का अंतिम उपन्यास है । अस्वस्थ रहने के कारण वे इसे पूरा न कर सके और न इसे पूर्ण करने का उन्होंने प्रयास ही किया । इसलिए इस उपन्यास को अपूर्ण रूप से ही प्रकाशित करा दिया गया । इस उपन्यास में निराला जी का छायावादी व्यक्तित्व पूर्णतया यथार्थ के धरातल पर उतर आया हैं ।”²

इनके अनेक पूर्ववर्ती उपन्यासों में स्वच्छन्दतावाद का प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य लक्षित होता है किन्तु यह उपन्यास तदनुकूल कल्पना और भावुकता से सर्वथा मुक्त है । यह निराला का यथार्थवादी उपन्यास है गाँव के अखाड़े से लेकर जमींदार की चौपाल और पुलिस के कारनामों और कुचक्रों का यथार्थ चित्र सामने आता है ।

1. निराला की साहित्य साधना – भाग 1 राम विलास शर्मा पृष्ठ-467

2. सम्मेलन पत्रिका 'निराला जन्मशती अंक' पृष्ठ-289 (हि.सा.स. प्रयाग)

चमेली :-

निराला ने सन् 1936 में 'चमेली' उपन्यास लिखना शुरू किया था, किन्तु इसे वह पूरा न कर सके। इसके कुछ अंश रूपाभ में प्रकाशित हुए थे। उपन्यास अपूर्ण होते हुए भी ग्रामीण समाज के यथार्थवादी चित्रण और ठेठ लोकभाषा के उपयोग से निराला के साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी गणना प्रमुख आंचलिक उपन्यासों में की जा सकती है। 'रूपाभ' में प्रकाशित कुछ किशतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि वह पूर्ण हो पाता तो निराला के कथा साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान होता। 'अप्सरा', 'अलका', 'निरुपमा', और 'काले कारनामे' की तुलना में इस उपन्यास में लेखक के तेवर कुछ अधिक तीखे, स्पष्ट और यथार्थवादी हैं। पूर्ववर्ती उपन्यासों में निराला ने मध्यमार्ग अपनाया है। उत्पीड़न, अनाचार और शोषण के विरोध में उतनी उग्रता नहीं है, जितनी चमेली में। यहाँ अन्याय और अत्याचार का मुखर विरोध है। अन्य उपन्यासों में किसान, जमींदार और पुलिस के अन्याय को सहते हुए, समझौता करते हुए, अपने भाग्य को कोसते या मौन प्रतिवाद करते हुए मिलेंगे किन्तु यहाँ संगठित विद्रोह का स्वर मुखरित हो उठा है। विद्रोह और बगावत के शंखनाद की तैयारी मिलती है। नई पीढ़ी शोषकों को चुनौती देने को कटिबद्ध हो जाती है। वे कहने लगे हैं, पूर्वज सहते आए हैं, हम न सहेंगे। पूर्वज पिटते-लुटते आए हैं। अब हम दबेंगे नहीं। 'चमेली' उपन्यास में अपढ़, दबू और परम्परावादी पुरानी पीढ़ी तथा साक्षर जागरूक युवा पीढ़ी में अन्तर स्पष्ट परिलक्षित होता है। नई पीढ़ी अपने अधिकारों के प्रति सजग है। उपन्यास में तथाकथित बड़े लोगों, बड़ी जातियों के परिवारों में पनप रहे भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता और अमानवीय कृत्यों का उद्घाटन करते हुए और निम्न वर्ग, निराडम्बर, सीधी साधी पारदर्शी जीवन शैली का भी उद्घाटन किया है। समृद्धों और समान्तों का जीवन कितना कृत्सित और घृणित है, उनकी तुलना में छोटी जाति वालों में कितनी मानवीयता संवेदना है, अपनत्व और सेवा परायणता है उसका

चित्रण भी जीवन्त रूप में हुआ है । दोनों वर्णों—शूद्र और सवर्ण की स्त्रियों की तुलनात्मक स्थिति के संकेत उपन्यास में पैनी तलाश के साथ उभरे हैं ।

पुरानी पीढ़ी का व्यक्ति अन्याय सहने का अभ्यस्त है, दासता उसे विरासत में मिली, उसके रक्त में समा गई है, इसलिए वह घुटता रहता विरोध नहीं कर पाता किन्तु नई पीढ़ी के युवक ने समाज देखा है, पढ़ा है सुना है, उसके रक्त में ऊष्मा है, उत्साह है, विरोध करने का साहस है, प्रतिशोध लेने की क्षमता है । यह संकेत प्रकाशित अंशों में मिलते हैं ।

चमेली का बाप जमींदार की हर उचित अनुचित बात मानने का, आज्ञा पालन का अभ्यस्त है । वह पीटा जाता रहा । खेत जोतने के बदले उसे वह नहीं मिला जो उसका प्राप्य था । बेईमान और भ्रष्ट ठाकुर उसे सताते रहे उल्टे वही उनसे क्षमा माँग लेता रहा । जवाहर, महादेव, चतुरी और चतुरी के भाई बन्धु एक जुट होकर जमींदार का विरोध करते हैं, उसे ललकारते हैं । व्याभिचारी बख्तावर सिंह के विरोध में उठ खड़े होते हैं । संगठित और सशक्त विद्रोही स्वर पहली बार इस अपूर्ण उपन्यास में अनुगूँजित हो उठा है । उपन्यास में संक्षेप में ही परिवारों की कहानी मिलती है । एक परिवार है चमेली का पिता वृद्ध है, निष्क्रिय है चमेली ही कर्ताधर्ता है । वह अत्यन्त परिश्रमी और निर्भीक है । दूसरी ओर परिवार है — पं. शिवदत्त राम त्रिपाठी का । यह परिवार आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबा है । है तो ब्राह्मण परिवार किन्तु करनी में नितान्त खोखला और पतित । पं. शिवरामदत्त की पत्नी का निधन हो चुका है । छोटा भाई भी मर चुका है । पुत्र पिता के व्याभिचार से क्षुब्ध हो अलग रहता है । पं. जी स्वयं लम्पट और भ्रष्ट हैं । विधवा अनुज वधु और विधवा बहिन भी स्वेच्छाचारिणी हैं । दोनों के ही इधर— उधर लोगों से संबंध हैं । सभी स्वतंत्र हैं, विलासिता में डूबे हुए ।

उपन्यास की नायिका चमेली एक युवा शूद्र विधवा है जो पति के निधन के बाद पिता के पास रहती है । यह सुन्दर है । उस पर जमींदार की कुदृष्टि है । बख्तावर

सिंह उरो येन-केन प्रकारेण अपने जाल में फँसाना चाहता है । चमेली के पिता अत्यन्त वृद्ध हैं ।

शरीर से अशक्त, शिथिल । खेती किसानों का काम चमेली सम्भाले हुए है । वह भूमिहीन है । ठाकुर, जमींदार की खेती जोतकर निर्वाह करती है । बख्तावर सिंह उस पर निगाह गड़ाए हुए हैं । चमेली उसकी कुचालों से सतर्क रहती है । बख्तावर सिंह की छेड़छाड़ का उत्तर नहीं देती । इससे धूर्त ठाकुर का दुस्साहस बढ़ता जाता है । उसकी लोलुपता की एक झलक दृष्टव्य है — बख्तावर सिंह चमेली के पास आकर खड़ा हुआ और एक दफा इधर-उधर देखा जैसे सबकी रक्षा कर रहा हो । फिर लाठी का गूला रास की बगल में दे मारा और खँखारकर पूछा, 'तेरा बाप कहाँ है चमेली' ¹ चमेली को अकेला पाकर मौके का फायदा उठाते हुए बख्तावर झपटकर उसे पकड़ लेता है । चमेली प्रतिरोध करती है । झपटती हुई वह ठाकुर की पिटाई कर देती है । चिल्लाने पर पास पड़ोस के खलिहानों के लोग दौड़ पड़ते हैं । महादेव उसे लकारता है । दुराचारी कायर होता है । बख्तावर भाग खड़ा होता है । गाँव जाकर बख्तावर उल्टे महादेव पर ही चमेली को छेड़ने का आरोप लगाता है । गाँव वाले बख्तावर के कुकृत्य का विरोध करते हैं । चमेली की जाति में विधवा-विवाह का प्रचलन है । महादेव और चमेली एक दूसरे को प्रेम भी करते हैं । दोनों सहर्ष विवाह बन्धन में बँध जाते हैं । परिश्रमी, साहसी और पितृभक्त चमेली के चरित्र को कुछ ही प्रकाशित पृष्ठों में निराला ने उभारने का सराहनीय प्रयास किया है । एक ओर चमेली है जो अपनी चारित्रिक दृढ़ता से सबको हतप्रभ करती है तो दूसरी ओर पण्डित के परिवार की स्त्रियाँ हैं जो व्याभिचार को अपनी नियति मानकर स्वीकार करती हैं । चरित्र की झलक अधूरी होने पर भी पूर्णता का आभास कराती है और उपन्यास अपूर्ण होने पर भी कथन को सांगोपांग अभिव्यक्त करता है । कथाकार का संकेत और संदेश बहुत स्पष्ट और प्रभावी है ।

कुल्ली भाट :-

‘कुल्ली भाट’ की गणना निराला की सर्वाधिक चर्चित कथाकृतियों में की जाती है । मानवीय संवेदना की जैसी सहज अभिव्यक्ति इस रचना में हुई अन्यत्र कम मिलती है । यह कथा कृति इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें विवादित कुल्ली भाट के साथ-साथ निराला के जीवन संघर्षों की विस्तृत झाँकी भी मिल जाती है । नन्द किशोर नवल के शब्दों में“कुल्ली के जीवन संघर्ष के बहाने इसमें निराला का अपना सामाजिक जीवन मुखर हुआ है । दूसरे शब्दों में , बहुलांश में यह कथाकृति महाकवि की आत्मकथा ही है ।”¹

निराला ने निवेदन में कहा है – “पं. पथवारी दीन जी भट्ट (कुल्ली भाट) मेरे मित्र थे । उनका परिचय इस पुस्तिका में है । उनके परिचय के साथ मेरा अपना चरित्र भी आया है और कदाचित अधिक विस्तार भी पा गया है । रूढ़िवादियों के लिए यह दोष है पर साहित्यिकों के लिए, विशेषता मिलने पर गुण होगा ।”²

इस आधार पर तो इसे कुल्ली का जीवन और निराला की आत्मकथा कहा जा सकता है वास्तविकता भी है कि लेखक की जितनी सटीक और विस्तृत आत्मकथा ‘कुल्ली भाट’ में विद्यमान है, किसी अन्य पुस्तक में नहीं ‘कुल्ली भाट’ में उपन्यास, लघु उपन्यास, दीर्घकहानी, आत्मकथा, रेखाचित्र, जीवन चरित आदि कई विधाएँ दृष्टव्य हैं । डॉ. विश्वम्भरनाथर उपध्याय इसे दीर्घ कथा मानते हैं ।³ शब्द चित्रों के बाहुल्य एवं हास्य व्यंग्य की प्रधानता के आधार पर डॉ. हरवंशलाल शर्मा के ‘कुल्ली भाट’ को रेखाचित्र की कोटि में रखा है ।⁴ प्रेम प्रकाश भट्ट ने इसे निराला का अंतिम रेखाचित्र कहा है ।⁵

-
1. कुल्लीभाट निराला – प्रकाशक नन्द किशोर नवल अंतिम पृष्ठ. राजकमल प्रकाशन
 2. कुल्लीभाट निराला – प्रकाशक नन्द किशोर नवल अंतिम पृष्ठ. राजकमल प्रकाशन
 3. निराला के साहित्य और साधना, डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय पृष्ठ-266
 4. हिन्दी रेखाचित्र – डॉ. हरवंशलाल शर्मा पृष्ठ-185
 5. निराला रचनावली भाग-4 पृष्ठ-252

वस्तुतः 'कुल्ली भाट' को पूरी तरह रेखाचित्र नहीं कहा जा सकता है। रेखाचित्र की कुछ विशेषताएँ इसमें हैं। कुल्ली के शब्द चित्र हैं किन्तु अधिकांश जीवन चरितात्मक और आत्मकथा परक है। डॉ. कुसुमवार्ण्य ने अपना मत अलग ही व्यक्त किया है वे पाश्चात्य मानदण्डों के आधार पर इसे पिकारेस्क उपन्यास मानती हैं।¹ पिकारेस्क उपन्यासों में समाज के उपेक्षित, तिरस्कृत और धूर्त पात्रों का चित्रण किया जाता है। कुल्ली समाज का नितान्त तिरस्कृत पात्र नहीं है। वह समाज सेवा का कार्य करके सबकी प्रशंसा प्राप्त कर लेता है। दूसरे कुल्ली के साथ-साथ बहुलांश में निराला का जीवनवृत्त भी आया है। अतः इसे पिकारेस्क उपन्यास कहना असंगत है। निराला साहित्य समीक्षक डॉ. रामविलास शर्मा 'कुल्ली भाट' को यथार्थवादी साहित्य के विकास में एक नई कड़ी मानते हैं -

“रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मचरित, जीवन-चरित, लघु उपन्यास अनेक विधाओं के तत्व लेकर रची हुई कुल्लीभाट की कथा हिन्दी के यथार्थवादी साहित्य के विकास में नई कड़ी साबित हुई”² डॉ. शर्मा का मत सर्वथा समीचीन है। उपेक्षित, विवाहित और मानवीय दुर्बलताओं से युक्त कुल्ली के प्रति प्रदर्शित निराला की आत्मीयता और मानवीय दृष्टिकोण की समादृत समालोचक डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने सराहना की है-

“निराला की दृष्टि बड़ी पेंनी थी जिसे कुल्ली भाट में लोग न जाने क्या क्या देखते थे -वही निराला की दृष्टि उनमें निहित संभावना -मानवीय संभावना को भी आंक लेती थी। मानवता को बाँटने वाली तमाम दीवारों को ढहाकर निर्भीक जीवन जीने वाले समाज सेवी कुल्ली भाट के प्रति उनकी निष्ठा विस्मयावह थी”³

‘कुल्ली भाट’ मानवीय संवेदना, सजीवता, हास्य और करुण रसों के कारण एक विशिष्ट कथा कृति है। अपनी कथा-कृति और शैली के नए पन के लिए भी यह

1. निराला का कथा - साहित्य - डॉ. कुसुमवार्ण्य पृष्ठ-45

2. निराला की साहित्य साधना (खण्ड) डॉ. राम विलास शर्मा पृष्ठ-470

3. महाप्राण निराला : पुनर्मूल्यांकन - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी पृष्ठ-49

महत्वपूर्ण है । लेखक को बहुत दिनों से जीवन चरित लिखने की इच्छा थी । चरित नायक नहीं मिल रहा था । कितने जीवन चरित्र पढ़े, सब में जीवन से चरित ज्यादा.. ..मैं तलाश में था कि ऐसा जीवन मिले जिसमें पाठक चरितार्थ हों, इसी समय कुल्ली भाट मरे ।¹ लेखक को नायक मिल गया, खोज पूरी हुई । अतीत की समृत्तियाँ, घटनाएँ सभी दृश्य स्पष्ट हो गए ।

सर्वप्रथम जब लेखक का कुल्ली से साक्षात्कार हुआ, तो वह भी अपने में एक नाटकीय दृश्य था । लेखक गौने के बाद बन ठनकर ससुराल गए । मार्ग में दोपहर की तीव्र धूप, आँधी और धूल ने उनका अभिषेक किया । डलमऊ स्टेशन पर छैल छबीले कुल्ली खड़े थे – “गेट पर टिकट – कलेक्टर के पास एक आदमी खड़ा था । बना चुना, बिल्कुल लखनऊ – ठाट जिसे देखते ही बंगाली गुण्डा कहेगा ।”²

“कुल्ली को देखकर आम धारणा उनके घटिया व्यक्तित्व की ही बनती है । लेखक उन्हीं के इक्के से ससुराल आए । कुल्ली ने किराए के पैसे नहीं लिए और दूसरे दिन घर आने के लिए बुला गए । सारा गाँव कुल्ली के चरित्र को शंकालु दृष्टि से देखता था । सासु जी को भी चिन्ता हुई कि कहीं कुल्ली के एक्के पर तो नही आए ।”³

निराला ने समझा कि शायद कुल्ली अच्छूत होगा इसलिए रोका गया है और प्रश्न टाल गए यह कहकर ‘आजकल यह सब चलता है ।’ दूसरे दिन कुल्ली के बुला आने पर सासु जी ने गंभीर भाव से स्पष्ट शब्दों में कहा – “भैया, कुल्ली से मिलना-जुलना अच्छा नहीं ।वह आदमी अच्छे नहीं । उसके साथ रहने पर तुम्हारी बदनामी हो सकती है ।”⁴ मना करने पर निराला मानते नहीं । कुल्ली भाट उन्हें किला दिखाने ले जाता है । गाना गाने का प्रस्ताव करता है गाने की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करता है । पान

-
1. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-33
 2. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-28
 3. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-25
 4. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-25

- CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

खिलाता है और हास परिहास में उंगली दबा देता । दूसरे दिन मिठाई खाने के आमंत्रण पर लेखक कुल्ली के घर पहुँचते हैं । इस बार कुल्ली रसिकता का अधिक ही प्रदर्शन करते हैं । लेखक झुंझलाकर चले आए । कामुक क्रिया कलापों के कारण ही कुल्ली गाँव में कुख्यात थे ।

निराला को सासुजी के निषेध का रहस्यबोध हुआ । निषेध को न मानना निराला का स्वभाव बन गया था । " मैं बचपन से आजादी पसन्द था । दबाव नहीं सह सकता था । खासतौर से वह दबाव जिसकी वजह न मिलती हो । " ¹ गाँव में एक पतुरिया के यहाँ भोजन कर आते थे । बाल-विद्रोही निराला ने कोई प्रतिबन्ध स्वीकार न किया । उच्छृंखलताओं के लिए शारीरिक दण्ड भी भोगना पड़ता था । " मारते वक्त पिता जी इतने तन्मय हो जाते कि उन्हें भूल जाता था कि दो विवाह के बाद पाए हुए इकलौते पुत्र को मार रहे हैं । मैं भी स्वभाव न बदल पाने के कारण मार खाने का आदी हो गया था । " ²

ससुराल में रहते हुए लेखक से सासु जी के पूछने पर कि उनकी लड़की कैसी लगी, वह स्पष्ट उत्तर देते हैं - "मैंने आपकी लड़की को अच्छी तरह देखा नहीं, क्योंकि जब मेरे देखने का समय होता, दिया गुल कर दिया जाता था " ³ चिढ़ने-चिढ़ाने की बातों पर कभी-कभी मनोहरा देवी रुष्ट भी हो जाया करतीं किन्तु उनके हिंदी ज्ञान और संगीत कला में पारंगत होने का लेखक को लोहा मानना पड़ा । गाँव आने के कुछ समय बाद ही पिता का निधन हो गया । जीविका के लिए महिषादल जाना पड़ा । वहाँ नौकरी में मन नहीं लगा । इसी मध्य पत्नी की बीमारी का तार मिला । गाँव पहुँचने के पूर्व वह दिवंगत हो गई । कुछ ही दिनों में चाचा, भाई, भाभी, भतीजा मर गए । देखते-देखते घर साफ हो गया । जीवन संग्राम में वह अकेले रह गए । शोकाकुल लेखक

1. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-25

2. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-28

3. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-50

ससुराल गए । वहाँ अवधूत टीले पर बैठे हुए गंगा जी में लाशों के दृश्य देखा करते । यहीं एक दिन कुल्ली संवेदना प्रकट करने आए । इस बार लेखक को कुल्ली एक सच्चे मित्र लगे । पुनः नौकरी पर गए । राजा से विवाद होने पर त्याग पत्र दे आए । लेखन का अवलम्बन लिया । प्रायः 'सरस्वती' से कविता और लेख वापस आ जाते । ज्ञात हुआ कि 'प्रभा' में बड़े कवियों के लेख छपते हैं । लेखक ने गाँव से पैदल जाकर कानपुर में महावीर प्रसाद द्विवेदी से संपर्क किया, कविताएँ प्रकाशित होने लगीं । असहयोग आन्दोलन जोरों पर था । कुल्ली राजनीति में सक्रिय हुए । लेखक से मिलने आए । इस समय निराला जी बहुत दुखी और निराश थे । कुल्ली द्वारा उपदेश देने का अनुरोध करने पर खिन्न होकर गंगा में डूब मरने को कह दिया ।

कवि की मनः स्थिति समझकर कुल्ली उदास होकर चल दिये । इस बार प्रसिद्ध होने पर लेखक गाँव गए तब 'सुधारक कुल्ली से भेंट हुई । वह एक मुसलमानिन से विवाह करना चाहते थे । समाज बाधक था । लेखक ने सहमति प्रकट की । विवाह कर लिया । लेखनऊ से निराला गाँव आए, देखा कुल्ली अछूतोद्धार के कार्य में लगे है । कुल्ली ने बताया - "अछूत पाठशाला खोली है । तीस, चालीस लड़के आते हैं । धोबी, भंगी, चमार, डोम और पासियों को पढ़ाता हूँ लेकिन यहाँ के बड़े आदमी कहे जाने वाले लोग मदद नहीं करते ।"¹ निराला ने पाठशाला देखी, कुल्ली आनन्द की मूर्ति, साक्षात् आचार्य दिखाई दिए । यह कुल्ली की पूर्ण परिणति थी, चरित्र का पूर्ण विकास था । सासुजी ने भी प्रशंसा की, बताया कि कुल्ली बड़ा अच्छा आदमी है, खूब काम कर रहा है । आदमी नहीं देवता हैं ।"²

कुल्ली के अन्दर सोती हुई मानवता जग जाने पर वह धैर्यपूर्वक और दृढ़ता से संघर्ष करते हैं । कांग्रेस मदद नहीं करती । निराला सहायता और मार्गदर्शन करते

1. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-76

2. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-78

हैं। लेखक कुल्ली का गुणगान करता है। “कुल्ली धन्य हैं। वह मनुष्य है, इतने जम्बुओं में वह सिंह हैं।”¹

अंत में संघर्ष से जर्जर, ढोंगी बड़े नेताओं से उपेक्षित कुल्ली पुराने व्यभिचार के कारण बीमार पड़ गए। चिकित्सालय ले जाए गए, बच न सके और वेहान्त हो गया। गाँव का कोई भी पण्डित कुल्ली का एकादशाह कराने जाति भय से न गया। निराला ने अंतिम संस्कार सम्पन्न कराया। लखनऊ लौट आने पर भी रह-रहकर निराला को गाँव, गंगा, श्मशान और कुल्ली का स्मरण झकझोर देता था – “दो तीन दिन रहकर कुल्ली की पाठशाला और पत्नी को देखकर लखनऊ चला आया लेकिन जी नहीं लगा। कोई शक्ति मुझे डलमऊ की तरफ खींच रही थी, वहाँ की श्यामल सजल प्रकृति निर्मल गंगा, सुन्दर घाट रह-रहकर याद आने लगा। सबसे अधिक आकर्षण कुल्ली का एक जैसे पारलौकिक स्नेह मौन आमंत्रण दे रहा था – “तुम आओ”, निराला साहित्य में कुल्ली भाट का प्रमुख स्थान है। मानव चरित्र के ऊर्ध्वमुखी विकास का यह वास्तविक चित्र अपनी प्रभावशीलता में अप्रतिम है।

बिल्लेसुर बकरिहा :-

‘बिल्लेसुर बकरिहा’ गवई गाँव के एक ऐसे युवक की कहानी है जो अनाथ होने पर भी स्वावलम्बी है, अपढ़ होने पर भी सूझ-बूझ सम्पन्न, धर्मभीरु, धुन का धनी, रुढ़ि विरोधी एवं तमाम चुनौतियों का धैर्यपूर्वक सामना करते हुए स्वाभिमान पूर्वक जीता है। वस्तुतः हिन्दी कथा-साहित्य में ‘कुल्ली-भाट’ और बिल्लेसुर बकरिहा ग्रामीण अंचल के अपने आप में अद्वितीय पात्र है। प्राक्कथन में लेखक ने इसे एक रेखाचित्र कहा- ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ हास्य लिए एक स्केच है। मुझे विश्वास है, पाठकों का मनोरंजन होगा।”

1. कुल्ली भाट निराला पृष्ठ-70

द्वितीय संस्करण की भूमिका ने उसे प्रगतिशील रचना बताया है – “बिल्लेसुर बकरिहा प्रगतिशील साहित्य का नमूना है । मित्रों ने इसका बड़ा आदर किया है ।”

उपन्यास के आमुख पर प्रकाशकीय में मुद्रित है – “यह उपन्यास अपनी यथार्थवादी विषयवस्तु और प्रगतिशील जीवन दृष्टि के लिए बहुचर्चित है । समीक्षक डॉ. रामदेवशुक्ल ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ और ‘कुल्ली-भाट’ को उपन्यास के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग मानते हैं । यह सत्य है कि निराला को कलकत्ता, लखनऊ और प्रयाग से अधिक और सूक्ष्म ज्ञान ग्रामीण अंचल का है । गाँव की प्रगति, रीति-रिवाज, कुरीतियों, ईर्ष्याद्वेष, जमींदारों में उत्पीड़न आदि की गहन जानकारी थी ।

डॉ. कुसुम वाष्णीय के अनुसार ‘बिल्लेसुर-बकरिहा’ और ‘कुल्ली भाट’ निराला के सर्वश्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास हैं ।”

डॉ. रामविलास शर्मा की दृष्टि में ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ लोक कथा है । डॉ. विशम्भरनाथ उपाध्याय इसे ‘लघुजीवी’ या दीर्घ-कथा की कोटि में रखते हैं । वहीं डॉ. देवी प्रसाद अपने एक लेख में इसे औपन्यासिक रेखाचित्र मानते हैं । डॉ. हरिवंश लाल शर्मा इसे पूर्णतः एक विस्तृत रेखाचित्र कहते हैं ।

उक्त समीक्षकों के विचार और मूल्यांकन अपने आप में महत्वपूर्ण हैं, किसी पक्ष को नकारा नहीं जा सकता । इस रचना में उपन्यास, दीर्घ कहानी, लोककथा, रेखाचित्र आदि के सभी तत्व सगुम्फित हैं । इसे लघु उपन्यास कहना असंगत न होगा । यह कथाकृति अत्यन्त हास्य-व्यंग्य प्रधान है ।

जिजीविषा मानव मात्र का सहज गुण है । निर्धन और निर्बल व्यक्ति इस गुण को विकसित कर अदम्य साहस और आत्मबल अर्जित कर लेते हैं । ऐसे ही पात्र को लेकर निराला कथा का ताना-बाना बुनते हुए लिखते हैं – “हिन्दी भाषा साहित्य में रस का

अकाल है, पर हिंदी बोलने वालों में नहीं । उनके जीवन में रस की गंगा यमुना बहती है, बीसवीं सदी साहित्य की धारा उनके जीवन में मिलती है ।¹

इसी धारा की अन्तः सलिला की खोज करते हुए निराला एक बार फिर बैसवाड़े के गाँवों में पहुँच जाते हैं । और ठेठ लोक जीवन से चरित नायक को उठाते हैं – बाप ने नाम रखा था बिल्वेश्वर, जो गँवई उच्चारण में बिल्लेसुर बना और जीविका के साथ जुड़कर 'बिल्लेसुर बकरिहा' हो गया, क्योंकि तरी के सुकुल को संसार पार करने की तरी नहीं मिली तब बकरी पालने का कारोबार शुरू किया । गाँव वाले उक्त पदवी से अभिहित करने लगे ।²

बिल्लेसुर संघर्ष शील और परिश्रमी हैं । निरक्षर हैं पर मूर्ख नहीं । वह अपने विकास मार्ग का निर्माण स्वयं करता है । बाल्यवास्था में ही बिल्लेसुर के पिता का निधन हो गया । माँ औरों का अनाज पीसकर, कण्डे पाथकर, बाग से आम और महुए बीनकर कुछ दिनों पाल पोसकर, स्वर्ग सिधार गई बिल्लेसुर के तीनों बड़े भाई, किसी ने विधवा से, तो किसी ने गान्धर्व विवाह कर, तो किसी ने बाल विवाह कर गाँव से पलायन कर गए । बिल्लेसुर के लिए निराला लिखते हैं – 'इसमें बिल और ईश्वर दोनों के भाव साथ-साथ रहे ।

बिल्लेसुर नौकरी की खोज में अनेक कष्ट सहते हुए बर्दवान जा पहुँचे । यहाँ पं. सत्तीदीन सुकुल, महाराज बर्दवान के यहाँ जमादार थे । उन्होंने बिल्लेसुर को गायों की सेवा का भार सौंपा । कुछ और आर्थिक लाभ कराने को चिट्ठियाँ पहुँचाने का काम दिला दिया । सुकुल की गायें चराने और चिट्ठियाँ बाँटने के बाद बिल्लेसुर का मुँह सूख जाता, पसीने से लथपथ हो जाते । हाँफते हुए सुस्ताने लगते तो सत्तीदीन की स्त्री पूँछने लगती – 'कितना कमा लाए' । मन मसोस कर रह जाते किन्तु बिल्लेसुर

1. बिल्लेसुर बकरिहा – निराला पृष्ठ-1-2

2. बिल्लेसुर बकरिहा – निराला पृष्ठ-11

ने धैर्य नहीं छोड़ा । कुछ समय बाद छुट्टी गए सिपाहियों की जगह काम मिलने लगा । सत्तीदीन सपत्नीक पुत्र कामना से जगन्नाथ जाने पर बिल्लेसुर को भी साथ ले गए । वहीं बिल्लेसुर ने मंत्र ले लिया और कंठी माला धारण की । इधर सत्तीदीन की पत्नी को वर्ष भर के अनुष्ठान के बाद भी पुत्र लाभ न हुआ तो उनका जगन्नाथ भगवान पर से विश्वास उठ गया और उनका बिल्लेसुर के प्रति अनुराग बढ़ चला – “जब एक साल तक पुत्र विषय में बाबा जगन्नाथ जी ने कृपा न की तब सत्तीदीन की स्त्री का देवता पर कोप चढ़ा और वे दिव्यशक्ति को छोड़कर मनुष्य शक्ति की पक्षपातिनी बन गई, यथार्थवादी लेखक की तरह । बिल्लेसुर को बड़ी ग्लानि हुई । गुरुवाइन का यथार्थवादी रूप बिल्लेसुर को खला ।”¹

गुरुमंत्र, कंठीमाला सब सौंपकर बिल्लेसुर गाँव लौट आए । यहाँ हवा यह कि परदेश से कमाकर आया है । मालामाल है । पर बिल्लेसुर ने किसी को कुछ न बताया, चुप रहे । बैल पालने का विचार मन में आया फिर सोचा उसमें सानी पानी का झंझट । दूसरे बैलों को बाँधकर बैल ही बना रहना पड़ता है । अन्ततः बकरी पालन का धंधा उत्तम लगा । रामदीन ने टोका भी ‘ब्राह्मण होकर बकरी पालोगे ।’ किन्तु बिल्लेसुर ने टीका टिप्पणियों पर ध्यान न दिया । गाँव वाले उन्हें बकरिहा कहकर चिढ़ाया करते हैं । प्रतिशोध लेने का बिल्लेसुर ने अनूठा उपाय अपनाया । वह गाँव वालों के नाम से अपनी बकरियों और बच्चों को पुकारने लगे । बकरी के घी को भैंस का बताकर बेचते, खोवा बनाकर बेचते, शकरकन्द की खेती करते, इनसे पैसा इकट्ठा हुआ । गाँव वाले जलने लगे । वे अपनी जलन कभी बिल्लेसुर को चिढ़ाकर, तो कभी बेतुकी राग देकर, तो कभी निन्दा करके निकालते, किन्तु बिल्लेसुर अनसुनीकर अपने काम से काम रखते । पग-पग पर बाधाएँ आतीं, पर वह आगे बढ़ते जाते । कठिनाइयों और अलोचनाओं से वह विचलित नहीं हुए – “बिल्लेसुर को जिन्दगी के रास्ते रोज ऐसी

1. बिल्लेसुर बकरिहा – निराला पृष्ठ-26-27

छोकर लगी है, कभी बचे हैं, कभी चूके हैं। अब बहुत रांगलकर रहते हैं।¹

कष्टों ने उन्हें बल दिया, विश्वास दिया। अब बिल्लेसुर में आत्मविश्वास आ गया था “दुख का मुँह देखते-देखते उसकी डरावनी सूरत को बार-बार चुनौती दे रहे थे। कभी हार नहीं खायी।²

बिल्लेसुर धर्मभीरू हैं। बकरियाँ चराते समय मंदिर हो आते हैं। महावीर जी से गरीब ब्राह्मण की बकरियों की रक्षा करने की प्रार्थना कर लेते हैं। “महावीर जी के पैर छूकर, मन ही मन कुछ कहा और फिर बकरियों का पीछा पकड़ा।³

महावीर जी के भरोसे सब कुछ होते हुए भी दीनानाथ उनके बकरे को खा जाता है। यह घटना बिल्लेसुर को विचलित कर देती है। सारा क्रोध और क्षोभ महावीर जी की प्रतिमा पर उतार देते हैं।

“महावीर जी के पास गए। लापरवाही में आगे खड़े हो गए और आवेग में भरकर बोले— “देख मैं गरीब हूँ। तुझे सब लोग गरीबों का सहायक कहते हैं। मैं इसीलिए तेरे पास आता था, और कहता था— मेरी बकरियों को देखे रहना, क्या तूने रखवाली की, बता, लिए थूथन सा मुँह लिए खड़ा है।⁴ कोई उत्तर नहीं मिला। बिल्लेसुर ने आवेश में छूटते हुए, महावीर जी की प्रतिमा पर डण्डा मारा कि मिट्टी का मुँह गिल्ली की तरह टूटकर विखर गया।

जीविका का जुगाड़ कर लेने के बाद बिल्लेसुर घर बसाने में भी सफल हो जाते हैं, यद्यपि गाँव वालों के ठगनें मूसने के लिए बहुत चालें चलीं। लोग उन्हें धनवान समझने लगे थे। कोई कहता सोने की ईंटें लाया है तो कोई कुछ। पैसा आ जाने पर अब सभी ललचाई आँखों से कुछ न कुछ प्राप्ति की आशा में बिल्लेसुर का आदर करने

-
1. बिल्लेसुर बकरिहा — निराला पृष्ठ-34
 2. बिल्लेसुर बकरिहा — निराला पृष्ठ-41
 3. बिल्लेसुर बकरिहा — निराला पृष्ठ-33
 4. बिल्लेसुर बकरिहा — निराला पृष्ठ-40

(MMA) Konrad Lorenz MB Collection

लगे "नाई रोज तेल लगाने और बाल बनाने को पूँछने लगा । कहार एक रोज अपने आप आकर दो घड़े पानी भर गया । बेहना बल्ली बनाने के लिए रुई की चार पिण्डियाँ दे गया ।चौकीदार पासी रोज आधीरात को हाँक लगाता हुआ समझा जाने लगा कि पूरी रखवाली कर रहा है । गंगावासी एक दिन दो जोड़े जनेऊ दे गया । एक दिन भट्ट जी आए और सीता स्वयंवर के कुछ कवित्त और भूषण की अमृत ध्वनि सुना गए गर्ज यह कि इस समय कोई नहीं चूका ।" ¹

भले ही महावीर जी ने उनकी बकरियों की रक्षा ने की हो और क्रोध में आकर माटी की मूर्ति को खण्डित कर दिया हो किन्तु धर्म में बिल्लेसुर की आस्था अकम्प है । शकुन-अपशकुन मानते हैं -प्रस्थान करते समय "दरवाजे से निकलकर मकान में ताला लगाया और दोनों नथनों में कौन चल रहा है, दबाकर देखकर उसी जगह दांया पैर तीन दफे दे मारा और दूध वाली हण्डी उठाकर निगाह नीची किए गंभीरता से चले । थोड़ी दूर पर भरा पड़ा मिला, बिल्लेसुर खुश हो गए ।" ²

वस्तुतः कथानायक की इस प्रकार की गतिविधियाँ बहुत हास्यपूर्ण हैं । इसी प्रकार प्रायः पूजा भी कर लिया करते हैं, लेकिन उनकी पूजा भी उपहासास्पद है । पूजा करते समय बार-बार दरपन देखने, आँखें-भौहें चढ़ाकर, उतारकर, गाल फुलाकर, पिचकाकर, होंठ फैलाकर बार-बार देखने की उनकी आदत है ।

बिल्लेसुर की ढेर सारी चेष्टाएँ और मुद्राएँ देखकर कोई हँसी से लोट-पोट हो जाएगा और हास्यरस की अवतारणा लेखक का उद्देश्य है । यह एक उत्कृष्ट यथार्थवादी उपन्यास है । कथानक अत्यन्त सुगठित है ।

1. बिल्लेसुर बकरिहा -- निराला पृष्ठ-69

2. बिल्लेसुर बकरिहा -- निराला पृष्ठ-65

2.3 निराला के पौराणिक उपन्यास

भक्त ध्रुव :-

निराला जी का बाल साहित्य उल्लेखनीय तथा समृद्ध है और उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है । निराला जी ने जहाँ अनेक कृतियों की रचना की, वहीं बच्चों के अतीत वैचारिक सम्पदा, संस्कृति तथा ज्ञानवर्द्धक प्रेरणा हेतु उच्चकोटि की बाल-साहित्य सर्जना भी की है । उनके सर्जन का लक्ष्य साधारण मनोरंजन न होकर बच्चों का चरित्र गठन, ज्ञानवर्द्धन, संस्कारवर्द्धन, संस्कृतिवर्द्धन, मानव कल्याण की भावना, देश-प्रेम, आदरणीय एवं चारित्रिक ही नहीं वरन् बच्चों का सर्वाङ्गीण और समुन्नत बाल विकास है । वह बालक के मन की गहराइयों का स्पर्श करने वाला आलोक वितीर्णक, बाल अभिरुचि जाग्रत करके उन्हें निरन्तर जिज्ञासु, साहसिक, दृढ़ और जागरूक बनाता है । 'निराला' जी के शब्दों में "किसी देश को उन्नति के शिखर पर फिर से संस्थापित करने का सबसे उत्तम उपाय यही है कि उसके बालक की सार्वभौमिक शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाए । उनके सामने देश के आदर्श बालकों के चरित्र रखे जाएँ । इस तरह उनकी शारीरिक दशा का सुधार तो होगा ही, साथ ही उनकी मानसिक और नैतिक उन्नति भी हो सकेगी और निकट भविष्य में वे देश के मुखोज्ज्वलकारी रत्न हों सकेंगे ।

ध्रुव का चरित्र बालकों के लिए सर्वथा अनुकरणीय है । उनके चरित्र के पाठ से बालकों में धर्मभाव, शुद्धता और सजीवता के आने का साथ ही साथ उनमें एक प्रकार की वह कर्मनिष्ठा और एकाग्रता आएगी, जिसके प्रभाव से वे सफलता की मंजिल पूरी करके ही दम लेंगे ।

इन धर्म निष्ठ और कर्तव्यपराण बालकों के चरित्र का चित्रण हमने यथासाध्य सरल भाषा में करने का प्रयत्न किया है । साथ ही ईश्वर प्राप्ति विषयक गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन भी कर दिया है ताकि धर्म के मार्ग से धारक कट्टरता का इस देश में लोप हो जाए बच्चे हर प्रान्त और हर जाति के बालकों से

सहानुभूति रखना सीखें । ”¹

‘ध्रुव’ की कथा तपस्या परक कथा है । ध्रुव भगवान वासुदेव के आदेश एवं स्वयं के परम तप के बल से राजा हुए । ध्रुव ने दीर्घकाल तक प्रजाजनों का पालन और यक्ष आदि का शासन किया । अन्त में एक लोक ऐसा ध्रुव को मिला जहाँ दूसरे की स्थिति नहीं होती । उसे ध्रुव लोक के नाम से जाना जाता है । ‘भक्त-ध्रुव’ का कथानक परिच्छेदों में विभक्त हैं ।

1. पूर्वाभास, 2. सुनीति का निर्वासन, 3. पुनर्मिलन, 4. ध्रुव का जन्म और बाल्यकाल, 5. भक्ति पथ के पथिक ध्रुव, 6. नारद जी का उपदेश, 7. राजा उत्तानपाद पश्चाताप, 8. ध्रुव की घोर तपस्या, 9. भक्ति की विचित्र महिमा ।

मनु परम तपस्वी थे । इसी से मनु मनुष्यों के पिता के आसन पर प्रतिष्ठित हैं । ये वीर्यमान और तेजस्वी थे । ये ही संसार में मनु जाति के मुख्य आदर्श थे । प्रलय मनुष्यों के मिथ्याचार और वर्णों द्वारा अपने-अपने धर्मों का पालन न करने से होती है । जिस परमात्मा की इच्छा से प्रलय होती है उसी की इच्छा से सृष्टि होती है । मनु यशस्वी राजा थे । उनके दो सुन्दर पुत्र थे ।

1. प्रियव्रत, 2. उत्तानपाद । उत्तानपाद परम तेजस्वी प्रजा-सेवक । मनु उत्तानपाद को राज्य सौंप तप हेतु वन में चले गए । उत्तानपाद कुशल राजा हुए । रानी सुनीति से प्रगाढ़ प्रेम । अनेक वर्षों तक पुत्र न होने से राजा उदास थे । रानी ने दूसरे विवाह की स्वीकृति दे दी ।

सुरुचि से दूसरा विवाह । सुनीति ने आदर सत्कार किया । सुरुचि के साथ मैके से राक्षसी नामक दासी आई थी । स्वभाव से कुटिल थी वह, वह सुरुचि की दासी के साथ-साथ आचार्या भी थी । सुरुचि को सुनीति के खिलाफ सौतिया डाह का पाठ पढ़ाया । अतः सुरुचि पर उसकी बातों का असर हुआ । कहो - ‘वह सुनीति

व्याभिचार करती है ।¹ सुरुचि ने ऐसा ही किया । राजा ने क्रोधित होकर सुनीति को निर्वासित कर दिया । सुनीति वन में रहने लगी ।

निर्दोष सुनीति अत्यन्त दुखित, आश्चर्यचकित । राजा के प्रति क्षोभ । दण्ड आज्ञा पर अविश्वास । कहा – “जिसकी आँखों में इतनी भावुकता है, जिसकी चितवन में इतना अपनाव है, वह कभी इतना कठोर नहीं हो सकता । जिसके हृदय में पुत्र के बिना भी पत्नी को हताश करने की आकांक्षा कभी नहीं पैदा हुई, जिसने सुनीति के आग्रह से ही विवाह किया है, वह कभी इतना कठोर नहीं हो सकता ।”¹ विधि के विधान के प्रति संतोष प्रकट करती हुई रानी कहती हैं – “काल चक्र की गति बड़ी विचित्र है । कब क्या हो जाता है, कब क्या होने वाला है, इसका निर्धारण मनुष्य नहीं कर सकता । इसी नियम की परिवर्तनशीलता से सिद्ध होता है कि सबके दिन एक से नहीं रहते हैं ।”²

राजा आखेट खेलते वन में भटक जाते हैं । सुनीति की कुटिया तक पहुँचे । उसने सत्कार किया । रात्रि विश्राम । राजधानी आकर राजा उत्तानपाद अपने कार्यों में लीन हो जाते हैं । उधर एक रात्रि के सहवास से गर्भवती हो जाती हैं । दसवें माह ध्रुव का जन्म । ऋषियों ने उसका जन्म चक्र तैयार कर उसे बड़ा प्रतापी बतलाया । कहा कि – यह संसार में अपनी अमर कीर्ति रख जाएगा । फूस की कुटिया में ध्रुव का लालन-पालन । हरी-भरी लताओं में चिड़ियों की चहक सुनकर लहालोट हो जाता है बालक ध्रुव । रोना न जानते । शान्त स्वभाव बालकों के साथ खेलते-खेलते राजधानी देखने की योजना । माता की आज्ञा से ध्रुव भी राजधानी जाते हैं ।

राजधानी की भव्यता देखी । दरबार में पहुँच गए । ध्रुव ने बताया कि वह एक अनाथिनी सुनीति का पुत्र है । राजा भावविभोर प्रसन्न । सभी दरबारी प्रसन्न । राजा ने गोद में ले लिया, दुलारने लगे सहसा सुरुचि का पुत्र राजसी वेशधारी उत्तम

1. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-24

2. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-29

आ गया।

सुरुचि अपने पुत्र को खोजती वहाँ पहुँचती है। राजा की गोद में ध्रुव को देख क्रोधित होकर ध्रुव को बाँह खींचकर गोद से उतार दिया कहा – “राजा की गोद में तुम जैसे अभागे नहीं बैठते हैं। राजा की गोद में बैठना था, तो सुनीति के पेट से क्यों निकले थे”¹ ध्रुव का कलेजा दो टूक हो गया। आँखें छलछला आयीं। ऋषि पुत्रों के साथ ध्रुव वापस आए। माता की गोद में बैठकर ध्रुव बहुत रोए। माता को दुखित होकर सारा वृत्तान्त सुनाया।

ध्रुव माता सुनीति से पूँछता है कि यह भेदभाव क्यों – मैं भी राजा पुत्र हूँ फिर उस लड़के (उत्तमकुमार) में और मुझमें अन्तर क्यों? सुनीति समझती है – ‘पूर्वजन्म के कर्म होंगे’ ध्रुव राज्य प्राप्ति का उपाय पूँछता है। माता कहती है कि परमात्मा के सिवाय हमारा कोई नहीं – ‘गरीबों की पुकार को सुनने वाला परमात्मा ही है। ध्रुव परमात्मा की खोज में निकल पड़ते हैं – दुर्गम मार्ग। लेखक के शब्दों में – “घोर स्तब्ध ता दशों दिशाओं में फैली हुई थी। हवा भी धीरे-धीरे बहुत डरी हुई सी पृथ्वी के वक्षस्थल पर प्रवाहित हो रही थी। उसे शांति भंग की आशंका थी। तारे इस मौन राज्य के सन्तरियों की तरह आकाश में सजग रहकर पहरा दे रहे थे। दानवाकार जंगल के बड़े-बड़े पेड़ रात्रि के शासन भय से मानों चुपचाप एक दूसरे से अनेक कर्तव्य का निर्णय करा रहे थे। रह-रहकर निशाचर जीवों की आवाज उनके हृदय को कुछ साहस दे रही थी।”²

ईश्वर के प्रति समर्पित भाव लिए घने जंगल में, दुर्गम मार्ग में दृढ़ बालक ध्रुव परमात्मा की खोज में चला जाता है ध्रुव को अपनी देह की सुध नहीं थी ध्रुव का चित्त पूर्ण्यता परमात्मा में लगा था, हृदय आशाओं से भरा हुआ था और ध्रुव का मन संकल्पन

1. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-39

2. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-42

की दृढ़ता से अविचल था । ध्रुव अरण्य में निर्भीकता से चले जा रहे थे – “उनका प्रश्न दुरूह और महान था उधर परमात्मा भी असीम, अनन्य और महान थे । ध्रुव का धैर्य और साहस भी असीम और महान था, इधर मार्ग भी अज्ञात दूर तक फैला हुआ असीम और महान हो रहा था । क्षुद्र थी केवल उनकी देह ।”¹

माँ सुनीति आकुल व्याकुल/खोजती रहतीं/निराशा/दासी मधुमती से ध्रुव के गायब होने का समाचार राजा को मिला । मंत्रियों ने ढूँढा । प्रस्ताव किया – दो सेर आटा और वस्त्र राज्य से सुनीति को मिलते रहेंगे किन्तु ध्रुव वापस नहीं आए । ध्रुव तो अपनी फरियाद परमात्मा को सुनाना चाहते थे । राजा के दूत भेजे । उन्होंने कहा– “ध्रुव को अवश्य लौटा लाओ – कहो उसका हिस्सा, आधा राज्य उसे दे दिया जाएगा, वह लौट आए ।”²

बालक ध्रुव के त्याग से राजा पर अत्यधिक प्रभाव हुआ – इतना बड़ा त्याग अपने जीवन में उन्होंने कभी न देखा था । ध्रुव के त्याग से उनकी बुद्धि भी ठिकाने आ गई । वे संभल गए । परलोक की याद आयी । बुरी लतें छूटने लगीं । भोग से चित्त हट गया । कर्म की प्रवृत्ति बढ़ने लगी । राज्य का प्रबन्ध अच्छी तरह से होने लगा । प्रजा भी पहले से सुखी रहने लगी ।”³

रानी सुनीति का भी पुत्र के आदर्शमयी त्याग से मोह समाप्त हुआ । उन्हें शाश्वत और नश्वरता का बोध हो गया । वे वन में ऋषि पत्नियों के साथ आनन्दमय जीवन व्यतीत करने लगीं ।

ध्रुव को मार्ग में सप्तर्षि मिले, ध्रुव ने प्रणाम किया, आशीर्वाद मिला । नारद द्वारा उत्साहवर्द्धन किया गया । नारद ने मंत्र दिया । बाधाओं और प्रलोभनों ने बचने की प्रेरणा दी । अब उत्तानपाद का झुकाव ध्रुव की ओर अधिक था । पश्चाताप करने लगे

1. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-45

2. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-49

3. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-42

कि कैसे वे रूप के वश में हो गए । क्यों सुनीति की उपेक्षा की ? राज-काज से अन्यमनस्क हो गए । उदास । ” मन की धारा की कुछ ऐसी है कि वह दीनता को ज्यादा प्यार करती है, अकड़ से हटी रहती है । उत्तम जानता था कि मैं राजा का लड़का हूँ, भविष्य में राजा होऊँगा । ध्रुव सोचते, कि मैं दुखित माता की गोद का बालक हूँ । यह भेद महाराज उत्तानपाद के मन को अविदित न था । यही कारण था, दुख की ओर निरपेक्ष मन का झुकाव था । ”¹

नारद का आगमन । अपनी व्यथा राजा ने नारद से कही । नारद ने सान्त्वना दी । संसार की कोई भी शक्ति ध्रुव का अनिष्ट नहीं कर सकती । ध्रुव के यश के, पिता होने के नाते से आप भी अधिकारी होंगे । ध्रुव का जन्म ईश्वर की विकृति लेकर हुआ है । उसके साथ-साथ आपका नाम भी इस संसार में अमर होगा । नारद सुनीति के पास भी गए, उन्हें भी पुत्र के तप की बातें बताई ।

ध्रुव मधुवन में पहुँच गए । प्रकृति देवी की अविस्मरणीय शोभा ने चित्त का चाव चौगुना कर दिया । बालक उस अवस्था को पहुँचा, जिससे ईश्वर का नाम उसके रोम-रोम में व्याप्त हो जाता है । इन्द्र को भय हुआ । प्रकृति ने भी प्रतिकूलता का परिचय दिया । वरुण ने घोर वर्षा की किन्तु ध्रुव अडिग रहे । भगवान विष्णु ने ध्रुव को दर्शन दिए । ध्रुव ने देखा - “शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु सामने खड़े हुए थे । ” भगवान ने वरदान माँगने को कहा । ध्रुव ने कहा-“भगवान मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या माँगूँ । तुम्हें जैसा उचित जान पड़े, वैसा वरदान दीजिए । ”² विष्णु ने कहा कि पिता और विमाता द्वारा किए गये अपमान के कारण प्रथम तुम्हें राज्य भोग करना होगा । देखते ही देखते अगणित रथ, घोड़े, हाथी और पैदलों की सेना तैयार हो गयी । भगवान विष्णु ने कहा -“ध्रुव, यह मैंने केवल तुम्हें भोग करने के लिए दिया है । यह तुम्हारी तपस्या का सम्पूर्ण फल नहीं है । तुम्हें ज्ञान देने का श्रेय तुम्हारी माता को है ।

1. भक्त ध्रुव - निराला पृष्ठ-45

2. भक्त ध्रुव - निराला पृष्ठ-75

व सती और अत्यन्त धर्मपारायण स्त्री है, इसीलिए वह भी तुम्हारे साथ रहेगी । तुम्हारा लोक ध्रुव लोक के नाम से प्रसिद्ध होगा ।”¹ इतना कहकर विष्णु भगवान अन्तर्धान हो जाते हैं । ध्रुव ससैन्य राजधानी को चले । पहले ध्रुव वन में गए, जहाँ उनकी माता सुनीति रहती थीं । नेत्रों से प्रेमाश्रु बह निकले । ध्रुव से सिंहासनरुढ़ होने को कहा । ध्रुव ने सुरुचि को भी प्रणाम किया । सुनीति से सुरुचि ने क्षमा माँगी । राजा ने ध्रुव का राज्याभिषेक किया । स्वयं वानप्रस्थ ग्रहण कर तपस्या में व्रती हो गए । ध्रुव ने दीर्घकाल तक शासन किया । कोई गरीब न था, न बेकार । भगवान राम को छोड़कर इतना सुख किसी दूसरे राजा के समय प्रजा को न मिला था ।

राज्यभोग का समय पूरा कर ध्रुव अपने लोक चले गए । “उनका लोक सप्तर्षिमण्डल से भी ऊँचा है । सब ग्रह घूमते हैं परन्तु ध्रुवतारा अचल रहता है । ऋषियों और बड़े-बड़े तपस्वियों को भी जो स्थान नहीं मिलता वह स्थान परमात्मा ने ध्रुव को दिया ।”² ध्रुव बालक है पर वह लघुमानव की चिन्ता में निमग्न है । ध्रुव की मानवीय दृष्टि — “गहन अरण्य के एक ओर चिन्ता में डूबा हुआ एक बालक मन ही मन अपने भविष्य की चिन्ता कर रहा है । वह मनुष्य है, मनुष्य का हक लेकर पैदा हुआ है, मनुष्य से मनुष्योचित व्यवहार की आशा रखता है, मनुष्यों की सम्पूर्ण वृत्तियाँ उसके अन्दर भी विराजमान हैं । चाहे उनका रूप बहुत क्षुद्र ही क्यों न हो । चाहे अनुकूल अवस्था के अभाव में अब तक उनकी अंकुरित दशा भी विपरीत क्यों न हो—वे बीजरूप ही क्यों न हों । तिरस्कार, घृणा, अपमान, अत्याचार, निर्यातन इन पाशविक प्रवृत्तियों के विरोध के लिए आज उसके खून की हर एक बूँद तीव्रगति से उसे कार्य तत्पर कर रही हैं । बालक सोच रहा है इस अत्याचार का उपाय । चिरकाल से मनुष्य जाति, मनुष्य जाति पर जो अत्याचार करती चली आ रही है — इसका कारण, साथ ही इसका प्रतिशोध भी । वह अत्याचार सहने के लिए नहीं आया । राजा को ऐश्वर्य के साथ परम सुन्दर सुसंगठित

1. भक्त ध्रुव — निराला पृष्ठ-76

2. भक्त ध्रुव — निराला पृष्ठ-79

स्वरूप देते हुए विधाता को जितनी चित्रण कुशलता दिखानी पड़ती है, उतनी ही वरिष्ठ को दीन-हीन और निराश्रय करके चित्रण करते हुए भी ।

“सौन्दर्य, ऐश्वर्य, विभूति, पूर्णता एक उच्चवंश में एक सम्राट में जितनी है उतना ही ऐश्वर्य, उतनी ही विभूति, उतना ही सौन्दर्य और उतनी ही पूर्णता एक भिक्षुक में भी है दोनों के रूप भी वस्तुतः एक ही ठहरेंगे सम्राट के लिए प्राप्ति की पूर्णता का भाव सौन्दर्य, तो भिक्षुक के भीतर कुछ नहीं की पूर्णता और अभाव का सौन्दर्य है । दोनों भरे पूरे हैं । अपने-अपने सौन्दर्य क सृष्टि से, अपने-अपने विलास की कमनीयता से, फिर एक दूसरे का इतना अनादर क्यों करता है । एक दूसरे के खून का प्यासा क्यों बना रहता है ? एक दूसरे की लाश पर विभूति क्यों दिखलाना चाहता है । बालक यही सोच रहा है । उसके हृदय में तीव्र जिज्ञासा जगी हुई है और इसी दवा के लिए व्याकुल हो रहा है ।”¹

निराला जी के शब्दों में ध्रुव के प्रति मानवतावादी विचार ध्रुव की चिन्ता एक क्रान्तिकारी की चिन्ता है । उसका स्वर एक विद्रोही का स्वर है ।

निराला जी के ध्रुव मात्र पौराणिक नहीं है, वह मानव की दासता शोषण के निराकरण के बारे में भी विचार करते हैं । “ध्रुव के हृदय में जहाँ अत्याचारी संसार का घोर विरोध भरा हुआ था, वहीं मनुष्यों के प्रति सहानुभूति मा महासागर उमड़ रहा था । जरा सा बालक भाव की प्रशस्त उर्मियों पर तिनके की तरह बह रहा था”²

यह भाव तो एक समाजवादी जैसा है लेकिन इसका समाधान ईश्वर में खोजना चाहता है । निराला का लक्ष्य बच्चों में आदर्श और उच्च जीवन मूल्यों की स्थापना है जिसे उन्होंने अपनी कविताओं, कहानियों, जीवनियों तथा कृतियों से रचना दृश्य की पूर्ति की है । निराला जी ने बाल भाषा में हँसते-हँसते भारतीय संस्कृति, अतीत और इतिहास संदर्भों से बच्चों को जोड़ने में अद्वितीय सफलता पाई है और उनका बाल

1. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-44

2. भक्त ध्रुव – निराला पृष्ठ-44

साहित्य विश्व बालक को मानवता का अमर संदेश प्रदान करता है ।

‘भक्त ध्रुव’ में लेखक ने मानव प्रकृति का भी वर्णन किया है । डॉ. सुकृता कृपलानी के अनुसार – “सौतेले भाई से बराबरी की वह भावना, अपमान की पीड़ा ध्रुव को अपने भीतर को पहचानने की सामर्थ्य देती है । वह मनुष्य है , मनुष्य का हक लेकर पैदा हुआ मनुष्य से मनुष्योचित व्यवहार की आशा रखता है.....।”

इस संदर्भ में ‘निराला’ की लेखनी बालक के हृदय की पीड़ा को विद्रोह में बदलते दिखाती है । ‘निराला’ जैसा विद्रोही कवि ध्रुव के आलौकिक चरित्र को मानवीय धरातल पर प्रस्तुत कर, अपने बालमनोविज्ञान विशेषज्ञ होने का प्रमाण देता है । राजा का पुत्र ध्रुव बालक ध्रुव ‘मनुष्य जाति’ जो अत्याचार करती आई है उसका कारण जानना चाहता है, और प्रतिशोध भी लेना चाहता है ।

भक्त प्रह्लाद :-

पुराण भारतीय रचनाकारों का केन्द्रीय प्रस्थान हैं । इस रूप में पुराण हिंदी के तमाम रचनाकारों के उपजीव्य भी हैं । जहाँ तक ‘निराला’ जी का संदर्भ है उन्होंने अपने कथा साहित्य में अनेक पौराणिक संदर्भों का न केवल संस्पर्श किया अपितु उन्हें अपने लिखने का केन्द्रीय पक्ष भी बनाया है । पुराणों के संदर्भ में यह कहा गया है कि – “पुराणमित्तेव न साधु सर्व” अर्थात् पुराणों में जो भी कहा गया है वह सब साधु अर्थात् सत्य ही है, ऐसा नहीं । इसका कारण की युग की चेतना के अनुसार पुराणों में व्यक्त संदर्भ सूत्र भी बदलते रहे हैं । इतना होते हुए भी आज भी पुराणों में बहुत से संदर्भ, पात्र, कथाएँ एवं चरित्र हमारे भारतीय जनमानस के प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं ।

इन स्त्रोतों का दोहन करते हुए हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों ने युगानुरूप चिन्तन के साथ ऐसी अनेक रचनाएँ दी है, जो आज भी हमारा मार्ग दर्शन करने में पूरी तरह सक्षम हैं ।

‘भक्त प्रह्लाद’, ‘निराला’ जी की जीवनी परक आध्यात्मिक उपन्यास है ।

जैसा कि ख्यात है कि प्रहलाद भक्तों में अग्रगण्य रहें हैं । प्रहलाद की पूरी जय यात्रा उनकी निष्ठा पर ही आधारित रही । जैसा कि ख्यात है कि अपनी निष्ठा के कारण ही वे सारे संकटों को झेलते हुए विजयी सिद्ध हुए । इस संदर्भ में निराला लिखते हैं कि “दैत्यों के वंश में जन्म लेकर भी उन्होंने सत्वगुणी वृत्ति का आश्रय लिया था । अन्त तक आसुरी भावों पर वे विजयी हुए । ईश्वर—प्रेम, भक्ति, शांति, क्षमा, दया, धृति, सरलता आदि जितने सद्गुण हैं, प्रहलाद में वे सब थे । ऐसे धर्मनिष्ठ, सरल और दृढ़वत बालक के चरित्र का प्रचार, स्खलित मति, निर्वीर्य, निरुत्साह और पथभ्रष्ट कर देने वाली कुशिक्षा से बचाने के लिए देश के बालकों में अवश्य होना चाहिए ।”¹

निराला का ‘भक्त प्रहलाद’ शीर्षक उपन्यास जीवनीपरक उपन्यासों के अंतर्गत परिभाषित होता है ।

राजकमल प्रकाशन से पहली बार सन् 1986 और दूसरी बार सन् 1992 में प्रकाशित हुआ है । प्रस्तुत उपन्यास चौदह परिच्छेदों में विभक्त है । चौदह परिच्छेद हैं । 1. परिचय 2. हिरण्यकशिपु, अत्याचार, तपस्या, लड़ाई 3. वर प्राप्ति और गृहागमन, 4. विजय और प्रहलाद जन्म, 5. बाल्यकाल और गुरुकुल, 6. प्रहलाद की शिक्षा, 7. प्रहलाद की परीक्षाएँ, 8. विषपान, 9. द्विरद-पद-तल, 10. सर्प-दंश-चेष्टा, 11. पर्वत शिखर, 12. अग्निपरीक्षा, 13. सागर गर्भ में, 14. नरसिंह ।

“भगवान कश्यप देवताओं, दानवों, नाग-नर किन्नर और गन्धर्वों के पूर्वज थे । देवता और दानव आदिकाल से आपस में लड़ते चले आ रहे थे । इसी दैत्यवंश में हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु दो प्रतापी भाई हुए । देवता और द्विज इन दैत्यों से घृणा करते थे, यह बात हिरण्यकशिपु के बड़े भाई हिरण्याक्ष को ज्ञात थी । अतः प्रतिशोध हेतु उसने दृढ़ प्रतिज्ञा की संसार से धर्म समाप्ति की । देव और द्विज के आराधक विष्णु

का अस्तित्व समाप्त करने की ठानी । गुरु शुक्राचार्य ने शिव का मृत्युञ्जय मंत्र दिया और उसे ही जीवनधार बनाने को कहा । हिरण्याक्ष ने घोषणा की कि जो भी विष्णु का नाम लेगा उसका सर धड़ से अलग कर दिया जाएगा । कायर राजा ने भय से विष्णु का नाम लेना बन्द कर दिया ।

संपूर्ण राजमण्डल दैत्यों के अधीन हो गया । विष्णु नाम और वैष्णधर्म भूमण्डल से तिनोहित हो गया । हिरण्याक्ष को कहीं से ज्ञात हुआ कि विष्णु पाताल लोक में वराहरूप से रहते हैं । हिरण्याक्ष अपने छोटे भाई हिरण्यकशिपु को राजा बना विष्णु की खोज में पाताल लोक चल दिया । अपार जलराशि के ऊपर उसे एक वराह उसी की ओर आता दिखाई दिया । हिरण्याक्ष शीघ्र ही समझ गया कि यही विष्णु है परन्तु भावी बड़ी प्रबल होती है । वराह रूप में उसके समक्ष मौत खड़ी थी – देखते-देखते वराह रूपी विष्णु भगवान ने बाहर वाले अपने तेज दाँत से उसके दो टुकड़े कर डाले, अन्त समय देख उसने राम नाम लेकर वहीं प्राण विसर्जन कर दिए ।¹

हिरण्यकशिपु भी तमोगुणी वृत्ति का था । राज्यपाकर वह प्रजा पर अत्याचार करने लगा । हिरण्यकशिपु के भय से कोई विष्णु का नाम न लेता । सच्चे भक्त मन में ही विष्णु की उपासना करते । दैत्यगण शैव थे । हिरण्याक्ष के मृत्यु का समाचार सुनकर उसका शोक क्रोध और प्रतिहिंसा में बदल गया । जब उसे यह ज्ञात होता है कि विष्णु अमर हैं तो हिरण्यकशिपु की सारी चित्तवृत्ति तपस्या की ओर झुक गई । मंत्रियों को राज-काज सौंपकर हिरण्यकशिपु तपोवन चल दिए । यहाँ वैष्णव भक्तों और दैत्यों में युद्ध होता है । दैत्य पराजित होते हैं । देवतागण हिरण्यकशिपु की रानी कयाधू जो कि गर्भवती है, को कैद कर लेते हैं ।

दैत्यवंशी होने के पश्चात् भी रानी कयाधू में दैत्य स्वभाव की छाप न थी । अत्यन्त सरल, पवित्र, उदार, बुद्धिमती और स्वभाव की शान्त थीं । देवताओं के इस

...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

...
...
...

व्यवहार से रानी क्षुब्ध होती हैं । नारद द्वारा भविष्यवाणी कि कयाधू का पुत्र ईश्वर का बड़ा ही भक्त होगा । नारद अपने आश्रम में कयाधू को ले गए ।

हिरण्यकशिपु की कठिन तपस्या से ब्रह्मा का हृदय पसीज गया । प्रकट हुए और हिरण्यकशिपु से वर प्राप्ति के लिए कहा वह अमरत्व का वर माँगता है । ब्रह्मा इस बात के लिए असमर्थता व्यक्त करते हैं । पुनः सोचकर हिरण्यकशिपु कहता है —“भगवन् अगर आप मुझे अमर नहीं करना चाहते तो कृपा कर यह वर दीजिए कि स्वर्ग, मर्त्य और पाताल में मेरा प्रतिद्वन्दी वीर कोई न रह जाए, मैं सबको परास्त कर सकूँ । देव, दानव, नर, असुर किन्नर, यक्ष, रक्ष, गन्धर्व कोई मेरे मुकाबिले में न ठहर सके । संसार में जितने जीवधारी हैं । उनमें से किसी के हाथ से मेरी मृत्यु न हो । न मैं दिन में मरूँ, न रात्रि को, न बाहर, न चारपाई पर, न जमीन पर, न अस्त्रों से, न पानी-पवन से ।”¹

ब्रह्मा ने उसकी प्रार्थना सुनकर कहा— ‘हिरण्यकशिपु, मैंने तुम्हें यही वर दिया, मेरे वर से तुम तीनों लोकों में विजयी रहोगे ।’

हिरण्यकशिपु वापस अपनी राजधानी में आता है । दैत्यों द्वारा रानी के कैव होने की बात, पराजय की कथा को सुनकर बहुत क्रोधित होता है । पुनः दैत्यों में उत्साह का संचार हुआ । पुनः युद्ध हुआ सुर-असुर के बीच । असुरों की विजय । बिछुड़े हुए परिजन मिले । कयाधू और अपने चारों पुत्रों को पाकर हिरण्यकशिपु अत्यन्त प्रसन्न हो गया ।

रानी कयाधू के चार पुत्र थे आल्हाद, अनुह्लाद, संल्हाद और प्रह्लाद । प्रह्लाद का जन्म एक बहुत बड़ी विषम स्थिति में हुआ । जहाँ तमोगुण की प्रधानता हो, सुरा और माँस जिनका भोजन हो वहाँ सदैव ईश्वर भक्ति में तल्लीन रहने वाला बालक का जन्म होना स्वाभाविक अत्यन्त अद्भुत बात थी । नारद जी को तो पूर्वाभास हो गया कि कयाधू रानी के गर्भ में अवश्य ही कोई ज्योतिर्मय संतान है । इधर रानी को

भी स्वप्न में दैवतुल्य व्यक्ति दिखाई देते थे । रानी ने भय के मारे अपने राजपुरोहित से स्वप्न दर्शन की चर्चा की । राजपुरोहित दैत्यकुल में रहकर भी विष्णुभक्त थे । पुरोहित जी ने कहा— “आप अपनी सारी चिन्ताएँ दूर कर दें, आपके गर्भ से परमात्मा की एक बहुत बड़ी विभूति प्रकट होगी । इस रत्न से आपका तो मुख उज्ज्वल होगा ही, किन्तु आपका वंश भी कृतार्थ और धन्य हो जाएगा ।”¹

प्रहलाद का जन्म हुआ । लेखक ने देवलोक की स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया— “देवताओं की दाहिनी भुजाएँ फड़क उठीं । देवपत्नियों के नूपुर अकस्मात् मधुर ध्वनि से बज उठे । देवताओं के यहाँ सब प्रकार के सकुन एक साथ दीख पड़े । आसमान बादलों से साफ हो गया । नन्दन वन में देवताओं के फिर से आने की सूचना सी होने लगी । देववंश के बच्चे बच्चे के मुख पर यकायक प्रसन्नता आ विराजी । सब एक प्रकार का अव्यक्त आनन्द अनुभव करने लगे ।”²

प्रहलाद अत्यन्त रूपवान् थे । गतिविधियाँ अन्य बच्चों से हटकर थी । सृष्टि के कर्त्ता कौन हैं ? इस प्रकार के प्रश्न बाल्यावस्था से ही उनके मन में उठने लगे । शास्त्रों के अनुसार इसी अवस्था में गुरुदर्शन होते हैं । प्रहलाद को भी हुए नारद के दर्शन हुए । प्रहलाद ने सृष्टि विषयक अपनी जिज्ञासाएँ नारद से प्रश्न पूँछकर शान्त की । प्रहलाद का बाल्यकाल अब यौवन की ओर बढ़ रहा था । प्रहलाद संसार की नश्वरता को देखकर विमुग्ध थे । उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ । कम उम्र में ही उन्हें सांसारिक ज्ञान हो गया । एकान्त प्रिय थे । प्रहलाद को भाइयों के साथ गुरुकुल शिक्षा हेतु भेजा गया ।

यद्यपि प्रहलाद ने जन्म दैत्यकुल में लिया था इसलिए वर्णाश्रम-धर्म से वह पतित समझा जाता था क्योंकि दैत्यों के गुण, कर्म के आधार पर वर्णाश्रम विभाग का

1. भक्त प्रहलाद — निराला पृष्ठ-44

2. भक्त प्रहलाद — निराला पृष्ठ-44

कोई संबंध न था परन्तु गुरुकुल में रहने की परम्परा उनके यहाँ भी थी । हिरण्यकशिपु ने शुक्राचार्य के पुत्रों षण्ड और अमर्क से आग्रह किया कि दैत्यकुल के लिए वैष्णवों के विनाश के विचार से उसका जीवन आप्लावित रहे ।

गुरुकुल में गुरु ने प्रहलाद को वहाँ के नियमों से अवगत कराया, अनुशासन की बातें बताई — “यहाँ जितने लड़के हैं, सबका बराबर आसन है । सम्मान की दृष्टि से बड़ा वह है, जिसने अध्ययन अधिक किया है । एक दिन राज्य का भार संभालना है, तो यहाँ साधारण रीति से जीवन बिताने के कारण तुम अपनी प्रजा के दुखों का अनुभव कर सकोगे ।”¹

एक बात प्रहलाद को अच्छी लगती है, “राजा और रंक एक ही आसन पर बैठकर ज्ञानार्जन करते हैं । समता के इस भाव से बालक का मुख प्रफुल्लित हो उठा ।

‘क’ अक्षर का ज्ञान सिखाए जाने पर प्रहलाद को कृष्ण का स्मरण हो गया । प्रहलाद भाव विह्वल हो रोने लगे । ‘जय कृष्ण — जय कृष्ण’ की रट लगाने लगे । उनके आचार्यों को क्रोध आया । उन्होंने समझाया कि तुम्हारे वंश में शिव की उपासना प्रचलित है । विष्णु से शिव कम शक्ति वाले नहीं हैं । प्रहलाद ने कहा — “अगर विष्णु को हृदय चाहता है और अपनी संपूर्ण पूजा बिना किसी प्रार्थना के वह उन्हीं के चरणों पर उत्सर्ग कर देना पसन्द करता है तो उसके सामने शिव था किसी दूसरे देव को लाकर खड़ा करना, उसे प्रतिकूल आचरण करने की शिक्षा देना है, जिससे बढ़कर पाप और दूसरा हो ही नहीं सकता । सच्चा हृदय कभी प्रतिकूल पथ से होकर नहीं चल सकता ।”²

प्रहलाद के आचारण से दूसरे बालक भी प्रभावित थे । प्रहलाद के वचन— “मित्रों इन आँखों से वे नहीं दीख पड़ते । इस दृष्टि से तो संसार ही दीख पड़ता है । वे कोटि सूर्य से भी अधिक प्रकाशवान हैं, परन्तु उनका प्रकाश दग्ध करने वाला नहीं, वह आत्मा की

1. भक्त प्रहलाद — निराला पृष्ठ-55

2. भक्त प्रहलाद — निराला पृष्ठ-58

संपूर्ण ज्वाला प्रकाशित कर देता है ।¹ प्रहलाद के ज्ञान से सभी बालक प्रभावित हुए । अमर्क और षण्ड को जब इस बात का पता चलता है तो भय के कारण उन्होंने सारा वृत्तान्त हिरण्यकशिपु को जाकर सुनाया । प्रहलाद ने कहा – ‘रामनामामृत पानकर मेरी कुल कामनाएँ पूर्णता में समा गई हैं । हिरण्यकशिपु ने राम नाम सुनकर प्रहलाद को अपनी गोद में ढकेल दिया किन्तु प्रहलाद में तनिक भी क्रोध नहीं आया वह पूर्ववत् बने रहे । हिरण्यकशिपु ने इस शिक्षा के लिए दोषी आचार्यों को ही ठहराया । प्रहलाद से अकर्म और षण्ड की दयनीय दशा देखी न गई । प्रहलाद ने कहा – “ आप मुझे ही दण्डनीति का आधार समझिये, आचार्य बिलकुल निर्दोष हैं ।”²

हिरण्यकशिपु को बहुत अपमान महसूस हुआ । क्रोध से हिरण्यशिपु की आँखे आरक्त हो गई । प्रहलाद को दण्डित करने के लिए निर्जन वन, जहाँ हिरण्यकशिपु की वध-भूमि थी, भेजा गया । प्रहलाद तटस्थ भाव से देख रहे थे चारों ओर । जल्लादों ने प्रहलाद के समक्ष प्रायश्चित्त किया कि जीविकार्जन के लिए ऐसा दुष्कार्य कभी न करेंगे ।

हिरण्यकशिपु ने विषपान कराकर मारने का षड्यंत्र किया । जहरीले लड्डू भी प्रहलाद पर अपना असर न दिखा सके । इधर रानी कयाधू को जब ज्ञात होता है कि प्रहलाद पर अतिचार हो रहे हैं तो वे अत्यंत विचलित होती है । प्रहलाद से मिलने कारागार जाती हैं ।

तत्पश्चात् द्विरद-पद-दल द्वारा प्रताड़ित किए जाने का संदर्भ है । हिरण्यकशिपु प्रहलाद को मारने के लिए एक के बाद एक उपाय सोचता रहा था किन्तु उसे सफलता नहीं मिल पा रही थी किन्तु “ जिसने अपने लिए कुछ नहीं रख छोड़ा था, सर्वस्व तक का समर्पण अपने प्रिय राम के पादारविन्दों में कर चुका था, उसे न परीक्षाओं की परवा थी और न उत्तीर्ण होने का आनन्द । वह बस प्रखर धारा दुर्भद-नद के वक्षस्थल पर पड़े हुए तिनके की तरह तरंगाघातों से इधर-उधर बह रहा था और

1. भक्त प्रहलाद – निराला पृष्ठ-61

2. भक्त प्रहलाद – निराला पृष्ठ-78

महामाया की लीला प्रत्यक्ष कर रहा था । यही उसके जीवन की क्रीड़ा थी और यही उसका संचित ज्ञान । संसार में निर्लिप्त और तटस्थ रहकर लीला-ललित आत्मा के अगणित रूप को वह प्रत्यक्ष करता हुआ, अपने इसी आनन्द में अनादि-वक्ष पर नृत्य कर रहा था ।¹

हिरण्यकशिपु चिन्तित थे क्योंकि प्रहलाद को मारने के सभी यत्न विफल हो रहे थे । प्रहलाद को उन्मत्त हाथी के सामने डाल दिया गया उसने प्रहलाद को अपनी सूंड से उठाकर अपनी पीठ पर बैठा लिया । सभी प्रजा स्तब्ध ।

सर्पदंश से भी प्रहलाद को मारने का उपाय सोचा गया वह भी विफल हुआ । पर्वत शिखर से गिराकर उनके अस्तित्व को समाप्त करना चाहा हिरण्यकशिपु ने । हिरण्यकशिपु के मन की कुटिलता उसे बार-बार प्रतिहिंसा के लिए प्रेरित करती थी । लेखक के शब्दों में --“मनुष्य लोभवश कितना बड़ा दुष्कर्म कर सकता है, अपनी परीक्षाओं में प्रहलाद यही सब देख रहे थे । इससे उनका वैराग्य भाव और दृढ़ होता जा रहा था और अपने पर प्यारे राम की परमकृपा समझते थे । पिता का स्वभाव, माता का स्नेह, सिपाहियों का लोभ, सब प्रहलाद के लिए स्वप्न की सी लीला जान पड़ने लगी सब जगह उन्होंने असारता की छाया देखी – एक न एक नश्वर वस्तु पर ही सबकी लगन देखी । उनका रोम-रोम संसार से उदास हो रहा था ।”²

सिपाहियों के पर्वत शिखर से प्रहलाद को नीचे गिराकर देखा तो वे एक देवी की गोद में बैठकर वार्तालाप कर रहे थे । उन्होंने यही वृत्तान्त हिरण्यकशिपु को सुनाया-हिरण्यकशिपु प्रहलाद के समक्ष स्वयं को परास्त समझने लगा, उसका क्रोध बढ़ता जा रहा था । हिरण्यकशिपु ने एक अन्य उपाय सोचा – प्रहलाद की मौसी होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह आग में न जलेगी । हिरण्यकशिपु ने सोचा होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर बैठेगी-प्रहलाद तो भस्म हो जाएगा होलिका बच जाएगी

1. भक्त प्रहलाद – निराला पृष्ठ-78

2. भक्त प्रहलाद – निराला पृष्ठ-87

किन्तु परिणाम विपरीत हुआ। होलिका भस्म हो गयी प्रहलाद को कुछ न हुआ।

हिरण्यकशिपु बहुत बेचैन हो रहा था उसके एक के बाद एक उपाय विफल हो रहे थे। निराशा ही हाथ लग रही थी। मंत्रियों के परामर्श से प्रहलाद को सागर के गर्भ में समाहित किए जाने की योजना बनी। तदनुसार ऐसा ही वीभत्सकृत्य किया गया किन्तु प्रहलाद को तनिक भी चोट न लगी, उन्हें लगा जैसे रुई के ढेर पर गिरे हों।

हिरण्यकशिपु यह दृश्य देखकर अधीर हो गया। जनता प्रहलाद को अपना आदर्श और आचार्य मानने लगी। हिरण्यकशिपु के इतने अत्याचार, विष्णु और वैष्णव धर्म के विरुद्ध इतने कुप्रचार के पश्चात् भी अन्त में जीत प्रहलाद की ही हुई। वैष्णव धर्म का प्रचार बढ़कर फलने फूलने लगा।

अंतिम और चतुर्दश परिच्छेद में नरसिंह का विवेचन है। प्रजा से भयभीत हिरण्यकशिपु प्रहलाद को महल में ले आते हैं। उन्होंने प्रहलाद को मारने के लिए किसी को भी माध्यम न बनाकर स्वयं ही मारने का निश्चय किया। हिरण्यकशिपु प्रहलाद से बार-बार मृत्यु से बचने का कारण पूछते। प्रहलाद उत्तर देते – “पिता जी, जिसकी कृपा से मेरी सृष्टि हुई, जिसने मुझे पाल-पोसकर इतना बड़ा किया जिसकी इच्छा के बिना किसी में हिलने की भी शक्ति नहीं है, जो सर्वशक्तिमान है, तीनों काल के ज्ञाता, अजर अमर होते हुए भी आकर स्वरूप धारण कर भक्तों की इच्छापूर्ति किया करते हैं, जिनके बिना किसी के अस्तित्व का कोई दूसरा साक्षी है ही नहीं, वही राम अब तक सब जगह मेरी रक्षा करते आए हैं।”¹

प्रहलाद ने कहा राम सर्वविद्यमान हैं। यह सुन हिरण्यकशिपु ने कहा कि वह सामने जो खम्भा है, क्या उसमें है तेरा भगवान? प्रहलाद ने कहा – हाँ, उसमें भीराम हैं। इतना सुनकर हिरण्यकशिपु क्रोध से सिहिर उठा, उसने म्यान से तलवार निकालकर खम्भे को काटने के लिए मारी। इतना विशाल खम्भा टूटकर गिर पड़ा।

जैसे खम्भा टूटा एक विकट गर्जना हुई । वह गर्जना इतनी विकट थी कि दरबार के सभी जन मूर्च्छित हो गए । खम्भे से एक विचित्र प्रकार की मूर्ति प्रकट हुई जिसका पूरा शरीर तो आदमी का था और मुँह शेर का । उस मूर्ति ने हिरण्यकशिपु को पकड़कर अपनी जाँघ पर रखकर नाखूनों से फाड़ डाला और उसकी अंतडियों की माला गले में पहन ली ।

हिरण्यकशिपु मारा गया । यह समाचार सारे लोगों में फैल गया । देवताओं को उस मूर्ति के सम्मुख जाने में भय हो रहा था । ब्रह्मा और महेश ने अन्त में प्रह्लाद को ही उस मूर्ति के सम्मुख जाकर विष्णु के क्रोध के प्रशमन हेतु उपयुक्त समझा । सरल और सहज स्वभाव युक्त प्रह्लाद उस भयानक मूर्ति के सामने खड़े होकर वन्दना करने लगे । भगवान नरसिंह का क्रोध प्रह्लाद की प्रार्थना से शान्त हो गया । देवताओं ने पुष्पवर्षा की ।

भीष्म :-

पौराणिक आख्यानों के माध्यम से 'निराला' जी ने बालकों में सद्गुणों का सन्निवेश की आकांक्षा से अप्रतिम चरित्रों का कथा- उल्लेख किया है । इन आख्यानों से कर्मयोगी होने, सदाचार, दृढ़ निश्चयी, सत्य और प्रतिज्ञा के प्रति कटिबद्ध होने की चर्चा की गई है ।

निवेदन में निराला जी लिखते हैं - "उस तरह का महावीर, उस तरह का सत्यवादी और पूर्णब्रह्मचारी अब तो क्या पहले भारत वर्ष में भी दो एक ही हुए हैं । महावीर भीष्म पितामह के चरण-रज के स्पर्श से भारत भूमि चिरकाल के लिए पवित्र है, हिन्दू जाति अनादिकाल तक के लिए अमर है । इस तरह का चरित्र, इस तरह का त्याग, इस तरह की पितृभक्ति इस तरह का ब्रह्मचर्य, ऐसी सहिष्णुता, इतना प्रबल पराक्रम साथ ही ऐसा गंभीर ज्ञान, आप संसार का इतिहास देख डालिए, कभी नहीं मिलेगा ।"

“जिस महाभारत में हमारे पतन का चित्र खिंचा हुआ है, उसी में हमारे उत्थान का नक्शा भी मौजूद है । उत्थान के आदर्श भीष्म पितामह हैं यदि उसी तरह हम अपने पिता और माता की सेवा करें, यदि उसी आदमी को अपना ध्येय समझकर हम ब्रह्मचर्य की साधना के लिए तत्पर हों, यदि उन्हीं की तरह हम बड़े-बड़े लाभों का त्याग कर सकें, यदि वैसा ही हमारे अन्दर निष्काम कुटुम्ब प्रेम पैदा हो यदि वैसी ही सूर्यता की हम साधना करें यदि शास्त्रों आदि पर हम वैसी ही निष्ठा रखते हुए उसका अध्ययन करें तो इसमें संदेह नहीं कि हमारी रगों से दूषित रक्त का प्रवाह दूर हो जाए , जड़त्व की ओर ले चलने वाली वर्तमान शिक्षा का विकार नष्ट हो जाए ।”¹

कथानक परिच्छेदों में विभक्त हैं :-

1. भीष्म का बाल्यकाल
2. भीष्म की भीष्म प्रतिज्ञा
3. प्रतिज्ञा पालन
4. महाभारत का सूत्रपात
5. कौरवों का षड्यन्त्र
6. दुर्योधन का हठ
7. भीष्म की सत्यनिष्ठा
8. महाभारत के युद्ध में भीष्म का अमित पराक्रम
9. ब्रह्मचर्य का अखण्ड तेज
10. शर-शय्या पर
11. परलोक गमन ।

महाराज महनिष प्रतापी राजा थे । ये इक्ष्वाकुवंशी थे । अनेक यज्ञ किए थे । ब्रह्मा के दरबार में महनिष बैठे थे । मुनिकन्या गंगा आर्यीं - राजा एकटक निहारते

1. निराला रचनावली - निराला पृष्ठ-137

रहे । ब्रह्मा ने पुनः मृत्युलोक जाने का अभिशाप दिया । राजा ने प्रतीप के जहाँ जन्म लिया । राज्य करते हुए तपस्या की इच्छा हुई । तपकाल में गंगा आई , दाँई जाँघ पर बैठ गई । राजा ने कहा कि तुम मेरी पुत्रवधू होओ । राजा प्रतीप के पुत्र हुआ शान्तनु । आखेट के अवसर पर गंगा से मिलन । मुग्ध । विवाह । सात पुत्र जन्मे । एक-एक को गंगा की धारा में प्रवाहित कर दिया । (शान्तनु से इस शर्त पर विवाह किया था कि मैं इच्छानुसार कार्य करूँगी) आठवाँ पुत्र जन्मा । उसे न फेंकने का शान्तनु ने अनुरोध किया । पुत्र सौंपकर गंगा चलीं गयीं । पुत्र का नाम गंगादत्त रखा । पण्डितों ने गंगादत्त का नाम रखा देवव्रत । सब लोग उसकी तेजो गर्व मण्डित प्रसन्न दीप्ति पर मुग्ध थे । शान्तनु तपस्या हेतु प्रस्थान । देवव्रत का वशिष्ठ के आश्रम में विद्याध्ययन के अल्पकाल में शास्त्रों में पारंगत । फिर परशुराम की सेवा में पहुँचकर धनुर्विद्या सीखी । मृगया के दौरान शान्तनु को देवव्रत दिखाई दिए । गंगा के अनुरोध पर शान्तनु देवव्रत के साथ हस्तिनापुर लौट आए ।

“देवव्रत के रूप, अमितविक्रम, असीम साहस, अपारमेधा और दृढ़ चरित्र बल की हर जगह प्रशंसा हुआ करती थी ।दीन और असहाय प्रजा की हर तरह से सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं ।”¹

शान्तनु आखेट को गए । यमुनातट पर धीवर पुत्री सत्यवती पर मुग्ध /विवाह प्रस्ताव । धीवर ने सशर्त स्वीकृत दी कि उसकी पुत्री से जन्मा पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी होगा। शान्तनु उदास, दुखी देवव्रत ने कारण पूछा –सहमति दे दी । स्वयं आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की । इसी से देवता उन्हें भीष्म कहने लगे । शान्तनु ने भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान दिया । भीष्म सत्यवती को हस्तिनापुर ले आए ।

पुरुवंश में उपरिचर राजा हुए । आदिमा नाम की अप्सरा जो अभिशापित

1 . भीष्म – निराला

होकर यमुना में मछली होकर रहती थी । राजा उपरिचर के वीर्य को खाकर वह गर्भवती हो गयी । मछुआरों द्वारा पेट चीरने पर उसमें एक पुत्र और एक पुत्री निकली । राजा उपरिचर को जब ज्ञात हुआ तो वह पुत्र को अपने यहाँ ले आए । जो मत्स्य नाम से प्रसिद्ध हुआ बालिका का नाम मत्स्यगन्धा था, जो सत्यवती कहलायीं । यह धीवर के पास रहीं । यह युवती यात्रियों को नौका से यमुना पार कराती । पाराशर ऋषि यमुना पार होने के लिए आये । पाराशर ऋषि को नौका में ही कामोद्दीपन । उसने ऋषि की इच्छा पूरी की । इसी से व्यासदेव की उत्पत्ति हुई । ऋषि पाराशर के वरदान से ही मत्स्यगन्धा के शरीर से मछली की बू के स्थान पर सुगन्ध आने लगी । सत्यवती के प्रथम पुत्र चित्रांगद दूसरा विचित्र वीर्य । शान्तनु दिवंगत । भीष्म पर गुरुदायित्व । भीष्म ने पिता की इच्छानुसार चित्रांगद की गद्दी दे दी । एक युद्ध में वह मारा गया । विचित्र वीर्य को गद्दी सौंपी गयी । काशी में स्वयंवर । काशी नरेश की तीनों पुत्रियों का अपहरण किया भीष्म ने । बड़ी पुत्री अम्बा ने कहा— “ मैंने मन ही मन शाल्वराज से विवाह का संकल्प लिया है । भीष्म ने उसे मुक्त कर दिया । अम्बा और अम्बालिका का विवाह विचित्र वीर्य से कर लिया । विलासिता से अत्यधिक लीन हो जाने से यक्ष्मा से विचित्र वीर्य मृत । सत्यवती ने अम्बालिका और अम्बिका से पुत्र उत्पन्न करने का भीष्म से आग्रह किया । भीष्म द्वारा अस्वीकार, भीष्म के प्रयास से व्यास तैयार हो गए । संभोग के समय एक ने नेत्र बन्द कर लिए उससे धतराष्ट्र पैदा हुए । एक डर गयी —उससे पाण्डु पैदा हुए । दासी ने व्यास का स्वागत किया विदुर जन्मे । पाण्डु के पाँच पुत्र धृतराष्ट्र के सौ पुत्र । पाण्डु विलासी , मृत । दुर्योधन और कौरवों के उत्पात से क्षुब्ध सत्यवती अपनी दोनों विधवा वधुओं के साथ तपोवन चली गयीं । वहीं दिवंगत । भीष्म के कंधों पर पाण्डु और कौरवों की शिक्षा और संरक्षण का भार । पाण्डु और कौरवों में विवाद । महाभारत न रुक सका । भीष्म ने कहा— युधिष्ठिर, तुम धर्मात्मा पुरुष हो । तुम्हारी विजय होगी मैं कौरवों के अर्थ का ऋणी हूँ इसका परिशोध मुझे करना ही होगा.....तुम निर्भय

रहो। तुम्हारी पराजय कभी नहीं हो सकती।”¹

भीष्म की वीरता की सराहना — “महावीर भीष्म की चोटों से पाण्डव सेना थर्रा उठी।”² दुर्योधन ने भीष्म पर पाण्डवों का पक्ष लेने का आरोप लगाया। क्षुब्ध होने पर भी वे शांत रहे उन्होंने कहा कि पाण्डव वीर हैं, वासुदेव उनके साहयक, अतः उन्हें पराजित करना असंभव। भीष्म ने भयंकर युद्ध किया। पाण्डव और कृष्ण चिन्तित। सेना का संहार देख कृष्ण ने भीष्म वध हेतु रथ का पहिया उठा लिया। भीष्म विचलित न हुए। भीष्म भक्ति से विह्वल हो गए। आँखों से आनन्द की धारा बहने लगी। हाथ जोड़कर कहने लगे — “आओ प्रभु मेरा संहार करो। मुझे आज तुमने प्रभूत सम्मान का अधिकारी कर दिया है। मुझ पर प्रहार करो। मैं तुम्हारा दास प्रस्तुत हूँ।”³

परन्तु भीष्म के प्रहारों से पाण्डव दल विचलित और निराश। श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर ने कहा कि भीष्म से ही विजय का उपाय पूछा जाए। उनके वध की तरकीब पूँछी।

भीष्म ने अपनी मृत्यु का उपाय बताया कि — “तुम्हारी सेना में शिखण्डी पूर्व जन्म का स्त्री है। वह अम्बा का अवतार है। उस पर मैं वार न करूँगा। उसे अपने सामने बैठाकर दृढ़ वर्ग से अपनी रक्षा करके धनंजय मुझ पर बार करें। इस तरह तुम्हारी विजय अवश्य होगी।”⁴

अर्जुन ने इस प्रकार शरसंधान से मना किया। कृष्ण ने अपने तर्कों से सहमत कर लिया। युद्ध भूमि में भीष्म के कौशल का वर्णन — उनकी स्फूर्ति, उनकी लघु हस्तता, उनके वाणों की तीव्रगति, अनेक प्रकार से तीर छोड़ने की विद्या देखकर लोगों के होश उड़ गए। उनके धैर्य की आकाश मार्ग में विचरण करने वाले ऋषि मुनियों ने

1. भीष्म — निराला पृष्ठ-174
2. भीष्म — निराला पृष्ठ-178
3. भीष्म — निराला पृष्ठ-181
4. भीष्म — निराला पृष्ठ-184

सराहना की — “भीष्म ! तुम्हें सहस्रों धन्यवाद हैं । तुम्हें प्राप्त करके भारत की रज-रज पवित्र हो गयी ।”

“तुम्हारा धर्म साक्षात् धर्म का भी धर्म है । तुम वीरता को पराकाष्ठा तक पहुँचा चुके हो, अब धैर्य की चरम-सीमा भी मनुष्यों को दिखला रहे हो । अपने अमरलोक की याद करो । मनुष्यों को अपनी अंतिम शिक्षा देकर चले जाओ । ऋषियों की आज्ञा समाप्त होने पर देवताओं ने दुन्दुभि बजायी ।”¹ अर्जुन के वाणों से बिद्ध हो गए । शरशय्या पर लेटे रह गए । हंसरूप धारी ऋषि भीष्म को संदेश दे गए कि दक्षिणायन सूर्य में शरीर का त्याग करें । भीष्म ने अर्जुन से कहा सिर लटक रहा है अर्जुन ने तीन बाण छोड़े, मस्तक भेद गए वह उपधाम बन गए ।

कौरवों और पाण्डवों का बैरभाव भूलकर मैत्री भाव से रहने की शिक्षा दी । भीष्म के दर्शनार्थ असंख्य नर-नारी आते रहे । अपने पौत्र की वीरता देख भीष्म की आँखों से आनन्दाश्रु बह चले । कर्ण को समझाया कि तुम राधा नहीं कुन्ती के पुत्र हो । पाण्डवों की विजय हुई । असंख्य वीर मारे गए । विधवाओं के हाहाकार से भारत का आकाश विदीर्ण होने लगा । अंतिम समय से भावी अंधकार पर, भारत के गौरव सूर्य, चिरकुमार देवव्रत, महावीर भीष्म अस्त हो रहे थे । साथ ही मानों कह गए कि प्रभात के लिए भी एक ऐसे ही सूर्य की आवश्यकता होगी ।² भारत के चिरकालिक पतन का पट, भारत वसुन्धरा पर भीष्म के रहते-रहते ही लहराने लगा । युधिष्ठिर को उन्होंने धर्म और राजनीति की शिक्षा दी । उत्तरायण सूर्य होने पर उन्होंने शरीर त्यागा । भीष्म की मृत्यु का लेखक ने मार्मिक और भव्य चित्रण किया है — “ भीष्म ने आँखें बन्द कर लीं । कुछ मील तक मौन रहकर मूलाधार में चित्त को स्थिर करके योग मार्ग द्वारा नश्वर कलेवर का त्याग कर दिया । भारत के हृदय से उसका अनमोल लाल सदा के लिए उठ

1. भीष्म — निराला पृष्ठ-181

2. भीष्म — निराला पृष्ठ-184

गया हैं ।¹ 'भीष्म' कथा प्रसंग की भूमिकान्तर्गत अपनी बात कहते हुए निराला जी ने लिखा है — भगवान वसुदेव ने भीष्म की विनय पर प्रसन्न होकर कहा — “हे भारत के कौरव पुरुष । मैं आशा करता हूँ, आप नश्वर शरीर को छोड़कर अपने वसुलोक में विराजमान हों । आप में पाप लेश मात्र भी नहीं है । आप मार्कण्डेय के जैसे पिता के भक्त थे । मृत्यु आपकी दासी है ।²

भीष्म का शौर्य, पराक्रम, वीरता अप्रतिम कहा जाएगा ।

महाभारत:—

महाभारत की पौराणिक कथा प्रसंगों में समाज मनोवैज्ञानिक रूप धार्मिक आधार पर स्थापित किया गया है । इस धर्म से तात्पर्य कोई पूजा पद्धति, विशिष्ट देवता, कर्मकाण्ड स्थान अथवा धर्म ग्रन्थ या मत सम्प्रदाय नहीं है, इस समाज धर्म से तात्पर्य मनुष्य के ईश्वर संबंध से है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज एक धार्मिक धारणा है जिसका अर्थ एक ओर यह है कि मनुष्य पशु या जीव मात्र न होकर अपने अन्दर दैवी अंश रखता है और दूसरे यह कि इस दैवी प्रकृति के कारण मनुष्य का लक्ष्य इस संसार में स्वयं अपने जीवन में और समाज में दैवी मूल्यों को प्राप्त करना है । इन्हीं दैवी मूल्यों को सत्य, शिव और सुन्दर के नाम से अभिव्यक्त किया गया है । मानव जीवन में इन मूल्यों को उतार देने के लिए प्रयास करने वाला प्रत्येक दार्शनिक, वैज्ञानिक और साहित्यकार मूल रूप से धार्मिक है । चाहे वह किसी ईश्वर को, परलोक को या पुनर्जन्म को मानता है । भारतीय जीवन दर्शन में धर्म को इसी व्यापक अर्थों में लिया गया है । वह व्यक्तिगत और समाजगत व्यवस्था का आधार है । इस व्यवस्था को बनाए रखना ही धर्म है । वह श्रेष्ठ मूल्यों के विकास की ओर प्रेरणा है । वही विकास का लक्ष्य भी है ।

1:- भीष्म — निराला पृष्ठ-174

2. भीष्म — निराला पृष्ठ-191

इस प्रकार मानव जीवन समस्त समाज और सृष्टि से अलग न होकर इनसे संबंधित है । उसका उद्देश्य सृष्टि और समाज से अलग कोई सीमित या निम्न लक्ष्य प्राप्त करना नहीं है । भारत में धर्म की व्याख्या और महाभारत की पौराणिक कथा वस्तु का सृजन केवल मानवतावादी दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि विश्वगत परिप्रेक्ष्य में की गई है । आदि कवि बाल्मीकि और महर्षि वेद व्यास द्वारा प्रणीत 'रामायण' और 'महाभारत' के ही नहीं विश्व के प्राचीनतम पौराणिक महाकाव्य हैं । यह कालजयी कृतियाँ भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं । महाभारत उच्चकोटि का नीतिपरक पुरुषार्थ-प्रेरक और शिक्षाप्रद ग्रन्थ है । महाभारत के लिए कहा जाता है कि इस ग्रन्थ में राजनीति, धर्म, लोकाचार, अध्यात्म सब कुछ है । यह उक्ति प्रचालित है- 'यन्न भारते तन्न भारते ।' सर्वसामान्य भारतीय विशाल महाकाव्य का अध्ययन नहीं कर पाता है अतः 'निराला' जी ने सुबोध, सरल और सरस भाषा में महाभारत का संक्षिप्त रूपान्तर किया है । "यह संक्षिप्त महाभारत साधारणजनों, गृह देवियों और बालकों के लिए लिखी गई है । इससे उन्हें महाभारत की कथाओं का सारांश मालूम हो जाएगा । भाषा सरल है । भाव के ग्रहण में अड़चन न होगी ।"¹

निराला जी चाहते थे कि भारतीय वाङ्मय से यत्किंचित अधिकाधिक लोग परिचित हों, जन साधारण का ज्ञानवर्धन हो । निराला जी की मौलिकता इस बात में है कि उन्होंने अनावश्यक घटनाओं का वर्णन न कर मार्मिक प्रसंगों को विस्तार दिया है । डॉ. राम विलास शर्मा के अनुसार - "मार्मिक प्रसंगों को अधिक महत्व देने के कारण यह रचना ज्ञानवर्धक साहित्य की दृष्टि से प्रचार योग्य है । निराला जी ने इसमें घटनाओं को यथावत रूप में ही रखा है, उनकी बुद्धिसंगत व्याख्या नहीं की, इससे महाभारत के वास्तविक रूप से परिचय प्राप्त करने में सुविधा रहती है । बिना भावुकता में प्रवाहित हुए उन्होंने कहानी कही है । वस्तुतः यह आनन्द और आश्चर्य का विषय है कि निराला

1. महाभारत - सूर्यकान्त त्रिपाठी - निराला भूमिका पृष्ठ-7

जैसा कवि भावुक प्रसंगों के समय की इतनी तटस्थता दिखा सका है । कहीं कहीं एक दो वाक्यों से ही भाव को ध्वनित कर दिया है।¹

महर्षि व्यास जी ने महाभारत की कथाओं को पर्वों में विभाजित किया है। महाभारत में अठारह पर्व हैं । निराला ने इन सभी पर्वों की कथा को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया है । ये पर्व हैं आदि पर्व, सभा पर्व, वन पर्व, सौप्तिक पर्व, स्त्री पर्व, शान्ति पर्व, अनुशासन पर्व, अश्वमेध पर्व, आश्रम वासिक पर्व, मौषल पर्व, महाप्रस्थानिक पर्व और स्वर्गारोहण पर्व ।

आदि पर्व:—

"आदिपर्व में कौरव पाण्डव और यदुवंश के परिचय से लेकर खाण्डव वन दाह की कथा है । प्रारम्भ में देव और दानव युद्ध का वर्णन किया गया है । देवों के गुरु वृहस्पति, दानवों के गुरु शुक्राचार्य और उनके शिष्यों तथा समर्थकों के संघर्ष से लेकर ययाति पुत्र पुरु के सिंहासनारूढ़ होने का वर्णन हुआ है । पुरु के वंश में महाराज दुष्यंत, भारत और कुरु आदि तेजस्वी राजा हुए । कुरु के वंशज कौरव कहलाए । ययाति के पुत्र यदु से यदुवंशियों की शाला चली।"²

कुरुवंश में महाराज शान्तनु पराक्रमी राजा हुए । इनकी राजधानी हस्तिनापुर थी । अभिशापित वसुओं की जननी बनने की प्रार्थना स्वीकार कर गंगा ने मानवी रूप धारण किया । यही देवव्रत और भीष्म कहलाए । आखेट के अवसर पर शान्तनु मत्स्यगन्धा पर मोहित हो गए । कौमार्यावस्था में मत्स्यगन्धा और पारशर ऋषि के संसर्ग में व्यासवेद की उत्पत्ति हो चुकी थी । शान्तनु के विवाह प्रस्ताव को धीवरपुत्र ने सशर्त स्वीकार किया कि राज्य का उत्तराधिकारी उसी का पुत्र होगा । देवव्रत ने पिता के लिए

1. निराला का साहित्य और साधना — डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय पृष्ठ-255 विनोद पुस्तक भण्डार द्वितीय संस्करण 1965

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-13

यह शर्त स्वीकार कर ली और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालन की प्रतिज्ञा की। इस भीषण प्रतिज्ञा के कारण ही देवव्रत भीष्म कहलाए।

सत्यवती के पुत्र हुए चित्ररथ और विचित्रवीर्य। गन्धर्वराज से युद्ध में चित्ररथ मारे गए। भीष्म ने काशीराज के स्वयंवर से हरण कर लायीं तीन कन्याओं— अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका में से अंतिम दो से विचित्रवीर्य का विवाह करा दिया। अम्बा शल्व से वाग्दत्ता थी और भीष्म द्वारा ठुकराए जाने से उसने आत्मदाह कर लिया, वही द्रुपद के यहाँ शिखण्डिनी रूप में जन्मी। विलासी विचित्रवीर्य का कुछ ही समय बाद निधन हो गया।

वंश-रक्षा के लिए सत्यवती ने नियोग की इच्छा से अपने पहले पुत्र वेदव्यास को बुलाया। जटाधर व्यास को देख अम्बिका ने नेत्र बन्द कर लिए फलतः उससे अन्धे धृतराष्ट्र का, भयभीत हो जाने से अम्बालिका से पाण्डु का और दासी से विदुर का जन्म हुआ। भीष्म के प्रयास से धृतराष्ट्र का विवाह गांधारी से और पाण्डु का कुन्ती से हुआ। कुन्ती को दुर्वासा ऋषि से देवआवानन्दन का वरदान प्राप्त था। इन्द्र के आवानन्दन से कुन्ती से कर्ण का जन्म हुआ। लोकलाज से उसे कुन्ती ने नदी में प्रवाहित कर दिया जो कर्ण कहलाया। कुन्ती से युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम और माद्री से नकुल सहदेव की उत्पत्ति हुई।

व्यासदेव के वर से गांधारी के सौ पुत्र, एक कन्या का जन्म हुआ। पाण्डु के निधन से धृतराष्ट्र को राजपद मिला। बाल्यावस्था से ही कौरवों और पाण्डवों की परस्पर बनती न थी। कौरव उदण्ड थे, पाण्डव शांत।¹ बलवान भीम से कौरव डरते थे। एक दिन कौरवों ने भीम को विष मिले मोदक खिला दिए, किन्तु भीम बच गए। गुरुद्रोण कौरवों और पाण्डवों को शिक्षा देने लगे।

एकलव्य को सभी शिष्यों से कुशाग्र देखकर गुरुदक्षिणा में गुरु द्रोण ने उससे

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-31

दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लिया। दुर्योधन आदि ने षड्यन्त्र करके पिता से कहकर पाण्डवों को वारणावत भिजवा दिया। वहाँ लाक्षागृह बनावाया गया था ताकि पाण्डव भस्म हो जाए। विदुर के संदेश से पाण्डवों की प्रतिरक्षा हुई। इधर पाण्डवों को राजा द्रुपद के यहाँ स्वयंवर आयोजित होने का समाचार मिलने पर वे ब्राह्मण वेश धारणकर सम्मिलित हुए। अर्जुन ने विलक्षण, धनुर्विद्या का प्रदर्शन करते हुए द्रौपदी का वरण किया। यहीं पाण्डवों की भेंट और मैत्री श्री कृष्ण से हुई।

भीष्म के परामर्श से पाण्डव खाण्डव प्रस्थ को अपनी राजधानी बनाकर रहने लगे। अर्जुन स्वेच्छा से वनवास को निकल पड़े। प्रभास पहुँचकर कृष्ण से भेंट की। कृष्ण की सहमति से सुभद्रा का हरण किया। तदुपरान्त सुखद वातावरण में विवाह सम्पन्न हुआ। सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ। अग्निदेव के अनुरोध पर पाण्डव ने खाण्डवदाह की स्वीकृति दे दी। प्रसन्न होकर अग्निदेव ने अर्जुन को गाण्डीव धनुष और बाणों से भरा अक्षयनाम का तूणीर अर्जुन को प्रदान किया।

सभापर्व :-

सभापर्व में खाण्डवप्रस्थ में सभाभवन निर्माण, राजसूय यज्ञ की तैयारी, जरासन्ध और शिशुपाल का वध, दिग्विजय, द्यूतक्रीड़ा, द्रौपदी चीरहरण का वर्णन है।

खाण्डवदाह के उपरान्त कृष्ण अर्जुन के साथ पाण्डवों के पास चले आए। उन्होंने मय को सभाभवन के निर्माण की आज्ञा दी। मय ने अल्पकाल में ही भव्य सभा भवन का निर्माण कर दिया। उसकी भव्यता दर्शनीय थी। उसमें असंख्य भूल्यवान रत्न जड़े हुए थे। “कहीं-कहीं ऐसी स्वच्छता थी कि फर्स जल भरा सरोवर ज्ञात होता था। मणि के सोपान, कमल और हंसस आदि देखकर लोग मुग्ध हो जाते थे। वाटिका में सब रत्नों की कारीगरी थी, पर देखकर लोग समझते थे कि असमय में गन्धराज, बेला, चमेली, यूथिका आदि पुष्प खिले हुए हैं। उनमें फूलों की रूह इस



तरह भर दी गई थी कि ये सुगन्ध भी देते थे । ”¹

इसी समय नारद ने आकर युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने को कहा । इस हेतु दिग्विजय की आवश्यकता थी । वह अभियान भी प्रारंभ हो गया । श्रीकृष्ण की भी यही इच्छा थी - “श्रीकृष्ण भारत में धर्मराज्य की स्थापना चाहते थे । उसका बीज अंकुरित हो रहा है । देखकर, उन्होंने युधिष्ठिर को इस कार्य के लिए प्रोत्साहन दिया । ”²

दिग्विजय में बाधक प्रतीत हो रहे जरासन्ध का भीम ने वध कर दिया । चारों दिशाओं के राजाओं ने पाण्डवों के वर्चस्व को स्वीकारते हुए स्वर्ण, मणिमाणिक्य आदि धन अर्पित किया । यज्ञ में श्रीकृष्ण ने स्वयं ब्राह्मणों के चरण धोने का कार्य किया । राजसूय में कौरव, महात्मा विदुर आदि अनेक राजागण सम्मिलित हुए । सभा-भवन में जाते हुए दुर्योधन को फर्स की चमक से जल का भ्रम हुआ । द्रौपदी ने हँसकर कह दिया कि ‘अंधे के अंधा ही पैदा होता है । दुर्योधन अपनी आत्मा में उस आग को दबाकर रह गया, बदले के लिए समय की प्रतीक्षा करने लगा । पाण्डवों के समूल विनाश के उद्देश्य से दुर्योधन ने अपने मामा शकुनि से मिलकर द्यूत-क्रीड़ा का आयोजन किया । कौरवों की ओर से शकुनि खेला और पाण्डवों के पक्ष से युधिष्ठिर । कपटपूर्ण पासों से शकुनि से युधिष्ठिर हार गए । उन्होंने द्रौपदी को दाँव पर लगा दिया । पाण्डवों को अपमानित करने और द्रौपदी से व्यंग्य का प्रतिशोध लेने दुर्योधन ने द्रौपदी का चीरहरण कराने की दुःशासन को आज्ञा दे दी । भरी सभा में भीष्म और विदुर ने कुत्सित कार्य का विरोध किया किन्तु मदान्ध दुर्योधन नहीं माना । भीम क्रोध में उत्तेजित हुए किन्तु उन्हें अर्जुन ने बिठा दिया । वह कसमसाकर रह गए । कृष्ण की कृपा से चीर बढ़ता गया और द्रौपदी की लज्जा की रक्षा हो गई । पाण्डव राज्य, धन सम्पत्ति, द्रौपदी और सभी को द्यूत-क्रीड़ा

1. महाभारत - निराला पृष्ठ-55

2. महाभारत - निराला पृष्ठ-13

में गँवा बैठे । पराजित पाण्डवों को बारह वर्ष के वनवास और एक साल के अज्ञातवास की शर्त भी स्वीकार करनी पड़ी ।

वन पर्व :-

धूत-क्रीड़ा में पराजित पाण्डवों का काम्यक वन के लिए प्रस्थान, अर्जुन की तपस्या, पाशुपत अस्त्र प्राप्ति, स्वर्ग-गमन, इन्द्र की अनुकम्पा, भीम से हनुमान की भेंट, दुर्योधन को चित्ररथ से मुक्त कराना, जयद्रथ द्वारा द्रौपदी हरण, फिर मुक्ति, कर्ण को शक्ति प्राप्ति, दक्ष से भेंट आदि कथाएँ वन पर्व के अंतर्गत हैं ।

जुएँ में सर्वस्व हारकर पाण्डव द्वादश वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास स्वीकार कर वन को चल पड़े । प्रजा ने कौरवों की कुटिलता की बहुत निन्दा की । पाण्डव काम्यक वन में निवास करने लगे । पाण्डवों के प्रशंसक होने के कारण धृतराष्ट्र ने विदुर को अपशब्द कहे, वह भी पाण्डवों के पास आ गये श्रीकृष्ण भी दुखी होकर पाण्डवों से मिलने को आये प्राण तुल्य पाण्डवों तथा आत्मा के समान प्यारी कृष्णा को देखकर कृष्ण करुणा से विचलित हो गए, आँखों से अनर्गल अश्रुधारा बहने लगी ।¹

वेदव्यास भी पाण्डवों से आकर मिले । उन्होंने पाण्डवों को सचेत करते हुए कहा कि स्वभाव के अनुसार दुर्योधन दुष्टता देता रहेगा । अतः तुम भी शक्ति संचय करो और शिव की तपस्या करके पाशुपत अस्त्र प्राप्त करो । व्यासजी की आज्ञा को शिरोधार्य कर अर्जुन तपस्या करने लगे । अर्जुन की कठिन तपस्या और समर्पण देखकर शिवजी प्रसन्न हुए और उन्होंने अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्रदान किया ।

अर्जुन की तपस्या से प्रसन्न होकर देवराज इन्द्र ने अपने सारथि मातील को भेजकर स्वर्ग में आमंत्रित किया । अर्जुन ने सभी देवों को सादर प्रणाम किया । देवताओं ने उन्हें अपने दिव्य अस्त्रों की शिक्षा दी । एक दिन अर्जुन को एकान्त में पाकर उर्वशी अप्सरा ने प्रणय निवेदन किया । अर्जुन ने माँ कहते हुए उसके प्रति आदर भाव

संस्कृत के लिये यह एक नया प्रयोग है। संस्कृत के अन्तर्गत यह विषय आती है। उसे जो

है वह विषय अन्तर्गत है जो

— १२१ —

के लिये संस्कृत अन्तर्गत है जो संस्कृत के अन्तर्गत है जो

जो कि संस्कृत है जो संस्कृत के लिये संस्कृत—संस्कृत संस्कृत संस्कृत

के लिये संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

१. संस्कृत के लिये संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

१. संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

जो संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत संस्कृत

प्रदर्शित कर अपने चरित्र बल का परिचय दिया ।

लोमश ऋषि ने देवलोक से आकर पाण्डवों को अर्जुन के सकुशल होने का समाचार दिया । लोमश ऋषि ने पाण्डवों को अनेक तीर्थों के दर्शन कराए । प्रभाष पहुँचने पर यादवों ने कौरवों के विरुद्ध रोष प्रकट किया, समय पर प्रतिकार किया जाएगा । ऐसा कहकर युधिष्ठिर ने उन्हें शान्त किया ।

सहसा उड़कर आए मोहक कमल पुष्प को देख, द्रौपदी के मन में और पुष्प लेने की इच्छा उत्पन्न हुई । भीम के इस सरोवर की ओर जाने पर एक बानर से भेंट हुई । उसकी पूँछ से मार्ग रुका था । बन्दर ने पूँछ हटाने को कहा । भीम हटा न सके । परिचय देने पर भीम हनुमान के चरणों में प्रणत हुए । भीम ने युद्ध में अर्जुन के रथ की ध्वजा पर बैठकर युद्ध देखने को आमंत्रित किया । पाँच वर्ष स्वर्ग में विद्याएँ सीख अर्जुन बान्धवों से मिले । सभी हर्षित हुए । दुर्योधन ने पाण्डवों को अपना बल वैभव दिखाने के उद्देश्य से कर्ण-शकुनि और ससैन्य वन को प्रस्थान किया । मार्ग में सरोवर में स्नान करने की बात को लेकर गन्धर्व चित्ररथ से विवाद हो गया । युद्ध में कर्ण भाग गया । दुर्योधन व उसके सैनिकों और स्त्रियों को चित्ररथ ने बन्दी बना लिया । चीत्कार, सुनकर पाण्डवों ने मुक्त कराया । दुर्योधन अत्यन्त लज्जित हुआ ।

एक दिवस पाण्डव शिकार के लिए गए हुए थे । द्रौपदी को आश्रम में अकेला पाकर जयद्रथ ने अपहरण कर लिया । यकायक पाण्डव आ गए । जयद्रथ को बन्दी बनाकर दण्डित किया । सिर का मुण्डन कराकर मुक्त कर दिया ।

कर्ण के मन में भी पाण्डवों के प्रति द्वेष भाव पनप रहा था । कर्ण तप करके सूर्यदेव से शक्ति प्राप्त करने में लग गया । उधर इन्द्र को अपने पुत्र की चिन्ता हुई । उन्होंने ब्राह्मण वेश धारण करके कर्ण से कुण्डल और कवच प्राप्त कर लिए । इन्द्र के प्रकट होने पर कर्ण ने उनसे अमोघ शक्ति वरदान में प्राप्त कर ली ।

वन में विचरण करते हुए पाण्डवों को एक दिन तीव्र प्यास लगी । जल लाने के लिए सरोवर तट पर नकुल, सहदेव, भीम, अर्जुन एक-एक कर गए किन्तु यक्ष के प्रश्नों का उत्तर न दे पाने के कारण वहीं मूर्च्छित हो गए । अन्त में युधिष्ठिर गए । आकाशवाणी को सुनकर युधिष्ठिर ने प्रकट होने का आग्रह किया । हँस के रूप में प्रकट होकर यक्ष ने प्रश्न किए । युधिष्ठिर ने उत्तरों से प्रसन्न हो यक्ष से वरदान माँगने को कहा । यक्ष के वरदान से सभी भाई जीवित हो गए । यक्ष ने कहा कि मैं धर्म हूँ । तुम मेरे पुत्र हो । अब तुम एक वर्ष का अज्ञातवास विराट नगर में जाकर करो । यह कर धर्म अन्तर्धान हो गए । पाण्डव प्रसन्नता से आश्रम को लौटे ।

विराट पर्व:-

धीरे-धीरे वनवास का समय पूरा होने को हुआ । अब एक वर्ष अज्ञातवास का शेष रह गया था यक्ष के परामर्श के अनुसार यह समय पाण्डवों ने विराट नगर में व्यतीत करने का निश्चय किया । इस पर्व में नाम और वेश बदलकर राजा विराट के यहाँ रहने, कीचक वध, सुशर्मा से युद्ध, कौरवों द्वारा विराट पर आक्रमण, पराजय और पाण्डवों का स्वरूप धारणा करने की घटनाओं का वर्णन है ।

सभी भाइयों ने अपने को बहुत सतर्कता पूर्वक समय व्यतीत करने की परस्पर मन्त्रणा की । वे दुर्योधन की धूर्तता से आशंकित थे । किसी भी प्रकार अज्ञातवास का भेद खुलने का अर्थ था फिर से द्वादस वर्ष का वनवास । पाण्डव बहुत चिन्तित सावधान और सतर्क थे । अन्ततः विराटनगर को प्रस्थान किया । सभी स्त्री वेश में थे । मार्ग में एक शमी वृक्ष पर अपने आयुध छिपा दिए । अलग-अलग नाम धारण किए और भिन्न-भिन्न कर्तव्य । युधिष्ठिर ने कार्य विभाजन किया । युधिष्ठिर ने कंक नाम से ब्राह्मणवेश में रहने का निश्चय किया । भीम से कहा गया कि वल्लभ नाम से विराट राजा के यहाँ रसोइया का काम माँगना, तुम्हें भरपेट भोजन मिल जाया करेगा । अर्जुन को वृहन्नला का नाम धारण कर नृत्यगीत की शिक्षा देने का प्रस्ताव लेकर जाने

को कहा गया। नकुल से ग्रन्थिक का कार्य और सहदेव से तन्त्रिपाल के अस्तबल और गोशाला की देखरेख के काम को कहा गया। द्रौपदी 'सैरन्धी' नाम से रानियों के केश प्रसाधन आदि का कार्य करें। सभी ने धर्मराज की इस मंत्रणा को स्वीकार किया।

एक-एक कर सभी राज दरबार में गए। और सभी को कार्य मिल गया। सैरन्धी वेशधारिणी द्रौपदी ने कहा कि वह केश प्रसाधन के सिवा बर्तन माँजने या महल का कार्य न करेगी इससे उसके गन्धर्व पति रुष्ट हो जाएंगे। रानी ने इस शर्त को स्वीकार किया।

महाराज विराट का साला कीचक 'सैरन्धी' के रूप को देखकर मुग्ध हो गया। उसने 'सैरन्धी' से एकांत में दुराचार का प्रयास किया। उसका बहुत आतंक था। राजा और रानी भी उससे भयतीत थे। द्रौपदी ने भीम को अपना संकट बताया। भीम ने नाट्यशाला में उसका वध कर दिया। कीचक के भाइयों ने सैरन्धी को कीचक के शव के साथ भस्मकर देना चाहा। भीम ने गन्धर्ववेश धारण कर सबको मौत के घाट उतार दिया। त्रिगर्त देश का राजा सुशर्मा जो कीचक से कई बार हार चुका था, को कीचक के वध की बात ज्ञात होने पर बदला लेने की तैयारी करने लगा। उसने विराट राज की गायों के हरण की तैयारी की। सुशर्मा ने कौरवों की सहायता माँगी। कौरव भी ससैन्य युद्ध क्षेत्र में आ डटे। वेश बदल-बदलकर युधिष्ठिर को छोड़कर सभी पाण्डवों ने विराट राज के पुत्र उत्तरकुमार के साथ कौरवों से युद्ध किया। युद्ध में उत्तरकुमार की विजय हुई। त्रिगर्त और कौरवों की पराजय हुई। पांसों के खेल में विराट के बार-बार अपने पुत्र की वीरता की प्रशंसा करने पर कंक वृहन्नला के सारथीत्व की प्रशंसा करने लगते। क्रोधित होकर विराट ने कंक को पासा मार दिया। कंक के मस्तक से रक्त प्रवाहित होने लगा। उत्तरकुमार ने कंक का ही समर्थन किया और पिता से ब्राह्मणों से क्षमा माँगने को कहा।

अज्ञातवास की अवधि समाप्त होने पर शुभ मुहूर्त देखकर पाण्डवों ने विराट की ही राजसभा में सिंहासनारूढ़ होकर संसार को अपना परिचय देने का निश्चय किया।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

प्रातः सभी ने यज्ञ किया और सिंहासन पर विराजे । विराट को आश्चर्य हुआ । यह अनट्टाकार चेष्टा कैसी । उत्तरकुमार ने स्थिति स्पष्ट की । इन महारथियों के कारण ही भीष्म सहित कौरव पराजित हो सके थे । इन्होंने हमारी सेवा वर्ष भर की अब हमें आजीवन इनकी सेवा करनी चाहिए ।

विराट गद्गद् हो गए । हाथ जोड़कर धर्मराज से क्षमा माँगी । विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा का अर्जुन से विवाह का प्रस्ताव किया । अर्जुन से विवाह का प्रस्ताव किया । अर्जुन यह कहकर कि— “मैंने अपनी पुत्री के रूप में उसे शिक्षा दी है यह उचित नहीं ।”¹ उन्होंने अभिमन्यु के साथ विवाह का सुझाव दिया जिसे विराट ने स्वीकार कर लिया । उत्तरा और अभिमन्यु का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

उद्योग पर्व:—

इस पर्व के अन्तर्गत अपमानित पाण्डवों में प्रतिशोध की भावना जागने, शुभचिन्तकों से मंत्रणा, युद्ध की तैयारी, कृष्ण का कौरवों को न्याय करने का परामर्श, कुन्ती का कर्ण से युद्ध विरत रहने का आग्रह और उभय पक्षीय सेनाओं के युद्ध क्षेत्र में उपस्थित होने का वर्णन है ।

कौरवों के अत्याचारों से मर्माहत पाण्डवों में प्रतिक्रिया हुई । उन्होंने अन्याय का प्रतिकार करने का संकल्प लिया— “एक अपूर्व शक्ति का प्रवाह झरने की तरह उनके हृदय से फूट निकला और नवीन जीवन की स्निग्धता उनकी नस-नस में प्रवाहित हो चली । उन पर छल और प्रपंच के जो सांघातिक अत्याचार हुए थे, जिन्हें धर्म के विचार से उन्होंने सहन किया था, वे सब उन्हें एक-एक करके याद आने लगे और उनकी बदले की प्रवृत्ति रह-रहकर नागिन की तरह फन काढ़ने लगी ।”² श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को समझाया कि कौरव दुष्ट स्वभाव के हैं, वे पुनः अनिष्ट करेंगे युद्ध होना अनिवार्य है । अतः

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-108

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-109

युद्ध की तैयारी होनी चाहिए कृष्ण ने इष्ट मित्रों से मंत्रणा करने को कहा। अभिमन्यु के विवाह के अवसर पर आए आमंत्रित राजाओं को विराट के राजभवन में एकत्रित कर विचार-विमर्श हुआ। कृष्ण ने सभा को संबोधित करते हुए कौरवों के अत्याचारों, उनके छल प्रपंच और धूर्तता का उल्लेख किया। द्रुपद, विराट आदि राजाओं ने राज्य प्राप्ति हेतु पाण्डवों का समर्थन करने का वचन दिया। कौरव-सभा में दूत भेजने के साथ-साथ राजाओं के पास रण निमंत्रण भेजने को भी कहा गया। सत्य और न्याय के पक्षधर पाण्डवों की ओर हो गए। अनीति, अधर्म, सैन्य और दलबल के समर्थक कौरव दल में जा मिले। कृष्ण ने सारथि के रूप में अर्जुन का साथ देने का वचन दिया और नारायणी सेना दुर्योधन को सौंप दी। इसके बाद भी कृष्ण बराबर युद्ध न होने देने का प्रयास करते रहे। कृष्ण पाण्डवों के दूत बनकर कौरवों से कहने गए कि पाण्डवों को उनका राज्य लौटा दें। कृष्ण ने कहा कि युद्ध विनाशकारी होगा, इससे दोनों पक्षों की हानि होगी। देश की संस्कृति की क्षति होगी। उन्होंने कहा—“हमारी सनातन संस्कृति विलुप्त हो जाएगी। यह युद्ध किसी भी प्रकार समीचीन नहीं।”¹

कौरवों की सभा में श्रीकृष्ण ने कहा कि पाण्डव पूर्णरूप से निर्दोष हैं। उनके साथ छल किया गया। छल से जुए में हराया गया। यह दुर्योधन और शकुनि की कुटिलता थी द्रौपदी को निर्वस्त्र करने का प्रयत्न कितना बड़ा अन्याय था। बारह वर्ष का वनवास पाण्डवों ने सहा। अपार कष्ट भोगे। राज्य न सही उन्हें पाँच गाँव ही दे दें तो भी युद्ध से विरत रहेंगे। दुर्योधन ने कृष्ण की एक न सुनी। अनेक योद्धा कृष्ण के पक्ष में सामने आ गए। भीष्म ने भी दुर्योधन को डाँटा। कृष्ण चलते-चलते कहते गए—“तेरा नाश समुपस्थित है। तू नहीं समझ सकता, तपस्या और शिक्षा की शक्ति से पाण्डव क्या है तू पराजित होकर पश्चाताप करता हुआ प्राण देगा।”²

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-119

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-122

इधर युद्ध को अपरिहार्य देख कुन्ती को चिन्ता हुई। वह चाहती थी कि उनका प्रथम पुत्र कर्ण युद्ध में कौरवों का साथ न दे। कुन्ती ने कर्ण से मिलकर पुत्रों की प्राण भिक्षा माँगी। चाहा कि भाई से युद्ध न करे, किन्तु कर्ण ने स्वीकार न किया। इतना वचन अवश्य दिया कि अर्जुन के सिवा किसी पाण्डव से युद्ध न करूँगा।

कृष्ण संधि न होने से निराश हो पाण्डवों के शिविर में लौट आए। दोनों ओर से सेना एकत्र होने लगी। पाण्डवों की सात अक्षौहिणी और कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना थी। व्यास जी ने युद्ध न होने देने का अंतिम प्रयास किया, पर विफल रहे। उन्होंने युद्ध का वृत्तान्त धृतराष्ट्र को बताने की दिव्यदृष्टि संजय को प्रदान की।

प्रातः काल ही कौरवों की सेना भीष्म के और पाण्डवों की सेना पराक्रमी अर्जुन के सेनापतित्व में कुरुक्षेत्र में खड़ी हो गई। भगवान कृष्ण चपल अश्वों की रश्मि पकड़े अर्जुन के रथ पर शोभायमान थे।

भीष्म पर्व:—

कथा ही नहीं, कई दृष्टियों से यह पर्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है। युद्ध के पूर्व अर्जुन को मोह उत्पन्न हो गया, कृष्ण द्वारा गीता का उपदेश, अर्जुन का युद्ध करने का निश्चय, भीष्म का पराक्रम, शिखण्डी की ओट में अर्जुन के प्रहार और भीष्म पितामह का शरबिद्ध हो शरीर त्याग आदि घटनाएँ इस सर्ग के अन्तर्गत हैं। पाण्डव सेना के अग्रभाग में अपने रथ पर बैठे अर्जुन कौरव वाहिनी को देखकर रहे थे। अग्रभाग में स्थित भीष्म पितामह पर उनकी दृष्टि पड़ी। विचार उत्पन्न हुआ कि ये सब अपने भाई बन्धु हैं। इन्हीं के साथ युद्ध का परिणाम मृत्यु। राज्य प्राप्ति होगी बन्धुओं के वध से इस परिणाम पर पार्थ काँप गए। अनेक स्त्रियाँ विधवा होंगी। अधर्म फैलेगा। अर्जुन काँप उठे कृष्ण ने अर्जुन को समझाया— तुम निमित्त हो। यह धर्मयुद्ध है। कौरव तो मृत हैं तुम्हें निमित्त बनना है। निष्काम भाव से कार्य करो, फलाकांक्षा त्यागो। अर्जुन का मोह नष्ट हुआ और वह युद्ध को तत्पर हुए।

धर्मराज युधिष्ठिर अपने रथ से उतर कर पैदल ही भीष्म पितामह, आचार्य द्रोण और कृपाचार्य के पास गए । चरणवन्दन कर उनसे आशीर्वाद लिया । कुछ ही क्षणों में युद्ध की भेरी बज उठी । सेनाएँ भिड़ गयीं । युद्ध प्रारंभ हो गया — “घमासान समर होने लगा । धनुषों की टंकार, हाथियों की चिंगाड़, घोड़ों की टाप और हिनहिनाहट, रथों का घण्टानाद, वीरों की सिंहनाद रथियों की शंख ध्वनि चारों ओर छा गई ।”¹

घमासान युद्ध हुआ । वीर अभिमन्यु ने असंख्य सैनिकों का वध किया । अर्जुन और भीष्म में घनघोर युद्ध हुआ भीष्म के वाणों से पाण्डव हताश हो गए । कृष्ण भी वाणों के प्रहार से आहत हो गए । कृष्ण का धैर्य जाता रहा । वह प्रतिज्ञा को भूलकर आवेश में आकर रथ से कूद पड़े । टूटे रथ का पहिया उठाकर भीष्म पर प्रहार करने को दौड़े । अर्जुन ने प्रतिज्ञा का स्मरण कराया और शांत रहने की प्रार्थना की ।

पाण्डवों का मनोबल टूट रहा था । कृष्ण से मंत्रणा की और भीष्म से ही अपनी विजय का उपाय पूँछने वे सब पितामह के शिविर गए । युक्ति के अनुसार पाण्डवों ने शिखण्डी को भीष्म के समक्ष उतार दिया और अर्जुन ने शरसन्धान कर पितामह पर विजय पाई ।

दुर्योधन को पराजय और कौरवों का अन्त निकट दिखाई दिया । कौरव दल में हाहाकर मच गया । पितामह का सम्पूर्ण शरीर वाणों से बिद्ध था । सिर लटक रहा था । अर्जुन ने पृथ्वी पर शर-सन्धान कर आधार तैयार कर दिया । तृषित भीष्म को पृथ्वी पर वाण प्रहार का स्त्रोत जल से जल पान कराया । भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था, उन्होंने उत्तरायण में प्राण त्यागने के निश्चय से सबको अवगत कराया ।

द्रोण पर्व :-

आचार्य द्रोण के सेनापतित्व में युद्ध, युधिष्ठिर को बन्दी बनाने के प्रयास, अभिमन्यु को वीरगति, जयद्रथ वध, द्रोणाचार्य का वीरगति को प्राप्त होना इस सर्ग की कथाएँ हैं । पितामह के दिवंगत होने के बाद कौरवों ने आचार्य द्रोण को सेनापति बनाया । कौरवों ने येनकेन प्रकारेण युधिष्ठिर को बन्दी बनाने की रणनीति तैयार की । पाण्डवों को भनक लगने पर उन्होंने धर्मराज की सुरक्षा की सशक्त व्यवस्था कर ली । कुटिल कौरवों ने छल का सहारा लिया । अर्जुन को अनुपस्थित जान उन्होंने चक्रव्यूह की रचना की जिसे भेदने की कला अर्जुन ही जानते थे । अभिमन्यु छठे द्वार तक प्रवेश की कला जानता था, फिर भी उसने नेतृत्व किया । कौरवों ने पूरी शक्ति लगा दी । द्रोण, कर्ण, जयद्रथ, दुर्योधन आदि वीरों ने घेरकर अभिमन्यु का वध कर दिया । पाण्डवों की सेनाएँ शोक सागर में डूब गयीं । अभिमन्यु वध में जयद्रथ की भूमिका प्रमुख थी ।

अर्जुन ने प्रतिज्ञा की यदि सूर्यास्त के पूर्व जयद्रथ को न मार सका, तो अग्नि को अपना शरीर समर्पित कर दूँगा । घमासान युद्ध हुआ क्रोधाभिभूत होकर अर्जुन ने कौरव सेना रौंध डाली । सायंकाल तक जयद्रथ छिपता रहा । अर्जुन के लिए चिता रची गयी । अनेक कौरवों के साथ जयद्रथ भी आया वस्तुतः सूर्य ढँक गया था, अस्त नहीं हुआ था । अर्जुन ने अचूक वाण चलाकर जयद्रथ का वध कर दिया ।

कर्ण के पास इन्द्र की दी हुई शक्ति है, यह पाण्डवों के लिए चिन्ता की बात थी । रणनीति बनाई गई कि भीम पुत्र घटोत्कच द्वारा रात्रि में उत्पात कराया जाए । क्रुद्ध कर्ण शक्ति का प्रयोग करेगा । घटोत्कच का बलिदान अर्जुन की रक्षा करेगा । यही हुआ । घटोत्कच पर शक्ति का प्रयोग हो गया । अर्जुन निरापद हो गए ।

कृष्ण ने कूटनीति अपनाई । युद्ध में अश्वत्थामा नाम का हाथी मारा गया । प्रचारित करा दिया अश्वत्थामा का वध हो गया ।

इस समाचार से द्रोणाचार्य शोकाकुल हो गए । इनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी । द्रोण अपने धनुष को आगे टिकाए खड़े थे । श्रीकृष्ण ने कहा – “अर्जुन देखो सर्प चढ़ रहा है, आचार्य को काटेगा, मार दो इसे ।”¹ प्रत्यंचा से लिपटी अश्रुधार अर्जुन को सर्प जैसी लगी । अर्जुन ने वाण छोड़े वे प्रत्यंचा को भेदते हुए आचार्य द्रोण के शरीर में प्रवेश कर गए और आचार्य द्रोण का प्राणान्त हो गया ।

द्रोण का वध होते ही कौरव दल में हाहाकर मच गया । अश्वत्थामा क्रोधाभिभूत हो गया उसके पास अनेक दिव्यास्त्र थे । अश्वत्थामा ने वाण वर्षा कर पाण्डव की सेना में प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी । संध्या हो गई, युद्ध बन्द हो गया । पाण्डवों की सेना का आज विपुल संहार हुआ ।

कर्णपर्व :-

इस पर्व में आचार्य द्रोण के दिवंगत होने के उपरान्त कर्ण के सेनापति बनाए जाने, दुःशासन और कर्णवध की घटनाओं का वर्णन है । सर्वसम्मति से कौरवों ने कर्ण को सेनापति का दायित्व सौंपा । भीष्मपितामह और द्रोण के प्रति कौरवों को संदेह था कि उनकी हार्दिक सहानुभूति पाण्डवों के साथ है । कर्ण को कौरव, पांडवों का कट्टर शत्रु मानते थे । कर्ण से उन्हें विजय की बहुत आशाएँ थीं ।

धनुर्धर कर्ण ने अपने प्रखर वाणों के प्रहार से पाण्डव सेना के अनेक वीरों को धराशायी कर दिया । नकुल सहदेव और भीम पराक्रमी कर्ण के समक्ष टिक नहीं पा रहे थे । कर्ण का सामना करने अर्जुन आ डटे । उधर दुःशासन ने भीम को ललकारा । भीम गदा लेकर दुःशासन कर प्रहार करने लगे । कुछ ही प्रहारों में दुःशासन मर गया । प्रतिज्ञानुसार भीम ने रौद्ररूप धारण करके उसके वक्षस्थल का रक्तपान किया । कौरव सेना हतोत्साह हो गयी ।

1. महाभारत – निराला पृष्ठ-170

कर्ण ने अपने युद्ध कौशल से पाण्डवों को भयाक्रांत कर दिया । अर्जुन ने मोर्चा संभाला । दोनों परम पराक्रमी योद्धाओं के शौर्य को उभय पक्ष की सेनाएँ विस्मय विभुग्ध हो देख रही थीं । दोनों ओर से अबाध गति से बाण बरस रहे थे । उसी मध्य कर्ण के रथ का पहिया यंत्र में धँस गया । कर्ण ने अर्जुन से कहा – “हे अर्जुन, धर्मयुद्ध के अनुसार – तुम्हें इस समय कुछ देर के लिए रुक जाना चाहिए ।”¹ अर्जुन ने कहा – “कर्ण, धर्म-युद्ध का ज्ञान तुम्हें तब नहीं हुआ, जब अभिमन्यु अकेला सात महारथियों से लड़ रहा था । सूत पुत्र, अब जब अपने पर आ पड़ी, तब धर्म का ज्ञान हुआ तुम्हें, समर में शत्रु से दया की भीख माँगते, धर्म का ज्ञान देते लज्जा नहीं लगती ।”²

कर्ण समझ गए कि प्रार्थना व्यर्थ है । वह रथ से कूद पहिया निकालने लगे । अर्जुन ने अवसर दिया, कर्ण पर वाण नहीं छोड़ा । यह देखकर कृष्ण को चिन्ता हुई । कृष्ण ने सचेत करते हुए कहा – “पार्थ यही समय है, कर्ण का वध करो । यदि पहिया निकालकर वह रथ पर बैठ गए तो महारथ कर्ण का तुम कदापि वध नहीं कर सकोगें ।”³

कृष्ण के कहने का प्रभाव हुआ । अर्जुन ने भी विचार किया कि यही उपयुक्त अवसर है, चूक गए तो विजय संदिग्ध हो जाएगी । अर्जुन ने सर-सन्धान किया । कर्ण का सिर धड़ से अलग हो गया । कौरव सेना में हाहाकार मच गया, भगदड़ मच गई । धृतराष्ट्र कर्ण के वध का समाचार सुनकर मूर्च्छित हो गए । सूर्यास्त होने पर युद्ध बन्द हो गया । आज दुर्योधन सबसे अधिक शोकाकुल था ।

शल्य पर्व :-

इस पर्व में सत्रह दिनों हुए नरसंहार का वीभत्स चित्रण, शल्यवध, दुर्योधन के मरणासन्न होने और अश्वत्थामा के सेनापति होने का वर्णन है ।

1. महाभारत – निराला पृष्ठ-183
2. महाभारत – निराला पृष्ठ-183
3. महाभारत – निराला पृष्ठ-184

/V), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

विगत सत्रह दिनों में पाण्डव और कौरव सेना का भीषण संहार हुआ । युद्ध भूमि का दृश्य कारुणिक था ।" युद्ध भूमि लाशों से पट गयी । कहीं हाथी कटे पड़े हैं, कहीं घोड़े, कहीं टूटे रथ, कहीं मरे हुए आदमी । कहीं सिर, कहीं धड़ । तमाम युद्ध महाश्मशान बन गयी है ।"¹

कौरवों ने शल्य को सेनापतित्व सौंपा । युद्ध भूमि में शल्य को देखकर युधिष्ठिर ने शल्य से स्वयं युद्ध करने का निश्चय किया । दोनों वीरों ने एक दूसरे पर प्रंचण्ड बाण बरसाए । धर्मराज आहत हो गए उन्होंने धैर्य न खोया । उत्तेजित होकर कुछ ही प्रहारों में शल्य को सुला दिया । सहदेव ने शकुनि को खदेड़-खदेड़ कर मार डाला ।

कौरव पक्ष के प्रमुख वीरों और असंख्य सैनिकों का वध देखकर दुर्योधन भयभीत हो गया । वह गदा लेकर युद्ध क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ और एक सरोवर में स्थित स्तम्भ में जो छिपा । भीम ने उसका पीछा किया । बारम्बार धिक्कारने पर उत्तेजित हो दुर्योधन बाहर आ गया । दोनों में गदायुद्ध हुआ । कृष्ण ने भीम की जंघा पर प्रहार करने का संकेत किया । भीम को भी अपनी प्रतिज्ञा याद आ गई । दुर्योधन ने द्रौपदी से जंघा पर बैठने को कहा था । गदा प्रहारों से दुर्योधन मरणासन्न हो गया । कौरवों के यहाँ शोक की घटा छा गयी । धृतराष्ट्र और गान्धारी विलाप करने लगे । विजयी पाण्डव अपने शिविर को लौट आए । कौरवों में मात्र तीन वीर शेष रह गए थे — अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा । तीनों वीर दुर्योधन के पास गए । आहत दुर्योधन विलाप करने लगा उसने कहा कि भीम ने मेरे गिर जाने और मरणासन्न हो जाने पर भी सिर पर पदाघात किया, इसका मुझे क्षोभ है । अश्वत्थमा ने बदला लेने का वचन दिया । दुर्योधन ने अश्वत्थामा को सेनापति बना दिया उसने कौरव सेना की बागडोर संभाली ।

सौप्तिक पर्व :-

सौप्तिक पर्व में अश्वत्थामा सेनापति बनाए जाने, पाण्डव शिविर में उत्सव मनाए जाने, अश्वत्थामा द्वारा पाण्डव पुत्रों की हत्या, दुर्योधन के प्राणान्त का वर्णन है ।

दुर्योधन के परास्त होने से पाण्डव शिविर में उत्सव सा मनाया गया । सेनानी नृत्य-गान में झूम रहे थे । सभी उन्मत्त थे । इधर श्रीकृष्ण पाण्डवों को लेकर अन्यत्र गए हुए थे । उत्सव की मादकता और थकान से पाण्डव शिविर के लोग गहरी नींद सो रहे थे ।

अश्वत्थामा ने रात्रि का लाभ उठाते हुए पाण्डवों के वध का षडयन्त्र रचा । अंधकार में वह चोर की तरह पाण्डव शिविर में घुस गया और शिविर में सो रहे द्रौपदी के पाँचों के पुत्रों के सिर काट लिए । दुर्योधन को प्रसन्न करने वे उस स्थान पर गए । दुर्योधन ने पहचान लिया । उसने धिक्कारा कि यह पाण्डवों के नहीं, उनके पुत्रों के सिर हैं और अब तो वंश में तर्पण करने के लिये कोई न बचा । विलाप करते हुए दुर्योधन दिवंगत हुआ ।

प्रातः काल श्री कृष्ण और पाण्डव लौटे । दारुण दृश्य देखकर सभी शोकाकुल हुए । द्रौपदी धाड़मारकर विलाप कर रही थी ।

अश्वत्थामा का वध करने के लिए भीम अकेले ही निकल पड़े । श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को समझाया कि अश्वत्थामा के पास ब्रह्मशिरा अस्त्र है । यदि उसने उस अचूक अस्त्र का प्रयोग कर दिया तो भयंकर परिणाम होगा । भयभीत अश्वत्थामा व्यास के आश्रम में प्रवेश कर गया । भीम के पीछे ही श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर और अर्जुन भी पहुँच गए । भीम ने उसे ललकारा, उसने तत्काल ब्रह्मशिरा छोड़ दिया । अर्जुन के पाशुपत महास्त्र का प्रहार किया । भयानक संकट उपस्थित हो गया । व्यास ने उभय पक्षों को शान्त किया और कहा इन अस्त्रों के प्रयोग से महाविनाश हो जाएगा ।

व्यास के कहने पर पाण्डवों ने ब्राह्मण अश्वत्थामा का वध नहीं किया । उसके मस्तक की मणि लेकर चले आए । मणि छिन जाने से वह निस्तेज हो गया । उसके लिए यह दण्ड मृत्यु से भी अधिक दारुण सिद्ध हुआ । अश्वत्थामा भगवान व्यास के आश्रम में रहकर पश्चाताप और ग्लानि भरा जीवन व्यतीत करने लगा ।

स्त्री पर्व :-

स्त्री पर्व में कौरव स्त्रियों का विलाप, धृतराष्ट्र द्वारा लौह भीम चूर्ण, गान्धारी का शाप और मृतक तर्पण का वृत्तान्त है ।

दुर्योधन के दिवंगत होने का समाचार सुनकर धृतराष्ट्र मूर्च्छित हो गए । राजमहल में शोक उमड़ने लगा । रानियाँ फूट-फूटकर रोती हुई शवों को देखने हेतु युद्ध क्षेत्र की ओर दौड़ने लगीं । विदुर ने रथ का प्रबन्ध किया । कौरव कुल की बहुएँ, गान्धारी और धृतराष्ट्र रथ में बैठकर युद्ध क्षेत्र जा पहुँचे । स्त्रियाँ रोते-रोते मूर्च्छित हो गयीं ।

श्रीकृष्ण पाण्डवों के साथ धृतराष्ट्र से मिले और विनय पूर्वक कहा— "महाराज, पाण्डव पहले भी संधि करना चाहते थे, पर शकुनि और कर्ण की बात को मानकर महामानी दुर्योधन ने संधि नहीं की, पाण्डवों को रहने के लिए पाँच गाँव भी नहीं दिए, इसका यह दुष्परिणाम हुआ । महामति भीष्म, आचार्य द्रोण, महारथ कर्ण, शल्य और आपके पुत्र जैसे कौरव कुल के रत्न इस संसार से उठ गए । इसमें पाण्डवों का क्या दोष है ।"¹

धृतराष्ट्र धैर्य के साथ बोले — "कृष्ण तुम ठीक कह रहे हो । धर्म की ही जीत होती है । खेद यही है कि इतनी बड़ी सेना देखते-देखते कालकवलित हो गई ।"² यह कहकर धृतराष्ट्र ने दुर्योधन का वध करने वाले भीम को गले लगाने की इच्छा प्रकट की ।

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-203

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-203

श्रीकृष्ण को संदेह हो गया । उन्होंने शीघ्र ही भीम की लौह प्रतिमा प्रस्तुत कर दी ।

धृतराष्ट्र ने उसे वक्षस्थल से लगाकर इतना दबाया कि वह चूर्ण-चूर्ण हो गयीं । कृष्ण ने पाण्डवों से कहा कि सर्वनाश होने के बाद भी यह वृद्ध पाण्डवों से बदला चुकाना चाहता था ।

गांधारी को प्रणाम कर युधिष्ठिर ने कहा — “माता हम युद्ध न चाहते थे । भाई दुर्योधन ने पाँच गाँव भी न दिए । यही इस नरसंहार का कारण हुआ ।”¹ गांधारी का हृदय करुणार्द्र हो गया । युधिष्ठिर को रोते हुए गले लगा लिया और कल्याण कामना की । कौरव और पाण्डव परिवारों की स्त्रियाँ रोती हुई कुरुक्षेत्र पहुँची । वहाँ का दृश्य अत्यन्त हृदयविदारक था । बड़े-बड़े शूरवीर अनाथ की तरह पड़े थे । जोध, स्यार शवों का माँस खा रहे थे । अर्जुन पुत्र अभिमन्यु और दुर्योधन पुत्र लक्ष्मण के शव देखकर सभी स्त्रियाँ चीत्कारा कर उठीं ।

कृष्ण को देखकर गांधारी का धैर्य जाता रहा । उन्होंने कृष्ण को शाप दिया — “कृष्ण, हमारे वंश का तुम्हीं ने नाश कराया है । तुम प्रसिद्ध छली हो, इसलिए यह शाप लो, जिस तरह हमारे वंश का नाश हुआ है, उसी तरह एक दिन में तुम्हारा वृहत् परिवार नष्ट हो जाएगा ।”² कृष्ण मुस्कराते रहे ।

युधिष्ठिर ने भाइयों के साथ मिलकर सभी बन्धु बान्धवों और आत्मीय जनों का दाहसंस्कार किया ।

शान्ति पर्व :-

महाभारत का महाविनाश देखकर युधिष्ठिर शोकाकुल थे । जब उन्हें ज्ञात हुआ कि कर्ण अग्रज थे तो उन्हें अपार कष्ट हुआ । वह सोचते यदि पहले ज्ञात हो गया होता तो युद्ध नहीं करते । यही सब सोचकर उन्हें वैराग्य हुआ । अर्जुन इन घटनाओं

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-205

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-206

...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...

से शोक संतप्त थे । सभी उदास, दुःखी और ग्लानि से भरे हुए थे ।

इसी समय व्यास जी का आगमन हुआ । युधिष्ठिर को उदास देखकर व्यास जी ने सान्त्वना दी, कहा— क्षत्रिय को कभी अपना धर्म छोड़ना नहीं चाहिए अपनी समझ से तुम एक अन्याय के विरुद्ध लड़कर विजयी हुए हो । अब तुम अपने अर्जित फल का भोग करो और इसमें भी अपना आदर्श रखो ।”¹ व्यासजी ने धैर्य धारण कराया और लोक तथा धर्म की शिक्षा दी ।

इसी प्रकार भीष्म पितामह युधिष्ठिर को अपने धर्म का पालन करने की प्रेरणा दी । उन्होंने कहा कि पश्चाताप किस बात का धर्मराज — “तुमने तो धर्मयुद्ध किया, न्याय के लिए संघर्ष किया । वैराग्य उचित नहीं है । प्रजा का पालन करो ।”²

व्यास भीष्म आदि महापुरुषों से आदेश पाकर युधिष्ठिर राज्य संभालने के लिए सहमत हो गए । नगर को सजाया गया । मंगल कलश रखे गए । भाटों ने स्तुतियाँ गाईं । शंखनाद होने लगा । ब्राह्मणों को दान दिया गया । युधिष्ठिर राजसिंहासन पर बैठे । दोनों ओर भीम अर्जुन, नकुल और सहदेव विराजे । महात्मा विदुर उच्चासन पर विराजमान हुए ।

मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ हुआ । प्रजा ने जय-जयकार किया । महाराज युधिष्ठिर ने भीम को युवराज, अर्जुन को राज्य निरीक्षक, नकुल को सेनापति और सहदेव को अपना अंगरक्षक तथा महात्मा विदुर को अपना मंत्री बनाया ।

समारोह के उपरान्त युधिष्ठिर भाइयों सहित राजमहल गए वहाँ उन्होंने आदरपूर्वक धृतराष्ट्र और गांधारी का चरण वन्दन किया । आशीर्वाद लेकर प्रजा से मिले । इस प्रकार विनाश लीला के बद वर्षों बाद हस्तिनापुर में शांति का वातावरण बन पाया ।

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-208

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-209

अनुशासन पर्व :-

इस पर्व में भीष्म द्वारा धर्मराज को अनुशासन वर्णाश्रम धर्म, राजधर्म आदि की शिक्षा देना, भीष्म के प्राण त्याग, व्यास का गुम धन का भेद बताया जाना उल्लिखित है ।

धर्मराज युधिष्ठिर के मन में प्रेरणा उत्पन्न हुई कि अनुशासन की शिक्षा देने की क्षमता भीष्म के अतिरिक्त किसी में नहीं है । भीष्म बहुदर्शी और कहुश्रुत है और बहुपठित हैं । उनसे योग्य कोई अन्य नहीं है । वह भीष्म के पास गए । भीष्म ने सविस्तार युधिष्ठिर को राजधर्म, वर्णाश्रम धर्म, राज्यानुशासन, मोक्षधर्म आदि की । भाग्य और कर्म को भीष्म ने अभिन्न बताया । उन्होंने कहा — “ पुरुषार्थ कर्म को प्रधानता देता और भाग्य में परिणत होता है । राजा का परिचय देने पर राजा प्रजाजनों का प्रिय होता है । प्रजा की प्रशंसा से मृत्यु के बाद वह स्वर्ग सुख प्राप्त करता है । ”¹

बहुत दिनों तक धर्मराज भीष्म के पास आते रहे । क्रमशः उत्तरायण का समय आया । भीष्म की इच्छा मृत्यु थी । धर्मराज ने पाण्डवों सहित पिता मह के अंतिम संस्कार की व्यवस्था की । विधि-विधान और वेदमंत्रों की पाठ के साथ दाह-कर्म सम्पन्न हुआ । नगर वासियों ने अश्रुपूरित नेत्रों से अंतिम बार पितामह को श्रद्धांजलि अर्पित की ।

धर्मराज के वीतराग होने का आभास होने पर वेदव्यास पधारे । व्यास जी ने युधिष्ठिर को अपने कर्तव्य का पालन करने को कहा । उन्होंने गिन्ता त्याग की कि महाभारत के युद्ध में अपार धन-जन की क्षति हुई है । राजकोष रिक्त होगा, बिना अर्थ के राज्य का हित संभव नहीं । उन्होंने बताया कि हिमालय प्रदेश में कुछ समय पूर्व महाराज गरुड ने विशाल यज्ञ किया था । इस अवसर पर राजा ने ब्राह्मणों को अपार धन दान

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-211

में दिया था । ब्राह्मण वह धन ले जा न सके थे । वह धन मिट्टी में दब गया है । शंकर जी की तपस्या करके उनकी कृपा से वह धन प्राप्त किया जा सकता है । उस धन से राज्य संचालन में सुविधा होगी । प्रजा का हित होगा । यह कहकर व्यास जी प्रस्थान कर गए ।

अश्वमेघ पर्व :-

भीम द्वारा अर्थ प्राप्ति हेतु तप, धन प्राप्ति, उत्तरा को पुत्र लाभ, अश्वमेघ की तैयारी, अर्जुन का दिग्विजय अभियान सम्पन्न आदि कथाएँ अश्वमेघ पर्व में वर्णित हैं ।

अर्थ प्राप्ति के लिए व्यास जी द्वारा बताए गए सूत्र के सम्बन्ध में पाण्डवों ने परस्पर विचार विमर्श किया । भीम ने तप करने की इच्छा व्यक्त की । अन्ततः उत्तराखण्ड जाने का सम्मिलित निश्चय हुआ । अनुष्ठान पूरा होने पर सभी पाण्डव धनराशि बाधकर राजधानी लौटे । उत्तरा के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुआ ।

कृष्ण की उस पर विशेष कृपा रही । पुत्र का नाम परीक्षित रखा गया । धन प्राप्ति के बाद अश्वमेघ यज्ञ की तैयारियाँ होने लगीं । दिग्विजय के लिए नियत अश्व की रक्षा का दायित्व अर्जुन को सौंपा गया । सैन्य बल के साथ पार्थ अश्व का अनुसरण करने लगे ।

विचरता हुआ अश्व विगर्त देश पहुँचा वहाँ के राजकुमार केतुवर्मा ने अश्व पकड़ लिया । लघु - युद्ध हुआ । राजा ने वश्यता स्वीकार कर ली । अश्व अग्रसर हुआ । प्रागज्योतिष देश में प्रवेश किया । यहाँ बज्रदत्त युद्ध में मारा गया । सिन्धु देश ने आधीनता स्वीकार कर ली । दान दक्षिणा प्राप्त कर दल आगे बढ़ता हुआ मणिपुर पहुँचा यहाँ बभ्रुवाहम से युद्ध हुआ । पाण्डव सेना की विजय हुई । मगध और चेदिराज्य होता हुआ अश्व हस्तिनापुर लौटा । सभी आनन्दित हुए । अर्जुन का प्रजा ने स्वागत किया ।

देश - देशान्तर के राजागण स्वर्ण, रत्न आदि धन लेकर धर्मराज युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में उपस्थित होने लगे । आमंत्रितों के स्वागत-सत्कार की उत्तम व्यवस्था की गई थी । यज्ञ मण्डप अपूर्व ढंग से सजाया गया था । ब्राह्मणों ने विधि विधान से यज्ञ कराया । यथा विधि विप्रों और गरीबों को दान दिया गया । प्रजा ने मुक्त कंठ से पाण्डवों को धर्म निष्ठा की प्रशंसा की । असंख्य कंठों के जय-जयकार से यज्ञ परिपूर्ण हुआ ।

आश्रमवासिक पर्व :-

महाभारत की कथा धीरे-धीरे अवसान की ओर अग्रसर होने लगी । असंख्यजन युद्धभूमि में मृत । एक-एक कर राजा और रानियाँ वैराग्य लेने लगे । 'आश्रमवासिक पर्व' में गान्धारी और धृतराष्ट्र द्वारा मृतकों का श्राद्धकर्म, जीवन से विरक्ति, धृतराष्ट्र गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वनवास, विदुर सामाधिलीन, शेष दावाग्नि में भस्म होने का वर्णन है ।

कुरुक्षेत्र के युद्ध के बाद धृतराष्ट्र और गान्धारी भोगैश्वर्य को त्यागकर विरक्तों का जीवन जीने लगे । अल्पाहारी, भूमिशयन और धर्मचर्या दिनचर्या हो गयी । दम्पति ने मिलकर पुत्रों और बन्धु-बान्धवों का श्राद्धकर्म किया । धृतराष्ट्र ने राजमहल छोड़कर शेष जीवन वन में व्यतीत करने का निर्णय किया । उनका अनुगमन गान्धारी, कुन्ती और विदुर ने भी किया । धृतराष्ट्र कुछ दिनों गंगा के तट पर रहे, तदुपरान्त वन में तपस्या करने लगे । महात्मा विदुर उग्रतप में विरत हो गए । उन्होंने अन्नजल का भी परित्याग कर दिया । ईश्वर का स्मरण करते हुए विदुर जी समाधि में लीन हो गए और आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई ।

कुछ समय बाद देवर्षि नारद हस्तिनापुर आए । युधिष्ठिर ने प्रणाम किया । नारद जी ने कहा कि वह तपस्वारी महाराज धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती का संवाद देने आए हैं । धर्मराज तो तीव्र उत्कण्ठा हुई । महर्षि ने बताया, "महाराज धृतराष्ट्र हिमालय

में भ्रमण कर रहे थे । साथ गान्धारी, कुन्ती और संजय थे । वे कई दिन के भूखे थे । इसी समय वन में दावाग्नि लग गई । संजय ने महाराज को बताया, परन्तु धृतराष्ट्र को इसकी चिन्ता न हुई । उन्होंने कहा, " एक तो मैं अन्धा, कई दिनों का भूखा और अत्यन्त वृद्ध हूँ । मैं भाग न सकूंगा । तुम भागकर अपने प्राण बचाओ । मेरी चिन्ता न करो ।"¹ यह कह महाराज धृतराष्ट्र बैठ गये । गान्धारी ने साथ न छोड़ा और कुन्ती भी वहीं ध्यान में डूब गयीं संजय वहाँ से प्राण बचाकर पलायन कर गये । प्रचण्ड दावाग्नि ने तीनों को भस्म कर दिया । यह हृदयद्रावक समाचार सुनकर पाण्डव और नगरवासी शोक में डूब गए ।

मौषल पर्व :-

मौषल पर्व में श्रीकृष्ण के सजातीय यदुवंशियों की विलासिता, मदान्धता, विश्वामित्र का अपमान, विनाश का अभिशाप, 'जरा' व्याध के वाण से कृष्ण का आहत होना एवं स्वर्गारोहण की कथा का वर्णन हुआ है ।

पाण्डवों की पक्षधरता से श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई । सभी उनकी महापुरुष और महामानव के रूप में श्रद्धा करते थे । बहुतों के लिए वे परमपूज्य थे । श्रीकृष्ण की लोकप्रियता के साथ ही यादवों में गर्व की मात्रा बढ़ने लगी । मद्यपान और मांसाहार का व्यसन फैल रहा था । यादवगण सभ्य जनों एवं ऋषियों का अनादर करने लगे थे । ऐसे अधम कार्यों में श्रीकृष्ण का पुत्र साम्ब भी सम्मिलित था । वे सब बहुत उद्वण्ड और दुराचारी थे ।

एक अवसर पर नारद, विश्वामित्र और कण्व आदि ऋषि का द्वारका आगमन हुआ । यादव राजकुमार ऋषियों का उपहास करने के उद्देश्य से साम्ब को साड़ी पहनाकर ऋषियों के पास ले गए और कहा, "भगवान आप लोग तो त्रिकालदर्शी हैं, यह स्त्री

गर्भगवती है । बताइए इसके लड़का होगा या लड़की ।¹ ऋषि रुष्ट हो गए उन्होंने अभिशाप दिया—“इस अधम साम्ब के गर्भ से एक मूसल पैदा होगा और उससे तुम्हारे वंश का नाश होगा ।”² वसुदेव ने इस कुकृत्य के लिए राजकुमारों को बहुत धिक्कारा और मूसल को चूर्ण-चूर्ण कराके समुद्र में फेंकवा दिया । उस स्थान पर ‘सरपत’ उग आया । ‘जरा’ व्याध ने उसकी नाल से धनुष का तीर बनाया ।

जल विहार करते हुए यादवों ने छककर मदिरा पान किया । उन्मन्त होकर परस्पर प्रहार करने लगे । ‘सरपत’ उखाड़-उखाड़ प्रहार करने से कृष्ण के पुत्र साम्ब, अनिरुद्ध आदि सहित यादवों का विनाश हो गया । केवल स्त्रियाँ शेष रह गयीं । बलराम को यह विनाश देखकर वैराग्य हो गया । वे प्रभास कर गए । तीर्थ चले गए । वहाँ समाधि में लीन होकर प्राण विसर्जित कर दिए । शोक संतप्त श्रीकृष्ण वन में एक वृक्ष के सहारे लेटे हुए ध्यान मग्न थे । ‘जरा’ नामक व्याधने श्रीकृष्ण के पैर को हिरन का मुख समझकर सन्धान कर दिया । निकट आकर देखने पर वह विलाप करने लगा । श्रीकृष्ण एक सौ बीस वर्ष की अवस्था में अपनी अद्भुत कीर्ति विखेरकर परमधाम को प्रस्थान कर गए । श्रीकृष्ण के स्वर्गवास से चतुर्दिक हाहाकार मच गया । शोकाकुल वसुदेव ने दूसरे दिन प्राण त्याग दिए । श्रीकृष्ण के परलोक गमन का समाचार सुनकर अर्जुन तत्काल द्वारका गए । अर्जुन ने सभी को ढाँढस बँधाया । वे कृष्ण वंश की स्त्रियों को लेकर हस्तिनापुर आ रहे थे कि मार्ग में वनदस्युओं ने उन्हें लूट लिया स्त्रियों पर जो धन धान्य स्वर्णाभूषण थे, दस्यु लूट ले गए । विरक्ति और वैराग्य भाव में निमग्न अर्जुन ने प्रतिरोध नहीं किया इसे उन्होंने विधि का विधान ही समझा ।

महाप्रस्थानिक पर्व :-

निराला जी महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहण पर्व की कथा का अत्यंत संक्षेप में वर्णन किया है । सत्रहवें पर्व में श्रीकृष्ण के परलोक गमन से व्याप्त नैराश्य, पाण्डवों

1. महाभारत — निराला पृष्ठ-225

2. महाभारत — निराला पृष्ठ-225

के वैराग्य, द्वारकापुरी के समुद्र में समा जाने का, द्रौपदी सहित पाण्डवों के हिमालय प्रस्थान, एक-एक कर धर्मराज को छोड़कर सभी का प्राणान्त आदि घटनाओं का समावेश है ।

श्रीकृष्ण के अभाव में पाण्डव निस्तेज हो गए । पाण्डवों को अपने वंशजों के विनाश, यादवों के विनष्ट होने की बातें, द्वारका का समुद्र के गर्भ में विलीन होना आदि घटनाएँ विचलित करने लगीं । पाण्डवों का हृदय वैराग्य से आप्लावित हो गया और उन्होंने हिमालय यात्रा का संकल्प लिया । इस अभिशाप के लिए युधिष्ठिर ने परीक्षित को राजगद्दी सौंप दी और निश्चिन्त हो गए । परिजनों को धर्मोपदेश देकर वह राजधानी छोड़कर यात्रा पर निकल पड़े ।

धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने चारों भाइयों और भाभी द्रौपदी सहित हिमालय के लिए प्रस्थान किया । समस्त भारत की परिक्रमा कर हिमालय की ओर चले । कुछ ही दूर आगे बढ़े थे कि हिमपात होने लगा । द्रौपदी का शरीर संज्ञा शून्य हो गया, वह वहीं गिर गई । भीम ने जिज्ञासा प्रकट की – “महाराज द्रौपदी तो सती थी, कभी पतियों का साथ नहीं छोड़ा, सदा उनका चित्त सत्कर्मों में लगा रहा, वह गिर क्यों गई ।”¹ युधिष्ठिर ने कहा – “द्रौपदी अर्जुन को अधिक चाहती थीं । सब पतियों पर समदृष्टि न रख सकीं ।”²

कुछ देर बाद सहदेव गिरे – सहदेव को अपने पाण्डित्य का अभिमान था । “आगे बढ़ने पर नकुल धराशायी हो गए । युधिष्ठिर ने कहा – ‘नकुल को अपने रूप का गर्व था । अर्जुन के गिरने पर धर्मराज ने कहा – ‘अर्जुन को भी अपनी अस्त्र शिक्षा का गर्व था ।’

भीम के गिरते-गिरते पूँछने पर युधिष्ठिर ने कहा – ‘तुम्हें भी अपने बल पर

1. महाभारत – निराला पृष्ठ-229

2. महाभारत – निराला पृष्ठ-229

गर्व था । युधिष्ठिर आगे बढ़ते गए । श्वान उनका अनुगमन कर रहा था । कुछ देर बाद एक ज्योतिर्मय रथ आया । रथ से उतरकर इन्द्र ने कहा – “धर्मराज आप धन्य हैं। सशरीर स्वर्ग जा सकते हैं किन्तु कुत्ते को छोड़ना होगा ।”¹ युधिष्ठिर ने असमर्थता की और कहा कि वह तो सदा मेरे साथ रहा है । इसे छोड़कर स्वर्ग जाना स्वीकार नहीं । वह कुत्ता साक्षात् धर्म था । प्रकट होकर युधिष्ठिर को धन्यवाद देने लगा ।

स्वर्गारोहण पर्व :-

निराला जी ने इस पर्व का अत्यन्त संक्षेप में वर्णन किया है । इस पर्व में युधिष्ठिर के स्वर्ग पहुँचने, वहाँ नरक और स्वर्ग में मृत बन्धुओं को देखने, तदुपरान्त स्वर्ग में निवास करने का वृत्तान्त है ।

देवराज इन्द्र युधिष्ठिर को स्वर्ग ले गए । वहाँ युधिष्ठिर ने देखा कि दुर्योधन, दुःशासन आदि प्रसन्नता से बैठे हुए हैं, युधिष्ठिर को देखकर हँस रहे हैं ! उन्होंने भीम, अर्जुन आदि बन्धुओं के वहाँ न होने का कारण पूँछा । इन्द्र ने बताया कि इन कौरवों ने युद्ध क्षेत्र में प्राण गंवाए हैं, अतः स्वर्ग मिला । पाण्डवों और कर्ण को देखने की इच्छा प्रकट करने पर इन्द्र ने नरक का मार्ग बता दिया । वहाँ पहुँचने पर मल, मूत्र, मॉस, रक्त के नाले, दुर्गन्ध से बहुत व्याकुल हुए । वहाँ धर्मराज को भीम, अर्जुन, कर्ण की करुण ध्वनि सुनाई पड़ी । वे प्रार्थना करने लगे – “महाराज, हम घोर नरक भोग रह हैं , आप कुछ देर ठहरिए, आपके शरीर की हवा से हमें आराम मिलता है, हम पर दया कीजिए”² परिवारी और परिजनों की पुकार सुनकर युधिष्ठिर बहुत विचलित हुए इसी समय इन्द्र वहाँ प्रकट हुए उन्होंने स्मरण दिलाया—‘अश्वत्थामा के वध के समय तुमने असत्य बोला था इसलिए अल्पकाल के लिए तुम्हें नरक भोगना पड़ा, चलो अब स्वर्ग चलो, तुम्हारे सब भाई, पत्नी और परिवार के लोग वहीं मिलेंगे ।’³ इन्द्र

1. महाभारत – निराला पृष्ठ-230

2. महाभारत – निराला पृष्ठ-231

3. महाभारत – निराला पृष्ठ-232

... १ ... २ ... ३ ... ४ ... ५ ... ६ ... ७ ... ८ ... ९ ... १० ... ११ ... १२ ... १३ ... १४ ... १५ ... १६ ... १७ ... १८ ... १९ ... २० ... २१ ... २२ ... २३ ... २४ ... २५ ... २६ ... २७ ... २८ ... २९ ... ३० ... ३१ ... ३२ ... ३३ ... ३४ ... ३५ ... ३६ ... ३७ ... ३८ ... ३९ ... ४० ... ४१ ... ४२ ... ४३ ... ४४ ... ४५ ... ४६ ... ४७ ... ४८ ... ४९ ... ५० ... ५१ ... ५२ ... ५३ ... ५४ ... ५५ ... ५६ ... ५७ ... ५८ ... ५९ ... ६० ... ६१ ... ६२ ... ६३ ... ६४ ... ६५ ... ६६ ... ६७ ... ६८ ... ६९ ... ७० ... ७१ ... ७२ ... ७३ ... ७४ ... ७५ ... ७६ ... ७७ ... ७८ ... ७९ ... ८० ... ८१ ... ८२ ... ८३ ... ८४ ... ८५ ... ८६ ... ८७ ... ८८ ... ८९ ... ९० ... ९१ ... ९२ ... ९३ ... ९४ ... ९५ ... ९६ ... ९७ ... ९८ ... ९९ ... १०० ...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

ने समझाया कि इन सब के अपराध प्रक्षलित हो गए अब ये स्वर्ग पहुँचेंगे । इन्द्र ने स्वर्ग के नियम स्पष्ट किए कि जिन प्राणियों को थोड़ा भोगना पड़ता है, उन्हें पहले नरकवास होता है, फिर स्वर्ग । धर्म पुत्र युधिष्ठिर स्वर्ग गए, वहाँ सब भाईयों, द्रौपदी, कर्ण आदि को बिहंसते देखा ।

अध्याय-तृतीय

सधुमानव की अवधारणा और
निराला की सधुमानव परक सोच

अध्याय-तृतीय

लघुमानव की अवधारणा और निराला की लघुमानव परक सोच

प्रतिज्ञा-प्रकरण

प्रतिज्ञा-प्रकरण कि प्रमाणपत्र
प्रतिज्ञा-प्रकरण कि प्रमाणपत्र

अध्याय-तृतीय

लघुमानव की अवधारणा और निराला की लघुमानव परक सोच

मानव के पूर्व लगा हुआ लघु विशेषण जो मानव का अर्थ देता है उस कोशीय अर्थ से साहित्य में प्रयुक्त लघु-मानव की संकल्पना एकदम भिन्न है । लघु विशेषण उसकी लघुता का अर्थ देता है किन्तु साहित्य में लघु- मानव की अवधारणा कुछ और ही है । साहित्य में लघु-मानव से तात्पर्य ऐसे छोटे-छोटे चरित्रों से है जो समय-समय पर अपने कतिपय छोटे-छोटे कार्यों द्वारा समाज में एक नई चेतना जागृत कर देते हैं । उनके पास अपना छोटा सा परिवेश होता है, छोटा सा उनका इतिहास होता है और भूगोल भी । उनकी ऐतिहासिक अस्मिता और सांस्कृतिक पहिचान भी छोटी होती है फिर भी उनकी चेतना जब जाग्रत होती है तो वे कुछ ऐसा कार्य कर जाते हैं जो स्मारक बन जाता है । कदाचित् इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कर्त्ता से बढ़कर कर्म का महत्व होता है । यहाँ उनका भी आशय यही है कि व्यक्ति परिवेश से, समाज से, संस्कृत से, विद्या से कितना ही छोटा क्यों न हो किन्तु कभी-कभी इसका कर्म उतना स्पृहणीय हो जाता है कि समाज उसे अपना मार्ग-दर्शक मानने लगता है न केवल साहित्य में अपितु जीवन के विविध क्षेत्रों में भी ऐसे चरित्र मिलते हैं जो कि अपने तत्कालीन समाज में क्रांति के बीज का रोपण कर देते हैं । उदाहरण के लिए सन् 1857 की क्रांति के संदर्भ में मंगल पाण्डे जैसे चरित्र को लिया जा सकता है जो कि सेना में मात्र एक सिपाही की हैसियत से सेवारत था मगर उसने ऐसी चेतना जाग्रत की जिसे बहुत उच्च पदस्थ व उच्च मानसिकता वाले व्यक्ति भी नहीं कर सके थे । प्रायः ऐसा होता है कि समाज का ध्यान ऐसे चरित्रों की ओर नहीं जाता और उनकी विचारशीलता की बराबर उपेक्षा होती रहती है । इसके कारण कभी-कभी समाज में बहुत अच्छा

मिलने वाला संदर्भ काल के गर्भ में समा जाता है साहित्य के क्षेत्र में गोदान के गोबर जैसे पात्र को लिया जा सकता है जो जमींदारों अथवा साहूकारों के समक्ष विद्रोह का स्वर मुखर करता है । स्पष्ट है कि गोबर के पिता होरी को जो सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी, वह उसे नहीं थी मगर होरी आदर्श के बोझ के नीचे इतना दब चुका था कि उसे क्रान्ति के, विद्रोह के स्वर दूर-दूर तक नहीं सुनाई पड़ते थे । कारण कि यथार्थ की धरती कठोर होती है इसीलिए वह अपनी सृष्टि भी पाषाणमयी ही करता है । न केवल हिन्दी साहित्य अपितु पूरे भारतीय वाङ्मय में वह चाहे रामयण काल का साहित्य हो, चाहे महाभारत काल का साहित्य हो, जो भी निर्णायक संदर्भ तय हुआ है, वह इन लघु मानवों के बल पर ही, यदि शिखण्डी जैसा लघु मानव पाण्डवों के पक्ष में न होता तो शायद कृष्ण पाण्डवों की विजय के लिए पता नहीं कौन सा और अन्य उपाय खोजते । ऐसे ही रामायण काल में यदि रीक्ष और कपि जैसी छोटी-छोटी जातियों के लोग न होते तो शायद श्री राम को भी लंका पर विजय प्राप्त करने के लिए और क्या-क्या न करना पड़ता । इन समस्त संदर्भों से एक बात जो छनकर हमारे सामने आती है, वह यह कि लघु मानव ही किसी भी प्रकार के युद्ध का, किसी भी प्रकार की क्रान्ति का, किसी भी प्रकार के दिशा निर्देशक तत्व का मूल केन्द्र बिन्दु होता है । जहाँ तक निराला के कथा-साहित्य का प्रश्न है उसमें ऐसे लघु-मानव हैं जिन्होंने कथा सृष्टि में नई चेतना का जागरण दिया । दूसरे अर्थों में निराला अपने समय के एक मात्र ऐसे रचनाकार हैं जिनकी रचना की परिधि में तो पूरा भारतीय समाज है किन्तु उसके केन्द्र में, रचक तत्व के रूप में केवल लघु-मानव ही कार्य करते हैं ।

‘लिली’- कहानी में निराला ने पद्मा और राजेन्द्र के माध्यम से अन्तर्जातीय विवाह की समस्या पर विचार किया है । पद्मा उच्चपदस्थ ब्राह्मण परिवार की कन्या है और राजेन्द्र भी ठाकुर परिवार का बालक है । दोनों परिणय सूत्र से बंधना चाहते हैं किन्तु सामाजिक बंधन उन्हें ऐसा करने से विरत करता है । पद्मा अपने पिता के

सामने स्पष्ट रूप से अपने परिणय की बात करती है किन्तु पिता द्वारा स्पष्ट मना करने के बाद उसकी यह कामना पूर्ण नहीं होती । इसके फलस्वरूप वह अविवाहित रहने का निर्णय लेते हुए इस रूढ़िबद्ध समाज से प्रतिशोध लेने का संकल्प कर लेती है । इस संकल्प की संपूर्ति हेतु जीवन भर अविवाहित रहती है और नायक राजेन्द्र भी उसी प्रकार के संकल्प से बद्ध हो जाता है । दोनों का अविवाहित रहना सच्चे प्रेम का प्रदर्शन तो है किन्तु इस रूढ़ि बद्ध समाज के लिए यह बहुत बड़ा सन्देश भी है । दोनों एक दूसरे के प्रेमापाश में आबद्ध रहते हैं ।

इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता का वर्णन किया गया है । परम्परा से चली आ रही मान्यताओं को बदलने के लिए लेखक प्रतिबद्ध है । अन्त में लेखक ने इन दो युगलों के माध्यम से समाज के ऊपर विश्वास और मनुष्य की आत्म स्वीकृति को ज्यादा महत्व दिया है । उसके अनुसार शेष चीजें तो मात्र आरोपित और निरर्थक हैं । अकेला मनुष्य समाज को बदल तो नहीं सकता किन्तु समाज को अहसास की सामर्थ्य अवश्य रखता है । इस बात को रचनाकार ने इन दो पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है । निराला के पूरे जीवन वृत्त को सामने रखकर देखने से यह प्रतीत होता है कि वे स्वयं इस प्रकार के बंधनों से पीड़ित थे । अपनी पुत्री सरोज के विवाह के संदर्भ से इस प्रकार की रूढ़िग्रस्तता को उन्होंने अपनी कविताओं में अनेक प्रकार से व्यक्त किया है ।

‘ज्योतिर्मयी’ कहानी विधवा विवाह पर आधारित है । इसमें विजय कुमार अपने बड़े भाई की विधवा साली से वैवाहिक बन्धन स्थापित करना चाहता है किन्तु वह सामाजिक संकोच से ऐसा करने में हिचकिचाता है । यद्यपि उसका बड़ा भाई वीरेन्द्र उसे इस कार्य के लिए प्रोत्साहित करता है और उसे सामाजिक कुरीतियों को तोड़ने के लिए प्रेरित करता है । रचनाकार इस कहानी के माध्यम से यह व्यक्त करना चाहता है कि वह जीवन भर संघर्ष करते हुए लांछित होती रहती है उससे तो अच्छा यह है कि

उसका पुनर्विवाह हो जाए । उससे समाज में व्याप्त अनीतियाँ जहाँ समाप्त होंगी, वहाँ एक असहाय का व्यक्तित्व भी कुंठित होने से बच जाएगा । इसमें रचनाकार अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए ज्योतिर्मयी को समाज के सामने खड़ा करता है । ज्योतिर्मयी को समाज की रूढ़िवादिता को तोड़ देने की अदम्य इच्छा है । वास्तव में वैधव्य समाज के द्वारा एक आरोपित कार्य है जिसे वह पूरी तरह से मिटाना चाहती है । निराला स्वयं कान्यकुब्ज होते हुए भी इन दोनों पात्रों के माध्यम से कान्यकुब्ज समाज की रूढ़िवादिता का भंजित करना चाहते हैं ।

‘कमला’ कहानी के माध्यम से रचनाकार ने एक ऐसे पात्र का सृजन किया है जो अपने विचारों में दृढ़ है । इसमें कमला के माध्यम से एक ऐसे सामाजिक आदर्श को खड़ा किया है जो स्वयं टूटकर दूसरों का घर आबाद करने का कार्य करती है ।

‘श्यामा’ कहानी में एक निम्न जाति की युवती से विवाह कर लेने वाले युवक बंकिम के जीवन चरित्र का वर्णन है । वह अपने अध्यवसाय में जमींदारों को भी परास्त करता है और उनके अत्याचारों का खुलासा भी करता है । यही नहीं वह अपनी शिक्षा-दीक्षा से एक अच्छा पद हासिलकर समाज सेवी के रूप में कार्य करता है । इसके माध्यम से रचनाकार यह कहना चाहता है कि किसी भी कार्य की शुद्धि सत्य से हाती है न कि बड़े-बड़े साधुओं से । एक छोटे से पात्र को जमींदार के सामने रखकर और उससे संघर्ष कराते हुए रचनाकार यह इंगित करना चाहता है कि समाज को लेकर चलने वाला व्यक्ति ही बड़ा होता है न कि पीढ़ियों से समृद्ध हुआ व्यक्ति । इस पात्र के माध्यम से रचनाकार ने लघु मानव के सामर्थ्य का चित्रण किया है ।

‘प्रेमिका-परिचय’ निराला की हास्य व्यंग्य प्रधान कहानी है । कहानीकार ने इसमें प्रेमकुमार नामक युवक की उच्छृंखलता का वर्णन किया है । इसके माध्यम से लेखक समाज में ऐसी मनोवृत्ति के लोगों को हतोत्साहित करता है और स्वस्थ सामाजिक मानसिकता की प्रवृत्ति को प्रश्रय देता है । इसमें वह यह भी संदेश देना

चाहता है कि सामाजिक वातावरण युवकों को कहाँ से कहाँ पहुँचा देता है और उसे सही दिशा में कैसे सन्नद्ध किया जाए, यह कहानी की केन्द्रीय चिन्ता है ।

‘परिवर्तन’ कहानी एक राजा के मिथ्या अहंकार पर आधारित है जो अपने अधीनस्थ व्यक्ति के सामने झुकने की स्थिति पैदा कर देता है । रचनाकार इस कहानी के माध्यम से मिथ्या अहंकार से समाज में होने वाली टूटन को रोकना चाहता है ।

‘हिरनी’ कहानी में एक अनाथ बालिका का चित्रण है । चिदम्बर नामक पात्र एक ऐसी अनाथ बालिका को, जो दो शवों के बीच में बैठी रो रही है, अपने डेरे पर ले आता है । राजा के सुपुर्द कर उसके अस्तित्व की रक्षा करता है । इस कहानी के माध्यम से रचनाकार उपेक्षित लोगों को संरक्षण प्रदान कर उन्हें समाज में पुनः प्रतिष्ठित करने का संदेश देता है ।

‘चतुरी चमार’ कहानी में एक लघु-मानव द्वारा अपनी संतान को आगे बढ़ाने की आकांक्षा व्यक्त की गई है । इसमें कहानीकार ने स्वयं को पुरुष के रूप में रखते हुए एक छोटे से पात्र को आगे बढ़ाने का सत्यप्रयास किया है । निराला सामाजिक उत्थान के लिए वर्गभेद को नहीं मानते और इसे तोड़ने के लिए वे समाज में व्याप्त विभिन्न संदर्भों को अपनी रचना का आधार बनाते हैं ।

‘सखी’ कहानी अन्य पुरुष शैली में लिखी गई कहानी है । इस कहानी के माध्यम से ज्योतिर्मयी द्वारा अपनी सखी लीला के प्रति किए गए कार्यों का वर्णन है, जो स्वयं पतिरूप में प्रस्तावित व्यक्ति से अपनी सखी का विवाह प्रस्तावित करती हैं । इसके माध्यम से निराला समाज में छोटे पात्रों की सृष्टि करने का संदेश देते हैं ।

‘न्याय’ कहानी में राजीव नामक पुरुष पात्र के माध्यम से अन्याय के प्रति क्षोभ और न्याय के प्रति सहानुभूति की बात व्यक्त की है । इसके माध्यम से रचनाकार न्याय का संदेश देता है ।

‘राजा साहब को ठेंगा दिखाया’ कहानी के अंतर्गत विश्वम्भर नामक पात्र के द्वारा समाज में दारिद्र्य पर किए जा रहे प्रहार को चित्रित किया है और इसके दरिद्र पात्रों को महिमान्वित किया गया है गिरे हुए को ऊँचा उठाना यह समाज के सामर्थ्यवान लोगों का काम है इस बात पर निराला ने जोर देते हुए विश्वम्भर को प्रतिष्ठित किया है ।

‘देवी’ शीर्षक कहानी में रचनाकार ने एक ऐसी पगली देवी नामक पात्र की चर्चा की है जो पगली तो है ही पर गूँगी भी है किन्तु उसे समाज की कुरीतियों से बहुत घृणा है और वह इसके प्रति अपनी आक्रोश विभिन्न मुद्राओं द्वारा व्यक्त करती है ।

‘स्वामी सारदानन्द और मैं’ कहानी में निराला का स्वयं के जीवनवृत्त का प्रस्तुतीकरण है । इस कहानी के माध्यम से निराला ने, साहित्य के क्षेत्र में जो संघर्ष झेला, जो उपेक्षा संपादकों और लेखकों से सही, का वर्णन किया है ।

‘सफलता’ कहानी में आभा नामक विधवा के माध्यम से रूढ़िग्रस्त मान्यताओं के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है और इस कहानी में आभा नरेन्द्र नामक पात्र से रूढ़िग्रस्त मान्यताओं का विरोध करने के लिए सहयोग चाहती है । इस कहानी में समाज के ठेकेदारों पर व्यंग्य किया गया है और आभा जैसी विधवा लघु-मानव द्वारा निराला ने समाज परिवर्तन कर कार्य कारया है । नरेन्द्र की जीवन कथा के माध्यम से निराला ने अपने साहित्यिक संघर्ष का संकेत दिया है ।

‘क्या देखा’ कहानी में हीरा नामक वेश्या के उज्ज्वल चरित्र को उजागर किया है और लेखक ने समाज से बहिष्कृत वेश्याओं के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है । रचनाकार ने हीरा को काफी संघर्ष करते हुए, संगीत के माध्यम से अपनी इज्जत बचाते हुए, जीविका निर्वाह करने का उपक्रम बताया है । उ सकी सच्चरित्रता का साक्ष्य उसका वृद्ध उस्ताद है । निराला ने उसे देवी के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए उसके साथ जुड़ी हुई विकट परिस्थितियों का वर्णन किया है । इसमें से रचनाकार ने हीरा के चरित्र को समाज का एक ऐसा चरित्र निरूपित किया है जो विकट परिस्थितियों

में रहते हुए भी अपने चरित्र की रक्षा कर लेती है ।

‘सुकुल की बीवी’ कहानी में एक ऐसी पात्र जिसका नाम पुखराज उर्फ पुष्प कुमारी है जो मूलतः बाजपेयी घराने की लड़की है किन्तु परिस्थितियों के कारण वह मुस्लिम कन्या के रूप में स्वीकृत होती है किन्तु रचनाकार उसे इतना ऊपर उठाता कि वह अपने चरित्र के माध्यम से चोटी धारी प्राचीन पंथी सुकुल को अपने अनुकूल बना लेती है । इस कहानी के माध्यम से रचनाकार वर्गभेद के कारण समाज में जो अनाचार और अत्याचार उत्पन्न होता है उसके माध्यम से कुलीन लोगों को भी विवश होकर निम्नवर्ग में जाना पड़ता है । नारी जीवन की विवशता, उसके प्रति सामाजिक उपेक्षा और धृणा का जो भाव है वह इस कहानी में व्यक्त होता है ।

‘श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी’ कहानी में रचनाकार ने बेमेल विवाह, पातिव्रत्य धर्म के आधार पर व्याप्त आडम्बर, सामाजिक व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है । इसमें कन्या के विवाह का अच्छा सम्मेलन रचनाकार द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

‘कला की रुपरेखा’ कहानी के माध्यम से एक मद्रासी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है जो दीन-हीन होते हुए भी काँग्रेस का स्वयं सेवक है उसकी मुलाकात निराला से अचानक एक सेवादल के कार्यक्रम में होती है और निराला उसकी दीनता पर दुखी होकर उसे अपना स्वयं का चादर दे देते हैं । इस कहानी के माध्यम से निराला ने यह व्यक्त किया है कि एक साधनहीन व्यक्ति भी अपने संगठन में बड़ी निष्ठा से काम करता है ।

किन्तु उसकी ओर उसके संगठन के लोगों का ध्यान नहीं जाता है । इसके माध्यम से निराला ने क्रियाशील व्यक्तियों को संगठन में प्रतिष्ठित किया है ।

निराला ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में लघु व्यक्तियों को प्रतिष्ठित किया है और वह संदेश दिया है कि किसी भी समाज का छोटा से छोटा व्यक्ति भी असंभव को संभव कर सकने की सामर्थ्य रखता है ।

अप्सरा :- 'अप्सरा' उपन्यास में निराला ने तीन पात्रों को केन्द्र में रखकर समाज जागृति के लिए उन्हें प्रेरित किया है। ये पात्र हैं – कनक, राजकुमार और चन्दन। तीनों पात्रों का परिवेश सामाजिक दृष्टि से निम्नवर्गीय है। राजकुमार और चन्दन जहाँ मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं वहीं कनक निम्नवर्गीय समाज से संबंधित है। कनक सर्वेश्वरी नामक वेश्या की पुत्री है फिर भी वह इस जीवन से अलग-अलग हटकर एक कुलवधू बनने की लालसा रखती है।


इसके लिए वह सदैव संघर्ष करती हुई अपने अभीष्ट को प्राप्त करती है। उसने अंग्रेजी की निरंकुशता, जमींदारों के शोषण और नारी पराधीनता को बहुत करीब से देखा है। इसके कारण से उसमें इन सबके प्रति विद्रोह का भाव है और इसके लिए वह राजकुमार वर्मा नामक पात्र का सहयोग प्राप्त करती है। राजकुमार वर्मा और चन्दन ये दोनों बैसवाड़े गाँव के एक साथ पढ़ने वाले पात्र हैं। दोनों में मातृ-भूमि की सेवा की अपूर्व ललक दिखाई पड़ती है। उनकी यह अभिलाषा एक दिन मातृ-भूमि की सेवा के लिए, किए जाने वाले व्रत से पूर्ण होती है। इस व्रत के बाद वे अंग्रेजी शासन के खिलाफ आन्दोलनरत् हो जाते हैं और गिरफ्तार भी होते हैं। राजकुमार वेश्यापुत्री कनक से विवाह करके एक ऐसा बड़ा सामाजिक कार्य करता है जिससे तथाकथित संभ्रान्त समाज एक चुनौती के रूप में स्वीकार करता है मगर कनक की निष्ठा उसकी देश प्रेम की भावना को देखते हुए राजकुमार समाज की परवाह किए बिना उससे वैवाहिक संबंध स्थापित करता है।

इस उपन्यास में निराला जी ने एक साथ दो सामाजिक संभावनाओं पर विचार किया है। पहली समस्या कनक को लेकर है जो पूरी तरह शूचिता सम्पन्न होते हुए भी एक वेश्यापुत्री होने के कारण समाज में अप्रतिष्ठित जीवन जीती है। रचनाकार ऐसे पात्र को भी सामाजिक दृष्टि से ऊपर उठने का अवसर प्रदान करता है। वह यह मानता है कि कनक का वेश्या परिवार में जन्म होना एक सामाजिक दुर्घटना है किन्तु

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection

उसका चरित्र, उसका कार्य, उसकी सोच, देश के प्रति उसकी निष्ठा ये सारे गुण उसे एकलब्ध प्रतिष्ठित मनुष्य से ऊपर उठाती है । लेखक का यहाँ आशय यह है कि किसी बड़े अथवा छोटे समाज में जन्म लेने मात्र से कोई छोटा अथवा बड़ा नहीं होता अपितु उसके छोटे बड़े होने में जो प्रमुख कारक होता है, वह है उसका स्वयं का सामाजिक आचरण । इस सामाजिक आचरण में कनक अपने नाम को चरितार्थ करती है और समाज के लिए एक प्रेरणा बनती है । सामाजिक बन्धन को स्वीकार करने में एक स्वस्थ परम्परा जहाँ भारतीय समाज में सुस्थिर है वहीं उसे और गति देने के लिए राजकुमार जैसे पात्र का होना समाज के लिए आवश्यक है । वह मानता है कि यदि बंधन से स्वस्थ समाज की रचना होती है तो उसे स्वीकार करने में कभी पीछे नहीं रहना चाहिए, किन्तु यदि बंधन तोड़ने से एक स्वस्थ सामाजिक स्थिति का निर्माण होता है तो उससे भी हमें पीछे नहीं हटना चाहिए । इस रूप में राजकुमार और कनक समाज के लिए एक प्रेरक चरित्र के रूप में सिद्ध होते हैं । निराला के सामने बंगाल और पूर्वी उत्तरप्रदेश और खासकर बैसवाड़े का समाज यही समाज उनका इतिहास भी है और भूगोल भी । जहाँ वे भूगोल को तोड़कर बैसवाड़े से ऊपर उठते हैं वही वे ऐसे इतिहास का ध्वंस भी करने की हिमाकत करते हैं जो मनुष्य जीवन का पतनशील इतिहास रहा हो । इस अर्थ में अप्सरा उपन्यास दलितोद्धार का उपन्यास है इसमें दलित चेतना के बीज मन्त्र निहित हैं जो समाज को नई गति एवं मति प्रदान करने में अद्भुत सामर्थ्य रखते हैं । स्वतंत्रता के पूर्व लिखे गए इस उपन्यास में मनुष्य जाति की इतनी बड़ी चिन्ता की गई है जो कि तत्कालीन अन्य लेखकों में उपन्यासों में विरल है । ऐसी सोच निराला जैसे समर्थ और विद्रोही व्यक्तित्व के रचनाकार ही कर सकते हैं ।

अलका :- निराला की दूसरी औपन्यासित कृति 'अलका' में सगाज की ज्वलन्त समस्याओं को उठाया गया है । इसमें आमभूमिका अलका और उसके पति विजय तथा अजित और उसकी पत्नी वीणा की है तथा इसी प्रकार का एक सत्पात्र है



— स्नेहशंकर । इसी क्रम में दो असत् पात्र— मुरलीधर और महादेव प्रसाद हैं । यह पूरा उपन्यास सत् असत् पात्रों के मध्य एक प्रकार की संघर्षगाथा है । महामारी में उपन्यास की मुख्य पात्र अलका के माता-पिता दोनों की मृत्यु हो जाती है और अलका जो कि बाल-विवाह के बंधन में बंधी हुई और अपने पति के सहयोग से दूर थी, वह अपनी रक्षा हेतु घर से निकल पड़ती है । संयोग से स्नेहशंकर जैसा आदर्श पात्र द्वारा उसका लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा पूर्ण होती है । इसमें निराला ने अलका के माध्यम से बाल-विवाह के बंधन में ग्रसित एक ऐसी स्त्री की यातना का वर्णन किया है जो विषम परिस्थितियों में भी बिना हार माने समाज के दुर्दान्त कहे जाने वाले कामुक जमींदार से अपने को बचा सकी । अलका में एक दृढ़ता भी थी जिसके कारण अन्ततः वह अपने प्रतिद्वन्दी जमींदार की हत्या कर सकी । अलका के चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार यह संदेश देना चाहता है कि साधनों के अभाव में भी कोई व्यक्ति दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण अपने जीवन को सुन्दर और सुखमय बना सकता है । पूरी रचना के केन्द्र में एक जो मुख्य बात है वह है—शिक्षा । यदि अलका को शिक्षित होने का संयोग न मिल पाता तो शायद वह जो सत्कार्य कर सकी है वह संभव नहीं था इसी प्रकार से उपन्यास के अन्य पात्र अजित और वीणा तथा स्नेहशंकर का चरित्र अनुकरणीय है ।

निरुपमा :- निरुपमा 'निराला' की चौथी औपन्यासिक कृति है । निरुपमा में लेखक ने निरुपमा, नायक कृष्णकुमार की माँ सावित्री देवी और सहनायिका के रूप में कमल को केन्द्र में रखकर उपन्यास की रचना की है । लन्दन से डी.लिट् करने के पश्चात् भी कुमार जूता पालिश करने को बाध्य है । लेखक ने श्रम का एक नया दृष्टांतरण प्रस्तुत किया है । रचनाकार द्वारा शिक्षा संस्थाओं में भी होने वाले उच्च स्तरीय पक्षपात, शिक्षित युवकों की बेरोजगारी को चित्रित किया गया है । निरुपमा भारतीय आदर्शों से मण्डित है । वह शिक्षा, ज्ञान और विवेक से सम्पन्न है । मामा के

आश्रय में पहने वाली, अपनी इच्छा और अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए मामा पर आश्रित है किन्तु धीरे-धीरे इस युवती में परिस्थितियाँ परिवर्तन लाती है। वह दृढ़ता एवं आत्मविश्वास के साथ स्वयं के बारे में समर्थवान है। वह कुमार के साथ विवाह करने के लिए तैयार होकर समाज के प्रचलित विश्वासों को चुनौती देती है। कुमार समाज से ही लड़कर अपितु संस्कारों से भी लड़ने का अदम्य साहस रखता है। ब्राह्मण कुल का और सुशिक्षित होने पर भी वह चमार का काम खुले समाज में करता है। कुमार की माँ सावित्री देवी विधवा है किन्तु शिक्षा की शक्ति से ही भूखजड़ समाज की जड़ता से लड़ती है। जमींदार के अत्याचार सहती हुई वह टूटती नहीं है। खेत व मकान गिरवी रखकर वह बेटे को शिक्षित होने के लिए विलायत भेजती है। पालिश का धन्धा करने पर लज्जित नहीं होती है। कमल एक आधुनिक व्यक्तित्व की स्त्री पात्र है। वस्तुतः निरुपमा उतनी जागरूक और क्रियाशील नहीं है जितनी कमल। निराला ने कमल जैसे पात्रों को उपन्यास में रखकर यह साबित किया है कि कमल जैसी लड़कियाँ सभी हो जाँय तो इस गलित कुष्ठ समाज का उद्धार हो सके। जिन लोगों द्वारा कुमार का जातीय बहिष्कार हुआ था, निरुपमा से विवाह करने के पश्चात् उसका स्तर बदल जाने से उसका जातीय बहिष्कार का कारण भी बदल देते हैं – “राजा से कोई बैर करता है।”

इस उपन्यास में रचनाकार का मुख्य प्रतिपाद्य यह रहा है कि ध्येय-निष्ठा ही मनुष्य को उसके लक्ष्य तक ले जाती है न कि बड़े बड़े संसाधन। यही कारण है कि रचनाकार एक लघुमानव को, जो दो वक्त ठीक से भोजन भी नहीं कर सकता, उसे उच्च शिक्षा के लिए विलायत भेजता है। उसकी यही भावना उन्नति का मूलाधार बनती है। निराला में भोगे हुए सच को वाणी देने की अद्भुत क्षमता है जो इस उपन्यास के पात्रों द्वारा स्वयं सिद्ध है। आज सत्ता की ऊँची-ऊँची घोषणाएँ शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य नहीं कर सकीं हैं उसे रचनाकार इन पात्रों के माध्यम से सफलता पूर्वक विवेचित



करता है ।

कुल्ली - भाट :- 'कुल्ली भाट' निराला की सर्वाधिक चर्चित कथा कृति है 'कुल्ली-भाट' में कुल्लीभाट के साथ-साथ निराला के जीवन के संघर्षों की विस्तृत झाँकी है । 'कुल्ली-भाट' रचना के कुल्ली का जीवन और निराला की आत्मकथा कहा जा सकता है ।

कुल्ली समाज के व्यंग्य विद्रूप की चिन्ता न कर ऐसा काम करते हैं जिसे उनकी अन्तर्चेतना स्वीकार करे और जो समाज के लिए कल्याणकारी हो । रचनाकार के अनुसार शिक्षित और धनी व्यक्ति उतनी समाज सेवा नहीं कर सकता जितनी कुल्ली ने की निर्धन और अल्पशिक्षित होने पर भी कुल्ली पाठशाला खोलकर समाज में अछूत समझे जाने वाले वर्ग के धोबी, भंगी, चमार, डोम और पासियों के बच्चों को पढ़ाते हैं । कुल्ली के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है दूसरे के दोषों को अपने सिर ले लेना, दूसरे के प्रति सहिष्णु होना । कुल्ली में वह चिन्तन और विचारशीलता है जो उच्चशिक्षित व्यक्तियों में भी कम होती है । कुल्ली स्पष्टवादी हैं, छली-कपटी नहीं हैं । वे स्वरुछन्द प्रेम पर विश्वास करते हैं ।

कुल्ली - भाट में कुल्ली का जीवन ही नहीं है, उसमें एक ऐसा व्यंग्य भी निहित है जो लोगों को झकझोर देता है । रचनाकार ने समाज में ऊँचे समझे जाने वाले लोगों को कुल्ली के समक्ष रख - व्यंग्य कि है, समाज में व्याप्त ढोंग को उजागर किया है । जिसमें मनुष्य-मनुष्य में भेद-भाव, ऊँच नीच के भाव व्याप्त हैं । उच्चवर्ग के प्रति असहिष्णु और निर्दयी है । अछूत उत्पीडन और उपेक्षा के शिकार है । व्यंग्य के अतिरिक्त इस कृति में विद्रोह क्रांति की भावनाएँ भी प्रकट हुई हैं ।

कुल्ली-भाट के अन्दर सोती हुई मानवता जग जाने पर उसकी रक्षा के लिए कुल्ली भाट धैर्य और दृढ़ता से संघर्ष करते हैं, विरोधी सारा समाज एक ओर है, और दूसरी ओर अकेले कुल्ली । केवल निराला जी ने उनकी यथाशक्ति सहायता की ।

इस विषय पर अधिक जानकारी के लिये आप निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

इस विषय पर अधिक जानकारी के लिये आप निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

पुस्तकें के लेखकों के नामों के माध्यम से आप-आप के सम्पर्क

में सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी आपको निम्न - उक्त - लिखित

अन्त में संघर्ष से जर्जर, ढोंगी बड़े नेताओं से उपेक्षित कुल्ली दिवंगत हुए ।

इस उपन्यास में रचनाकार ने कुल्ली द्वारा जिस प्रकार की समाज-सेवा की बातों का संकेत किया है, वह अपूर्व है । कुल्ली भाट एक छोटे से सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हुए भी शिक्षा और समाज की बेहतरी के लिए आजीवन अथक श्रम करता है और इस कार्य में वह अन्त तक अपने को नियोजित करते हुए अपने स्वयं का विसर्जन कर देता है । अपने सर्वाधिक चर्चित उपन्यास में निराला ने कुल्ली के द्वारा जो कार्य सम्पन्न कराया है वह बहुत ही दुर्लक्ष्य था ।

कारण कि कम पढ़ा लिखा मानव होने के बाद भी वह शिक्षा के प्रति जो बहुत सजग रहा, वही उसकी सर्वाधिक देन कही जा सकती है ।

चमेली :—यह निराला का अधूरा उपन्यास है । इसके कुछ अंश 'रूपाभ' में प्रकाशित हैं । इस उपन्यास में लेखक के तेवर कुछ अधिक तीखे, स्पष्ट और स्पष्टवादी हैं । अन्य उपन्यासों में किसान जमींदार और पुलिस के अन्याय को सहते हुए, समझौता करते हुए अपने भाग्य को कोसते या मौन प्रतिवाद करते हुए मिलेंगे किन्तु इस उपन्यास में लेखन ने संगठन पर बल दिया है, संगठित विद्रोह का स्वर मुखरित हुआ है । विद्रोह और बगावत के शंखनाद की तैयारी मिलती है । नई पीढ़ी शोषकों को चुनौती देने का कटिबद्ध है, वे कहने लगे हैं — पूर्वज सहते आए हैं, हम न सहेंगे । 'चमेली का पिता जमींदार की प्रत्येक उचित अनुचित बात मानने का, आज्ञा पालन का अम्यस्त है, वह पीटा जाता रहा । जमींदार बख्तावर सिंह व्यभिचारी है । उसकी कुदृष्टि चमेली पर है । चमेली शूद्र जाति की सुन्दर विधवा युवती है । दूसरी ओर लेखक ने एक ब्राह्मण परिवार को इस उपन्यास में रखा है । पं. शिराम दत्त ब्राह्मण हैं उनका समस्त परिवार आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबा है । छोटे भाई की विधवा पत्नी और पं. जी की विधवा बहिन दोनों स्वेच्छाचारिणी हैं । सभी स्वतंत्र हैं, विलासिता में डूबे हुए । चमेली की जाति में विधवा विवाह का प्रचलन है । महादेव और चमेली विवाह कर लेते

हैं चमेली जो जाति से शूद्र होकर भी अपनी चारित्रिक दृढ़कता से सम्मानित जीवन जीती है, दूसरी ओर पण्डित के परिवार की स्त्रियाँ हैं जो व्याभिचारी ।

उपन्यासकार ने अपने इस स्त्री प्रधान अधूरे उपन्यास में चमेली के माध्यम से सामाजिक जीवन में वैवाहिक संबंधों की पावनता पर जो प्रकाश डाला है वह अत्यन्त यथार्थपरक और हृदयस्पर्शी है । चमेली की भाव निष्ठार और अन्त तक उसका परिपालन करना ही उपन्यास का केन्द्रीय लक्ष्य रहा है । यद्यपि यह एक अधूरा उपन्यास है फिर भी जहाँ तक कथा पर प्रकाश पड़ता है वहाँ तक चमेली जैसे लघुमानव को बहुत गौरव के साथ सुस्थापित किया है ।

काले कारनामों :- 'काले कारनामों' उपन्यास में निराला जी ने पुलिस और जमींदारों के भ्रष्ट रवैये से गाँव वालों पर होने वाले अत्याचारों और शोषण का यथार्थ चित्रण किया है । इस उपन्यास में राजपुर गाँव के स्वावलम्बी और आत्मसम्मानी मनोहर और रामसिंह के उत्पीड़न की व्यथा-कथा और जमींदारों के काले कारनामों का चित्रण है । मनोहर ब्राह्मण है और राम सिंह क्षत्रिय । मनोहर कुश्ती का शौकीन है । रामसिंह रामराखन मनोहर के फूफा हैं । रामराखन को मनोहर का रामसिंह का शिष्यत्व अप्रिय है । रामसिंह से घृणाभाव रखता है । एक पात्र है माधव मिश्र जो अत्यन्त गवक्कार है । पड़ोसी जमींदार यमुना प्रसाद, माधव मिश्र का विचार बदल जाता है । रचनाकार ने मनोहर जैसे पात्रों द्वारा जात-पात का भेद-भाव मिटाना चाहा । मनोहर स्वाभिमानी और परिश्रमी है वह गाँव की परिस्थिति अनुकूल न देखकर काशी में निर्धनों और दलितों के बालकों के शिक्षा कार्य में लग जाता है । सद्गुणों के कारण गाँव में सम्मानित है । यह निराला का यथार्थवादी उपन्यास है, लेखक ने इसमें गाँव के अखाड़े से लेकर जमींदार की चौपाल, पुलिस के कारनामों और उचक्कों का अथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है ।

विवेच्य उपन्यास में दलित चेतना पर प्रकाश डाला गया है । निराला हिन्दी

के ऐसे पहले रचनाकार हैं जिन्होंने दलित चेतना पर विस्तार से प्रकाश डाला है । मनोहर के माध्यम से वे दलित पात्र द्वारा जो सामाजिक प्रतिष्ठा का कार्य सम्पादित कराते हैं , वह दलितों के प्रति उनकी सहानुभूति को उजागर करता है । मनेहर कम पढ़ा-लिखा होकर भी अपनी और समाज के अन्य लोगों की शिक्षा पर चिन्ता करता है और उसे आगे बढ़ाने का पक्षधर है । उसकी अपनी यह निजी सोच है कि दलित भावना से मुक्त कराने का एक ही महामंत्र है – शिक्षा! इसलिए शिक्षा को गौरव प्रदान करता है यह उपन्यास निराला की यथार्थ परक दृष्टि पर प्रकाश डालता है । इसमें रचनाकार सच को सच के ढंग से रहने का उपक्रम छोटे-छोटे पात्रों के माध्यम से करता हुआ दिखाई पड़ता है ।

चोटी की पकड़ :- 'चोटी की पकड़' निराला का एक मात्र ऐसा उपन्यास है जो स्वदेशी आन्दोलन पर आधारित है । युगचेतना से सम्पृक्त होना रचनाकार का स्वभाव भी है और कमजोरी भी । स्वभाव इसलिए कि युग की चेतना रचनाकार पर बार-बार मानसिक दबाव बनाती है और मकजारी इसलिए कि वह समसामयिक इजिहास से अपने को जोड़कर आद्यतन बने रखने में आकांक्षा रखता है, इस उपन्यास में कुछ ऐसा ही है । बंगाल में चल रहे स्वदेशी आन्दोलन से अपने को जोड़ना और अपने समय के इजिहास को सही समाधान प्रस्तुत करना निराला की अपनी केन्द्रीय सोच थी । इसीलिए उन्होंने इस उपन्यास को स्वामी विवेकानन्द की पुण्य स्मृति में समर्पित किया और उसे पूरे आन्दोलन के रूप में लेने के लिए चार खण्डों में करने की योजना बनाई । इस दृष्टि से बंगाल की भूमि बड़ी उर्वरक मानी जाती है और ऐसे समय में लेखक का मौन रहना संभव नहीं है ।

मुन्नबाँदी को स्वदेशी आन्दोलन में जोड़ना और ऐसे ही पात्रों को इसमें एकत्र कर आन्दोलन को आगे बढ़ाने में रचनाकार के नित नए आयाम बहुत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं । मुन्नाबाँदी नामक पात्र द्वारा रानी को भी इस कार्य में जोड़ देना



रचनाकार की सबसे बड़ी सफलता है कारण कि मुन्नाबाँदी जैसे लघुमानव की पकड़ रानी जैसे चोटी के लोगों को होगी, यह निराला जैसे समर्थ रचनाकार की सोच पर ही निर्भर था । मुन्नाबाँदी से रानी का प्रभावित होना उसकी मनस्विता और सामाजिक सेवा ही कारण बनती है । जहाँ सामान्त लोग पूरी तरह से देशी आन्दोलनों के विरोध में थे वहाँ उनको इस कार्य में जोड़ना यह रचनाकार की बहुत बड़ी सोच है । यहाँ तक कि स्वदेशी आन्दोलन के कार्य में एजाज(वेश्या) को भी लगा दिया जाता है । इस पूरे उपन्यास में एजाज और मुन्नाबाँदी दो ऐसे महत्वपूर्ण लघुमानव हैं जो अपनी स्थिति और परिस्थिति से बहुत आगे बढ़कर इतने बड़े सामाजिक कार्य को अपनी सेवाएँ देते हैं । निराला के आलोचक उन पर प्रायः यह आक्षेप लगाते हैं कि निराला स्वतंत्रता आन्दोलन के संदर्भ से बिलकुल मौन हैं जब कि वास्तविकता यह है कि यह पूरी रचना ही इसी प्रकार के आन्दोलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है । इस संदर्भ में निराला स्वदेशी आन्दोलन पर लिख रहे अन्य रचनाकारों से अपनी अलग पहिचान बनाते हैं । उसका कारण है कि अन्य रचनाकार इस विषय में बड़े-बड़े पात्रों को जोड़कर योजना को गति देते हैं जबकि निराला ने लघुमानवों को केन्द्र में रखकर देशी आन्दोलनों को आगे बढ़ाया है ।

बिल्लेसुर बकरिहा:- बिल्लेसुर एक ऐसा युवक है जो संघर्षों से जूझने का आदी है । अनपढ़ होने के पश्चात् भी जागरूक है और अपनी सतर्कता के कारण वह जीवन में सदैव सफल होते हैं । लेखक द्वारा गाँव के एक दरिद्र, गरीब, श्रमशिल, एकाकी, कर्मठ निन्दा और स्तुति से तटस्थ, दृढ़ निश्चयी, अपने सुख-दुख का एकान्त साक्षी, आत्मविश्वासी युवक को जीवन गाथा, हास्य और करुणा के सूत्रों में बुनी गई है । बाल्यावस्था में ही माता-पिता का निधन हो जाता है ।

चार भाई है तीनों बड़े भाई किसी ने विधवा से, किसी ने गन्धर्व, किसी ने बाल विवाह कर गाँव से पलायन कर गए । बिल्लेसुर के लिए निराला लिखते हैं -

“इसमें बिल औद ईश्वर दोनों के भाव साथ-साथ रहे” ।

इस उपन्यास में निराला ने लघुमानव की द्विस्तरीय प्रस्तुति की है । एक स्तर है-सामाजिक । दूसरा स्तर है - क्षेत्रीय एवं वैयक्तिक । बिल्लेसुर, लघुमानव जो कि पढ़ा-लिखा तो नहीं है किन्तु काफी समझ रखने वाला पात्र है । उसकी समझ इस बात से चरितार्थ होती है जब बकरी का धन्धा करने के कारण गाँव वाले उसे बँकरिहा कहकर चिढ़ाने लगे, तब वह गाँव वालों के नाम से अपनी बकरियों को बुलाने लगा । बात बहुत छोटी सी है मगर इसमें समझ की गहराई बहुत अधिक है - वह इस रूप में कि उसमें किसी से प्रतिशोध की सामर्थ्य तो नहीं थी किन्तु प्रतिशोध लेना चाहता था इसलिए उसने बड़ी समझ से नामों की स्वायत्ता का उपयोग करते हुए मनुष्य के नामों को जानवरों के साथ जोड़कर यह प्रतीत कराना चाहा कि तुम लोगों में इन जानवरों की जैसी कोई सामाजिक इयत्ता नहीं, इनका कोई स्वर नहीं है और न ही इनमें प्रतिशोध अथवा आक्रमण की क्षमता है वैसे ही तुम लोग हो । इस व्यैक्तिक स्तर में प्रतिशोध के साथ-साथ वह समाज की रूढ़ियों पर बजाघात करता है और इस काम में अपने शेष तीन भाईयों का भी किसी न किसी रूप में जोड़ता है । ये सभी विधवा विवाह और अन्य सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफास केवल ज़बान से नहीं करते अपितु आचरण में उतारते हैं । इन लोगों ने स्वयं इस प्रकार के विवाह किए और समाज को एक प्रकार से यह संकेत दिया कि क्रांति या सामाजिक परिवर्तन केवल तथा कथित बड़े लोगों की ही बपौती नहीं है अपितु इसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की समान साझेदारी है ।



अध्याय-चतुर्थ

कहानियों में चित्रित लघुमानव और उसका स्वरूप

विष्णु-पञ्चक

महाभारत पञ्चमी १५ अश्विनी
महाराष्ट्र काठमाडौं

अध्याय-चतुर्थ

कहानियों में चित्रित लघुमानव और उसका स्वरूप

4.0 प्रस्तुत अध्याय का मुख्य विवेच्य पक्ष है—निराला की कहानियों में निहित लघु मानव के स्वरूप का विश्लेषण। निराला के कुल तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हैं—लिली, चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, इनमें से प्रथम और द्वितीय में आठ-आठ कहानियाँ और तृतीय में चार कहानियाँ हैं। इसके अतिरिक्त एक अधूरी कहानी है। इस प्रकार कुल इक्कीस कहानियाँ प्राप्त होती हैं। इन कहानियों में आगत लघु मानव का स्वरूप बहुआयामी है। वह इस अर्थ में कि उपन्यास की तुलना में कहानियों में आगत पात्रों का तेवर अधिक उग्र दिखाई पड़ता है। उपन्यास में जहाँ पात्र बिखरे हुए संदर्भों में आते हैं वहाँ कहानियों में पात्र कथा फलक सीमित होने के कारण अधिक सघन हैं। लघु मानव की आवधारणा को लेकर वे एक विराट यात्रा पर निकलते हैं और उस यात्रा के उनके मुख्यतः दो पड़ाव हैं—एक है उपन्यास साहित्य का और दूसरा कहानी। उपन्यास की चर्चा अगले अध्याय में की जाएगी। इसलिए वहाँ केवल कहानी के संदर्भ में लघुमानव के स्वरूप पर क्रमशः प्रकाश डाला जाएगा।

4.1 लिली:— यह कहानी लघु मानव के ऐसे स्वरूप को व्यक्त करती है जो मनुष्य की तमाम कुण्ठाओं से ऊपर उठकर एक उदात्त चरित्र की सृष्टि करते हैं। कहानी के ऐसे ही दो पात्र हैं— पद्मा और राजेन्द्र। इस कहानी के मध्यम से रचनाकार का जो मूल चिन्त्य पक्ष स्पष्ट होता है वह यह कि समाज जातीय बंधनों में इतना जकड़ा हुआ है कि उसके आगे वह मानव संवेदन को भी तिरस्कृत कर देता है। पद्मा बाह्यण परिवार की कन्या है और राजेन्द्र क्षत्रिय परिवार का। दोनों एक दूसरे के बहुत पास होते हुए

भी इस जातीय बंधन के कारण इतने दूर छिटक जाते हैं कि पूरे जीवन रिश्ते में नहीं बंध पाते हैं । यहाँ दो प्रकार की सत्ताएँ गतिशील हैं । एक है—मनुष्य के संवेदन की सत्ता और दूसरा—सामाजिक सत्ता । समाज का अंग होने के कारण मनुष्य सामाजिक सत्ता की अवहेलना करके तो नहीं रह सकता किन्तु यदि वह उसे गलत मानता है तो उसके प्रति विद्रोह करने का उसे पूरा अधिकार है । पद्मा और राजेन्द्र इसके मूर्त उदाहरण हैं । सामाजिक सत्ता से वे दोनों परस्पर दूर रहते हुए भी संवेदनात्मक सत्ता में वे परस्पर बहुत पास हैं । इसके माध्यम से रचनाकार समाज की विडम्बना पर कुठाराघात करना चाहता है, जो इन दोनों को परिणय—सूत्र में बाँधने से रोकती है । पद्मा के पिता के विचार “यह एक दूसरा फसाद खड़ा हुआ । न तो कुछ कहते बनता है, न करते । मैं कौम की भलाई चाहता था, अब खुद ही नकटों का सरताज हो रहा हूँ । हम लोगों में अभी तक यह बात न थी कि ब्राह्मण की लड़की का किसी क्षत्रिय के लड़के से विवाह होता । हाँ ऊँचे कुल की लड़कियाँ ब्राह्मणों के नीचे कुलों में गई हैं लेकिन यह सब आखिर कौम ही में हुआ है ।”¹ निराला इन औपचारिक सामाजिक बंधनों को शिथिल कर केवल संवेदनात्मक संबंधों के स्तर को ही दृढ़ करना चाहते हैं । यही इस कहानी का कथ्य है और सत्य भी ।”

4.2 ज्योतिर्मयी:— यह कहानी विधवा विवाह की समस्या को केन्द्र में रखकर लिखी गई है । निराला जिस समाज के प्रतिनिधि हैं उस समाज में विधवाओं की स्थिति इतनी दयनीय थी कि रचनाकार ने इस समस्या को अपनी कहानी में केन्द्रीय महत्व के साथ उजागर किया । निराला पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति से बहुत क्षुब्ध थे । वे विधवा—विवाह को पुनर्प्रतिष्ठित करना चाहते थे । इसके लिए वे ज्योतिर्मयी जैसी पात्रा की सृष्टि करते हैं । ज्योतिर्मयी विधवा है किन्तु उसकी चेतना सामाजिक सरोकार के प्रति पूरी तरह से जाग्रत है । वह अन्य विधवाओं की तरह नाटकीय यातनाओं को सहते

हुए जीवन यापन नहीं करना चाहती अपितु अपने जीवन को पुनः सुव्यवस्थित करने के लिए विवाह के पक्ष में हैं। निराला इस कार्य के लिए विजय कुमार जैसे पात्र को खड़ा करते हैं जो विधवा से विवाह के लिए अपना मानस तैयार करता है। इस कार्य के लिए उसका बड़ा भाई वीरेन्द्र भी उसे प्रेरित करता है जैसा कि वह कहता है—‘तो सारांश यह कि तुम उस पावन-मूर्ति अबला का जिसने तुम्हें बढ़कर थाम लिया, मित्र समझकर गुप्त हृदय की व्यथा प्रकट कर दी, उस देवी का समाज के पंक से उद्धार नहीं कर सकते।’¹ आगे भी विजय कहता है—‘दिल के तुम कमजोर हो? नष्ट होते हुए एक समाज क्लिष्ट जीवन का उद्धार तुम नहीं कर सकते विजय तुम्हारी शिक्षा क्या तुम्हें पुरानी राह का सीधा-साधा एक लद्दू बैल करने के लिए हुई है।’² निराला के कथा साहित्य में वीरेन्द्र जैसे पुरुषों की प्रचुरता है जो समाज की रूढ़ियों की अवहेलना कर स्वतंत्र मार्ग अपनाते हैं।

4.3 कमला :- ‘कमला’ शीर्षक कहानी में रचनाकार ने समाज के विघ्न संतोषी चरित्रों की चर्चा की है। इसमें कहानीकार ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि भारतीय समाज में आज भी ऐसे लोग हैं जिनके कारण सीधे-सादे और बेकसूर लोगों का घर तबाह हो जाता है। कमला जो कि समझदार, शालीन और सुसंस्कृत परिवार की लड़की थी जिसको भैयाचारों की ईर्ष्या का शिकार होना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि विवाहित होने के बाद भी उसे परित्यक्ता की तरह समाज में रहना पड़ा इससे कमला टूट तो सकती थी किन्तु अपने आत्मबल और स्वाभिमान के कारण वह टूटी नहीं और जीवन संघर्ष करते हुए अपनी जीविका का निर्वाह करती रही। समाज में ऐसा कभी न हो यह संदेश कहानीकार कमला के माध्यम से देना चाहता है। साथ ही यह भी संदेश देता है कि आँख से देखी हुई और कान से सुनी हुई बातें भी विश्वसनीय नहीं हो सकती

1. लिली- ज्योतिर्मयी – निराला पृष्ठ-28

2 लिली – ज्योतिर्मयी – निराला पृष्ठ-27

जब तक उनका आत्मालोचन न कर लिया जाए। यदि कमला का पति रमाशंकर भैयाचारों की बात पर विश्वास न करके वस्तुस्थिति का गहराई से पता लगाता तो शायद कमला को इस तरह भुगतना न पड़ता। यह कहानी यह भी इंगित करती है कि सामाजिक स्तर पर खड़े किए गए अफवाह किस प्रकार से परिवार को नष्ट किया करते हैं। इसमें कमला जैसे पात्र को केन्द्र में रखकर कहानीकार शेष पात्रों को परिधि में रखता है और परिधीय पात्रों की कमियों को उजागर करता है। कहानी में यथार्थ बोध और उसमें आने वाले जीवन्त संवेगों का बहुत सुन्दर वर्णन हुआ है जैसा कि कमला के संदर्भ में कहा गया है—“अभी पति केवल ध्यान का विषय है, ज्ञान का नहीं। अभी सिर्फ सुनती-सोचती और मन ही मन प्यार करती है।”¹ इसी प्रकार कमला के आत्मलीन होने के संदर्भ में कहानीकार ने सुन्दर आत्माभिव्यक्ति की है—“अब उसे कोई इच्छा नहीं, उसके प्राणों में कोई रंग नहीं है केवल तपस्या, जिस पर एक हिन्दू महिला विश्वास की डोर पकड़े हुए अपना कुल जीवन निछावर कर देती है।”²

4.4 श्यामा:— ‘श्यामा’ कहानी लघु-मानव के चरित्रांकन की आधारशिला है। जमींदार पुत्र बंकिम से उसका विवाह हो जाना समाज को और उसके पिता दयाराम को अनुकूल नहीं लगता है। श्यामा निम्न वर्ग की कन्या थी किन्तु अपने सौजन्य और आत्मीयभाव के कारण एक उच्च कुलीन पुरुष की गृहणी होने का सौभाग्य प्राप्त करती है। श्यामा और बंकिमचन्द्र दोनों समाज की परवाह न करते हुए आर्य समाज के माध्यम से परिणय सूत्र में बँधते हैं और कहानीकार उनके माध्यम से यह संदेश देना चाहता है कि विवाह का आधार जाति नहीं अपितु भावनात्मक संबंध और आत्मीयता का पक्ष होता है, यह कारण है कि बंकिम पूरी कहानी में एक प्रगतिशील नायक के रूप में सामने आता है जो तमाम सामाजिक बंधनों, यहाँ तक कि अपने धन सम्पन्न पिता की सम्पत्ति की भी

1. लिली – कमला – निराला पृष्ठ-35

2. लिली – कमला – निराला पृष्ठ-43

बिना परवाह किए श्यामा के चरित्रगत महत्व को समझता है और उसे स्वीकार करता है । कहानीकार इसके माध्यम से यह भी संदेश देता है कि समाज को निरन्तर गतिशील बनाया जाने के लिए सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार करना आवश्यक है । श्यामा और बंकिम दोनों इसके विधायक तत्व हैं । इसमें जमींदारी के समय में होने वाली जनता के प्रति ज्यादाती का बहुत मार्मिक वर्णन हुआ है। 'महाराज, आठ रुपये बीघे के हिसाब से जमींदार दयाराम ने तीन बीघे खेत दिए थे। मैंने कई साल तक खेतों को खूब बनाया, खाद छोड़ी जब खेत कुछ देने लगे, तब परसाल इन्होंने बेदखल कर दिया।''¹

गरीब की दुनियाँ इतनी लाचार और विवशता की होती है कि वह पूरे संसार में मनुष्य की बिरादरी से ऐसा कर जाता है कि उसे तिलभर छॉह नहीं मिलती जिसके कारण उसे वह सब कुछ भी करना पड़ता है जिसके लिए वह शायद कभी स्वप्न में भी सोचे नहीं रहता है—'पैरों की तरफ श्यामा ने पकड़ा, सिर की तरफ बंकिम ने। मौन कपोलों से बह-बहकर श्यामा के आँसू पिता के चरणों को धो रहे थे । दोनों ने लाश को नया कफन पहना ढककर गड्ढे में रख दिया।''² इस उद्धरण को पढ़कर पाठकों को सहज विश्वास भले न हो किन्तु समाज में ऐसा भी होता है। यह इस कहानी का मूल कथ्य एवं सत्य है।

2.5 अर्थ :- 'अर्थ' कहानी एक धर्म परायण बालक की कहानी है जो धार्मिक आस्था के कारण अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण नहीं करता और उसमें सन्यास भाव जाग्रत होता है इसके कारण से वह जो कुछ भी धन उपलब्ध था उसे लेकर चित्रकूट जाता है। पैसा समाप्त होने पर वह मजदूरी करता है किन्तु बाद में उसका विवेक जाग्रत होता है और उपन्यास लेखन के माध्यम से वह धन एकत्र करता है। इस प्रकार अपनी आर्थिक स्थिति ठीक कर वह एक बुद्धिजीवी बनकर समाज में प्रतिष्ठित होता है । इस कहानी के माध्यम

1. लिली - श्यामा - निराला पृष्ठ-65

1. लिली - श्यामा - निराला पृष्ठ-80

से लेखक यह कहना चाहता है कि छोटे से छोटा व्यक्ति भी अपनी बुद्धि के बल से असंभव को संभव कर सकता है। राजकुमार एक ऐसा ही पात्र है जो एक लघुमानव होकर विद्या बल के साथ सुख पूर्वक जीवन यापन करता है। राजकुमार ऐसे भटकते हुए युवकों का प्रेरणास्त्रोत है। अन्त में वह एक प्रेस के साथ जुड़कर अपने जीवन के निर्वाह करता है। इस संदर्भ में यह कहना होगा कि वह कभी झुका नहीं और न ही लोकनिन्दा की परवाह की—‘कैसा बेवकूफ है। पढ़ा लिखा है, कहीं नौकरी या रोजगार नहीं करता, रामायण लिए चार-चार घंटे मंदिर में बडबड़ाया करता है।’¹ यही नहीं उसको अन्त में जो भी सफलता मिलती है उसके लिए वह ईश्वर की अनुकम्पा ही मानता है और इससे उसकी भगवान के प्रति आस्था की धारणा पुष्ट होती है। उसके अनुसार तो ‘ईश्वर ही अर्थ है, वह जिस भक्त पर कृपा करते हैं, उसमें सूक्ष्म अर्थ बनकर रहते हैं जिससे वह स्थूल अर्थ पैदा करता है।’²

4.6 प्रेमिका-परिचय :- ‘प्रेमिका-परिचय’ कहानी प्रेमकुमार नामक पात्र के जीवन पर आधारित है। सुख-सुविधा सम्पन्न घर का यह किशोर प्रेम के झूठे स्वांग में पड़कर अपना समय अनपेक्षित कार्यों में लगाता है जैसा कि कहानीकार ने लिखा है—“बाल और चेहरे के रंग में बहुत थोड़ा सा फर्क है। तेल, साबुन, पाउडर और सेफ्टीरेजर की दैनिक रगड़ से मुँह का तो मैल छूट गया है, पर चमड़े का स्याह रंग वार्निशशुदा बूट की तरह और चमकीला हो गया है। काले रंग पर पावडर की सफेदी देखने वालों की आँखों में गजब ढाती है”³ वह इसके लिए अपने मित्र शंकर को सन्नद्ध करता है। शंकर उसे आगाह करता है जैसा कि रचनाकार ने लिखा है—‘सुयोग्य पुत्र पिता की ही तरह धर्म की रक्षा में जितना पटु, खर्च में उतना ही कटु है। पीछे पूँछ सी मोटी चोटी...’⁴ शंकर पर

1. लिली – अर्थ – निराला पृष्ठ-89

2. लिली – अर्थ – निराला पृष्ठ-107

3. लिली – प्रेमिका परिचय – निराला पृष्ठ-114

4. लिली – प्रेमिका परिचय – निराला पृष्ठ-110

प्रेमकुमार के स्वप्निल प्रेम प्रसंग का कोई असर नहीं पड़ता। इसके कारण वह अपने को जरा भी न बदल सका जैसा कि कहानीकार ने लिखा है—“तुम जरा यह बाह्यणों की पोंगापंथी छोड़ो, तो कुछ दिनों में तुम्हें आदमियों से मिलने लायक बना दूँ”¹ शंकर ने प्रेमकुमार के साथ अपने फर्ज का निर्वाह किया है। वह उसे आगाह भी करता है। इस कहानी में शंकर एक लघु मानव की भूमिका में कार्य करता है और अपने भटके हुए मित्र को रास्ते पर ले आने का प्रयत्न करता है। शंकर की बौद्धिक चेतना और धर्म सत्ता प्रेमकुमार को इस स्वप्निल प्रेम प्रसंग को निरर्थकता का अहसास करा देती है। कुल मिलाकर शंकर समाज का एक प्रेरणास्पद पात्र के रूप में इस कहानी के माध्यम से हमारे सामने आता है जो अपनी अहमियत से एक भटके हुए युवक को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करता है।

4.7 परिवर्तन:— ‘परिवर्तन’ कहानी मिथ्या अहंकार पर आधारित है। राजा महेश्वर सिंह के चरित्र पर आधारित यह कहानी राजा महाराजाओं के कुकृत्यों का पर्दाफास करती है। शत्रुधनसिंह के इस कथन से उनका अहंकार प्रकट होता है—“जैसी आपकी लड़की है हमने वैसा ही विवाह कराया है। अतीत के दुर्व्यवहार का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि हम शत्रुओं से पीड़ित हो, अपने राज्य से पलायन कर तुम्हारी शरण में पुत्री को लेकर आए थे। समय बदला, पुत्र को राजगद्दी मिली। अब तुम और तुम्हारी रक्षिता सात दिन तक जूते उठाए तब हम तुम्हारी पुत्री को पुत्री मानकर क्षमा करेंगे”² इस कहानी में प्रधान पंडित जो बुद्धि सम्पन्न होते हुए भी राजा के आगे एक लघु मानव की भूमिका अदा करता है, के माध्यम से कहानीकार ने जो स्पष्ट निर्देश दिलवाया है वह समाज के लिए अनुकरणीय है।

1. लिली – प्रेमिका परिचय – निराला पृष्ठ-115

2. लिली – परिवर्तन – निराला पृष्ठ-139

4.8 हिरनी :- 'हिरनी' कहानी में हिरनी जैसी लघुमानव की निष्ठा का वर्णन हुआ है। वह अपनी कर्तव्य परायणता एवं सेवा भावना के कारण एक राज-परिवार का संरक्षण पाती है और अन्त में वह रानी की सबसे प्रिय दासी हो जाती है।

“दृष्टि के सूक्ष्मतम तार इस पृथ्वी के परिचय से नहीं, जैसे शून्य आकाश से बांधे हुए हों, जैसे उसे पृथ्वी पर उतरकर विधाता ने एक भूल की हो। उसके इस भाव के दर्शन से 'हिरनी' नाम कवि के शब्द की तरह, रानी के कण्ठ से आप निकल आया था।”¹ किन्तु रचनाकार यह बताना चाहता है कि नियति पर किसी का वश नहीं होता और वही घटना हिरनी के साथ घटती है। उसके बड़े होने और मोहक स्वरूप का वर्णन कहानीकार करता है। उसी के शब्दों में ‘वही हिरनी अब जीवन के रुपोज्ज्वल बसंत में कली की तरह मधु-सुरभि से भरकर चतुर्दिक सूचना सी दे रही है कि प्रकृति की दृष्टि में अमीर और गरीब वाला क्षुद्र भेद-भाव नहीं, वह सभी की आँखों को एक दिन यौवन की ज्योत्सना से स्निग्ध कर देती है..”²

अन्त में वही प्रारब्धवश रानी साहिबा के रौद्ररूप का भी कारण बनती है जैसा कि कहानीकार के शब्दों में—‘क्रोध में रानी ने हिरनी को मारने को जैसे ही घूँसा ताना, भयाक्रान्त हिरनी के मुँह से ‘हे राम जी’ शब्द निकला सहसा रानी साहिबा की नाक से खून की धारा बह चली और वह मूर्च्छित हो गई।”³ इस कहानी के माध्यम से निराला यह बताना चाहते हैं कि हिरनी जैसी लघु मानव जहाँ अपनी कर्तव्य परायणता के माध्यम से रानी की प्रिय दासी बन गई वहीं नियति ने उसे उसका उतना ही बड़ा प्रतिद्वन्दी बना दिया। रचनाकार इस कहानी के माध्यम से इंगित करता है कि हिरनी जैसे समाज में कितने लोग हैं जो अपनी निष्ठा के बल पर गौरव प्राप्त कर लेते हैं।

1. लिली – परिवर्तन – निराला पृष्ठ-139

2. लिली – हिरनी – निराला पृष्ठ-140

3. लिली – हिरनी – निराला पृष्ठ-145

सुकुल की बीवी:- 'सुकुल की बीवी' कहानी में लघुमानव का एक नाटकीय आवर्तन दिखाई देता है वह इस रूप में कि अभिजात्य कुल में जन्मी, पली और बड़ी ब्राम्हण बालिका विवाहित होकर भी जब अपने मनोराज्य में संतुष्ट नहीं हो पाई तो वह मुसलमान को वरण कर लेती है यहाँ रचनाकार जाति की ऐंठन को भञ्जित करता है और मनुष्य के उद्दाम मनोवेग को अधिक महत्व के साथ वरीयता क्रम में प्रस्तुत करता है। उस उद्दाम मनोवेग में मनुष्य केवल मनुष्य है, वहाँ वह न तो मुसलमान है और न ही हिन्दू। इस भावना के चलते बाजपेयी ने अपनी विवाहिता पत्नी को घर से निकालकर उसे कहीं भी चले जाने के लिए मजबूर कर दिया और वह संयोगवशात् एक मुसलमान का संरक्षण प्राप्त करती है और परिस्थितिवशात् उसकी पत्नी भी बनती है। इस कहानी का एक दूसरा मोड़ तब शुरू होता है जब हिन्दू माँ की मुसलमान कन्या पुनः संयोगवशात् ही सुकुल की बीवी हो जाती है। इस घटनाक्रम से ऐसा लगता है कि जैसे निराला जाने-अनजाने भारतीय इतिहास की अवधारणा को साकार कर रहे हैं कि 'इतिहास चाक्रिक होता है।' अर्थात् इतिहास की घटनाएँ आवृत्ति पाती हैं और बार-बार अपने नये पुराने मोड़ पर आती जाती हैं, रचनाकार यहाँ लघुमानव को पुष्कर कुमारी के रूप में प्रस्तुत कर उसे विकट परिस्थितियों में से निकालकर एक सुखद वातावरण में संस्थापित करता है यहाँ पुष्पकुमारी और उसकी माँ को लेकर यह कहा जा सकता है। एक बार गंगाजल मदिरा बन जाता है और दूसरी बार मदिरा, गंगाजल। रचनाकार दोनों परिस्थितियों में तटस्थ रहकर केवल मनुष्य की प्रतिष्ठा की चिंता करता है। यहाँ रचनाकार का कद महर्षि वेदव्यास की उस भाव-भूमि में पहुँच जाता है जिसमें उन्हें कहना पड़ा था—'नहिं मनुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्' अर्थात् मनुष्यता से बढ़कर और कुछ श्रेष्ठ नहीं होता है। लघु मानव को ऐसी प्रतिष्ठा देने वाले केवल निराला हैं और अतिशयोक्ति न हो तो कहना चाहूँगी केवल। केवल निराला ही हैं।



कला की रूप रेखा :- निराला की कहानी 'कला की रूपरेखा' जिसे रामविलास शर्मा ने कहानी न कहकर निबन्ध कहा है । यह कहानी निराला के सुकुल की बीबी कहानी संग्रह की तीसरी कहानी है । इस कहानी में एक मदरासी पात्र जो कलाकार की कला का अथवा सर्जक की भावनाओं का अनुपयुक्त लाभ उठाना चाहता है, पर पूरी कहानी सिमट जाती है। निराला कला को जीवन के सत्य के साथ जोड़ते हैं और अपने मित्र वाचस्पति पाठक की जिज्ञासा पर कला को व्याख्यायित करते हुए उसे जीवन के विविध रंगों की अद्वैतमयी सृष्टि कहते हैं । इसमें एक ऐसे पात्र को प्रस्तुत किया है जो मदरासी है और कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने आया हुआ था । कहानीकार के शब्दों में 'एक आदमी, उम्र पैंतालीस के लगभग, भौरे का रंग खासा मोटा तगड़ा, एक लंगोटी से किसी तरह लाज बचाए हुए उतने जाड़े में नग्न बदन दौड़ा हुआ मेरे पास आया और एक साँस में इतना कह गया कि मैं कुछ भी न समझा । टूटी फूटी हिन्दी में पूरे उच्छ्वास से वह फिर कहने लगा वह मदरास का रहने वाला, कुम्भ नहाने आया था यहाँ चोर उसके कपड़े-लत्ते, माल असबाब उठा ले गए, गठरियों में ही रुपए पैसे थे, अब वह (अपने आदमियों के साथ) हर तरह लाचार है, दिन तो किसी तरह धूप खाकर, भीख माँगकर पार कर देता है, पर रात काटी नहीं कटती । जाड़ा लगता है । वह एक दृष्टि से मेरा मोटा खद्दर का चादरा देख रहा था । मैं विचार न कर सका, उतारकर दे दिया वह मारे आनन्द के दौड़ा हुआ अपने साथियों के पास गया और इस महादान की तारीफ करने लगा, मेरी तरफ उंगली उठाकर बतलाता हुआ ।''¹ निराला जी ने दयावश उसे अपना चादर भेंट कर दिया था ।

वह जब दोबारा उनसे मिलता है तो उनसे पुनः चप्पल की याचना करता है । गर्मी का समय था उसे काँग्रेस के सेवादल में भाग लेने के बाद अपने गृह नगर लौटना था । आत्मीयतावश उसने निराला के इस गुण से प्रभावित होकर याचना की मगर

निराला के पास कुल छः पैसे ही थे इसलिए उन्होंने उससे क्षमा माँग ली । वह भी निराला को बड़े भाई की तरह आशीर्वाद देते हुए चला गया ।

“अब गर्मी पड़ने लगी है। देश जाना चाहता हूँ रेल का किराया कहाँ मिलेगा? पैदल जाना चाहता हूँ । मैंने बीच में बात काटकर कहा—“क्या कांग्रेस के लोग आपकी इतनी सी मदद नहीं कर दे सकते।”¹

वास्तव में इस कहानी में जीवन की कला, मनुष्य की संवेदना और जटिल परिस्थितियों का वर्णन है। कहानीकार यह बताना चाहता है कि साधन के अभाव में भी वह अपने जीवन को एक संगठन से जोड़कर कार्य करता है । अभाव को भी भाव समझाकर कार्य करना भी एक कला है । इस बात को जितना वह मदरासी पात्र समझता है उतना ही स्वयं निराला समझते हैं । यद्यपि वह मात्र कांग्रेस सेवादल का एक स्वयं सेवक है फिर भी उसकी निष्ठा जो संगठन को ऊँचाई देना चाहती है, वह ही सबसे बड़ी उपलब्धि है। वह पूरे संगठन का सबसे छोटा लघु मानव है जो अपने जीवन का सब कुछ समर्पित कर समाज के लिए कार्य करता है और दूसरों का प्रेरणा स्रोत बनता है । कुल मिलाकर निराला इस कहानी में उस लघु मानव के माध्यम से यह व्यक्त करना चाहते हैं कि क्रिया की सिद्धि बड़े-बड़े साधनों से नहीं बल्कि सत्त्व से होती है। जीवटता उसे मदरासी और स्वयं कहानीकार निराला में कूट-कूट कर भरी थी। यही जीवटता कला की रूपरेखा बनती है।

श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी :- ‘श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी’ कहानी उनके संग्रह ‘सुकुल की बीवी’ की दूसरी कहानी है। इसमें कुल चार पात्र हैं जिसमें तीन पुरुष हैं और एक महिला । सुपर्णा जो रामखेलावन की पुत्री है और मोहन से बेहद प्यार करती है किन्तु सामाजिक बंधनों के कारण उससे शादी करने में असमर्थ है। जब उसके पिता रामखेलावन को पता चलता है कि उसकी कन्या गर्भवती हो चुकी है तो वे चिन्तित होकर

उसका विवाह बनारस के गजानन्द शास्त्री से कर देते हैं । कहानीकार इस कहानी के माध्यम से यह व्यक्त करना चाहता है कि धन और आवश्यकता मनुष्य को अन्धा बना देती है जिसके चलते सुपर्णा और गजानन्द शास्त्री जैसा अनमेल विवाह होता है । लड़की की कमजोरी और पैसे का बल रामखेलावन को इस कार्य में सफलता दिलवाता है । झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा को बचाने के लिए अपनी ही गर्भवती कन्या का विवाह लगभग अपनी ही उम्र के व्यक्ति शास्त्री से करके रामखेलावन जो कार्य करते हैं वह समाज की दृष्टि से भले ही छिपे रूप में उचित कहा जाए किन्तु मनुष्य की अन्तश्चेतना और उसकी जिजीविषा के अनुरूप कथमपि नहीं हैं । सुपर्णा अपने पूर्व प्रेमी मोहन को चाहती तो है किन्तु चेतना में वह गजानन्द शास्त्री को रखकर मोहन की छायावादी कविता पर आक्षेप करती है । सुपर्णा ने अपने एक लेख में लिखा—‘देश को छायावाद से जितना नुकसान पहुँचा है, उतना गुलामी से नहीं ।’¹ छायावाद की व्याख्या में गजानन्द शास्त्री कहते हैं—‘छायावाद वह है, जिसमें कला के साथ व्यभिचार किया जाता है।’²

वास्तव में इसमें लघु मानव की भूमिका में रहकर मोहन समाज के सामने अपनी रचना के माध्यम से उस झूठे दंभ को उजागर करता है । जो समाज को अन्दर से खोखला कर देता है । मोहन और सुपर्णा की परस्पर आत्मीयता विवाह में न परिणत हो सकने के मूल में जो सामाजिक विद्रूपता है, वह सामने आती है ।

क्या देखा:— ‘क्या देखा’ कहानी कवि के निजी भाव बोध पर आधारित है और इसमें कवि यह व्यक्त करना चाहता है कि व्यक्ति की श्रेष्ठता उसके उदात्त संवेदन पर आधारित होती है न कि उसकी जीवनचर्या से । इसे प्रमाणित करने के लिए रचनाकार हीरा नामक वेश्या को सामने रखता है । जिसकी जीवनचर्या तो सामाजिक

1. सुकुल की बीवी — श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी — निराला पृष्ठ-47

2. सुकुल की बीवी — श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी — निराला पृष्ठ-46

दृष्टि से शोभायमान नहीं कही जा सकती किन्तु उसका भाव कितना उदात्त है कि वह तथा कथित सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त लोगों के भाव से काफी श्रेष्ठ है एवं वह प्यारेलाल जो स्वयं रचनाकार के रूप में पाठक के सामने आते हैं, के प्रति सच्चे आत्मीय संवेदन के साथ जुड़ती है न कि किसी प्रकार के मोह अथवा अपेक्षा के साथ । रचनाकार इस कहानी में लघु मानव हीरा के माध्यम से मानवता की उदात्त परम्परा को स्थापित करता है । इस भाव भूमि के लिए हीरा को न जाने कितने निजी स्वार्थों को त्यागना पड़ता है । यही उसकी महनीयता है । जैसा कि वह अपने भावों को व्यक्त करती हुई कहती है—‘‘इसकी एक छोटी बहन थी शान्ता, पिता मालदार थे कलकत्ते में भी कारोबार था, कुछ दिनों बाद पिता का देहान्त हो गया । माँ लड़कियों को कलकत्ता से लायी । दोनों को गाना बजाना भी सिखाने लगी । रूप और सम्पत्ति दोनों के लोभ में लोग इन्हें बरबाद करने की सोचने लगे । ये बड़े लोग ही थे, समाज में जिनकी इज्जत है । छोटे लोग इनके आज्ञाकारी थे । इनकी माँ की भी अकाल मृत्यु हुई । सम्पत्ति नष्ट हो गई । हीरा के लिए धनिकों के जाल बिछने लगे । मुसीबत पर मुसीबत का सामना उसे करना पड़ा । उसने अपनी इज्जत बचाई । पर रोटियों के सवाल से बचाव नहीं हुआ’’¹

चतुरी-चमार:—‘चतुरी-चमार’ शीर्षक कहानी संग्रह की पहली कहानी चतुरी चमार है चतुरी के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे जीवन्त पात्र को प्रस्तुत किया है जो कबीर आदि निर्गुणियाँ संतों की तरह पढ़ा-लिखा तो नहीं है किन्तु अकूत धन सम्पदा का धनी है । ऐसा व्यक्ति भी ग्रामीण परिवेश के ऊँच-नीच के भेदभाव में महत्वहीन हो जाता है । निराला उसकी सूझबूझ से प्रभावित होकर उसे बौद्धिक एवं सामाजिक महत्व प्रदान करते हैं । यह बात ऊँच-नीच एवं छुआछूत का भाव रखने वाले ग्रामीणों को अच्छी नहीं लगती है । इसका परिणाम यह होता है कि स्वयं निराला समाज से बहिष्कृत मान लिए जाते हैं फिर भी वे अपने बौद्धिक होने के दायित्व वैभव एवं ज्ञान के विकास को आगे बढ़ाने में कोई

1. सुकुल की बीवी - क्या देखा - निराला पृष्ठ-70

कसर नहीं रखते । चतुरी पेशे से जूता बनाने वाला चर्मकार का कार्य करता है उसमें भी वह पूरी निष्ठा और आस्था दिखाता है। निष्ठा और आस्था से किया हुआ कार्य शाश्वत एवं शुभ परिणाम कारी होता है। उसके बनाए गए जूतों के बारे में कहानीकार ने लिखा है 'किसान अरहर की ठूठियों पर ढोर भगाते हुए दौड़ते हैं—कटीली झाड़ियों को दबाकर चले जाते हैं, छोकड़े, बैल, बबूल, करील और बेर के काँटों से भरे रुधवाएँ बागों से सरपट भागते हैं, लोग जेंगरे पर भडनी करते हैं, दारिका नाई न्यौता बाँटता हुआ दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा चलता है, चतुरी के जूते अपरिवर्तनवाद के चुस्त रूपक जैसे टस से मस नहीं होते।'¹ यह तो रही इसकी कर्मवत आस्था उसकी कबीर, सूर, तुलसी, दादू, पलटूदास आदि सन्तों के निर्गुण पदों का बोध भी बहुत उन्नत था जिसमें अच्छे-अच्छे विद्वान भी नहीं समझ पाते थे ऐसा लघुमानव दुखी होकर कहता है—'काका जमींदार के सिपाही को एक जोड़ा हर साल देना पड़ता है। एक दो साल चलता है तब ज्यादा लेकर कोई चमड़े की बरबादी क्यों करे'² वह पढ़ा-लिखा तो नहीं है किन्तु अपने पूर्व अर्जुनवा को अपने पेशे से अलग रखकर कुछ पढ़ाने-लिखाने की इच्छा रखता है जैसा कि रचनाकार ने लिखा है—'तो कहो भगवान की इच्छा हो जाए।'³ निराला इसके माध्यम से समाज के सामने यह प्रस्तुत करना चाहते हैं कि व्यक्ति जाति या धर्म से महान नहीं होता है अपितु कर्म से महान होता है । चतुरी के माध्यम से रचनाकार ने जमींदारों द्वारा किए जा रहे किसानों के शोषण का भी वर्णन किया है । निराला इस कहानी के माध्यम से शोषण के विरोध में चतुरी जैसे लोगों को सामने आने के लिए उत्साहित करते हैं । कुल मिलाकर कहानी सामाजिक उत्पीड़न एवं कुण्ठा के शिकार हुए लघुमानवों को अपने जीवन के स्तर को सुधारने की प्रेरणा देती है।

सखी :- 'सखी' कहानी में निर्गला, माधवी, ललिता शुभा और श्यामा आदि गौण.....

-
1. सखी - चतुरी चमार - निराला पृष्ठ-140
 2. सखी - चतुरी चमार - निराला पृष्ठ-140
 3. सखी - चतुरी चमार - निराला पृष्ठ-145

पात्रों के रूप में और श्यामलाल, ज्योतिर्मयी और लीला मुख्य पात्र के रूप में आते हैं । यह कहानी मानवीय संवेदना के शिखर का महत्व प्रदान करने वाली कहानी है । श्यामलाल का ज्योतिर्मयी के पास भेजा गया वैवाहिक प्रस्ताव श्यामलाल और लीला के मिलन के बाद एक संवेदनात्मक मोड़ ले लेता है । उसमें ज्योति की मानवीय भूमिका उस समय सर्वश्रेष्ठ हो जाती है जब वह श्यामलाल द्वारा प्राप्त वैवाहिक प्रस्ताव को अपनी सखी लीला की ओर मोड़ देती है । दोनों का मानवीय संवेदन इतना गहरा है कि दोनों एक दूसरे के लिए सब कुछ अर्पण करने को तत्पर हैं इसमें लघुमानव के रूप में जहाँ लीला की भूमिका उदात्त है वहीं उसे आगे बढ़ाने एवं परिस्थितियों से संघर्ष के लिए ज्योति की भूमिका उल्लेखनीय है । लीला आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होते हुए भी आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा रखती है इसके लिए वह ट्यूशन भी करती है । जोत कहती है—‘हमारे कालेज में एक ही कैरेक्टर है । कहो तो, उसके यहाँ पैदा करने वाला कौन है ? ट्यूशन से अपना खर्च चलाती है, छोटे भाइयों को भी पढ़ाती है, साथ घर का खर्च भी है बूढ़ी माँ को कोई तकलीफ न हो, उसके लिए बेचारी कितना खटती है । मेहनत की मारी सूखकर काँटा हो रही है । चेहरे में आँखें ही आँखें ही तो हैं।’¹ साधन न होने पर भी वह अपने कर्मक्षेत्र के लिए आगे पैदल ही निकल पड़ती है इस कहानी के माध्यम से रचनाकार यह इंगित करना चाहता है कि मनुष्य की संकल्प शक्ति उसे अभीष्ट तक पहुँचाती है न कि बड़े-बड़े साधन ।

न्याय :- ‘न्याय’ एक मनोवैज्ञानिक कहानी है इसलिए कथाकार ने पुलिस मुहकमे की वस्तुस्थिति का वर्णन किया है । वह यह कहना चाहता है कि वैसे तो अपराध-अपराध होता है किन्तु अपराधी सिद्ध होना और न होना यह दोनों पुलिस अधिकारी के ऊपर निर्भर करता है, जैसा कि रचनाकार ने लिखा है—अपनी रिपोर्ट में दरोगा ने लिखा है—‘जान पड़ता है यह कोई क्रांतिकारी था बम लिए जा रहा था, एकाएक बस के धड़के से काम आ गया है।’² यह कहानी मुख्यतः दो पात्रों पर आधारित है । एक पात्र है राजीव और

1. सखी – चतुरी चमार – निराला पृष्ठ-16

2. सखी – चतुरी चमार – निराला पृष्ठ-29

दूसरा पात्र प्रतिमा। राजीव अपराधी नहीं है किन्तु सन्देह के घेरे में आकर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता है। राजीव के थाने में बन्द होने के बाद प्रतिमा नामक पात्र का यकायक अवतरण होता है। कहानी में उस पात्र का और कहीं किसी सन्दर्भ में उल्लेख नहीं मिलता किन्तु निराला की सामाजिक दृष्टि में यह एक ऐसी लाघुमानव है जो निरपराधी को बचाने के लिए तत्पर हो जाती है। इसके पीछे प्रतिमा के मन में सामाजिक न्याय और मानवता ये दो बातें कार्य कर रही थी। इन्हीं कारणों से वह दरोगा के पास पहुँचकर राजीव को निरपराधी होना बताती है। दरोगा प्रतिमा की बात में विश्वास करके उसे मुक्त करने का आदेश देता है। कहानी का मूलकथ्य एवं सत्य इस पर आधारित है कि अन्तः सत्य की विजय होती है। यही नहीं इससे न्याय शीर्षक भी चरितार्थ होता है। कहानी में मनुष्य का मनोविज्ञान प्रतिमा, राजीव और दरोगा के सन्दर्भ में व्यक्त हुआ है। मनोविज्ञान यह है कि अपराधी न होते हुए भी राजीव मानवता के वशीभूत होकर मृतक को देखने जाता है। और सन्देह के घेरे में आ जाता है। सामाजिक न्याय से प्रतिमा का न तो अपराध से, न तो राजीव से और न ही दरोगा से किसी प्रकार का पूर्व सम्बन्ध था फिर भी उसकी बात इतनी प्रभावोत्पादक सिद्ध होती है कि राजीव को वास्तविक न्याय मिल जाता है।

‘राजा साहब को ठेंगा दिखाया :— शीर्षक कहानी एक लघुमानव के उत्प्रेरक जीवन की कहानी है। विश्वम्भर नामक पात्र जो साधनहीन है। एक सामान्य सी नौकरी में है फिर भी वह राजा की सामन्तशाही शोषण की प्रवृत्ति ओर विलासिता का घोर विरोधी है। वह यह अनुभव करता है कि यदि राजा इन सब दुराचारों से मुक्त हो जाय तो शायद जनता भूखों न मरे। वह जनता को भूखों मरने के पीछे राजा को ही दोषी मानता है। इसीलिए समय पाकर वह राजा के प्रति प्रतिकार करता है—‘सिपाहियों ने आते हुए विश्वम्भर की मुद्राएँ देखी थी, जिसका अर्थ समझने में उन्हें देर नहीं हुई। उसे मारते हुए कहने लगे—क्यों रे...., हमारे महाराज रियाया की जखान बन्द करते हैं ? पैर रो

मारते है ? तेंगा दिखाता है हमारे महाराज को कोई इतना भी नहीं समझता ?”¹ सामाजिक जीवन में जहाँ विश्वम्भर जैसा निर्भीक और सामान्य जनता के साथ हमदर्दी रखने वाला पात्र है वहीं ऐसे भी पात्र होते है जो सत्ता के सुख भोग के लिए सत्ताधारियों से झूठी कानाफूसी करते हैं, ऐसे ही लोगों ने विश्वम्भर के प्रति राजा को भड़काया और विश्वम्भर को आघातित किया गया है । फिर भी वह अपने कर्तव्य से च्युत नहीं होता है उसकी सबसे बड़ी सफलता यह है कि जनता की हमदर्दी उसके साथ है यही उसकी सबसे बड़ी जीत है । इसलिए वह राजा से हारकर भी जीतता है और राजा उससे जीत करके भी हारता है । समाज में कार्य करने वाले तथा कथित लघुमानव साधनहीन होकर भी जो कार्य कर देते हैं वह कार्य बड़े-बड़े सत्ताधीश भी नहीं कर पाते हैं। यहाँ कहानीकार विश्वम्भर के माध्यम से एक जाग्रत व्यक्तित्व समाज को देता है

देवी:- मुझे निराला की सभी कहानियों में देवी कहानी सर्वश्रेष्ठ लगी है। कारण कि पगली में कवि का संवेदन अपने उस परमरूप में पहुँच जाता है, जहाँ पहुँचकर मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है । जैसा कि स्वयं रचनाकार ने लिखा है—‘यह कौन है, हिन्दू है यह मुसलमान ? इसके एक बच्चा भी है। पर इन दोनों का भविष्य क्या ‘सोचती होगी—ईश्वर संसार, धर्म और मनुष्यता के संबंध में’² । यहाँ लघु मानव तो स्वयं पगली है मगर उसकी क्रियाएँ रचनाकार को इतना प्रभावित करती हैं कि वह उसमें डूब जाता है और ऐसा उदात्त सौन्दर्य कही नहीं देखा । जैसा कि कहानीकार ने लिखा है—‘केवल वह रूप नहीं भाव भी । इस मौन महिमा आकार, इंगितों की बड़े-बड़े कवियों ने कल्पना न की होगी । भाव-भाषण मैंने पढ़ा था, दर्शनशास्त्रों में मानसिक सूक्ष्मता के विश्लेषण देखे थे, मंच पर रवीन्द्रनाथ का किया अभिनय भी देखा था, खुद भी गद्य-पद्य में थोड़ा बहुत लिखा था, चिड़ियों तथा जानवरों की बोली बोलकर उन्हें बुलाने वालों की भी करामात देखी थी पर वह सब कृत्रिम था, यहाँ सब प्राकृत । यहाँ माँ-बेटे के मनोभाव

-
1. सखी - राजा साहब को ढेंगा दिखाया - निराला पृष्ठ-32
 2. सखी - देवी - निराला

कितनी सूक्ष्म व्यञ्जना से संचरित होते थे, क्या लिखूँ...?"¹

कहानीकार ने पगली को देवी के रूप में स्वीकार किया है। यहाँ वह उस सत्य के काफी निकट पहुँचता है जहाँ पहुँचकर मनुष्य अभेद की स्थिति में पहुँच जाता है। पगली स्वयं उस स्थिति में पहुँच गई थी कि उस सुख-दुख के भाव का कुछ अनुभव ही नहीं होता था, वह इन दोनों के ऊपर उठ चुकी थी। कहानी का वह अद्भुत दृश्य है जब रचनाकार पगली के बच्चे को अपनी गोद में उठाकर उस पर अपना पूरा स्नेह उड़ेल देता है। वास्तव में पगली जैसे अनेक पात्र हमारे समाज में हैं किन्तु निराला जैसे अनेक लेखक विरल हैं जिन्होंने ऐसे पात्रों को अपनी रचना का विषय बनाया। पगली का सामाजिक अवदार केवल उतना है कि वह संवेदनशील रचनाकार की विषय बन जाती है।

स्वामी सारदानन्द जी और मैं :- 'स्वामी सारदानन्द जी और मैं कहानी एक आत्मकथात्मक कहानी है। इसमें निराला स्वयं लघुमानव के रूप में रेखांकित हुए हैं। स्वाभिमान का विभव-वैभव से कोई नाता नहीं होता। इस बात को निराला ने अपनी नौकरी छोड़कर चरिचार्थ कर दिया है और अपने इस चरित्र के माध्यम से समाज को यह सन्देश दिया कि स्वाभिमान मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है। पूरी कहानी में निराला कइ बार टूटते हैं मगर कभी झुकते नहीं। अनेक संघर्षों के बावजूद उन्होंने जो अच्छा समझा वही किया चाहे वह समाज के लिए कितना ही निन्दा और कलंक का विषय क्यों न हो। इस कहानी में उन्होंने अपने जीवन के सत्य को उभारकर रख दिया है। आज और उसके पहले भी बहुत विरले रचनाकार हुए हैं जिन्होंने बिना कुछ छिपाए अपनी कमजोरियों को विश्लेषित करने का साहस दिखलाया है। इस कहानी के माध्यम से निराला की महाप्राण और महामानव की संज्ञाएँ पूरी तरह चरितार्थ हो जाती हैं।

1. सखी - देवी - निराला पृष्ठ-37

सफलता :- 'सफलता' कहानी नरेन्द्र नामक विधुर और आभा नामक विधवा के संघर्ष की गाथा है। नरेन्द्र को कहानीकार ने एक शोषित साहित्यकार के रूप में प्रस्तुत किया है। उसमें प्रतिभा तो है किन्तु साधन नहीं। साधन के अभाव में वह कभी किसी प्रकाशक के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तक में काम करता है तो कभी वहाँ का कार्य करके अपनी जीविका का निर्वाह करता है इस कहानी में निराला का छायावादी सौन्दर्य मुखरित हुआ है जैसा कि आरम्भ में कहा गया है—'जो हवा दिए के जलते रहने की वजह है, वह दिए को बुझा भी देती है। आभा के सस्नेह अकलुष प्राणों के पावन प्रदीप को पति की जिस निश्चल समीर ने सालभर तक जला रखा था, वह सालभर से उसे बुझाकर उसकी पृथ्वी से दूर, अन्तरिक्ष की ओर तिरोहित हो गई है। साल ही भर में सुहाग का काजल उस दीपक प्रकाश के ऊपर, रत्नार आँखों में प्रिय दर्शन के अंजनरूप नहीं रह गया। आभा आज की शरत की तरह अपनी सारी रंगीनियों को धोकर शुभ हो रही है—श्वेत शेफाली—सी रंगे प्रभात के रश्मि—पात—मात्र से वृत्तच्युत जैसे देवार्चन के लिए चुनी गई हो।... माला होकर हृदय पर या रंग बनकर आँखों पर चढ़ने के लिए नहीं।'¹ आभा विधवा होने के बाद भी अपने जीवन से निराश नहीं होती और संघर्षरत रहती है। यह एक संयोग आता है कि कहानी के एक मोड़ पर आभा और नरेन्द्र का मिलन होता है और दोनों एक दूसरे के पूरक से बन जाते हैं। ऐसा इसलिए संभव हो पाता है कि नरेन्द्र पूरी तरह से मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत है। जैसा कि कहानीकार ने लिखा है—'नरेन्द्र बीसवीं सदी का मनुष्य है। वह न कर सके, ऐसा कोई काम नहीं ऐसा कुछ किया भी ऐसा नहीं। वह मन से धर्म और अधर्म को पारकर दूर निकल गया है पर मन में धर्म से श्रद्धा और अधर्म से घृणा करता है। वह भौरे की तरह खुली कली पर नहीं बैठा, पर भौरे की तरह कलियों का जस गा चुका है, उसके चारों ओर बहुत मँडराया। उसकी कल्पना में आभा उतने रंग भर चुकी है जितने किरण भरती है— फूलों में, पहाड़ पर, बादलों में दिशाकाश में तरह-तरह

1. सखी — सफलता — निराला पृष्ठ-16

के सुधार विचार में। पर आभा को वरण करने की कोई शहजारी भी उसमें पैदा हुई, ऐसा लक्षण नहीं देख पड़ा सोचा जरूर पर उठे सर का झुक जाना देखा, और डरा।¹ उसमें कहानीकार ने एक लघुमानव के रूप में आभा और नरेन्द्र को प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया है कि क्रिया की सिद्धि सत्य से होती है न कि साधनों से।

भक्त और भगवान :- 'भक्त और भगवान' कहानी निराला के स्वयं के जीवन पर आधारित है। पत्नी के निधन के बाद निराला अपने को एक लघुमानव के रूप में पाते हैं। और अर्थाभाव की त्रासदी से घोर संघर्ष करते हैं। इससे मुक्ति पाने के लिए एक राजा के यहाँ नौकरी करते हैं किन्तु वह अनुकूल न लगने पर उसे छोड़ देते हैं तब वह लघुमानव के रूप में व्यक्त स्वयं रचनाकार अपनी आस्था और चेतना को महावीर पर केन्द्रित करता है और इतना ही नहीं वह उनकी भक्ति में इतना अन्तस्थ हो जाता है कि वह स्वप्न में भारत के रूप में महावीर जी को देखता है—“मन इतने दूर आकाश पर था कि नीचे समस्त भारत देखा पर यह भारत न था, साक्षात् महावीर थे, पंजाब की ओर मुँह दाहिने हाथ में गदा, मौन शब्दशास्त्र, बगल की तरफ से गये बाँये पर हिमालय पर्वतों की श्रेणी, बंगाल के नीचे व्यंग्योपसार, एक पैर पलम्ब अँगूठा कुमारी अन्तरीय, नीचे राक्षस स्वरूप लडाकमल समुद्र पर खिला हुआ।”²

पत्नी के अभाव की वेदना जब उनको बहुत अधिक मथने लागती है तो वे स्वप्न लोक में उसका दर्शन करते हैं। स्वयं रचनाकार ने लिखा है ‘वत्स गह मेरी माता देवी अंजना है, उनके मस्तक पर देखों।’³ यह कहानी एक सामाजिक व्यंग्य के रूप में सामने आती है उसमें मन की सारी दशाओं का चित्रण मिलता है और उससे यह भी प्रकट होता है कि आस्था अभाव में जन्म लेती है और उस अभावग्रस्त लघुमानव को दूटने से बचाती है। जैसा की डॉ. रामविलास शर्मा ने इस कहानी पर टिप्पणी करते हुए इसे

-
1. सखी – भक्त और भगवान – निराला
 2. सखी – भक्त और भगवान – निराला
 3. सखी – भक्त और भगवान – निराला

निराला और हिन्दी की श्रेष्ठ कहानी स्वीकार किया है “भक्त और भगवान निराला की और हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में है । इसमें मन की उन दशाओं का चित्रण है जो ‘अर्थ’ कहानी और तुलसीदास में चित्रित की गई है । सारी कहानी में एक ही वातावरण छाया हुआ है जिसे काल्पनिक इच्छापूर्ति का स्वप्न बिगड़ता नहीं इस वातावरण में निराला छाया लोक से भिन्न वास्तविक स्थूल संसार का बोध कहीं लुप्त नहीं होता ।”¹

1. डॉ. राम विलास शर्मा पृष्ठ - 500

अध्याय-पंचम

निराला के पौराणिक उपन्यासों में
चित्रित लघुमानव का स्वरूप

संस्कृत-भाषा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सर्वज्ञं सर्वशक्तिं सर्वभूतहितं
सर्वलोकहितं सर्वदण्डं सर्वदण्डं

अध्याय-पंचम

निराला के पौराणिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव का स्वरूप

5.0 प्रस्तुत अध्याय का विवेच्य पक्ष है.

‘निराला जी’ के पौराणिक उपन्यासों में भीष्म, भक्त-ध्रुव, भक्त-प्रह्लाद, महाभारत और रामायण की अन्तर्कथाएँ आती हैं। इन सभी में लघुमानव के स्वरूप का सीधे उल्लेख भले ही न हो, किन्तु लघुमानव के संदर्भों का विश्लेषण तो मिलता ही है। उदात्त चरित्रों पर आधारित उन उपन्यासों में जो मनुष्य मात्र की चिन्ता की गई है वह प्रकारान्तर से लघुमानव के स्वरूप का ही विश्लेषण है। यहाँ इन सभी का क्रमशः विवेचन किया जा रहा है:-

भीष्म:- इस उपन्यास में पौराणिक आख्यानों के माध्यम से बालकों में सदगुणों का सन्निवेश हो, इसकी चिन्ता की गई है। ये बाल्य आदि के संदर्भ लघुमानव के ही संदर्भ से जुड़ते हैं। भीष्म का देवव्रत के रूप में विकास इसी भूमिका की पुष्टि करता है। उसमें अमित पराक्रम, असीम, साहस, अपार मेधा और दृढ़ चरित्र आदि गुण पाये जाते हैं। जैसा कि संदर्भ आता है कि एक बार शान्तनु आखेट के लिए गये वहाँ उन्होंने यमुना तट पर धीवर की पुत्री को देखकर उस पर आसक्त ही नहीं हुए अपितु विवाह का प्रस्ताव दे डाला। धीवर ने इस शर्त के साथ स्वीकृति दी की उसकी पुत्री से जन्मा हुआ पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी होगा। उसकी इस शर्त से शान्तनु उदास और दुखी हो गए। देवव्रत ने जब उदासी का कारण पूछा तो उन्होंने अपने पिता की भावना की रक्षा करते हुए स्वयं को अविवाहित जीवन बिताने की प्रतिज्ञा में बाँध लिया तभी से उन्हें भीष्म कहा जाने लगा। इस सारी घटना में भीष्म भले ही शान्तनु के पुत्र हों किन्तु पुत्र रूप में भी रहकर

१११

1550-1555

के विचारों व शक्तियों के माध्यम

मानव को सम्पूर्ण मानवी

इस प्रकार कि मानव को सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

मानव को सम्पूर्ण मानवी के माध्यम से सम्पूर्ण मानवी

वे श्रेष्ठ हैं और शान्तनु अपनी भौतिक इच्छाओं के कारण लघुमानव ही कहे जाएँगे क्योंकि यह लघुता केवल जातिगत अथवा परिवेशगत ही नहीं हुआ करती अपितु यह कर्म सापेक्ष भी होती है । कारण कि व्यक्ति छोटा अथवा बड़ा केवल अपने गुणों के कारण होता है । जैसा कि ख्यात है कि मत्स्यगन्धा जो सत्यवती नाम से ख्यात हुई वह धीवर की पोषिता पुत्री थी । एक बार पाराशर ऋषि यमुना पार होने के लिए आए । पाराशर ऋषि को नौका में ही कामोद्दीपन व उसने ऋषि की मनोभावना की पूर्ति की इसी से महर्षि व्यास की उत्पत्ति हुई । इसी से उसे पाराशर मुनि से वरदान प्राप्त हुआ । और वह मत्स्यगन्धा हो गई । उसी से प्रथम पुत्र चित्रांगद और दूसरा पुत्र विचित्रवीर्य उत्पन्न हुआ । इसी बीच शान्तनु दिवंगत हो गए और इन दोनों पुत्रों की पूरी जिम्मेदारी भीष्म पर आ गई । भीष्म ने पिता की इच्छा के अनुसार चित्रांगद को गद्दी दे दी । कालान्तर में चित्रांगद को एक युद्ध में मृत्यु का वरण करना पड़ा ।

उसके बाद विचित्रवीर्य को गद्दी सौंपी गई । काशी में स्वयंवर के समय भीष्म ने उनकी तीनों पुत्रियों का अपहरण किया । बड़ी पुत्री अम्बा ने कहा मैंने मन ही मन शल्य राजा से विवाह का संकल्प लिया है । भीष्म ने उसे मुक्त कर दिया । इसके बाद अम्बा और अम्बालिका का विवाह विचित्रवीर्य से करवा दिया विचित्रवीर्य अत्यधिक विलासिता के कारण यक्ष्मा से ग्रसित हो गया । सत्यवती ने अम्बालिका और अम्बिका से पुत्र उत्पन्न करने का भीष्म से आग्रह किया । भीष्म ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया इसके बाद इस कार्य के लिए भीष्म ने व्यास को तैयार किया । संयोग के समय एक ने नेत्र बन्द कर लिए, उससे धृतराष्ट्र पैदा हुए और एक डर गई उससे पाण्डु पैदा हुए । दासी ने व्यास का स्वागत किया उससे विदुर का जन्म हुआ । यह ख्यात ही है कि पाण्डु के पाँच पुत्र हुए और धृतराष्ट्र के सौ पुत्र । पाण्डु की विलासी मनोवृत्ति के कारण सत्यवती क्षुब्ध रहने लगी और अपनी दोनों विधवा वधुओं के साथ तपोवन चली गई और वहीं पर दिवंगत हो गई । इसके बाद भीष्म ने कौरवों और पाण्डवों की शिक्षा-दीक्षा का दायित्व

सम्भाला। कुल मिलाकर भीष्म की प्रतिज्ञा के कारण कौरव और पाण्डव के पूरे विकास और विलाश की गाथा आगे बढ़ी जिसमें भीष्म का त्याग, औदार्य और मनस्विता ही मूल में निहित है। इस पूरे कथानक में भीष्म के माध्यम से लघुमानव के प्रतीक उन वंशजों को भीष्म के द्वारा आगे बढ़ाया गया जो वंश के मूल इतिहास से तो नगण्य थे किन्तु भीष्म के अथक प्रयत्नों से वे वंशधर भी हुए और जगतप्रसिद्ध भी।

भक्त ध्रुव :- 'निराला जी' ने अपने पौराणिक उपन्यास भक्त ध्रुव में यह प्रतिपादित किया है कि साधन सम्पन्न व्यक्ति ही नहीं अपितु साधना सम्पन्न व्यक्ति ही समाज को प्रेरणा दे सकता है। इस पौराणिक आख्यान से यह स्पष्ट है कि ध्रुव ने समस्त साधनों का त्याग करके केवल अपनी तपश्चर्या के द्वारा ही ख्याति प्राप्त की और आज वे भारतीय समाज में ध्रुव तारे की तरह अक्षत रूप में दैदीप्यमान हैं। ध्रुव की भक्तिनिष्ठा, मन की दृढ़ता, हृदय की विशालता और मन की शुचिता ने उन्हें एक ऐसा स्वरूप प्रदान किया जो आज पूरे मनुष्य मात्र की श्रद्धा के केन्द्र में स्थित है। ध्रुव का चरित्र जहाँ बालकों के लिए प्रेरणास्पद है वहीं यह भी निर्णय देता है कि लगन और साहस मनुष्य को उसके अभीष्ट पर पहुँचा देती है। ध्रुव के साथ अनेक छल-छद्म हुए किन्तु वे अडिग भाव से अपनी तपस्या में लीन रहे और इसके कारण उन्हें भगवान विष्णु के दर्शन हुए। जैसा कि उपन्यासकार ने लिखा है कि "ध्रुव के हृदय में जहाँ अत्याचारी संसार का घोर विरोध भरा हुआ था वहीं मनुष्यों के प्रति सहानुभूति का सागर उमड़ रहा था। जरा सा बालक भाव की प्रशस्त उर्मियों पर तिनके की तरह बह रहा था।"¹

"ध्रुव की यह कथा श्री विष्णु पुराण पर केन्द्रित है। जैसा कि उसमें ध्रुव का वनगमन और मरीचि आदि ऋषियों से भेंट का विवरण किया गया है। इस संदर्भ में पराशर ऋषि का कथन है कि हे मैत्रेय ! मैंने तुम्हें स्वायम्भुव को प्रियव्रत" एवं उत्तनपाद

1. भक्त ध्रुव - 'निराला' पृष्ठ - 44

नामक दो महाबलवान और धर्मज्ञ पुत्र बतलाए थे¹ हे ब्राह्मण ! उनमें से उत्तानपाद की प्रेयसी पत्नी सुरुचि से पिता का अत्यंत लाड़ला उत्तम नामक पुत्र हुआ² हे द्विज ! उस राजा की जो सुनीति नामक राजमहिषी थी उसमें उसका विशेष प्रेम न था । उसका पुत्र ध्रुव हुआ ।³ इससे स्पष्ट होता है कि ध्रुव राजपुत्र होते हुए भी पिता के अपेक्षित प्यार से वंचित थे फिर भी उनकी अपनी कर्मनिष्ठा ने उन्हें श्रेष्ठ सामाजिक प्रतिष्ठा दी । जैसा कि पुराणों में निहित है कि भक्त ध्रुव ने अपनी धर्म निष्ठा से अशेष कीर्ति अर्जित की थी । अनेक बाधाओं के आते हुए भी उन्होंने अपने तप मार्ग को नहीं छोड़ा और उस पर अडिग रहे । निराला ने ध्रुव के चरित्र की समस्त केन्द्रीय विशेषताओं को इस छोटे से उपन्यास में व्यक्त किया है ।

इस उपन्यास के माध्यम से निराला बालकों के आदर्श और उच्च जीवनमूल्यों की स्थापना के कामी हैं । इसके माध्यम से वे बालकों को भारतीय संस्कृति के वैभवशाली एवं गौरवशाली अतीत को जोड़ना चाहते हैं । निराला ने ध्रुव को एक भक्त बालक के रूप में चित्रित करते हुए भी उसे पूरे मनुष्योचित व्यवहार से भी जोड़कर रखा है । इसीलिए ध्रुव जहाँ अन्याय होता है वहाँ प्रतिकार के लिए भी तत्पर रहते हैं ।

भक्त प्रह्लाद:— निराला जी ने भक्त प्रह्लाद उपन्यास में प्रह्लाद की मनस्विता और सत्यनिष्ठा के माध्यम से यह स्पष्ट करने का यत्न किया है कि सत्य पर दृढ़ आस्था रखने वाला व्यक्ति बड़े से बड़े वैभवशाली लोगों को भी परास्त कर सकता है । इसी प्रकार की भावभूमि पर श्री विष्णु पुराण के सतरहवाँ अध्याय में श्री पाराशर जी ने कहा है— हे मैत्रेय ! उन सर्वदा उदारचरित्र, परमबुद्धिमान महात्मा प्रह्लाद का चरित्र ध्यानपूर्वक श्रवण

1. प्रियव्रतोत्तानपादौ । मनोः स्वायंभुवस्य तु ।

द्वौ पुत्रौ तु महावीर्यौ धर्मज्ञौ कथितौ तव । श्री विष्णुपुराण – ग्यारहवाँ अध्याय पृष्ठ-49

2. तयोरुत्तान पादस्य सुरुच्यामुत्तमः सुतः । अभीष्टायाम भूत्क्रह्मन्पितुरत्यन्त वल्लभः ॥

3. सुनीतिर्नाभ या राजस्तस्यासीन्माह्वो द्विज ।

स नाति प्रीति मास्तस्याम भूद्यया ध्रुवः सुतः ॥ पृष्ठ – 44

करो”¹ प्रहलाद पूरी तरह से सत्यनिष्ठ थे इसलिए अपने पिता हिरण्यकशिपु के यह पूछे जाने पर तुमको यह शिक्षा किसने दी तब प्रहलाद ने कहा कि—पिताजी ! हृदय में स्थित भगवान विष्णु ही तो सम्पूर्ण जगत के उपदेशक हैं। उन परमात्मा को छोड़कर और कौन किसी को कुछ सिखा सकता है ?² प्रहलाद पिता, भाई और राज्य के तमाम लोगों के द्वारा सताए जाने पर भी अपने धर्म से विरत नहीं हुए।

इस उपन्यास में हिरण्यकशिपु के अत्याचार को बहुत स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हुए उपन्यासकार ने इसे सत्य और असत्य के बाच में लड़ा जाने वाला एक युद्ध निरूपित किया है। प्रहलाद को रसोइयों द्वारा पिता की आज्ञा से विष दिया जाता है।³ वे उस घोर हलाहल विष को भगवान नाम के उच्चारण से अभिमंत्रित कर अन्न के साथ खा गए।⁴ भगवान्नाम में प्रभाव से निस्तेज हुए उस विष को खाकर उसे बिना किसी विकार के पचाकर स्वस्थ चित्त से स्थित रहे।⁵ इस महान विनाश को पचा हुआ देख रसोइयों ने भय से व्याकुल हो हिरण्यकश्यप के पास जा उसे प्रणाम करके कहा—हे दैत्यराज ! हमने आपकी आज्ञा से अत्यन्त तीक्ष्ण विष दिया था, तथापि आपके पुत्र प्रहलाद ने अन्न के साथ पचा लिया।⁶

यह कथा विश्रुत ही है कि प्रहलाद को अग्नि से, हाथी से, पहाड़ से और विविध प्रकार के षडयन्त्रों से मृत्यु की गोद में सुलाने का प्रयत्न किया गया मगर

1. मैत्रेय श्रूयतां राभ्याक् चरितं तरस्य धीमतः ।

प्रह्लादस्य सदोदार चरितरस्य महात्मनः ॥ श्री विष्णु पुराण — पृष्ठ-90

2. शास्ता विष्णुरशेषस्य जगतो हृदि स्थितः ।

तमृते परमात्मानं तात कः केन शास्यते ॥ श्री विष्णु पुराण पृष्ठ 91 (सतरहवाँ अध्याय)

3. ते तथैव ततश्रवकुः प्रहलादाय महात्मने । विषदानं यथाज्ञाप्तं पित्रा तस्य महात्मनः ॥

4. हालाहलं विषं घोरमनन्तोच्चारणेन सः ॥ अभिमन्त्र्य सहान्नेन मैत्रेय बुभुजे तदा ॥

5. अविकारं स तद्भुक्त्वा प्रवाद स्वस्थ मानसः । अनन्त ख्याति निर्वीर्य जरयामास तद्विषम ॥

6. ततः सूदा भयउस्ता जीर्ण दृष्ट्वा महद्विषम् । दैत्येश्वर भुपागम्य प्रणिपत्येदमब्रुवन् ॥

श्रीविष्णु पुराण पृष्ठ-99

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

... अथवा ...

नारायण की कृपा से प्रहलाद अक्षत बचे रहे । रचनाकार ने इस उपन्यास के माध्यम से समाज को सत्य आचरण की ओर उन्मुख करने के लिए प्रेरित किया है । पूरा उपन्यास पौराणिक कथा पर केन्द्रित होते हुए भी आज के सामाजिक जीवन के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा की शक्ति देता है । आज भी परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से समाज में हिरण्यकश्यप और प्रहलाद जैसे असत् और सत् शक्तियों के बीच संघर्ष जारी है । निराला ने इस पुराण कथा को व्यावहारिक धरातल पर स्पष्ट करते हुए प्रहलाद को हिरण्यकश्यप के सामने एक लघुमानव की तरह संघर्ष करते हुए विजयी बताया है ।

महाभारत :- महाभारत जैसे विशालतम महाकाव्य को कथात्मक वृत्तान्त के रूप में सहज और सरल भाषा शैली में लिख देना यह निराला जैसे समर्थ रचनाकार के द्वारा ही संभव है । वास्तव में इसे उपन्यास कहना कठिन होगा कारण कि यह किसी चरित्र विशेष को लेकर औपन्यासिक शैली में निबद्ध की गई रचना नहीं है अपितु यह महाभारत का अत्यन्त सारसंक्षेप है । महाभारत में अनेक ऐसे पात्र हैं जो अत्यन्त उदार चरित्र के हैं और अनेक ऐसे पात्र हैं जो लघुमानव की श्रेणी में आते हैं । एकलव्य जैसा चरित्र इसका सबसे बड़ा उदारहरण है जिसने एक साधारण वनवासी होते हुए भी गुरु के प्रति अगाध निष्ठा के कारण अप्रतिम शास्त्र विद्या प्राप्त की । इसके बदले गुरु द्वारा उसका अंगूठा माँग लिया जाना यह उस युग का एक बहुत बड़ा छल था । निराला जी ने इसे अपनी कृति महाभारत में केन्द्रीय भाव में व्यक्त किया है । जैसा कि उन्होंने इसकी भूमिका में लिखा है । ‘यह संक्षिप्त महाभारत साधारणजनों, गृह देवियों और बालकों के लिए लिखी गई है । इससे उन्हें महाभारत की कथाओं का सारांश मालूम हो जाएगा । भाषा सरल है । भाव के ग्रहण में अड़चन होगी ।’¹

उनकी यह कृति अठारह पर्वों एवं दो सौ इकतीस पृष्ठों में समाकलित की गई

1. भूमिका भाग – महाभारत – निराला पृष्ठ

है। यदि पर्व में वंश परिचय के अंतर्गत देव और दानवों के अनेक चरित्रों का वर्णन किया है। इनमें से कुछ प्रमुख पात्र हैं—शुक्राचार्य, कच, देवयानी, वृषपर्वा, शर्मिष्ठा, महाराज, दुष्यन्त, शकुन्तला पुत्र भरत आदि। तेजस्वी राजाओं का उल्लेख है। विचित्रवीर्य का विवाह, धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर का जन्म। अम्बा, अम्बालिका और अम्बिका का वर्णन गान्धारी और कुन्ती जैसी स्त्री पात्रों का उल्लेख हुआ है।

उसमें लघुमानव के रूप में जिन पात्रों का उल्लेख हुआ है इनमें एकलव्य, विदुर, हिडिम्बा कर्ण और शिखण्डी आदि हैं। इसी प्रकार से हिडिम्बा तथा वक राक्षस का संहार, द्रौपदी का स्वयंवर विवाह, अर्जुन का वनवास और सुभद्रा के विवाह, खाण्डवदाह, दिग्विजय और शिशुपालवध, द्यूतक्रीड़ा और द्रौपदी का चीरहरण आदि प्रसंगों को लिया गया है। वनपर्व के अंतर्गत पाण्डवों का काम्यक वन के लिए प्रस्थान, अर्जुन की तपस्या और शास्त्रप्राप्त, अर्जुन का स्वर्गारोहण, पाण्डवों का कार्यक्रम, भीमसेन से हनुमानकी भेंट, कमल लाना, दुर्योधन आदि को बंधन मुक्त करना, द्रौपदी हरण, कर्ण की शक्ति प्राप्ति, यक्ष से भेंट आदि का संक्षिप्त सारपूर्ण विवेचन हुआ। विराट पर्व के अंतर्गत पाण्डवों का प्रस्थान और स्थान ग्रहण, कीचक वध, गोधन, हरण, पाण्डवों का स्वरूप धारण आदि प्रसंगों का उल्लेख किया गया है।

उद्योग पर्व :- के अंतर्गत युद्ध की तैयारियों, कृष्ण का दौत्य, कर्ण और कुन्ती, सन्धि न होने के बाद आदि संदर्भों का उल्लेख किया गया है।

भीष्म पर्व :- के अन्तर्गत भीष्म के दस दिनों के युद्ध का वर्णन है।

द्रोणपर्व :- में द्रोण के सेनापतित्व, अभिमनयु की लड़ाई, जयद्रथ वध, घटोत्कच वध दुपद, विराट और द्रोण का निधन आदि का उल्लेख किया गया है।

शल्य पर्व :- के अंतर्गत सेनापति शल्यवध, दुर्योधन वध, अश्वत्थामा के सेनापतित्व आदि का उल्लेख किया गया है।

सौप्तिक पर्व :- के अंतर्गत धृष्टद्युम्न और द्रौपदी के पुत्रों का वध, दुर्योधन का प्राणान्त, अश्वत्थामा का मणि हरण आदि का विवेचन किया गया है ।

स्त्री पर्व :- के अंतर्गत कौरवों की स्त्रियों का विलाप, लौह भीम चूर्ण, गान्धारी का शाप और मृतक तर्पण आदि का विश्लेषण किया गया है ।

शान्ति पर्व :- में सिंहासनारोहण की कथा है ।

अनुशासन पर्व :- में भीष्म की सीख, भीष्म का प्राण त्याग और व्यासजी का उपदेश आदि का विवेचन किया गया है ।

अश्वमेघ पर्व :- परीक्षित का जन्म और अश्वमेघ यज्ञ का वर्णन है ।

आश्रमवासिक पर्व :- में महाराज धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती और विदुर को वानप्रस्थ की कथा वर्णित है ।

मौषलपर्व :- में यादव आदिकों के नाश का विवेचन किया गया है ।

स्वर्गारोहण पर्व :- में युधिष्ठिर का नरक-दर्शन और स्वर्गलाभ की कथा वर्णित है ।

इस पूरे विवेचन को सामने रखकर पर्वशः लघु मानव के साक्ष्य पर महाभारत की पृष्ठभूमि को निराला द्वारा वर्णित साक्ष्य पर इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है ।

आदि पर्व :- में देवों और दानवों के संघर्ष का वर्णन है । ख्यात ही है कि दैत्य अपने छलबल के कारण देवताओं पर भारी पड़ते थे । यहाँ देवता लघुमानव के प्रतीक स्वरूप हैं क्योंकि उनके पास असुरों जैसी मायावी विद्या का अभाव था साथ ही उनकी कुछ अपनी मर्यादाएँ थीं जिनके कारण उन्हें अधिक कष्ट झेलना पड़ा फिर भी सत्य, न्याय से विजय अन्ततः देवताओं की ही हुई । इसी में पाण्डवों और कौरवों के वंश का भी उल्लेख है ।

देखा जाए तो कौरव आसुरी प्रवृत्ति के प्रतीक हैं और पाण्डव देव प्रवृत्ति के । आसुरी प्रवृत्ति का पक्ष अन्याय, अत्याचार पर आधारित रहा है और दैवीय प्रवृत्ति सदाचार,



शिष्टाचार और मानवीय मूल्य बोध पर आधारित रहा है। यही कारण रहा है कि पाण्डवों की विजय होती है और कौरव वंश का समूलनाश।

सभापर्व :- मैं खाण्डवदाह, शिशुपाल का अत्याचार पाण्डवों का तिरस्कार आदि लघुमानव के रूप में चित्रित पाण्डवों पर कौरवों द्वारा किया गया अत्याचार ही है। उपन्यासकार ने इस भावभूमि पर द्रौपदी से कहलवाया है – ‘‘दुःशासन, मेरी लज्जा न लो। मैं कुलवधू हूँ। मेरे धर्म की ओर देखो। फिर इस समय मैं रजस्वला हूँ।’’ द्रौपदी का यह कथन तात्कालिक समाज की गर्हित भावना को चित्रित करता है और आगे चलकर यही भाव दुर्योधन की मृत्यु का कारण बनता है क्योंकि भीम ने उसी समय दुर्योधन को मारने की प्रतिज्ञा ली थी और द्रौपदी ने उसके रक्त से अपने केशों को धो लेने के लिए हमेशा के लिए खोलकर रखा था। ये सभी संदर्भ यह सूचित करते हैं कि परिस्थितिवशात् लघु मानव के रूप में द्रौपदी सहित पाण्डवों की विजय होती है। और कौरवों की पराजय।

वनपर्व :- जुएँ में सर्वस्व हारकर बारह साल का वनवास भोगना और यत्र-तत्र घूमते हुए पाण्डवों का छिपकर रहना यह एक सामाजिक पीड़ा का विषय बना हुआ था मगर इसी समय पाण्डवों की शक्ति अर्जित करना, अर्जुन का स्वर्ग गमन करना और वहाँ देवताओं से युद्ध विद्या सीखना आदि कार्य समाज को सत्य की ओर प्रेरित करता है। इसमें भी द्रौपदी का हरण आदि की व्यथा मर्मन्तक है।

विराट पर्व:- मैं पाण्डवों का प्रस्थान और स्थान ग्रहण, महाराज विराट का सेनापति महारानी सुदेष्णा का भाई कीचक, वध, गोधन हरण, अर्जुन का वृहन्नला बनना, भीम का रसोइया बनना फिर भी सत्य निष्ठा को बनाए रखना यह सब लघु मानव के तपसपूत आचरण का द्योतक है।

उद्योग पर्व :- पाण्डवों की श्रीकृष्ण की आज्ञा का पालन करना, युद्ध की तैयारी करना, कृष्ण के द्वारा पाण्डवों के लिए मात्र पाँच ग्राम मांगे जाना आदि लघु मानव की ओर से किए गए कार्य श्रेष्ठ सामाजिक आचरण के उदाहरण हैं ।

भीष्म पर्व :- में भीष्म का युद्ध, अर्जुन का पराक्रम, अभिमन्यु को घेरने का कुचक्र, नौ दिन तक के युद्ध का वर्णन है । इस संदर्भ में उपन्यासकार की चिन्ता स्वाभाविक है कि “कौरवों की विजय हुई तो देश में सत्य और धर्म की प्रतिष्ठा जाती रहेगी । कौरव अधार्मिक हैं ।”¹

द्रोण पर्व:- में द्रोण का सेनापतित्व, अभिमन्यु की लड़ाई, जयद्रथ वध, घटोत्कच वध, आदि का वर्णन है । महावीर कर्ण का प्राचीन बैर भुलाकर भीष्म से मिलने जाना, पितामह का पाण्डव तुम्हारे ही भाई हैं – यह कहना, कर्ण का समाज में पतित समझा जाना और उसके मन का यह भाव कि – मित्र द्वारा मुझे राजा बनाकर सम्मानित किया गया इसलिए उसके लिए तन-मन से लड़ना । अभिमन्यु की लड़ाई और उसमें किया जाने वाला छल आदि की कथा विवेच्य विषय के मूल संदर्भों का उद्घाटन करती है । इसी में जयद्रथ का वध, घटोत्कच का वध, दुपद, विराट और द्रोण का निधन, अश्वत्थामा का प्राणान्त थे । सभी घटनाएँ सत्य पक्ष के विजय का संकेत देती हैं ।

कर्ण पर्व :- में शल्य का सारथि बनना, उसके द्वारा कर्म का निरुत्साहित किए जाना, दुःशासन का वध, युधिष्ठिर का प्राण रक्षा से भागना, कर्ण का वध आदि घटनाएँ लघु मानव के विजय का संकेत करती हैं ।

सौत्विक पर्व :- के अन्तर्गत धृष्टद्युम्न और द्रौपदी के पुत्रों का वध दुर्योधन के परास्त होने की खबर पर पाण्डवों और पाञ्चालों के शिविर में आनन्द मनाया जाना, अश्वत्थामा द्वारा लातों और घूसों से ही धृष्टद्युम्न का वध कर डालना आदि का वर्णन है । इसी में

दुर्योधन का प्राणान्त और कुरुवंश के तर्पण के लिए भी किसी का न बचना आदि घटनाओं का वर्णन है जिसमें लघु मानव पक्ष की ही विजय गाथा वर्णित है ।

स्त्री पर्व :- के अंतर्गत कौरव स्त्रियों का विलाप और लौहभीम चूर्ण, गान्धारी का शाप और मृतक तर्पण आदि की कथा का वर्णन है । भीम का धृतराष्ट्र को भेंटने के लिए आगे बढ़ना, कृष्ण के द्वारा उन्हें रोका जाना और लौहमूर्ति को लाकर सामने खड़ी कर देना – यह कूटनीति का विषय था । गान्धारी का शोक, चारों ओर कोहराम का वातावरण आदि का वर्णन किया गया है ।

शांति पर्व :- में सिंहासन रोहण की कथा वर्णित है । इसमें युधिष्ठिर का यह जानकर चिन्ताकुल होना कि महावीर कर्ण अधिरथ सूद के पुत्र नहीं अपितु पाण्डवों के ही भाई थे । इसी समय व्यास का आगमन, युधिष्ठिर द्वारा उनका सम्मान आदि संदर्भ लघु मानव के रूप में चित्रित पाण्डवों में स्नेह, सौजन्य और शील का संकेतक है ।

अनुशासन पर्व :- में भीष्म की सीख, भाग्य और कर्म का भेद, राज्य कर्म की चर्चा, भीष्म का प्राण त्याग, व्यास का उपदेश आदि का विवेचन किया गया है ।

आश्रमवासिक पर्व :- में महाराज धृतराष्ट्र, कुन्ती और विदुर का वानप्रस्थ ग्रहण करना, महर्षि शतयुग से आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करना, देवर्षि नारद का हस्तिनापुर आगमन आदि की कथा वर्णित है ।

मौषल पर्व :- में देश में पाण्डवों की सत्ता का और पूरे छत्तीस वर्ष राज्य करने का वृत्तान्त है । इसी में पाण्डवों के सुख समृद्धि पर राज्य का वर्णन, राज्य में कृष्ण की प्रतिष्ठा का वर्णन, कृष्ण की पत्नियों – रुक्मणी, गांधारी, हेमवती, शैब्या और जाम्बवन्ती के सती होने का वर्णन तथा सत्यभामा और अन्य पत्नियों का तप के लिए जाना आदि का वर्णन है ।

महाप्रस्थानिक पर्व :- में पाण्डवों की हिमालय यात्रा, श्रीकृष्ण का जाना आदि का वर्णन है ।

स्वर्गारोहण पर्व:- मैं युधिष्ठिर का नरक दर्शन और स्वर्गलाभ तथा स्वर्ग के मार्ग की अनुभूतियों का वर्णन है । निराला 'कृत' महाभारत में कथा में सत्य की विजय और असत्य के पराजय का वर्णन है । पूरी कथा में सत्यनिष्ठा के आधार पर संघर्षरत् रहते हुए पाण्डवों को अपनी यथास्थिति प्राप्त होती है । इसमें रचनाकार ने लघुमानवों के पराक्रम और उनकी बुद्धिगत कुशलता की ओर संकेत किया ।

महाभारत में आगत लघुमानवों का चारित्रिक वैशिष्ट्य :- निराला की इतिकृति में विशुद्ध रूप से जिन्हें लघुमानव कहा जा सकता है । ऐसे पात्रों में एकलव्य, कर्ण, विदुर और हिडिम्बा को लिया जा सकता है ।

एकलव्य :- भील जाति का युवक एकलव्य शास्त्र विद्या में अर्जुन जैसे धनुर्धर से भी आगे था । उसका मूल बोध इतना विकसित था कि अन्त्यज होने के कारण द्रोणाचार्य से सीधे, शास्त्र शिक्षा प्राप्त करने का उसे अवसर नहीं मिल सका था किन्तु गुरु की प्रतिभा सामने रखकर वह अभ्यास करता था । गुरु के द्वारा यह जानकारी होने पर बड़ी नीति के साथ उसका अँगूठा माँग लिया जाता है जिसे वह प्रसन्न भाव से गुरु को समर्पित कर देता है । इस संदर्भ में उपन्यासकार ने लिखा है - 'निषादराज का एक लड़का द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखने के लिए आया पर उसे शूद्र होने के कारण द्रोणाचार्य ने शिक्षा देने से इंकार कर दिया । इस तिरस्कार का उसके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा । वह गंभीर होकर वहाँ से लौट गया पर गुरु के चरणों में उसकी अपार श्रद्धा रही । वन में गुरु द्रोण की एक मूर्ति बनाकर वह स्वयं ही अस्त्र चलाना सीखने लगा । गुरु के हृदय ने उसे सच्चा मार्ग दिखलाया । वह वहीं रहकर अर्जुन की तरह धनुर्वेद का विशारद हो गया ।'¹

कर्ण:- महावीर एवं धनुर्धर कर्ण पाण्डवों का भाई था किन्तु इतिहास के तिमिर में वह ऐसा आच्छन्न हो गया कि उसे समाज ने शूद्र पुत्र मान लिया जिसकी पीड़ा उसे आजीवन शालती रही मगर दुर्योधन ने उसे राजा बनाकर जो सम्मान दिया उसके लिए वह जीवन

पर्यन्त उसका साथ देता रहा । कर्ण इस दृष्टि से एक लघुमानव होते हुए भी अपने उदात्त मैत्रीभाव के परिचय से समाज को जाग्रत किया । उसकी दानप्रियता का इतिहास आज अमर गाथा बन गई । उस संदर्भ में उपन्यासकार ने लिखा है – ‘वन में गंधर्व से पराजित होने के बाद कर्ण के मन में पाण्डवों के प्रति द्वेष भाव बढ़ गया । अर्जुन को पराजित करने की आशा से वह तपस्या करने लगा । पुत्र अर्जुन की मंगल कामना से इन्द्र कर्ण की तपस्या से बहुत घबराए । उन्होंने निश्चित किया कि कर्ण संसार का इस समय सर्वश्रेष्ठ दानी है । यदि ब्राह्मण का वेष धारणकर इससे कुण्डल और कवच माँग लेंगे तो निःसंदेह अर्जुन का कल्याण होगा ।’¹

विदुरः— दासीपुत्र विदुर लघु मानव की श्रेणी में आते हैं किन्तु विदुर जैसा नीतिज्ञ आज तक के इतिहास में कोई नहीं हुआ । परिस्थितिवश भले ही विदुर कौरवों की तरफ रहे हों किन्तु मन आत्मा और हृदय की पूरी गहराई से वे पाण्डवों के साथ रहे । समय-समय पर उन्होंने पाण्डवों की नीतिगत रक्षा की और इसे अपना कर्तव्य मानकर किया । विदुर की नीति कहीं भी असफल होते नहीं दिखती ।

हिडिम्बा :— भीम की वनवासी पत्नी हिडिम्बा, हिडिम्ब नाम के राक्षस की पुत्री थी । एक बार उसे मनुष्यों के भक्षण के लिए पिता के द्वारा भेजा गया और वह पाण्डवों के पास आई तो सुन्दर पुरुषों को देखकर द्रवित हो गई । जैसा कि उपन्यासकार ने लिखा है – ‘हे वीर! मैं तुम पर मोहित हो गई हूँ और तुमसे विवाह करना चाहती हूँ पर मैं राक्षस की बहन हूँ जो यहीं पर रहता है । वह बड़ा क्रूर मनुष्यघाती है । तुम लोगों को मारने के लिए उसने मुझे भेजा था । तुम लोग उठो, मैं तुम्हें अपने मायाबल से बचा सकती हूँ, अन्यथा वह आ जाएगा तो वह मुझे भी मार डालेगा ।’²

उसकी बात सुनकर भीम ने कहा ‘‘हे स्वरूपे ! तुम घबराओ मत । मैं अपनी माता तथा भाईयों को बच्ची नींद में न जगाऊँगा । तुम झी न उसे । तुम्हारा भाई मेरा

1. महाभारत – निराला पृष्ठ-93

2. महाभारत – निराला पृष्ठ-94

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...

...
 ...

कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।'''

अन्त में होता यह है कि हिडिम्बा पुत्र घटोत्कच महाभारत में युद्ध में पाण्डवों का साथ देते हुए वीरगति को प्राप्त होता है । उपन्यासकार यहाँ यह इंगित करना चाहता है— मनुष्य छोटा हो या बड़ा, कुलीन हो या अकुलीन कभी भी एक दूसरे के काम आ सकता है ।



अध्याय-षष्ठम

निराला के सामाजिक उपन्यासों में
चित्रित लघुमानव का स्वरूप



१८७७-१८८८

॥ विष्णुसहस्रनाम के लक्षण
प्रमाण के अनुसार लक्ष्मी

अध्याय-षष्ठम

निराला के सामाजिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव का स्वरूप

1 . अप्सरा:— 'अप्सरा' निराला की प्रथम औपन्यासिक कृति है । इसका केन्द्रीय पात्र राजकुमार है । सारे पात्र राजकुमार के इर्द-गिर्द में घूमते हैं । राजकुमार इस उपन्यास में राष्ट्र की समस्याओं का संकल्प लेकर चलता है । अन्य पुरुष पात्रों में चन्दनसिंह, हरपालसिंह, कुँवर प्रतापसिंह, हेमिल्टन और रामसुन्दर सिंह आते हैं । हेमिल्टन और कुँवर प्रतापसिंह को छोड़कर शेष सभी पुरुष पात्र लघु मानव की श्रेणी में आते हैं ।

राजकुमार के माध्यम से लेखक ने लघु मानव की सामाजिक छवि का आदर्शतम रूप प्रस्तुत किया है । कारण कि वह हिन्दी साहित्य के उद्धार के लिए भोग-विलास से दूर रहने का दृढ़ संकल्प लेकर चलता है । वह तमाम प्रलोभनों से दूर रहकर कनक के स्नेह, सूझबूझ, सौन्दर्य और सेवाभाव से प्रभावित होकर उसके प्रति अनन्यभाव का वचन देता है । राजकुमार लघु मानव होते हुए भी वहाँ एक महान व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करने लगता है जहाँ वह कनक की वेश्यावृत्ति से घृणा करता है फिर भी उसकी कलागत छवि से सदैव आकर्षित रहता है । इससे स्पष्ट है कि उसकी दृष्टि में व्यक्ति नहीं बल्कि व्यक्ति का गुण महत्वपूर्ण है इसीलिए वह घृणित कार्य में युक्त रहने के बावजूद भी वह कनक को अपने से अलग नहीं कर पाता । यही उसकी उदात्तता है और कलाभाव तथा कला के प्रति उसकी उदात्त सोच को व्यक्त करता है । राजकुमार के माध्यम से लेखक यह भी व्यक्त करता है कि व्यक्ति का



परिवेश भले ही छोटा हो किन्तु यदि उसमें हृदयगत विशालता है तो वह समाज के लिए बहुत कुछ कर सकता है ।

दूसरा पुरुष पात्र चन्दनसिंह जो कि राजकुमार का अनन्य मित्र है । चन्दनसिंह का कार्यक्षेत्र राजनीति है । चन्दन एक ऐसा लघु मानव है जो समाज के लिए मैत्री के नाम पर सबसे बड़ा उदाहरण है जैसा कि वह अपने मित्र राजकुमार को बचाने के लिए स्वयं गुनहगार होकर उसके स्थान पर एक वर्ष की सजा स्वीकार करता है । यही नहीं वह राजकुमार और कनक को भी दाम्पत्य सूत्र में बाँधने का योग जुटाता है । इसी प्रकार से वह कनक को भी कई अवसरों पर बचाता है, सच्चे अर्थों में यह अपने को बचाकर समाज के लिए कार्य करने वाला लघु मानव है ।

इसी प्रकार हरपालसिंह एक ऐसा लघु मानव है जो विकट परिस्थितियों में अपनी जान की बाजी लागकर सहायता करने वाला व्यक्ति है और वह वचन के प्रति दृढ़ रहने वाला व्यक्ति है । उपन्यासकार ने उसके मुँह से रामचरित मानस की यह पंक्ति कहलवायी है — 'रघुकुल रीति सदा चल आयी, प्राण जाए पर वचन न जायी ।'

वह ऐसा पात्र है जो निर्भय है, सहज है और सुशील है । एक बार स्टेट के गुप्तचरों को स्टेशन पर फँसे हुए देखकर चन्दन ने हरपाल से कहा "भैया तुम चले जाओ, भेद अगर खुल गया और तुम साथ रहे, तो तुम्हारे लिए बहुत होगा ।" यह सुनकर हरपालसिंह की भौंहें तन गईं, निगाह बदल गई कहा — भैया हे ! जान का ख्याल करते तो आपका साथ न देते ।' इस प्रकार उसमें जहाँ वीरता है वहीं नारी के प्रति भक्ति और श्रद्धा का भाव भी है । जब तारा ने उसे बुलाया तो उसने जाकर पहले उसके चरण छुए और यही क्रम जाते समय भी रहा । कुल मिलाकर हरपालसिंह भारतीय ग्रामीण परिवेश का एक ऐसा सहज लघु मानव है जो अपना सर्वस्व त्यागकर दूसरे की सेवा के लिए तत्पर रहता है ।

उपन्यास का एक सामान्तशाही परिवेश का पात्र है — कुँवर प्रतापसिंह जो

पूरी तरह से सामन्तशाही परिवेश के रंग में रंगा हुआ है। कनक का कार्यक्रम सुनकर उसके प्रति आसक्ति का भाव जागना यह उसके विषयोन्मादी होने का प्रमाण है। जैसा कि लेखक ने कहा है कि वह कनक से कहता है – “क्या सोचती हो तुम भी, दुनियाँ में हँसने-खेलने के सिवा और है क्या।” निराला ऐसे पात्रों के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि विभव वैभव और कामोन्मादी स्वभाव से युक्त व्यक्ति कभी समाज का हित सम्पादन नहीं कर सके हैं और न ही वे उनके श्रद्धा के केन्द्र बन सके हैं। कुँवर प्रतापसिंह ऐसे ही चरित्र पात्र का प्रतिनिधित्व करता है।

हेमिल्टन एक ऐसा पात्र है जो लघु मानवों पर अपने अधिकार सुख को थोपता है इससे उनकी सुविधा होगी एवं विलासपूर्ण प्रवृत्ति का बोध होता है। वह मनुष्य होकर भी कहीं से मनुष्य नहीं लगता। भोग-विलास की लिप्सा के आगे वह सब कुछ त्यागने को तत्पर रहता है। इसके अतिरिक्त उसके मन में न तो मानवीय प्रेम है और न दया है और न ही किसी प्रकार की सामाजिक सोच। हेमिल्टन के माध्यम से लेखक अंग्रेजों की उच्छश्रृंखलता का बोध कराती है किन्तु राजकुमार जैसे लघु मानव के रहते हुए वह अपने षडयन्त्र में सफल नहीं हो पाता है।

रामसुन्दर सिंह भारतीय होते हुए भी बहुत कुछ हेमिल्टन की प्रवृत्ति से साम्य रखता है। पुलिस का दरोगा होना उसके लिए सामाजिक न्याय का मार्ग नहीं है अपितु अपनी स्वैचारिता तथा अतिरिक्त कामनाओं की पूर्ति करता रहता है। कनक और राजकुमार के साथ उसके आए हुए संदर्भ इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह पूरी तरह से अमानवीय एवं अहंकार का वशीभूत हुआ एक पुलिस का दरोगा मात्र है और कुछ भी नहीं।

कनक:— कनक एक ऐसी नारी पात्र है जो पेशे से अप्सरा होते हुए भी पूरी तरह मनुष्य है। वह रूप – माधुरी, कलात्मकता और व्यवहारिकता से परिपूर्ण है। प्रथम दृष्ट्या ही वह राजकुमार की निर्भयता और वीरता से प्रभावित हो जाती है और इस

प्रभाव का रंग उस पर और गहरा जाता है जब वह राजकुमार के साथ कोहिनूर थियेटर के रंगमंच पर मिलती है । शुक्न्तला का अभिनय कर रही कनक और दुष्यन्त का अभिनय कर रहा राजकुमार दोनों का नाटक के रूप में हुआ गान्धर्व परिणय कनक की अनुरक्ति का स्थायी कारण बन जाता है । कनक की ही प्रतिरक्षा में हेमिल्टन के साथ किए गए आचरण के कारण राजकुमार को गिरफ्तार होना पड़ता है । राजकुमार की इस गिरफ्तारी से कनक बहुत व्यथित हो जाती है । राजकुमार के छूटकर आने के बाद वह उसके स्नेह, सौन्दर्य और अनुराग से प्रभावित हो उसे अपना समझने लगती है किन्तु अपने मित्र चन्दन की गिरफ्तारी से प्रतिज्ञा के आवेश में जब वह कनक के बनाए हुए भोजन का तिरस्कार कर चला जाता है तब आकांक्षा और अप्राप्ति के अपराजित समर में कनक भी उसी की तरह उच्छ्वस्रंखल हो जाती है । इसका परिणाम यह होता है कि जहाँ वह राजकुमार के प्रति आस्था के कारण कुंवर साहब के आमंत्रण को ठुकरा देती थी वहीं राजकुमार के प्रतिक्रियात्मक स्वभाव के कारण वह अपना विचार बदलकर कुंवर साहब के आमंत्रण में शरीक होने की अनुमति दे देती है किन्तु वह दूसरे पक्ष के नैतिक पतन के बारे में सोचने लगती है । “मुझमें और इनमें कितना फर्क है । ये मालिक हैं, और मैं इनके इशारे पर नाचने वाली ! और यह फर्क खेल इसी सीमा तक है । चरित्र में ये किसी भी तवायफ से श्रेष्ठ नहीं पर फिर भी समाज इनका है, इसलिए ये अपराधी नहीं । नीचता से ओत-प्रोत ऐसी वृत्तियाँ लिए हुए भी ये समाज के प्रतिष्ठित, सम्मान्य, विद्वान और बुद्धिमान मनुष्य हैं और मैं ?”¹

इसी समय राजकुमार का मित्र चन्दन उसे बचाकर राजकुमार के प्रति उसमें अपूर्व आकर्षण भर देता है । पर विवाह का प्रसंग छिड़ने पर जब राजकुमार चन्दन को प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाने लगा तब कनक ने जो उत्तर दिया उसमें नारी गौरव का महासंकल्प अकातर निर्भयता के साथ सुनाई देता है, वैसे ही, जैसे महाराज

दुष्यन्त की परिणय-विस्मृति के समय अभय जीवन में पली हुई कालिदास की शकुन्तला का सुनाई देता है । वह कहती है - “राजकुमार जी आपने स्वयं जो प्रतिज्ञा की है, शायद ईश्वर के सामने की है और मेरे लिए जो शब्द आपके हैं - आप ईडन -गार्डन की बातें भूले नहीं होंगे - वे शायद वीरांगना के प्रति हैं ।”

चन्दन कनक की आँखों का तेज और नत राजकुमार को देख रहा था । इस गौरव-निष्ठा के साथ उसका हृदय सच्चे प्यार, सहानुभूति और सेवा को पहचानने वाला है, तभी वह थोड़े समय के साहचर्य से ही प्रभावित होकर तारा से कहती है - “दीदी, मैं अब आप ही के साथ रहूँगी ।” चन्दन का स्नेह स्मरण कर वह रोमांचित हो उठती है । कभी-कभी जब अपने पेशे का अनुभव और उदाहरण उसे याद आता है, तो घृणा और प्रतिहिंसा की एक लपट बनकर जल उठती है । ग्रामीण स्त्रियों की घृणा से जब वह घबरा जाती है तब तुरन्त तारा का स्नेहदान पाती है और कहने लगती है - “दीदी, आप मुझे मिले तो सब कुछ छोड़ सकती हूँ । जब रास्ते में हेमिल्टन और स्टेशन मास्टर को राजकुमार - ‘ये मेरी स्त्री है, भावज और भाई है ।’ कहकर डॉटता है, तब कनक, अपने प्रिय के वीरोल्लास से अनुप्राणित हो खिल उठती है । जब तारा के यहाँ पहुँचकर पेशवाज जलाने पर यह प्रतिज्ञा करती है, “अब ऐसा काम कभी नहीं करूँगी ।” उस समय वह षोऽशी चंचलता नारी से देवी बन जाती है, और कहने पर भक्ति विह्वल हृदय से श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन’ गाकर चन्दन के भाई नन्दन को सुनाती है । दूसरे दिन जेल जाते समय चन्दन, कनक का यह गाना सुनता है - “आजु राजनि बड़ भागिनि लेख्यइं, पेख्यइं पिय-मुख चंदा ।” इस प्रकार आन्तरिक और बाह्य जीवन के संघर्ष में पड़कर अप्सरा, कनक, आदरणीया देवी और साध्वी प्रेमिका रूप में हमें प्राप्त होती है ।

तारा अप्सरा उपन्यास का एक केन्द्रीय पात्र है । निराला ने इसे आदर्श पात्र की अनुपम सृष्टि कहा है । वह परम आस्तिक है और दयालु भी । चन्दन के जेल

से छूट जाने पर वह राजकुमार की रक्षा के लिए कुछ आदमियों के साथ चन्दन को भेजती है । वह जब कनक को लेकर तारा के पास पहुँचता है तब वह अपनी स्नेह दृष्टि और सेवा से उससे इस प्रकार आत्मीयता प्राप्त कर लेती है कि कनक यह स्वीकार करती है – ‘दीदी, आप मुझसे मिलें, तो सब कुछ छोड़ सकती हूँ ।’¹ ग्राम-बंधुओं की अवमानना से कनक घबराए नहीं, इसलिए उसे सतर्क करती है ।

उसकी इस वाणी में कितना सारगर्भ सत्य छिपा है । ‘बहन, मनुष्यों के अज्ञान की भार मनुष्य ही तो सहते हैं, फिर स्त्री तो सिर्फ क्षमा और सहनशीलता के कारण पुरुषों से बड़ी है, उसके यही गुण पुरुष की जलन को शीतल करते हैं ।’ कनक द्वारा तारा से यह पूछे जाने पर कि ‘क्या किसी जात का आदमी तरक्की करके दूसरी जात में नहीं जा सकता ।’² तारा कनक से कहती है – बहन, हिन्दुओं में अब यह रिवाज नहीं रहा । यों, पौराणिक काल में, ऋषि विश्वामित्र का उदाहरण हमारे सामने अवश्य है” आदमी आदमी है, और ऊँचे शास्त्रों के अनुसार सब लोग एक ही परमात्मा से हुए हैं । यहाँ जिस तरह शिक्षा – क्रम से बड़े छोटे का अंदाज लगाया जाता है, पहले इसी तरह शिक्षा, सभ्यता और व्यवसाय का क्रम रखकर ही जातियों का वर्गीकरण हुआ था ।’³ झंझावातों को सहती हुई, एक स्त्री होते हुए भी समाज में पुरुषों की बराबरी की कार्यकुशलता रखने वाली स्त्री है । तारा इस प्रकार से एक ऐसा स्त्री लघुमानव है जो उन्मयास के अन्य पात्रों के लिए प्रेरणा की स्रोत है ।

सर्वेश्वरी एक ऐसी पात्र है जिसके जीवन में वैभव के आकर्षण के साथ-साथ आर्थिक पक्ष भी महत्व रखता है । कनक द्वारा राजकुमार से उसकी परिणय की एकनिष्ठता की बात कही जाने पर वह उसके पिता महाराज रणजीतसिंह की याद

1. अप्सरा – निराला पृष्ठ-117

2. अप्सरा – निराला पृष्ठ-123

3. अप्सरा – निराला पृष्ठ-124

दिलाकर उसकी बात की पुष्टि करती है ।

लेखक के शब्दों में 'उसने निश्चय कर लिया था, अब इस मकान में उसका रहना ठीक नहीं । जिन्दगी में उपार्जन उसने बहुत किया था । अब उसकी चित्तवृत्ति बदल रही थी । कलकत्ता रहना सिर्फ उपार्जन के लिए था । अब यह भी अपनू हिन्दू विचारों के अनुसार जीवन के अंतिम दिवस काशी ही रहकर बाबा विश्वनाथ के चरणों में पार करना चाहती थी ।'¹ इस प्रकार उसका जीवन सत्य पर आधारित हो जाता है । इससे यह स्पष्ट अनुभूति होती है कि व्यक्ति अपने निजी जीवन में कितना ही क्यों न गिर जाए किन्तु अन्त में जीवन की वास्तविकता का बोध होता है तब वह सच के रूप में ही ग्रहण करता है । उपन्यासकार इस भावना के साथ सर्वेश्वरी जैसे एक लघुमानव को जीवन के शिखर पर पहुँचा देता है ।

कैथरीन एक इसाई जाति की अंग्रेज शिक्षिका है जो कनक को उसकी शिक्षा में योगदान देती है किन्तु उसके इस सहयोग में एक चालाकी छिपी हुई है वह यह कि कैथरीन कनक को इसाई बनाना चाहती है । निराला ने इसके माध्यम से उस समय हो रहे धर्मान्तरण की ओर गहरा संकेत किया है । ये इसाई प्रभुसत्ताधारी लोग गरीब हिन्दू मानस को बहला-फुसलाकर धर्मान्तरण के लिए प्रेरित करते हैं । इसके मूल में एक ऐसी सोची समझी चाल छिपी हुई है । उनका सेवा से कुछ लेना देना नहीं है । अपितु उनका मूल उद्देश्य है विभिन्न जातियों से इसाई धर्म में लोगों को दीक्षित करना । कैथरीन कनक को प्रलोभन देती है - 'तुम यूरोप चलो, यहाँ के आदमी क्या तुम्हारी कद्र करेंगे । मैं वहाँ तुम्हें किसी लार्ड से मिला दूँगी । तुम क्रिश्चियन हो जाओ, राजकुमार तुम्हारे लायक नहीं । वह क्या तुम्हारी कद्र करेगा ? वह तुमसे दबता है, रद्दी आदमी ।'² इसके माध्यम से लेखक यह भी कहना चाहता है कि भारतीयों का

1. अप्सरा - निराला पृष्ठ-157

2. अप्सरा - निराला पृष्ठ-77

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

॥ अथ शिवोक्तम् ॥

मन इतना कमजोर नहीं होता कि वह चन्दलाम के लिए अपना धर्म बदल दे क्योंकि धर्म उसके लिए बहुत बड़ी चीज है फिर भी मरता क्या न करता की तरह बहुत से लोग अपना धर्मान्तरण कर लेते हैं किन्तु गौरव की बात यह है कि कनक पर उसके इस धोखेबाजी की प्रवृत्ति का कोई असर नहीं पड़ता । यहाँ कनक अभाव में रहती हुई भी कैथरीन से बहुत बड़ी है ।

अलका:- अलका निराला की नायिका प्रधान औपन्यासिक कृति है । इसमें निराला ने ऐसे पात्रों की सृष्टि की है जिसे पढ़ने से ऐसा लगता है कि जैसे चलचित्र के पर्दे पर कोई कहानी चल रही हो । यह पूरी तरह से एक ऐसा सामाजिक उपन्यास है जिसमें पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति का न केवल तथ्यात्मक वर्णन किया गया है अपितु उसके करणीय पक्ष पर भी प्रकाश डाला गया है । इसमें नारी अपने रूढ़रूप में कहीं अबला नहीं अपितु पौरुषमयी मातृशक्ति के रूप में चरितार्थ होती है । इस उपन्यास में अलका शान्ति (वीणा) एवं राधा जैसे स्त्री पात्रों एवं मुरलीधर, महादेव, कृपानाथ, विजय, स्नेहशंकर एवं अजित जैसे पुरुष पात्रों की सृष्टि की गई है ।

अलका इस उपन्यास की नायिका है । यह एक ऐसी पात्र है जिसके भाग्य में संघर्ष ही संघर्ष है । इस प्रकार से संघर्ष भरे जीवन के होते हुए भी इसमें कहीं किसी भी प्रकार से अपने साहस, धैर्य और परिश्रम को पीछे नहीं छोड़ा । अपनी अप्रतिम जिजीविषा के कारण ही वह अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल लेती है । माता-पिता के स्वर्गवास हो जाने के बाद अन्यत्र संरक्षण पा रही अलका वैवाहिक बन्धन में बँध चुकी थी किन्तु अभी उसे अपने पति का प्रथम दर्शन भी नहीं हो पाया था । इसका पूर्व का नाम शोभा था । इसके जीवन में एक ऐसा मोड़ आया कि महादेव नामक पुरुष पात्र जो कुछ दिन इसका शुभ चिन्तक बनकर मुरलीधर नामक जमींदार को सौंपना चाहता है । मुरलीधर के यहाँ सेवा कार्य कर रहे राधा के पति से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि जमींदार उसका शोषण करना चाहता है । इस षडयंत्र की जानकारी के प्राप्त

होते ही वह घर से भाग निकली । भागते-भागते वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी, नियति ने उसका साथ दिया और उसे स्नेहशंकर जैसे भद्र पुरुष का संरक्षण प्राप्त हो गया । यहीं से उसके जीवन में एक नया मोड़ आता है ।

वीणा:- (शांति) ब्याह के तीसरे दिन ही विधवा हो गई थी । वीणा गाँव की भोली भाली विधवा है । भाई ब्रजकिशोर के अतिरिक्त उसका और कोई नहीं है । जमींदार के लोग वीणा को भी उठा ले जाने की योजना बनाए थे किन्तु ब्रजकिशोर उसी दिन गाँव पहुँचकर उसकी रक्षा करता है । विधवाओं के अभिशप्त जीवन के बारे में वीणा सोचती है — ‘‘क्या विधवा जैसी दुखी विधाता की दूसरी भी सृष्टि होगी, जो सखियों में खुले प्राणों से बातचीत नहीं कर सकती, भोग सुख वाले संसार के बीच में रहकर भी भोग-सुख से जिसे विरत रहना पड़ता है, आँखों के रहते भी जिसे चिरकाल तक दृष्टिहीन होकर रहना पड़ता है ।’’¹ अजित शोभा को खोजता हुआ गाँव पहुँचता है । वह स्वामी जी के वेश में रहता है ।

वीणा का भाई ब्रजकिशोर जमींदारों में दुर्भाव और अनिष्ट की आशंका को अजित पर व्यक्त करता है । अजित वीणा और उसके भाई को जीविका के लिए शहर ले जाता है । अजित वीणा से उसके भाई की स्वीकृति से विवाह कर लेता है । अन्त में अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु वीणा अपना नाम शान्ति रखकर अलका की मदद मुरलीधर का अन्त करने में करती है । अतएव लेखक द्वारा वीणा जैसे लघुमानव द्वारा महान कृत्य करवाता है । बड़े साहस के साथ ग्रामीण बाला वेश बदलकर मुरलीधर की पिस्तौल चुराने का कार्य करती है ।

राधा:- राधा शोभा के पड़ोस में रहती है राधा को अपने पति से जिलेदार महादेव और जमींदार मुरलीधर की बात ज्ञात होती है । वह शोभा को आत्मरक्षा के लिए प्रबुद्ध करती है जब अजित गाँव पहुँचता है तब वह अजित को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताती है ।

इससे प्रकार बड़ी ही सहजता से लेखक राधा से एक अत्यन्त महान कृत्य करवाता है । इसे उपन्यास की नायिका की लाज बचती है । शोभा (अलका) और उसके बी.ए. पास पति का मिलन उपन्यास के अन्त में अत्यन्त नाटकीय ढंग से हो जाता है । उपन्यासकार ने 'अलका' उपन्यास में समकालीन जीवन के यथार्थ का चित्रण किया है ।

विजय के माध्यम से उपन्यासकार ने लघु मानव के रूप में एक दृढ़ निश्चयी और समाजसेवी चरित्र को प्रस्तुत किया है - "अब तो तमाम भारतवर्ष अपना है । उसी के लिए जो कुछ होगा करूँगा । 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।' इस संकल्प को लेकर विजय अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ता है । विजय गाँवों की अशिक्षित निर्धन जनता जिन पर जमींदारों द्वारा अत्याचार हो रहे थे उनमें शिक्षा का प्रचार-प्रसार और जमींदारों के कुचक्रों को विफल करने के काम में जुट जाता है । यद्यपि जमींदारों की भार से टूटी हुई जनता में विद्रोह करने का साहस न था । जनता का सहयोग न मिलने के कारण और जमींदार के षड़यन्त्र के कारण सालभर की जेल यात्रा भी सहनी पड़ी । जेल से मुक्त होने पर विजय कुलियों के शिक्षा संगठन में लग गया । लघुमानव होते हुए भी डिप्टी कमिश्नर ज्ञान प्रकाश के द्वारा दिए गए नौकरी के प्रलोभन को विजय ठुकरा देता है । विजय कहता है - 'नौकरी से जो रुपए मिलते हैं वे अंक में ज्यादा होते हैं । देश के आर्थिक विचार से वे दार्शनिक बिन्दु से वे उतने ही इधर होते हैं ।'"

स्नेहशंकर जी अलका उपन्यास के एक आदर्श पात्र हैं । इस उपन्यास के सभी स्त्री और पुरुष लघुमानव पात्रों को स्नेहशंकर का संरक्षण मिलता है । सात, आठ गाँव के जमींदार हैं । अपनी जमींदारी का सारा कार्यभार किसानों की एक कमेटी के सुपुर्द कर स्वयं रियाया की भाँति जीवन-यापन करते हैं । एक अच्छे लेखक भी हैं जिसकी आमदनी से वे शिक्षा विभाग की मदद करते हैं । अपने पुत्र और पुत्र वधू को

भी ग्रामीणों के शिक्षा संगठन में लगा देते हैं । तत्वज्ञ, पुरातत्ववेत्ता और दार्शनिक स्नेहशंकर जी के संरक्षण में ही शोभा अलका बनी । उपन्यासकार द्वारा उपन्यास के सभी लघुमानव पात्रों को स्नेहशंकर जी द्वारा नई दिशा की ओर प्रेरित करवाया गया । स्नेह शंकर जी के प्रेरणास्पद विचार "चाहते और क्या हैं, न्याय, इस दुख से मुक्ति । इसलिए जो लोग वास्तव में क्षेत्र से उतरकर देश के लिये कार्य करते हैं वे यदि इन किसानों की शिक्षा के लिए सोचें, हर जिले के आदमी, अपने ही जिले में जितने हों उतने केन्द्र पर अर्थात् उतने गाँव में, इन किसानों को केवल प्रारंभिक शिक्षा भी दे दें तो उनके जेलवास से ज्यादा उपकार हो, और यह शिक्षा की सच्चाई सहृदयों की यथेष्ट संख्या — वृद्धि कर दे । फिर वे भी इस कार्य में कार्यकर्ताओं की मदद करें । किसी प्रकार का सुधार पहले मस्तिष्क में होता है । जहाँ मस्तिष्क ही न हो, वहाँ नेता की आवाज का क्या असर हो सकता है ।"

अजित विजय की ही भाँति देशहित के लिए संकल्पित है । लेखक ने अजित के माध्यम से ऐसे लघु मानव को प्रस्तुत किया है जो मुरलीधर जैसे दुष्ट ताल्लुकेदार से प्रतिशोध लेता है । लेखक ने अजित जैसे लघुमानव के द्वारा विधवा वीणा से विवाह करवाकर विधवा समस्या का निराकरण करवाया । अजित एक क्रान्तिकारी युवक है । ईश्वर के प्रति अजित के विचार "ईश्वर की बातचीत खाते-पीते हुए सुखी मनुष्यों का प्रलाप है ।"

मुरलीधर एक ऐसा पात्र है जिसके पूर्वजों ने अंग्रेजों की मदद करके जमींदारी प्राप्त की थी । वियासत से मिले हुए कुसंस्कारों ने मुरलीधर को और भी अधम और नीच बना दिया था । अलका पर भी उसकी कुदृष्टि थी किन्तु राधा जैसे लघुमानव पात्र से लेखक ने अलका का उद्धार करवाया । राधा ने अलका से मुरलीधर के षड़यंत्र को उजागर किया । अन्त में उपन्यास के सभी लघुमानव पात्रों

द्वारा मुरलीधर का अंत होता है ।

कृपानाथ एक ऐसा पुरुष पात्र है जिसका गाँव में बड़ा आतंक फैला हुआ है। निर्धन किसानों के लगान न चुका पाने पर कृपानाथ उन्हें कड़ी से कड़ी यातनाएं देता है जिसका एक उदाहरण “अपने अहाते में अपने मातहत आदमियों के बीच, अपनी महत्ता के आप ही प्रमाण, हाथ में डंडा लेकर जमींदार कृपानाथ पशुवत् बुधुआ की बुद्धि को प्रहार के पथ पर लाने लगे । क्षीण, दुर्बल, मनुष्याकार वह चर्मस्थि शेष प्रत्यक्ष दारिद्र्य कृपा प्रार्थना की करुण दृष्टि करुण उन्मीलित कर रह गया । प्रहार से पीठ फट गई, मुख से फेन बह चला, वहीं पृथ्वी की गोद में वह बेहोश हो लुढ़क गया ।”¹

लेखक द्वारा बुधुआ जैसे लघु मानव को प्रस्तुत किया गया है जिसके समक्ष है, अत्याचार के खिलाफ प्रतिकार की भावना भी है — “बुधुआ इन बातों से दूर पूरी एकाग्रता से साहब के निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था । मन ही मन वह कितने बड़े प्रतिशोध के लिए तैयार । ऐसा मौका उसे कभी नहीं मिला । आज जमींदार साहब से आँखें मिलाते हुए वह बिल्कुल नहीं डरता । वह निर्दोष है, फिर भी उसके हृदय में कितने बार एकांत में अपने दुर्बल तार झंकृत कर शक्तिमानों से उसे निरस्त रहने की सलाह दी है, यह सब स्मरण, सब दौर्बल्य एकत्र हो, वाष्प के मेघों की तरह पूर्ण प्राबल्य से सूर्य को घेरकर उसे समझा देना चाहता है कि तपन के विरोध में सिक्त करने की यह कितनी शक्ति रखता है ।”² किन्तु जमींदारों की यातनाओं के कारण बुधुआ अधिक विद्रोह नहीं कर पाता है ।

अतएव लेखक ने लघुमानव पात्रों और चरित्रों के माध्यम से अलका उपन्यास में जाज्वल्यमान सामाजिक समस्याओं के छिपे हुए कुरूप अंशों को उद्घाटित किया है । उच्च वर्गों के जातीय दम्भ, पारस्परिक भेद-अभेद, वैयक्तिक अहमन्यता

1. अप्सरा — निराला पृष्ठ-46

2. अप्सरा — निराला पृष्ठ-62

आदि का उन्होंने सबल सतर्क खण्डन किया है। लघु मानव पात्र विजय द्वारा उन्होंने कहलाया है - 'दबे हुए जो होते हैं दबाना उनका स्वभाव हो जाता है।' लघुमानव की प्रतिष्ठा इस उपन्यास में यथेष्ट रूप में हुई है।

निरुपमा:- 'निरुपमा' नारी - समस्या प्रधान सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में निराला का अंतर्भाव प्रकट होता है। प्रणय, विद्रोह, क्रान्ति, रूढ़ि, नारी की असहाय दीनावस्था, जमींदारी प्रथा, मानवीय भाव जैसी समस्याओं को उठाकर लेखक ने अपनी मान्यताओं को प्रतिष्ठित किया है। निरुपमा उपन्यास सामाजिक उत्कर्ष और प्रणय प्रसंग का अप्रतिम उपन्यास है। इस उपन्यास में निरुपमा, बालिका नीलिमा, कमल, सावित्री देवी जैसे स्त्री पात्र एवं कृष्ण कुमार, यामिनीहरण योगेश बाबू जैसे पुरुष पात्रों की सृष्टि की गई है।

निरुपमा इस उपन्यास की नायिका है। निरुपमा जहाँ एक ओर भारतीय नारी के आदर्शों से मण्डित है तो दूसरी ओर शिक्षा, ज्ञान और विवेक से सम्पन्न है। निरुपमा के कक्ष की भव्यता जिसमें तमाम महापुरुषों के चित्र टंगे हुए थे, को दिखाकर लेखक ने उसके सौन्दर्य और संस्कृति पर प्रकाश डाला है। उपन्यास के नायक कृष्णकुमार के द्वारा जब उसके गीत का अनुसरण होता है तब वह खीज उठती है। निरुपमा क्रोध में उसे 'छूचो-गोरू गाधा' कहती है। अंगरेजी पढ़ने पर भी निरुपमा हिन्दू संस्कारों में ही ढली हुई है। ममेरे भाई द्वारा किए गए निर्णय ही उसे मान्य हैं, किन्तु उसकी सखी कमल उसके घर वालों की स्वार्थपूर्ण कूटनीति के प्रति उसे आगाह करती है। तब स्वतन्त्र विश्वास की चिन्तनशीलता उसमें जागती है और वह देहात जाने का जहाँ उसकी जमींदारी है, निर्णय लेती है। ग्रामीण महिलाओं से बातचीत तथा गरीब और समाज में उपेक्षित व्यक्तियों के प्रति उसकी सहानुभूति नीरू के चरित्र के अनेक गुण प्रकट करती है। निरुपमा का विवाह यामिनीबाबू, जिनकी लखनऊ विश्वविद्यालय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

मैं प्रोफेसर पद पर नियुक्ति, कृष्ण कुमार के स्थान पर हुई, के साथ तय किया जाता है, उसके अनुसार "यामिनी उस तत्व के मुकाबले एक जड़ विशेष है। वही विद्वान उसके मकान में जूता पालिश करने के लिए गया था। यह कितना बड़ा आदर्श है। ब्राह्मणत्व का कहीं नाममात्र के लिए अहंकार नहीं। यूरोप की शिक्षा का ज्वलन्त उदाहरण है। कहाँ विश्वविद्यालय के सामान्य पद की प्रतियोगिता, कहाँ सामान्य जूता पालिश करना। एक ही व्यक्ति इन दोनों कार्यों की समता रखता हुआ कहाँ यह और कहाँ यामिनी, आत्मसम्मान लोलुप मनुष्य का रूपमात्र रखने वाला" ¹ तीव्र अन्तर्द्वन्द्व के पश्चात् वह निश्चय करती है - "कुमार अविवाहित है, मैं कुमार को चाहती हूँ भले ही वह बंगाली नहीं, पर मनुष्य है, कुछ हो या न हो, मैं चाहती हूँ मैं लज्जा करूँ भी क्यों? विवाह मन का है, मेरा मन जिसे नहीं चाहता, मैं क्यों उससे विवाह करूँ?" ²

नीरू नीला के साथ कुमार के घर जाकर उसकी माँ से उसके घर एवं जमीन के संबंध में उदारनीति प्रकट करती है। अन्त में कमल के त्याग, साहस और चातुर्य से अपना मार्ग स्वयं निर्धारित कर लेती है और कुमार के साथ परिणय सूत्र में बंध जाती है। अतः निरुपमा में युगनारी की अभय विचारशीलता, सहज भावुकता, नारी शक्ति के मातृत्व के लिए अविचल निष्ठा का समन्वय है। कमल सहनायिका के रूप में है। लेखक ने कमल को एक ऐसे लघुमानव के रूप में प्रस्तुत किया है जिसकी उपन्यास में मुख्य भूमिका न होते हुए भी वह नायिका निरुपमा से अधिक जागरूक और किगाशील है। व्यक्तित्व की दृष्टि से कमल आधुनिक व्यक्तित्व की प्रतिनिधि है। कमल अन्यायी को क्षमा नहीं करती उसे दण्ड देने के लिए पूरा प्रयत्न करती है। कमल के पिता ब्राह्म थे। ब्राह्म समाज की युगान्तकारी शक्ति के रूप में वह उपस्थित है। निरुपमा से प्रथम भेंट में विवाह के प्रसंग में अपना स्पष्ट विचार प्रकट कर सतर्क करती

1. निरुपमा - निराला पृष्ठ-84

2. निरुपमा - निराला पृष्ठ-84



है - 'विवाह मजाक नहीं, एक जिन्दगी भर का उत्तरदायित्व है तुम्हारी संस्कृति की छाप, तुम पर गहरी होती जा रही है और इसलिए अपने यहाँ की पर्दा प्रथा वाली देवियों को जैसे तुम इस प्रसंग के पर्दे में रखना चाहती हो, पर यह अगर प्राणों पर पड़ा हुआ पर्दा है तो निश्चय यह सदा के लिए पड़ा ही रह जाएगा ।''¹ लेखक द्वारा कमल जैसे लघुमानव चरित्र को प्रस्तुत कर यह प्रकाश डाला गया है कि कमल जैसी लड़कियाँ सभी हो जाएं तो इस गलित कुष्ठ समाज का उद्धार हो जाए । ब्राह्मण समाज की सम्पूर्ण प्रतिभा, तेज और साहस कमल में जैसे मूर्त हो उठा हो ।

सावित्री देवी का चरित्र एक आदर्श माँ के रूप में चित्रित हुआ है । कमल की भाँति सावित्री देवी भी लघुमानव के रूप में प्रस्तुत है जो कि विधवा है, अशिक्षित है किन्तु शिक्षा की शक्ति से मूर्ख जड़ समाज की जड़ता से लड़ती है । जमींदार के अत्याचार सहती हुई भी टूटती नहीं और मूर्खों और अत्याचारों के समक्ष घुटने नहीं टेकती, खेत और मकान गिरवी रखकर बेटे को शिक्षित होने के लिए विलायत भेजती है और बेटे के द्वारा बूट पालिश का धन्धा करने पर लज्जित या दुखी न होकर प्रसन्न होती है । उनमें उज्ज्वल विवेक दृष्टि, अपार सहिष्णुता तथा करुणा का अपूर्ण समन्वय मिलता है ।

नीलिमा इस उपन्यास की बालिका पात्रा है । निरुपमा की ममेरी बहिन है । नीली को अपनी बहिन पर अगाध श्रद्धा है । निरुपमा और कुमार की आदर्शानुरक्ति को सफल कराने में नीली की अभय तत्परता आदि से अन्त तक लक्षित होती है । नीली की प्रबुद्ध क्रियाशीलता के संबंध में कमल ने कहा - 'उस मकान में यदि कोई समझदार है तो नीली ।'

कृष्णकुमार के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे लघुमानव पात्र की सृष्टि की है जो समाज से ही नहीं, अपने संस्कारों से भी लड़ने का अटूट अदम्य साहस रखता है ।

ब्राह्मण कुल का और सुशिक्षित होने पर भी वह चमार का काम खुले समाज में करता है। नितान्त संकुचित विचारधारा से ग्रसित समाज ने इस शिक्षा प्रेमी, लन्दन के डी.लिट की उपेक्षा की पर आत्मविश्वासी, दृढ़ी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व वाले इस व्यक्ति ने समाज की पूर्ण उपेक्षा ही नहीं की बल्कि ऐसे समाज की क्षुद्रता पर लोगों को हँसने के लिए बाध य भी कर दिया। सामान्य वर्ग के मन में उत्सुकता, आनन्द तथा सहानुभूति जागी पर विद्वानों का शोषण करने वाले अहमन्यता से ग्रसित लोगों ने कुमार के इस रूप को देखकर उहपास किया। 'सस्ता-साहित्य समुद्र' के प्रकाशक लाला श्याम नारायण लाल देखकर कह गए 'हम चार रुपये फार्म दे रहे थे मोपासाँ के अनुवाद में वह आपको मंजूर नहीं हुआ आखिर पालिश और ब्रश लेकर बैठे।'¹ पं. राम खेलावन मुँह बिगाड़कर बोले "सात रुपये घण्टे की पढ़ाई लगवा रहे थे, नहीं भायी, अब चमार बनकर पुरखों को तारों।'² लंदन की इस ऊँची डिग्री के बावजूद बूट पालिश जैसे काम को कुमार द्वारा स्वीकार करने के पीछे इस समाज की जटिलताओं की मुख्य भूमिका है। लेखक का इस बात की ओर संकेत है कि योग्यता और प्रतिभा की अनदेखी करके जाति और सिफारिश के आधार पर विश्वविद्यालय में चयन की प्रक्रिया है। 'विलायत से लौटकर भारत के बृहत्तर समाज पर जो कल्पनाएँ कुमार ने की थी, जाति निर्माण का जो नक्शा खींचा था, इस पर दलित धरा पर उसकी सहानुभूति की धारा जिस वेग से बहती थी, जिस सहृदयता से वह शिक्षित मात्र को देखती था, वे सब जीविकार्जन के क्षेत्र पर उसके पदार्पण करते ही, संकुचित होकर, सूखकर अपने ही सूक्ष्म तत्व में विलीन हो गई।'³ जीविका और जातीयता के क्षुद्रतर संस्कारों से इस प्रकार विद्रोह का पथ ग्रहण करने के कारण होटल से कुमार को तिरस्कृत होकर बहिष्कृत ही नहीं होना पड़ा अपितु उसी कारण गाँव के उत्पीड़न और तिरस्कार ने वहाँ

1. निरुपमा - निराला पृष्ठ-23

2. निरुपमा - निराला पृष्ठ-23

3. निरुपमा - निराला पृष्ठ-23

से भी हट जाने के लिए विवश कर दिया । उसके भाई रामचन्द्र को गाँव के तिवारी गुरुदीन ने त्यौरियाँ चढ़ाकर कहा— ‘‘यह तेवारियों का कुँआ है, जहाँ बाप ने खोदवाया है, वहाँ जाव भरो’’¹ गुरुदीन आगे बोले — ‘‘धिककार है उसको जो धर्म छोड़कर जिया गाँव में रहना मोहाल न कर दिया तो छानबे नहीं ।’’²

गाँव के जमींदार नीरू द्वारा दिए गए ब्रह्मभोज की तैयारी के समय जब कुमार का भाई रामचन्द्र नीरू से मिलने के लिए वहाँ पहुँचा तो उसे देखते ही एक स्त्री ने चिल्लाकर कहा— ‘‘मर गया आकर, देखे हुए था जैसे, चमार कहीं का । जाता है या दूँ तानकर कनपटी पर’’³ लेकिन इस सबसे कुमार द्वारा नहीं, अपनी क्रियाशीलता की योग्यता के द्वारा नवयुग की प्रबुद्ध शक्तियों की सद्भावना उसे मिलने लगी ।

बाबू यामिनीहरण की गणना ऐसे पुरुष पात्रों में है जो बंगाल की संकुचित मानसिकता के प्रतिनिधि हैं । लखनऊ विश्वविद्यालय में बाबू कामिनीचरण चटर्जी की छुट्टी से जो अस्थाई जगह रिक्त हुई, उस रिक्त स्थान पर कृष्णकुमार जो कि डी.लिट् हैं, की नियुक्ति न होकर बाबू यामिनीहरण जो कि पी.एच.डी. हैं, की नियुक्ति होती है क्योंकि लेखक के शब्दों में ‘‘इनकी पूँछ में बालों का मोटा गुच्छा मिला ।’’⁴ कुमार के पिता की जायदाद यामिनीहरण के पास गिरवी रखी हुई थी, उसकी मियाद भी पूरी हो चुकी है और वह उसे हड़पना चाहता है । यामिनीहरण निरुपमा से विवाह के लिए इच्छुक है लेकिन यामिनीहरण के अंगरेजियत और प्रान्तीयता के दम्भ के कारण निरुपमा को उनसे वितृष्णा है । वह कुमार को वरण करना चाहती है ।

लेखक द्वारा इस उपन्यास में कुमार जैसे लघुमानव पात्र के द्वारा ब्राह्मण वर्ग के झूठे दम्भ का जूता पालिश कर विरोध जताया है । कनौजियों द्वारा झूठी उच्चता

1. निरुपमा — निराला पृष्ठ-23

2. निरुपमा — निराला पृष्ठ-47

3. निरुपमा — निराला पृष्ठ-47

4. निरुपमा — निराला पृष्ठ-45

की रक्षा का प्रयत्न निरुपमा उपन्यास में मिलता है । इसी कारण कनौजिया पिछड़ेपन के प्रतिनिधि रहे हैं । इन्हीं में से एक कुमार भी था पर वह भी लेखक की भांति क्रांतिकारी बन गया ।

इस देश में श्रम का महत्व नहीं है । कुमार द्वारा पालिश के काम का समाचार सुनकर ब्राह्मणों में चर्चा – 'नीम के नीचे बैठक है । गुरुदीन तीन बिस्वे वाले तिवारी हैं, सभी समाज के कर्णधार हैं । सामाजिक मर्यादा में बड़े बेनी, सभापति का आसन ग्रहण किए हुए हैं ।''

हिन्दू धर्म की जड़ता के कर्णधार कृष्णकुमार को कैसे क्षमा कर सकते थे जो कनौजिया होकर भी चमार का काम करता था । अतएव इस उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण ब्राह्मणों में भी इस श्रेष्ठता ग्रन्थिजन्य क्रूर और तुच्छ मानसिकता का बहुत ही प्रभावशाली अंकन किया है । ये ब्राह्मण अत्यन्त गरीब हैं, हल जोतते हैं, जमींदारों की बेगार करते हैं । शिक्षा की दृष्टि से बेहद पिछड़े हुए हैं पर ज्यों ही गांव का कोई युवक पढ़ लिखकर जातिगत पुरानी रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश करता है । वे एकदम विद्रोह कर उठते हैं और उसके सारे परिवार को अवज्ञा, अपमान और बहिष्कार की अग्नि में झोंक देते हैं । इस उपन्यास में असहाय ग्रामीण यथार्थ का मर्मभेद चित्रण किया गया है ।

चोटी पकड़:- 'चोटी की पकड़' का कथानक स्वदेशी आन्दोलन की कथा पर आधारित है । इसमें राजनैतिक आन्दोलन के सामाजिक पृष्ठभूमि का विस्तार से वर्णन है । इसका कथा फलक लार्डकर्जन (1899-1905) से प्रारंभ होता है । वे भारत के लार्ड थे उस समय कलकत्ता राजधानी थी । सम्पूर्ण भारत पर बंगालियों की अंग्रेजी का प्रभुत्व था । राममोहन राय की प्रतिभा का प्रकाश चतुर्दिक विकीर्ण हो चुका था । रामकृष्ण परमहंस, आचार्य केशचन्द्रसेन,

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, माइकेल मधुसूदन दत्त, बंकिमचन्द्र चटर्जी, गिरीशचन्द्र घोष, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डी.एल. राय आदि की प्रतिभा, साधना और चिन्तन से पूरा देश अनुप्राणित था। ऐसी पृष्ठभूमि पर आधारित यह उपन्यास अपने शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करता है। फिर भी ऐसे समय में समाज के अन्दर की क्या स्थिति थी इसका वर्णन उपन्यासकार ने खुलकर किया है। यह वह समय था जब लार्डकर्जन ने बंग-भंग किया था। अंगरेजों के द्वारा भारतीय जनता का अपमान और उसके बदले में भारतीयों द्वारा विदेशी वस्तुओं का परित्याग और स्वदेशी वस्तुओं का ग्रहण प्रारंभ किया तथा गाँव-गाँव और नगर-नगर में स्वदेशी के प्रचार-प्रसार की बात होने लगी। स्वस्थ वातावरण के लिए जहाँ ऐसे जनान्दोलन हो रहे थे। वहीं समाज की सड़ीगली व्यवस्था और सड़ांध मारती हुई सामाजिक कुप्रवृत्तियाँ भी कम नहीं दिखती। शराब और वेश्या का व्यवसाय उन दिनों चरम पर था। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए अनेक उत्सव और कार्यक्रम किए जाते थे। इसमें अंगरेजी शासन की चाल थी। विलायत की कीमती शराब, नृत्य गीत आदि के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था को बिगाड़ने का एक षड़यंत्र चल रहा था। उसका उदाहरण है — स्वयं राजा साहब का खुला प्रेम व्यापार। एजाज नामक वेश्या पर वे अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहते थे। इसी प्रकार का षड़यन्त्र प्रभाकर के साथ होता है मगर प्रभाकर की शालीनता से एजाज प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। प्रभाकर ने अपना परिचय देते हुए कहा — 'मैं स्वदेश का सक्रिय समर्थक हूँ। सूत, चरखा, करघा, कपड़े तथा ग्रामीण वस्तुओं के प्रचलन का बीणा उठाया है। काम करता हूँ।' राजा साहब की सहानुभूति प्राप्त है। प्रभाकर ने एजाज से पूछा — 'क्या पार्टी को दस्तखत करके नाम दे सकती हैं?' एजाज ने कहा — 'सोचूंगी, शायद नहीं। पहले की बात होती तो हिम्मत बाँधकर देखती।' फिर राजा साहब ने कोचमैन अली के पुत्र युसुफ की चर्चा हुई उससे सावधान रहने के लिए

प्रभाकर ने कहा और रवाना हुआ । वहाँ से आकर वह अपने प्रचार कार्य में जुट गया ।

व्यक्ति की मानसिकता का असर समाज के पूरे जीवन पर कैसे पड़ता है इसका उदाहरण राजा साहब के चरित्र से किया जा सकता है । जैसा कि उपन्यास में वर्णित है । वेश्या के प्रति राजा की अनुरक्ति रानी को बदला लेने के लिए विवश करती है और इसके लिए नया प्रेमी चुनकर राजा से अपना बदला चुकाना प्रारंभ कर देती है । इसमें मुन्नाबाँदी की भूमिका महत्वपूर्ण है । इस प्रकार पूरा उपन्यास कुछ पात्रों के इर्द-गिर्द घूमकर अपने कथोपकथन को गति प्रदान करता है । यहाँ ऐसे पात्रों का संक्षेप में क्रमिक वर्णन करना प्रासंगिक होगा ।

मुन्नाबाँदी :- उपन्यास में वास्तविकता के प्रति समाज का ध्यान आकृष्ट करने के लिए मुन्नाबाँदी की सृष्टि की गई है । वह अशिक्षित है किन्तु राजा के बुराचार संकल्प की साधिका है । उसकी प्रकृति का वर्णन कथा के आरम्भ में इस प्रकार दिया गया है । 'मुन्ना की उतनी ही उम्र जितनी बुआ की । उतनी ऊँची नहीं, पर नाटी भी नहीं, चालाकी की पुतली । चपल, शोख, श्याम रंग, बड़ी-बड़ी आँखें, बंगाल के लम्बे-लम्बे बाल, विधवा, बदचलन, सहृदय, प्रायः हर प्रधान सिपाही की प्रेमिका, भेद लेने में आसानी, कितने ही रहस्यों की जानकार, प्रधान-अप्रधान नायिका, दूती, सखी, रानी साहिबा ने जब जब रण्डी रखने के जवाब में पति को प्रेमी चुनकर झुकाया, तब-तब मुन्ना ने प्रधान दूती का पाठ अदा किया ।'' इस प्रकार मुन्नाबाँदी के चरित्र चित्रण द्वारा उपन्यासकार एक प्रकार से यह संकेत देना चाहता है कि मुन्नाबाँदी केवल एक पात्र नहीं अपितु एक प्रवृत्ति है । समाज में इसी प्रवृत्ति का मलोच्छेदन करने के लिए उपन्यासकार ने ऐसे पात्र की रचना की है । इसके माध्यम से वह यह भी बताना चाहते हैं कि समाज ऊपर से कितना स्वच्छ और शुभ दिखता है अन्दर से उतना ही लिजलिजा और भ्रष्ट है । साहित्यकार समाज में क्रान्ति नहीं ला सकता है और न ही यह उसके

हिस्से में है । वह तो केवल समाज का ध्यान आकृष्ट करता है और रचना के माध्यम से समाज की वस्तुस्थिति का परिचय कराता है ।

एजाज:- एजाज नर्तकी होते हुए भी अपने कर्तव्य को भली भाँति समझती है । राजा की उसके प्रति अनुरक्ति प्रवृत्तिगत और उसकी राजा के प्रति सन्नद्धता वृत्तिगत है । प्रवृत्ति में जहाँ स्वाभाविक कमजोरी होती है वहीं वृत्ति में मजबूरी और आवश्यकता होती है । इससे एजाज का चरित्रगत कद कम नहीं होता अपितु परिस्थितिबल वह सब कुछ करती है । जिसे वह जानती है कि वह वरेण्य नहीं है फिर भी उसे विवशता में करना पड़ रहा है । राजा और एजाज इन दोनों पात्रों के संदर्भ से उपन्यासकार समाज की केन्द्रीय नस को पकड़ता है और यह संकेतित करना चाहता है कि जिसका पेट भरा है वह अन्याय की ओर, अत्याचार की ओर और दुराचार की ओर अग्रसर है और जिसका पेट खाली है वह इन सबको सहन करने के लिए मजबूर है । यह मजबूरी नियति की है और स्वभाव की है, अनिच्छा की है और अनाकांक्षित प्रेरित इच्छा की है । उसकी यह इच्छा ही उसकी प्रकृति का एक अंग बन जाती है और वह इसे सहज रूप में अंगीकार करती है । उपन्यासकार की यह सबसे बड़ी उपलब्धि कही जायेगी कि वह ऐसी तमाम सामाजिक प्रवृत्तियाँ को जो समाज में हैं तो किन्तु कोई उनका खुलासा करने के लिए नहीं आता, का सहज वर्णन कर देता है ।

राजा राजेन्द्र प्रताप का तद्युगीन राजाओं की विलासिता का प्रतीक के रूप में वर्णन किया गया है । एजाज एवं अन्य पात्रों के साथ उसके संबंध एवं संदर्भ इस बात को रेखांकित करते हैं कि ऐसे लोग अर्थ के बल पर सब कुछ खरीद लेना चाहते हैं और अपने ऊपर सभ्यता का, ईमानदारी का और बड़प्पन का मुखौटा भी लगाए रहते हैं ।

उपन्यासकार ने राजेन्द्र प्रताप के माध्यम से समाज में तथाकथित उच्चवर्ग के लोगों की गतिमति का वास्तविक मूल्यांकन किया है ।

बुआ:- बुआ चोटी की पकड़ का ऐसा स्त्री पात्र है जो सब प्रकार से दोष रहित होने पर भी अपने परिवेशगत दुश्चक्रों से उबर नहीं पाता है । समाज का शारीरिक सौन्दर्य कितना महत्व रखता है और आन्तरिक सौन्दर्य कितना मूल्यहीन है इस बात को बुआ के माध्यम से रेखांकित किया गया है । बुआ का सामने दिखने वाला मुख सुदर्शन न होने के कारण उन्हें जो सामाजिक वीप्सा झेलनी पड़ी उसका सुन्दर वर्णन उपन्यासकार ने किया है किन्तु समाज में ऐसे लोग भी होते हैं जो मनुष्य के आन्तरिक गुणों का सम्मान करते हैं और ऐसे ही पात्रों में प्रभाकर का नाम आता है जिन्होंने बुआ को इज्जत प्रदान की । उपन्यासकार ने प्रभाकर के माध्यम से सामाजिक सन्तुलन बनाए रखने का यत्न किया है ।

अली और युसुफ:- भारतीय मुस्लिम समाज में अशिक्षा का घोर संकट व्याप्त है । जहाँ अशिक्षा होगी वहाँ असद्वृत्तियाँ तो जन्म लेंगी ही । ऐसा ही अली और युसुफ के चरित्र में देखा जा सकता है ।

इन दोनों पात्रों के माध्यम से रचनाकार ने पूरे मुस्लिम समाज के शैक्षिक और नैतिक तह में जाने का यत्न किया है । ऐसे टिपिकल (ठेठ) पात्र केवल इसी समाज में मिल पाते हैं जिन्हें नैतिकता और मूल्यों की कोई परवाह होती है ।

प्रभाकर:- 'प्रभाकर इस उपन्यास का एक अतिविशिष्ट चरित्र है जिसके संदर्भ में उपन्यासकार ने स्वयं लिखा है - 'इस उपन्यास के अगले खण्ड में इसका पूर्ण परिचय प्राप्त होगा । पर इस खण्ड में भी उसका चरित्र सबसे अधिक प्रभविष्णु दिखाई देता है । कथाकार ने स्वयं उसका परिचय भी इस प्रकार दे दिया है - 'स्वामी विवेकानन्द की वाणी लोगों में वह जीवन ले आई, खासतौर से युवकों में, जिससे आदर्श के पीछे आदमी जागकर लगता है । प्रभाकर राजनीति में इसी का प्रतीक था । वह शिक्षित घराने का शिक्षित युवक सुकण्ठ और संगीतज्ञ था । महफिल में पहले पहल आते ही उसने अपने संगीत से राजा साहब को मुग्ध कर लिया, वे उछल पड़े । एजाज भी समझ गई, ये

पेशेवर गवैया नहीं । उसकी जैसी शालीनता उसने किसी में नहीं देखी थी । वह सोचने लगी । इसके साथ जिन्दगी का खेल है, खिलाफ मौत का समा ।¹

ऐसा कोई पात्र नहीं है जो प्रभाकर से प्रभावित न हो । मुन्ना भी प्रभाकर को देखकर उसे गुरुदेव कहकर जमादार से कहती है । 'सच जो कुछ भी हो, मगर गुरुदेव की बात पर असर पड़ता है । उन पर अपने आप विश्वास हो जाता है । बड़े अद्भुत जीव हैं ।'² बुआ भी प्रभाकर के बारे में सोचती हैं । 'एक अपना आदमी मिला, जिसको औरत अपना आदमी कह सकती है' यही नहीं रानी साहिबा भी प्रभाकर का दर्शन कर अपना हृदय परिवर्तन कर लेती है । 'उनका पहला अस्तित्व स्वप्न हो गया । हृदय के बन्द-बन्द खुल गए हैं । समग्रतः प्रभाकर एक राष्ट्रवादी, तेजस्वी और प्रबुद्ध पात्र हैं । उसके इन्हीं गुणों के कारण उपन्यास के सभी पात्र उसी के इर्द-गिर्द घूमते हैं । ऐसा लगता है कि स्वयं निराला ने अपने को प्रभाकर के रूप में इस उपन्यास में चित्रित करने का यत्न किया है । जैसे समाज में कोई न कोई श्रद्धा का केन्द्र बनता है वैसे कभी-कभी रचनाओं में ऐसे पात्र की सृष्टि हो जाती है जो अन्य पात्रों के श्रद्धा के केन्द्र बन जाते हैं । प्रभाकर ऐसे ही पात्रों में एक जीवन्त पात्र हैं ।

'चोटी की पकड़' के सभी स्त्री एवं पुरुष पात्र लघुमानव होते हुए भी अपनी सामाजिक भूमिका में बड़े खरे उतरते हैं ।

इसमें ऐसा कोई पात्र नहीं है जो किसी न किसी रूप में समाज को प्रभावित न करता हो ।

यह सामाजिक प्रभाव सामान्य से विशेष गुण के कारण ही अच्छूता है । ऐसे पात्रों की सृष्टि हगेशा समाज के गर्व से ही होती है । यही कारण है कि जब रचना पढ़ी जाती है तो पाठक को सहृदय हो प्रत्येक पात्र अपने ही परिवेश का पात्र लगता है । यह

1. चोटी की पकड़ - निराला पृष्ठ-107

2. चोटी की पकड़ - निराला पृष्ठ-65

सच भी है कि राजा, रानी, यूसुफ, एजाज, बुआ और महेन्द्र जैसे पात्र हमारे परिवेश में आज भी मिलते हैं ।

इस उपन्यास में जमींदारों के विलासितापूर्ण जीवन का वर्णन है और धन के प्रभाव से महिलाओं का शोषण और उनकी सामाजिक स्थिति का सुन्दर वर्णन किया गया है । कुल मिलाकर यह उपन्यास लघुमानव के बहाने एक चोटी का उपन्यास होकर अपनी नामगत सार्थकता को चरितार्थ करता है ।

काले-कारनामे :- 'काले-कारनामे' उपन्यास में लेखक ने जमींदारी शासन और सामन्ती परिवार की नग्नता का चित्र उपस्थित किया है । मनोहर इस कथा-कृति का मुख्य पात्र है । दलितों के उद्धार के लिए प्रयत्नशील है । मनोहर एक कर्तव्यनिष्ठ आचार्य का विद्यार्थी है । उसके प्रति कुछ लोग ईर्ष्यालु हो उठते हैं जिससे उसे कष्ट झेलना पड़ता है । अधिकारियों के अत्याचार पूर्ण व्यवहार, घूसखोरी आदि का इस उपन्यास में चित्रांकन किया गया है । इस उपन्यास में पुरुष पात्रों की ही अधिकता है । राम राखन, यमना प्रसाद, माधव मिश्र, रामसिंह पहलवान और मनोहर आदि प्रमुख पात्र हैं ।

रामराखन:- रामराखन सबसे बड़े जमींदार हैं । पुलिस की चापलूसी करके, सीधे सादे ग्रामीणों को सताना उन पर अपना रौब जमाए रहना, यही इनका चरित्र है । मनोहर, जो कि इस उपन्यास का मुख्य पात्र है, के फूफा हैं । मनोहर पर भी अत्याचार करते हैं अन्ततः उसे गाँव छोड़ना पड़ता है ।

यमुना प्रसाद :- यमुना प्रसाद की गिनती छोटे जमींदारों में होती है । यमुना प्रसाद भी पुलिस के चापलूसों में से एक हैं । झूठे गवाह तैयार करना तथा झूठी गवाही देने में अत्यन्त कुशल हैं ।

माधव मिश्रा- माधव एक ऐसे पात्र हैं जिनकी जमींदारों में तो इज्जत है क्योंकि ये उनके इशारों पर चलते हैं, यमुना प्रसाद की रियासत में रहते हैं किन्तु ग्रामीणों के साथ

गाधव मिश्र भी अनाचार करने में पीछे नहीं हटते ।

रामसिंह पहलवानः— रामसिंह का पेशा पहलवानी सिखाना है । मनोहर भी रामसिंह से ही पहलवानी सीखता है । बढ़ा-चढ़ाकर डींग हाँकना इनकी आदत है । जब जमींदार के जाल में फँस जाते हैं तो जूड़ी का बहाना लेकर घर में छिप जाते हैं । लेखक रामसिंह जैसे पात्र को इस उपन्यास में रखकर यह दिखाना चाहता है कि यह आवश्यक है कि देश में स्वास्थ्य की स्पर्धा जगायी जाए और देश में नवयुवकों का शरीर संवर्धन करवाया जाए । यह गुण रामसिंह में विद्यमान है ।

मनोहरः— मनोहर इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है । जैसा कि 'काले-कारनामें' नाम से ज्ञात होता है — यह वह समय था जब सरकार के लिए जनता का प्रतिनिधि जमींदार ही होता था और वह अपनी रियासत पर मनमाने अत्याचार करता था ।

लेखक द्वारा इसी ग्रामीण दलदल में मनोहर जैसे लघु मानव के रूप में एक प्रतिरोधी शक्ति की परिकल्पना करते हैं जो गाँव की शोषित एवं उत्पीड़ित जनता को सहानुभूति देता है । लेकिन अन्ततः रामराखन जो कि रिश्ते में उसके फूफा लगते हैं, के कारण गाँव छोड़ना पड़ता है । मनोहर बनारस पहुँचकर पिछड़े हुए लोगों से काम करना शुरू करता है । इन लोगों को शूद्रत्व से मुक्त कराने का वह संकल्प लेता है । उसके लिए धन की आवश्यकता थी । रानी विमला नाम की विधवा महिला ने मनोहर की ख्याति सुनी । दशाश्वमेध घाट पर स्नान के समय मिलकर रानी ने मनोहर को एक रकम भेंट की । मनोहर को जैसे साक्षात अन्नपूर्णा मिली । लेखक का मूल उद्देश्य इस उपन्यास के माध्यम से समाज में दलितों और शूद्रों का उद्धार करवाना है जो लघु गानव मनोहर के द्वारा करता है ।

चमेलीः— निराला का चमेली उपन्यास अपूर्ण होते हुए भी उनके कथा-साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है । इस उपन्यास में लेखक का विद्रोही स्वर अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा है । निराला ने देखा कि चिरकाल से उच्चवर्ग और अधिकारी वर्ग के अनाचार

और उत्पीड़न को निम्न और दलित वर्ग सहता चला आ रहा है । अतः प्रतिकार स्वरूप नई पीढ़ी में विद्रोह की भावनाएँ जन्मने लगीं । चमेली का बाप अधिकारी वर्ग के अनाचार को जानते हुए भी दबू बना रहता है और प्रतिकार की जगह क्षमा माँगता है किन्तु नई पीढ़ी के जवाहर और चमेली में शोषण और अनाचार के प्रति विद्रोह भड़क उठता है जिसे कोई न रोक सका । वे अत्यन्त स्वाभिमानी और चेतना-प्रबुद्ध व्यक्ति हैं । निम्न वर्ग की इस तद्युगीन मनोवृत्ति की विकसित होती हुई रूपरेखा निराला ने 'चमेली' में गहराई से उतारी है ।

'चमेली' उपन्यास में दो परिवारों की कथा का चित्रण है । एक ओर है शूद्र परिवार और दूसरी ओर है पण्डित का परिवार । लेखक ने दोनों परिवारों का तुलनात्मक चित्रण उपस्थित किया है ।

लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से यह दर्शाया है कि चमेली जैसे लघु मानव पात्र जो कि विधवा और शूद्र होते हुए भी अत्याचार के खिलाफ लड़ने का अदम्य साहस रखते हैं । पिता के बुढ़ापे के कारण वह खेतों में हल चलाती है । एकान्त पाकर सिपाही बख्तावर सिंह उसका हाथ पकड़ लेता है । लाज बचाने की दृढ़ भावना से चमेली ने पुकार की, महादेव आता है और उसकी रक्षा करता है । महादेव एक शूद्र है जिसने बख्तावर सिंह ठाकुर को मारा । लेखक द्वारा सिपाही और जमींदार का गठबन्धन तथा उनके अनाचार दिखाने का प्रयास किया गया है । अतः लेखक की जो कल्पना थी उसे लेखक ने चमेली और महादेव जैसे लघुमानव पात्रों के द्वारा समाज की विडम्बनाओं और घिनौनी कुरीतियों को दूर करवाने का प्रयास किया है । एक ओर पण्डित शिवदत्त का परिवार है उसके ढोंग पाखण्ड और भाभी के साथ व्यभिचार को लेखक ने व्यंग्यपूर्ण शैली में अंकित किया है । दोनों वर्णों शूद्र और सवर्णों के चरित्र लेखक द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं । शूद्रों में विधवा होने पर पाखण्डपूर्ण व्यभिचार की

आवश्यकता नहीं पड़ती, दूसरा विवाह हो जाता है जबकि पण्डित के परिवार की स्त्रियाँ जो व्यभिचार को अपनी नियति मानकर स्वीकार करती हैं। लेखक का यह उपन्यास यदि पूरा होता तो उसका स्थान उत्कृष्ट सामाजिक उपन्यासों में होता।

कुल्लीभाट:- 'निरुपमा' उपन्यास के लगभग तीन वर्ष पश्चात् कथाकार निराला ने 'कुल्लीभाट' नामक रेखाचित्र की रचना की। कुल्लीभाट अपनी सजीवता, मानवीय संवेदना, अकृत्रिम शैली, हास्य और करुण रसों के कारण हिन्दी की अब तक की 'लघु जीवनियों तथा दीर्घकथाओं में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है।

कुल्ली को एक ऐसे लघुमानव के रूप में लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिसका स्वयं का जीवन संघर्ष का जीवन रहा, उनका सम्पूर्ण जीवन समाज से ही लोहा लेने में लग जाता है। कुल्ली विषयी और विलासी जीवन से हटकर समाज में बड़े साहसिक कार्य करते हैं। अपनी मुसलमान प्रेयसी को खुलेरूप में अपने घर में बिठाकर धर्म और सम्प्रदाय के पक्षधरों की अवज्ञा करते हैं। बस्ती के अछूत बच्चों के लिए पाठशाला चलाकर और उन्हीं के काम करके जातिवाद का खण्डन करते हैं। निराला पहली बार बन-ठनकर, ससुराल गए स्टेशन पर जो छैल-छबीला इक्केवाला मिला, उसने उसे ससुराल पहुँचा दिया। अगले दिन निराला को उसने अपने घर बुलाया। सासुजी के लिए दामाद का कुल्ली के इक्के पर सवार होना ही बदनामी के लिए काफी था। दामाद का उसके घर जाना तो वे किसी भी तरह सहन करने को तैयार न थी। रोके जाने पर निराला की जिद और बढ़ी। वे गए। कुल्ली प्रसन्न हुआ। यह समझा कि शिकार खुद चलकर उसके पास आ गया। अपने विषय में बताते हुए, कुल्ली ने कहा शौक से रहता हूँ वह आदमियों को अच्छा नहीं लगता। मानलो कोई बुरी लत हो, दूसरों को इससे क्या? अपना पैसा बरबाद करता हूँ... लेकिन दुनियाँ में हमारे तुम्हारे जैसे आदमी भी हैं, जो लोगों के अंगुली

उठाने से घबड़ाते नहीं¹ अकस्मात् कुल्ली में परिवर्तन हुआ । लेखक ने कुल्ली को काँग्रेस का काम करते एवं अछूतोद्धार करते हुए देखा जो लोग कुल्ली के नाम से घृणा करते थे, वे उनको अवतार मानने लगे । कुल्ली के अन्दर सोती हुई मानवता जग जाने पर उसकी रक्षा के लिए कुल्ली धैर्य और दृढ़ता से संघर्ष करते हैं । लेखक द्वारा उनकी यथाशक्ति सहायता की गई । वही सासु जी कुल्ली की उनके सुधरे हुए स्वरूप से उनकी प्रशंसक बन गई 'कुल्ली बड़ा अच्छा आदमी है, यहाँ एक दूसरे को देखकर जलते थे, अब सब एक दूसरे की भलाई की ओर बढ़ने लगे हैं, कितने स्वयं सेवक इस बस्ती में हो गए हैं । काँग्रेस कायम हो गई है । सब अकेले कुल्ली का किया हुआ है।'² कुल्लीभाट एक लघुमानव होकर भी समाज के अवास्तविक विश्वासों और आदर्शों पर चोट करता है । कुल्ली में यथार्थवादी व्यक्ति का वही साहस है जो सत्य की प्रतिनिष्ठा रखने के कारण उसमें आ जाता है । वह निर्भीकता से अपनी बात कहता और तीव्र स्वर में पाखण्डियों को फटकारता है अपनी मुसलमानिन पत्नी को दीक्षा देने वाले अयोध्या के गुरुजी को लिखते हैं - 'जब आप शुद्ध की हुई मुसलमानिन को नहीं ग्रहण कर सकते, तब आप गुरु नहीं, ढोंगी हैं, आपने व्यापार खोल रखा है, आप में हृदय का बल नहीं, आप एक नहीं सौ उल्टी माला जपिए । हिन्दुओं ने बराबर समाज को धोखा दिया है ।'³ कस्बे के अधिकारियों की खरी आलोचना कर उनकी अफसरी पर चोट करते हैं और इस सारे विरोध के लिए वे समाज के तथाकथित सम्भ्रान्त वर्ग से बहिष्कृत होते हैं । कुल्ली का विषय वासना से बजबजाता रूप और दिव्य कान्ति से दमकता रूप अविद्या और विद्या का पूर्ण प्रकाश इस यात्रा में सहचर की भाँति द्रष्टव्य है । निराला पहली बार ससुराल पहुँचे तो कुल्ली की दृष्टि में भोग्य सुन्दर युवक मात्र थे, बाद में उनके पथ प्रदर्शक बन गए । लेखक के शब्दों में 'कुल्ली मुझे क्या समझाने लगे

1. कुल्लीभाट - निराला पृष्ठ-36

2. कुल्लीभाट - निराला पृष्ठ-76

3. कुल्लीभाट - निराला पृष्ठ-73

थे, यह लिखकर कलम को कलंकित न करूँगा । उनके जीवन पर किसी की गहरी छाप थी, यह मुझसे अधिक कोई नहीं जानता ।”

कुल्ली का करुण अन्त उनके प्रति करुणा तो उत्पन्न करता ही है, समाज के थोथे गौरव पर व्यंग्य भी करता है । कुल्ली के विकास को रेखांकित करते हुए निराला अनेक स्थलों पर श्रद्धा से अभिभूत हो उठते हैं – “कुल्ली धन्य हैं । वह मनुष्य है इतने जम्बुओं में वह सिंह है । वह अधिक पढ़ा लिखा नहीं । लेकिन अधिक पढ़ा लिखा कोई उससे बड़ा नहीं ।”

कुल्ली जैसे लघुमानव को सामने रखकर निराला जी ने समाज को दिशा दृष्टि दी है, वह अपूर्व है ।

बिल्लेसुर बकरिहा :- बिल्लेसुर बकरिहा लेखक की एक मधुर व्यंग्य से सराबोर मौलिक कृति है । ग्राम्य जीवन में व्याप्त विसंगतियों, चालाकी, धूर्तता और रूढ़िवादिता सभी कुछ इस उपन्यास में समाहित है । लेखक द्वारा बिल्लेसुर के परम्परागत संस्कारों और उसके स्वभावगत औचित्य को प्रकट करने के लिए पृष्ठभूमि में उसके तीन भाइयों—मन्नी, ललई और दुलारे, सत्तीढीन सुकुल और गाँव वालों के आंशिक चित्र इस उपन्यास में खींचे गए हैं ।

मन्नी:- कट्टर सनातन धर्मी मन्नी के धर्मानुसार विवाह अति आवश्यक है – इस लोक और परलोक के लिए भी । तीस साल के मन्नी और एक विधवा की दुधमुँही बच्ची से विवाह की लालसा लगाए हुए हैं । मन्नी फरेब का सहारा लेकर अपनी भावी पत्नी सहित अपनी सास को अपने गाँव ले आते हैं । जमींदार के खेत खलिहान, बाग बगीचों को अपना बताकर सासूजी को प्रसन्न करते हैं । घर आकर रात को अच्छी खातिर कर भाँग खिलाकर, उसकी बच्ची को सोता हुआ गले लगाकर भाग जाते हैं । मन्नी जैसे

पात्र के माध्यम से लेखक ने गाँव में व्याप्त अनाचार का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

ललई:- ललई धर्म-कर्म में दृढ़ थे। उनका लोक निन्दा और यशः कथा में सम भाव था। रतलाम में एक गुजराती ब्राह्मण से मित्रता हो गई थी। कुछ दिनों पश्चात मित्र का देहान्त हो गया। तब परिवार में मित्र का स्थान ललई ने ही ले लिया। ललई को भरा-पूरा धनी परिवार मिल गया। सबको लेकर गाँव वाले स्तब्ध रह गए। गाँव वालों ने ललई ने और ललई ने गाँव वालों से रिश्ता तोड़ लिया। निर्विकार चित्त से रहने लगे। इसी समय देश में सुधारवादी आन्दोलन चला। ललई देश के उद्धार में लग गए। इस प्रकार लेखक ललई के चरित्र के माध्यम से मध्यमवर्गीय विकासोन्मुखी जीवन का प्रतिनिधित्व कराते हैं।

दुलारे:- दुलारे आर्य समाजी थे। दुलारे भी बस्तीदीन सुकुल की बेवा को समझा बुझाकर अपने साथ रख लेते हैं। साल भर बाद ही दुलारे का निधन हो जाता है।

बिल्लेसुर कठिनाइयों और संघर्षों का अभ्यस्त एक ऐसा सतर्क व्यक्ति है जो अपनी निर्भीकता और अरसिकता के कारण न तो कभी किसी से परास्त होता है और न ही कठिनाइयों में निराश ही। बिल्लेसुर की सफलता का रहस्य उसके यथार्थवाद में है जहाँ लाभ की दृष्टि सर्वोपरि है। वह अपने समय का सदुपयोग अपने निहित लाभ के लिए खर्च करता है। उसकी यही अटूट लगनशीलता और लक्ष्य प्राप्ति की अपवाहदीन निष्ठा उसे प्रगतिपथ पर अग्रसर रखती है। लेखक द्वारा बिल्लेसुर का चरित्र अन्य विश्वासों में जकड़ा हुआ दिखाया गया है। बिल्लेसुर का स्वप्न, 'मैं सोता था, सोता था, देखा भस्स से एक आग जल उठी, उसने कहा बिल्लेसुर तू गरीब ब्राह्मण है, सताया हुआ है, लेकिन घबड़ा मत, तू जिसके साथ आया है, उसकी सेवाकर, उनसे यहीं गुरुमन्त्र ले ले, तू दूधो-पूतो फलेगा।'¹

अन्धविश्वास का एक रूप शकुन पर आस्था रखने में भी देखा जाता है । बिल्लेसुर शुभ शकुन विचारकर ही महत्वपूर्ण कार्य के लिए प्रस्थान करता था - “दरवाजे से निकलकर मकान में ताला लगाया और दोनों नथनों में कौन चल रहा है, दबाकर, देखकर उसी जगह दायँ पैर तीन दफे दे मारा और दूध वाली हण्डी उठाकर निगाह नीचे किए गंभीरता से चले । थोड़ी दूर पर भरा घड़ा मिला । बिल्लेसुर खुश हो गए ।”¹

अतएव लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से यह चित्रित किया है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण के लिए निषिद्ध और घृणित माने जाने वाले काम को बकरियाँ पालने और उसकी आय से ही अपनी गुजर बसर करने की स्वीकृति देकर जैसे बिल्लेसुर जैसा लघुमानव समाज में व्याप्त समूची रूढ़ और परिपाटीबद्ध सोच को चुनौती देता है । निराला बिल्लेसुर जैसे लघुमानव के द्वारा मानवीय व्यवहार के अनेक रूपों की जटिलता और क्षुद्रता का बहुत यथार्थ अंकन करते हुए मानवीय श्रम को प्रतिष्ठित करते हैं । घर गृहस्थी, पत्नी और परिवार की चाह के चित्र निराला में गहरी करुणा के साथ अंकित किए हैं ।

1. बिल्लेसुर बकरिहा - निराला पृष्ठ-74

अध्याय-सप्तम

उपसंहार

संस्कृत-शब्दकोश

संस्कृत-शब्दकोश

अध्याय-सप्तम

उपसंहार

निराला का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल रियासत में माघशुक्ल एकादशी संवत् 1953, जनवरी सन् 1897 ई. को हुआ था । इनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी और माता का नाम रुक्मिणी देवी था जो कि दुबे वंश की थीं । सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का पैतृक और पारिवारिक नाम सूर्यकुमार त्रिपाठी था । निराला ने ही स्वयं सन् 1917-1918 ई. के आसपास इस नाम को बदलकर सूर्यकांत त्रिपाठी रखा ।

निराला की आयु तीन वर्ष की ही थी, तभी उनकी माता का देहान्त हो गया । इनका पालन पोषण इनकी चाची और मामी ने किया । परिवार में कनौजिया आचार-विचार का प्रचलन था । निराला को किसी भी तरह के प्रतिबन्ध बचपन से ही अमान्य थे । निराला का विवाह रायबरेली जिले के डलमऊ स्थान के रामदयाल दुबे की पुत्री मनोहरा देवी के साथ सम्पन्न हुआ । निराला की दो संतानें थीं । पुत्र रामकृष्ण का जन्म सन् 1914 ई. में डलमऊ में हुआ था । पुत्री सरोज का जन्म भी सन् 1916 ई. में डलमऊ में ही हुआ था ।

सन् 1918 ई. में पत्नी मनोहरा देवी अस्वस्थ हुई उस समय निराला हाईस्कूल तक की पढ़ाई समाप्त कर तत्कालीन महिषादल के राजासाहब के निजी सहायक थे । सचिव के पद पर नियुक्त थे । उनकी पत्नी डलमऊ में ही रहती थीं । निराला के वहाँ पहुँचने के पहले ही उनका देहान्त हो चुका था । ससुराल से घर गढ़ाकोला लौटने पर निराला को अपने परिवार के अनेकानेक व्यक्तियों का देहान्त हो जाने और महामारी से ग्रस्त होने के समाचार मिले । उस समय निराला पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा था ।

सन् 1928 ई. में जब निराला कलकत्ता से गढ़ाकोला वापस आए तो उनकी जमीन और बाग-बगीचे बेदखल कर दिए गए थे । गाँववालों पर भी अत्याचार किए जा रहे थे । निराला ने किसानों को संगठित किया और स्थानीय जमींदारों से उनका संघर्ष चला । काफी समय तक जमींदारों से लोहा लेते रहे किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली । गरीब-दरिद्र किसान थोड़े से ही प्रलोभन में जमींदारों से मिल जाते थे । इस संघर्ष ने लेखक की निर्भीकता, अन्याय के प्रति दयार्द्रता का बहुत ही स्पष्ट परिचय दिया किन्तु निराला की पीड़ा जो उनके लेखन में उतरी वह अपने कारण नहीं सबके कारण थी । कवि निराला का निधन 15 अक्टूबर, 1961 ई. रविवार को हुआ । डॉ. राम विलास शर्मा ने इन्हीं स्थितियों को ध्यान में रखते हुए लिखा है— “निराला दुःख संघर्ष और मृत्यु के कवि हैं ।” लघु मानव को आधार बनाकर निराला के कथा – साहित्य पर अद्यावधि कोई कार्य नहीं हुआ है । प्रस्तुत शोध प्रबंध इस दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है । उनके पूरे कथा – साहित्य में लघु मानव को प्रतिष्ठित तो किया गया है किन्तु उनकी सूक्ष्म जीवन दृष्टि और सामाजिक कार्य को खोज पाना एक दुष्कर कार्य है । इस कार्य को पूरे सात अध्यायों में रखने का प्रयत्न किया गया है ।

अध्याय प्रथम में भूमिका एवं विषय प्रतिपादन के अंतर्गत पूरे कार्य की रूपरेखा निर्धारित करने का यत्न किया गया है । यह वास्तव में एक प्रकार से पूरे कार्य की पूर्वपीठिका है इसमें जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनके आधार पर कहा जा सकता है कि निराला के कथा – साहित्य में लघुमानव की पूर्ण प्रतिष्ठा हुई है । अध्याय दो में कहानियों एवं उपन्यासों को लिया गया है । समस्त कहानियों का एकीकृत स्वर यही रहा है कि समाज में सभी स्तरों का भेदभाव, छुआछूत और ऊँच-नीच का जो भेद व्याप्त है उसे कैसे समाप्त किया जाए । इसी में उपन्यास को भी लिया गया है । यह बात उपन्यासों के सम्बन्ध में भी चरितार्थ होती है ।

अध्याय— तृतीय में निराला के कथा साहित्य में लघु मानव की अवधारणा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

और स्वयं निराला भी लघुमानव परक सोच को रेखांकित किया गया है । निराला सर्वप्रथम एक मानव है । युगीन परिसीमाओं से ऊपर उठे हुए मानव । उनकी मानवता ही उनके लेखन की प्राण शक्ति है । उनका पूरा का पूरा लेखन मानव केन्द्रित रहा है । इस दृष्टि से निराला हिन्दी के एक मात्र ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने बँधी बधाई रूढ़ियों को तोड़कर केवल उपेक्षित पीड़ित एवं दीन-दुखियों को ही अपने साहित्य का विषय बनाया है । यही उनकी उदारता है ।

अध्याय चतुर्थ में कहानियों में चित्रित लघुमानव के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । 'अर्थ' कहानी को छोड़कर लिली' कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ प्रेम और विवाह से संबंधित हैं और प्रायः सभी कान्यकुब्ज समाज की वैवाहिक सीमाओं पर कुठाराघात करती हैं । इन कहानियों में लघुमानव पात्रों द्वारा समाज में व्याप्त परम्परागत प्रेम भावना, विकृतियों और विषमताओं से ग्रस्त समाज को परिष्कृत और प्रच्छन्न भावना से सन्निहित कराया ।

सुकुल की बीबी कहानी संग्रह ने निराला के सामाजिक मंतव्य को और भी स्पष्ट किया है । यहाँ नायिकाएँ उद्धृत हैं, वे पुरुषों को परम्पराओं और रूढ़ियों से बाहर निकालकर सामाजिक एकता तथा स्वतंत्रता के क्षेत्र में खड़ा कर देती हैं । निश्चय ही यह निराला का नया समाधान है । सुकुल चोटी धारी पण्डित हैं किन्तु उन्हें घरे से बाहर निकालती है पुखराज । लखनऊ की उच्च शिक्षा का संस्कार देकर निराला ने उसे नई नारी की वाग्मिता भी प्रदान की है ।

प्रेम और विवाह से सम्बन्धित इन कुछ कहानियों के अतिरिक्त वे कहानियाँ हैं, जो आत्मकथात्मक हैं अथवा जिनमें शोषितों पीड़ितों का विद्रोह फलित है । 'कला की रूपरेखा' अधिक पुष्ट है । लेखक के अपने जीवन की झाँकी उन्हें कहानी से अधिक आत्मचरितात्मक गरिमा प्रदान कर देती है । 'चतुरी-चमार', 'देवी', 'स्वामी सारदानन्द और मैं', 'सफलता', 'भक्त और भगवान', 'अर्थ', 'ऐसी ही कहानियाँ हैं

जिनमें लेखक पूर्वस्मृतियों को जगाकर कुछ ऐसा कहना चाहता है जो आत्मीय है । निराला की ये श्रेष्ठ कहानियाँ कहानी मात्र नहीं हैं । उनमें उत्कृष्ट कोटि की संवेदनशीलता है । 'राजा साहब को ठेंगा दिखाया' में राजा साहब ने पेट की ज्वाला से दग्ध विश्वम्भर की भाषा को समझा ही नहीं बल्कि उसके संकेतों का भिन्न अर्थ जान उसे पिटवाया, नौकरी से निकाल दिया । 'हिरनी' कहानी में सामंती वर्ग की हृदयहीनता और दीन प्रजा के शोषण का दृश्य सामने आता है ।

'देवी' में लेखक ने एक ऐसे चरित्र को चित्रित किया है जिसके पास अभिव्यक्ति के नाम पर कुछ संकेत हैं, रोदन है और हँसी है । लेखक ने अपनी सजग संवेदना से उसके अन्तर्गमन में पैठकर उसका चित्र उतारा है । पगली के अंग संचालन से, मुद्रा से दोनों में झलकते हुए भावों से लेखक ने उसके सुख-दुःख को पढ़ा और उसे वाणी दी है । पगली के प्रति लेखक के सम्मान के कारण उसके अपने चरित्र के कई गुण प्रकट होते हैं । लेखक की पर दुःख कातरता, उदारता, मानवप्रेम आदि गुणों पर प्रकाश पड़ता है । 'चतुरी-चमार' में चतुरी की विशेषता है — उसका संत साहित्य का ज्ञान । कबीर पदावली का विशेषज्ञ है । वह केवल गाने के लिए ही पदगान नहीं करता था, बल्कि पदों के गंभीर अर्थ तक भी उसकी पहुँच थी ।

अध्याय पंचम में निराला के पौराणिक उपन्यासों में चित्रित लघुमानव के स्वरूप को चित्रित किया गया है । निराला के पौराणिक आख्यानों का लक्ष्य बालकों में सद्गुणों सद्वृत्तियों एवं सद्भावनाओं का विकास करना है जिसे बच्चे जीवन में उत्कर्षपूर्ण पथ पर प्रशस्त हो सकें । जीवन में अपने लक्ष्य को सहज ही पा सकें । 'महाभारत' में सम्पूर्ण पौराणिक कथालेखन की परिणति हुई है । जिससे बाल समाज अतीत सम्पदा से सहज ही जुड़ जाता है । निराला ने भूमिका में लिखा है — "यह संक्षिप्त महाभारत साधारणजनों, गृहदेवियों, बालकों के लिए लिखी गयी है । इस प्रकार इन कृतियों से बच्चे अपने जीवन में सत्य की अवधारणा कर सकते हैं ।" निराला के पौराणिक

आख्यान— 'भक्त ध्रुव', 'भक्त प्रह्लाद', 'भीष्म', 'महाभारत' के चरित्र केवल पौराणिक चरित्र नहीं हैं। ये आज के मनुष्य के प्रतीक हैं। उनके पात्र मात्र पौराणिक नहीं हैं आज के जूझते हुए मनुष्य हैं।

यही कल्याण की भावना महर्षि महेश योगी का उद्देश्य है 'सत्यमेव जयते' के सिद्धांत की चरितार्थता उनके अनुसार प्रत्येक माता-पिता अपने बालक बालिकाओं को अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं। ध्यान-ज्ञान वाली वैदिक शिक्षा से अधिक उपयोगी कोई भी शिक्षा पद्धति नहीं हो सकती। "व्यक्ति के जीवन में सर्वसमर्थ चेतना की जागृति के साथ जो सामूहिक चेतना में पवित्रता का संचार होता है" उनकी मानना है कि भावातीत ध्यान से राष्ट्र में सर्वतोन्मुखी विकास संभव है।¹ "भावातीत ध्यान में 'मन' प्रकृति के बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती के स्तरों को जाग्रत करता हुआ परा प्रकृति को स्पन्दित करता है (प्रचेतयति केतुना, ऋग्वेद 1.3.12) समस्त प्रकृति के नियमों को जाग्रत करता है और सामूहिक चेतना, क्रिया के क्षेत्र में पावनकारी प्रभाव उत्पन्न करता है। सामूहिक चेतना में रजोगुण, तमोगुण कम हो जाते हैं, जैसे-जैसे सतोगुण बढ़ता जाता है वैसे-वैसे समाज में राष्ट्र में पवित्र प्रवृत्तियों का विकास होता है।"²

अध्याय षष्ठम में निराला ने सामाजिक उपन्यासों में लघु मानव के स्वरूप को विवेचित किया गया है। निराला के उपन्यासों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। रोमांटिक उपन्यास और यथार्थवादी उपन्यास हैं - रोमांटिक उपन्यास की गणना में निराला के प्रारम्भिक चार उपन्यास आते हैं पहला अप्सरा दूसरा अलका तीसरा निरुपमा, चौथा प्रभावती, प्रभावती की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक होने के कारण उसे ऐतिहासिक भी कहा जा सकता है। लेखक ने इन उपन्यासों में स्वच्छन्द व्यक्तित्व के पात्रों का सृजन किया है। इन उपन्यासों के लघुमानव पात्रों द्वारा लेखक ने परम्परागत

1. महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय विशेषताएँ पृष्ठ-148

2. महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय विशेषताएँ पृष्ठ-148

प्रेमभावना में जो विषमताएँ और विकृतियाँ थीं उनका उन्मूलन कराया । इन सभी उपन्यासों में किसी का भी विवाह समाज विहित आधार पर नहीं होता । निराला ने विधवा और वेश्या के प्रश्न को कभी प्रेमचन्द की वेश्या और विधवा के रूप में नहीं लिया । प्रेमचन्द द्वारा जो समाधान था किसी आश्रम का खुल जाना या इनकी आर्थिक समस्या का हल होना । किन्तु निराला ने इनका विवाह इसलिए आवश्यक बताया कि यह नारी की नैसर्गिक आवश्यकता है । अप्सरा की वेश्या, पुत्री कनक और अलका की विधवा वीणा का विवाह लेखक इसी उद्देश्य से कराता है । चारों उपन्यासों की धुरी नारी ही है ।

प्रणय के साथ-साथ इन उपन्यासों के लघु मानव पात्र किसान और मजदूरों के संपर्क में आते हैं और अपने-अपने ढंग से समाज सेवा का कार्य करते हैं । इन उपन्यासकारों में तत्कालीन शिक्षित युवक, सामन्तशाही वर्ग और किसान तथा मजदूरों के जीवन, गतिविधि और मनोभावों का सूक्ष्म अंकन हुआ है ।

‘अप्सरा’ उपन्यास का लघुमानव राजकुमार अनेक संकल्प विकल्प के उपरांत अन्ततोगत्वा वेश्यापुरी कनक से विवाह कर लेता है । ‘निरुपमा’ का नायक लघुमानव कुमार जो समाज से ही नहीं अपने संस्कारों से भी लड़ने का अटूट अदम्य साहस रखता है । ब्राह्मण कुल का और सुशिक्षित होने पर भी वह चमार का काम खुले समाज में करता है ।

निराला की साहित्यिक विचारधारा में परिवर्तन होता है । प्रणय से हटकर उन्होंने यथार्थवादी लेखन प्रारम्भ किया जिसमें उनकी पितृभूमि और ससुराल के स्थानीय रंगों की छाप सुस्पष्ट है । कुल्लीभाट, चमेली, बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़ और काले कारनामे उपन्यासों की गिनती यथार्थवादी उपन्यासों में की जाती है । ये उपन्यास उच्च मध्यवर्गीय के न होकर निम्न मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय हैं । निराला ने इस वर्ग की दयनीयता और करुणा का अंकन किया है ।

उस अभावग्रस्त वर्ग में उन्होंने ऊँची मानवता के दर्शन किए हैं। कुल्ली भाट और 'बिल्लेसुर बकरिहा' निराला के सर्वश्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास हैं। इन दोनों उपन्यासों के नायक समाज के परित्यक्त और उपेक्षित व्यक्ति हैं। कुल्ली अल्पशिक्षित है और बिल्लेसुर निरक्षर हैं फिर भी दोनों आत्मप्रबुद्ध व्यक्ति हैं, सजग हैं, जीवन के प्रति जागरूक हैं। कुल्ली को देखकर निराला लिखते हैं – "मनुष्यत्व रह रहकर विकास पा रहा है देखकर मैंने सिर झुका लिया।"

समाज के जिस खोखलेपन की झाँकी 'निराला' ने इन उपन्यासों में प्रस्तुत की है उससे यह प्रतिध्वनित होता है कि यह समाज बड़ा ढोंगी है। इसमें मनुष्य-मनुष्य में भेद-भाव ऊँचनीच के भाव व्याप्त हैं। उच्चवर्ग, निम्नवर्ग के प्रति असहिष्णु और निर्दयी है। अछूत उपेक्षा के शिकार हैं। इन उपन्यासों में निराला के व्यंग्य के अतिरिक्त इनमें विद्रोह और क्रांति की भावनाएँ उनके लघुमानव पात्रों द्वारा प्रकट हुई हैं।

अध्याय सप्तम में निष्कर्ष के रूप में प्रस्तावित है। कुल मिलाकर प्रस्तुत कार्य लघुमानव के बहाने निराला के कथा साहित्य पर किया जाने वाला एक प्रयास है।

डॉ. कुसुम वार्ष्णेय का अभिमत यहाँ उल्लेख्य होगा – "निराला का जीवन स्वयं एक कथा है। उनका व्यक्तित्व एक युग पुरुष के व्यक्तित्व का सा रहा। वह दिन दूर नहीं जब निराला शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा न रहकर एक दुर्दमनीय निर्भीक और अजेय व्यक्तित्व के लिए प्रयुक्त होने वाली जातिवाचक संज्ञा बन जाएगा।"

सन्दर्भ सूची ग्रन्थ

1. अप्सरा— गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, सातवीं आवृत्ति, 1960
2. अलका— गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, दसवीं आवृत्ति, 1961
3. निरुपमा— भारती भंडार, प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1936
4. चोटी की पकड़— किताब महल, प्रयाग, चतुर्थ संस्करण, 1946
5. काले कारनामे— हिन्दीप्रचारक पुस्तकालय, काशी, 1960
6. कुल्ली—भाट— गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, पाँचवीं आवृत्ति, 1961
7. बिल्लेसुर बकरिहा— किताब महल, प्रयाग, नवीन संस्करण, 1958
8. लिली— गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, सातवीं आवृत्ति, 1961
9. सुकुल की बीवी— भारती भंडार, प्रयाग, तृतीय संस्करण, 1955
10. चतुरी चमार— किताब महल, इलाहाबाद, 1957
11. चमेली— रूपाभ पत्रिका में प्रकाशित, नया साहित्य अंक छः
1938
12. भीष्म— द पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता, 1927
13. भक्त ध्रुव— राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1992
14. भक्त प्रह्लाद— राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1992
- महाभारत— राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण, 1991

सहायक ग्रन्थ

1. कथा शिल्पी निराला— डॉ. बलदेव प्रसाद महरोत्रा
लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1984
2. निराला का कथा-साहित्य— डॉ. कुसुम वार्ष्णेय
ममता प्रकाशन, इलाहाबाद, 1971
3. निराला का साहित्य और साधना— डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1965
4. निराला की साहित्य साधना(भाग 2) राम विलास शर्मा,
रामकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
5. महाप्राण निराला पुर्नमूल्यांकन
सम्पादक डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी
डॉ. वसुमति डागा
श्री बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय,
1998
6. कवि निराला— नन्द दुलारे बाजपेयी,
लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद, 1997
7. निराला का गद्य— सूर्य प्रसाद दीक्षित
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. निराला और नवजागरण— डॉ. रामरतन भटनागर,
साथी प्रकाशन, सागर, 1965
9. सम्मेलन पत्रिका— निराला जन्म शताब्दी अंक
प्रकाशक— डॉ. प्रभात शास्त्री इलाहाबाद
10. निराला का गद्य साहित्य प्रेम प्रकाश भट्ट
उपमा प्रकाशन, जयपुर
11. विष्णु पुराण— मुनिलाल गुप्त
12. महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय (विशेषताएँ)





